अनिल मोहन

पोतेबाबा

देवराज चौहान और मोना चौधरी एक साथ

कालचक्र सबको अपने में समेटकर अपने जाल में फंसा रहा था। उसमें फंसे थे—देवराज चौहान, जगमोहन, सोहनलाल, बांकेलाल राठौर, रुस्तम राव, नगीना, मोना चौधरी, पारसनाथ, महाजन, लक्ष्मण दास, सपन चड्ढा, कमला रानी और मखानी!

नया उपन्यास

जथूरा का सबसे खास आदमी 'पोतेबाबा' वो जो कह रहा था और जो कर रहा था उससे सब धोखा खा रहे थे। उसकी करनी और कथनी में जमीन-आसमान का फर्क था। इस बात का आभास अभी तक किसी को भी नहीं हो सका था।

पोतेबाबा

"जथूरा महान है।" पोतेबाबा ने भीतर प्रवेश करते हुए कहा—"उस जैसा दूसरा कोई नहीं।"

"मैं कब से आपका इंतजार कर रही थी।" तवेरा ने सामान्य स्वर में कहा।

"सब खैर तो हैं मेरी बच्ची?" पोतेबाबा बोला।

"मालूम पड़ा है कि आप देवा और मिन्नो को ले आए हैं।"

"हां, मेरी बच्ची। देवा और मिन्नो जथूरा की जमीन पर आ पहुंचे हैं।"

"तो देवा और मिन्नो वो तिलिस्म तोड़ देंगे जो महाकाली ने उन दोनों के नाम पर बांधा है।"

"आशा तो यही है मेरी बच्ची।"

"मैंने महाकाली से बात की, परंतु वो पिताजी को आजाद करने को तैयार नहीं है।"

"वो सोबरा के एहसानों तले दबी हुई है। इसलिए वो सोबरा के कहने पर, जथूरा को कैद में रखे हुए है। वो तेरी बात नहीं मानेगी। जथूरा को आजाद नहीं करेगी।" पोतेबाबा ने कहा।

"मैं देवा-मिन्नो के साथ रहना चाहूंगी।"

"क्यों?"

"क्योंकि मैं इस काम में उनकी सहायता कर सकती हूं। जादूगरनी महाकाली ने तरह-तरह के जाल बिछा रखे होंगे। मैं उन जालों से उन्हें बचा सकती हूं। तंत्र-मंत्र की विद्या में मैं पूरी तरह निपुण हूं।"

कालचक्र सबको अपने में समेटकर अपने जाल में फंसा रहा था। उसमें फंसे थे—देवराज चौहान, जगमोहन, सोहनलाल, बांकेलाल राठौर, रुस्तम राव, नगीना, मोना चौधरी, पारसनाथ, महाजन, लक्ष्मण दास, सपन चड्ढा, कमला रानी और मखानी।

देवराज चौहान और मोना चौधरी एक साथ!

अनिल मोहन

राजा पॉकेट बुक्स (में)

अनिल मोहन (का)

देवराज चौहान
मोना चौधरी

एक साथ वाला आगामी नया उपन्यास

प्रकाशक :	राजा पॉकेट बुक्स 330/1, बुराड़ी, दिल्ली-110084
मुद्रक :	विशाल ऑफसेट स्पोर्ट्स कॉम्पलेक्स, देवतापुरम मेरठ (उ.प्र.)

दो शब्द—लेखक की कलम से

पाठकों को अनिल मोहन का नमस्कार!

हाजिर है, देवराज चौहान और मोना चौधरी एक साथ वाला नया उपन्यास—**'पोतेबाबा'**।

इससे पहले प्रकाशित **'जथूरा'** तो आपने पढ़ ही लिया होगा और मजा भी आया होगा। अगर नहीं पढ़ा तो चिंता की कोई बात नहीं, 'पोतेबाबा' को आप संभालकर रखें और बाजार से 'जथूरा' लेकर पहले उसे पढ़ें। पोतेबाबा को संभालकर रखने के लिए इसलिए कहा है कि 'जथूरा' समाप्त होते ही आप फौरन 'पोतेबाबा' को पढ़ना चाहेंगे और बाजार से लाने-ढूंढ़ने में आपका वक्त जाया न हो और मजा भी बराबर बना रहे। मैं पाठकों को ये बात स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि पहले 'जथूरा' पढ़ें, उसके बाद ही 'पोतेबाबा' पढ़ें वरना 'पोतेबाबा' में आपकी कुछ भी समझ में नहीं आएगा कि कौन-सी बात कब शुरू हुई और अब क्या हो रहा है। 'पोतेबाबा' में 'जथूरा' की कहानी का सारांश भी नहीं है, क्योंकि एक पूरे उपन्यास का सारांश 5-10 पेजों में लिखना असम्भव सा काम होता है और इससे उपन्यास पढ़ने की रवानगी में बोझिलता भी आती है। यूं आज तक तो ये ही होता आया है कि दो भागों में उपन्यास हो तो पहले उपन्यास का सारांश उल्टा-पुल्टा लिखकर, जिम्मेवारी से मुक्ति पा ली जाती है, जबकि ऐसा करना सिरे से ही गलत है। उपन्यास का मजा दस पेजों में आ जाता तो फिर उपन्यास दस पेजों के ही होते, न कि 300-400 पेज के। इसलिए पहले 'जथूरा' पढ़ें फिर 'पोतेबाबा' और पूरे-का-पूरा मजा लें। मजा आएगा, इस बात की जिम्मेवारी मेरी है। क्योंकि देवराज चौहान और मोना चौधरी की पूर्वजन्म की रहस्यमय दुनिया से वास्ता रखते हादसों में मजा ही मजा भरा है। रोमांस है। सनसनीखेज स्थिति आ जाने पर दिल की धड़कनें जोरों से बढ़ जाती हैं। कदम-कदम पर उलझनों का जाल है।

अब बात करते हैं उन पाठकों की जिन्होंने 'जथूरा' पढ़ा और अपनी राय भेजी। यूं तो सबके बारे में लिख पाना सम्भव नहीं है, क्योंकि लेखकीय में जगह सीमित होती है। लेकिन चंद उन पाठकों का जिक्र करना जरूरी है जिन्होंने दिल से पत्र लिखा है। पहले पत्र का मैं सोनीपत से अब्दुल वसीम का जिक्र करूंगा जो कि लिखते हैं कि मोमो जिन्न, लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा के पात्र लाजवाब रहे। तीनों ही इतने मजेदार हैं कि लगता है, पूरा

उपन्यास इन्हीं के दम पर, मजा दे गया और पैसे वसूल हो गए। दूसरे पत्र में मैं जिक्र करूंगा भिवानी के किशोर नंदा का, जो लिखते हैं कि पूरा उपन्यास पढ़ने में मजा आ गया। नंदा साहब को सबसे मजेदार लगे हैं कमला रानी और मखानी। दोनों की चुलबुली बातें और दूसरे का रूप ओढ़कर काम करना इन्हें बहुत भाया, ये भी कुछ हद तक अब्दुल वसीम की तरह ही लिखते हैं कि कमला रानी और मखानी को पढ़कर, मजा आ गया। इन्हें लगता है कि पूरा उपन्यास कमला रानी और मखानी पर ही टिका है। तीसरे पाठक राजस्थान जयपुर के हैं विक्रम सिंह चांदा। चांदा साहब कहते हैं कि अनिल मोहन साहब आपने पात्रों का ताना-बाना, उनके करतब, कहानी का पूरा जोड़-तोड़ ऐसे बांध के रखा है कि पता ही नहीं चला कि कब उपन्यास शुरू किया और कब खत्म हो गया। अब तो मुझे 'पोतेबाबा' का इंतजार है और बुक स्टॉल से दो बार पूछ भी आया हूं कि 'पोतेबाबा' आया कि नहीं। तब तो नहीं आया था, परंतु अब आ चुका है, उपन्यास हासिल कीजिए और एक बार फिर पूर्वजन्म की रहस्यमय दुनिया में गुम हो जाइए। जैसे कि हर कोई अपने सपनों को, हकीकत में बदलना चाहता है। इस उपन्यास में कुछ तो ऐसा होगा जो कभी-कभी आपके सपनों में, सोचों में आता हो और आप उसे हकीकत में बदलना चाहते हों। इंसान के मन में चाहतों की लिस्ट बहुत लम्बी होती है, जिन्हें वो हकीकत में कभी भी पूरा हासिल नहीं कर पाता, परंतु सोचों में अवश्य उसे हासिल करने की चेष्टा करता है।

अब बात करते हैं **राजा पॉकेट बुक्स** से प्रकाशित होने वाले आगामी नए उपन्यास की।

मेरा आगामी नया उपन्यास है—**'महाकाली'**।

ये उपन्यास भी 'देवराज चौहान और मोना चौधरी एक साथ' वाला उपन्यास होगा। यानी कि रहस्य और रोमांच से भरे मजे अभी बाकी हैं। तो पढ़ना न भूलें मेरा आगामी नया उपन्यास 'महाकाली' जो कि राजा पॉकेट बुक्स से शीघ्र ही प्रकाशित होकर आपके हाथों में आने वाला है।

तो अब मुलाकात होगी **'महाकाली'** में।

शेष फिर!

——अनिल मोहन
पोस्ट बॉक्स नम्बर-6627
नई दिल्ली-110018

पोतेबाबा

प्रस्तुत उपन्यास **'पोतेबाबा'** हम वहीं से शुरू करते हैं, जहां पूर्व प्रकाशित उपन्यास **'जथूरा'** समाप्त हुआ था। 'जथूरा' में तब आखिरी दृश्य चल रहा था कि जगमोहन और सोहनलाल को, कालचक्र कमला रानी के माध्यम से कुएं में फिंकवा देता है और कालचक्र का वो कुआं जमीन में धंसता हुआ अंजानी दुनिया में जा पहुंचता है, वहां जब जगमोहन और सोहनलाल कुएं से बाहर निकलते हैं तो खुद को अजीब सुनसान जगह पर पाते हैं। तभी सामने से एक घुड़सवार, जिसने नीली वर्दी पहन रखी है, तेजी से आता है और उन्हें बताता है कि रानी साहिबा का काफिला आ रहा है, रास्ते से हट जाओ। ये कहकर वो आगे बढ़ जाता है और जगमोहन, सोहनलाल पास के एक बड़े से पहाड़ी पत्थर के पीछे छिप जाते हैं कि उन्हें काफी दूर धूल का उठता गुब्बार दिखाई देता है।

जगमोहन और सोहनलाल की निगाह दूर धूल के उठते गुब्बार पर टिकी थी, जो कि पल-प्रतिपल बड़ा होता जा रहा था। देखते ही देखते धूल का गुब्बार अब स्पष्ट होने लगा। वो काफी सारे घुड़सवार थे, जो कि नीली वर्दी में थे। वो कतार में थे। उनके पीछे छत्र लगी बग्गी दिखी और बग्गी के पीछे भी घुड़सवार थे।

"ये रानी साहिबा का काफिला है।" जगमोहन बोला।

"लेकिन रानी साहिबा है कौन?" सोहनलाल ने गहरी सांस ली।

"क्या पता। हमें कालचक्र ने अंजानी जमीन पर पहुंचा दिया है, हम...।"

"हम पूर्वजन्म में तो नहीं पहुंच गए?" सोहनलाल ने गर्दन घुमाकर जगमोहन को देखा।

जगमोहन की निगाह भी सोहनलाल पर गई।

कुछ पलों तक उनके बीच चुप्पी रही फिर जगमोहन गम्भीर स्वर में कह उठा।

"ये जगह पूर्वजन्म का हिस्सा नहीं हो सकती।"

"क्यों?"

"जथूरा ने कालचक्र हमारे पीछे डाला था कि वो हमें पूर्वजन्म के सफर के लिए रोक सके। ऐसे में कालचक्र हमें पूर्वजन्म में क्यों पहुंचाएगा।" जगमोहन ने सोच भरे स्वर में कहा।

सोहनलाल की निगाह काफिले की तरफ गई, जो कि अब पास आता जा रहा था।

"तुम उसे भूल गए, जो मुझे जथूरा के हादसों का पूर्वाभास करा रहा है, वो कुएं में अदृश्य रूप से हमें मिला और हमसे बात की थी। उसने कहा था कि हम लोग कालचक्र के भीतरी हिस्से में आ फंसे हैं।" जगमोहन ने कहा—"उसके मुताबिक कालचक्र हमें अपने भीतर निगल रहा है, जहां हमारे लिए ढेरों खतरे हैं। परंतु वो जो भी है, वक्त-वक्त पर हमारी सहायता करता रहेगा। लेकिन उसने ये भी कहा था कि अब हमारे सामने इतने खतरे आएंगे कि हम बच न सकेंगे।"

"जबकि हम पूर्वजन्म में प्रवेश करना चाहते हैं।" सोहनलाल ने कहा।

"मजबूरी में। वैसे पूर्वजन्म में प्रवेश करके खतरों का सामना करने की हमारी इच्छा नहीं है।" जगमोहन की निगाह काफिले की तरफ उठी—"जथूरा हमें पूर्वजन्म में प्रवेश करने पर रोकना चाहता है, यही वजह है कि हम जिद में पूर्वजन्म में प्रवेश करने की सोच रहे हैं कि देखें, आखिर जथूरा क्यों नहीं चाहता कि हम पूर्वजन्म में प्रवेश करें।"

"हम जथूरा के फेंके कालचक्र की भीतरी परतों में फंस चुके हैं। मेरे खयाल में तो यहां से बच जाना सम्भव नहीं लगता। हमारी जिंदगी यही खत्म हो जाएगी।" सोहनलाल बोला।

काफिला करीब आ चुका था।

दोनों की निगाह उस तरफ जा टिकी थी।

उस बग्गी के आगे छः घुड़सवार थे। पीछे भी छः घुड़सवार ही थे। सबकी कमर से बंधी तलवारें नजर आ रही थीं। बग्गी में दो घोड़े लगे थे। वहां एक युवती या औरत बैठी नजर आ रही थी। उसके अगल-बगल, कुछ पीछे की तरफ दो युवतियां थीं जिन्होंने बड़े से छाते की रॉड थाम रखी थी ताकि रानी साहिबा के ऊपर छाया रहे। दौड़ती बग्गी में इस तरह उस भारी छाते को सम्भाले रखना आसान नहीं था। कोचवान बग्गी संभाले दौड़ा रहा था।

काफिला अब उस बड़े पत्थर के उस पार से गुजरने लगा था, जिसके पीछे वे छिपे थे।

परंतु तभी जगमोहन से गलती हो गई।

जब बग्गी पत्थर के पीछे से निकल रही थी तो उसने सिर आगे करके, बग्गी के भीतर बैठी रानी साहिबा को देख लेना चाहा और ये ही वो वक्त था कि रानी साहिबा नाम की औरत की निगाह यूं ही इस तरफ ही थी।

"रोको।" रानी साहिबा एकाएक तेज स्वर में कह उठी—"बग्गी रोको।"

फौरन ही कोचवान ने बग्गी रोक दी।

पीछे आते घुड़सवार भी थम गए।

आगे के घुड़सवार बीस-तीस कदम अवश्य आगे निकल गए थे, परंतु वे पलटकर करीब आ गए।

तभी एक घुड़सवार फौरन बग्गी के पास आ पहुंचा।

"हुक्म रानी साहिबा।" वो अदब से बोला।

रानी साहिबा 35 से 50 तक की, किसी भी उम्र की हो सकती थीं।

वो खूबसूरत थी। चोली-घारा और चुनरी में थी वो। कभी वो ज्यादा उम्र की झलकती तो कभी कम उम्र की लगती।

"उस पत्थर के पीछे कोई छिपा है।" रानी साहिबा ने कहा और उठ खड़ी हुई।

"मैं अभी देखता हूं।"

"नहीं, मैं देखूंगी।" कहने के साथ ही रानी साहिबा एक ही छलांग में बग्गी से नीचे आ गई। उसके पांव नगे थे।

"आप क्यों तकलीफ करती...।" उस घुड़सवार ने कहना चाहा।

"मुझे लगता है, कालचक्र से मुझे मुक्ति मिलने वाली है।" रानी साहिबा ने गम्भीर स्वर में कहा—"उस पुरानी किताब में ये ही लिखा था कि सफर के दौरान मैं एक पत्थर के पीछे छिपे युवक को देखूंगी, जो कि असल में दो होंगे। वे कालचक्र का हिस्सा नहीं होंगे। कालचक्र में फंसकर यहां पहुंचे होंगे। वो ही मेरी मुक्ति का साधन बनेंगे।"

"आपने दो युवकों को देखा?" घुड़सवार ने पूछा।

"नहीं, एक को। अगर वो दो हैं तो, किताब की बात सच हो सकती है। शायद ये वहीं हो। तुम यहीं ठहरो।" रानी साहिबा आगे बढ़ती कह उठी—"मैं वहां जाकर देखूंगी।"

"आपको वहां खतरा...।"

"चुप रहो।"

रानी साहिबा तीस–चालीस कदम का फासला तय करके पत्थर के पीछे की तरफ पहुंची।

जगमोहन तो रानी साहिबा से नजर मिलते ही, दुबक गया था। परंतु उसी पल ही घोड़ों की खामोश होती टापों का उसे एहसास से गया था कि काफिला अचानक ही रुक गया है।

जगमोहन को लगा कि इस तरह झांककर उसने गलती कर दी है। सोहनलाल उस वक्त गोली वाली सिग्रेट सुलगा रहा था। हालांकि कुएं में सिग्रेट–माचिस गीली हो गई थी, परंतु सिग्रेट–माचिस को कोई नुकसान नहीं पहुंचा था। उसने सिग्रेट सुलगाकर कश लिया कि तभी सामने आ खड़ी, रानी साहिबा पर उसकी नजर पड़ी।

रानी साहिबा सोहनलाल को धुआं उड़ाते देख रही थी।

सोहनलाल हड़बड़ाया–सा रानी साहिबा को देखने लगा।

"हम मुसीबत में पड़ गए हैं सोहनलाल।" जगमोहन ने धीमे स्वर में कहा।

"क्यों?"

"ये रानी साहिबा है और मुझे देखने के बाद ही इसने अपना काफिला रोका है।"

तभी रानी साहिबा उनके करीब आने लगी।

दोनों की निगाह उस पर जा टिकी थी।

"स्वागत है धुआं उड़ाने वाले इंसान।" रानी साहिबा चार कदम पर ठिठककर मुस्कराकर बोली।

"म...मैं?" सोहनलाल फौरन सीधा हुआ।

"तुम ही। उस किताब में लिखा है कि एक इंसान धुआं उड़ा रहा होगा। वो ही मुझे मुक्ति दिलाएगा।"

"कौन–सी किताब?"

"कालचक्र की किताब। जब मुझे कालचक्र के भीतरी हिस्से में स्थापित किया गया था, तभी वो किताब लिख दी गई थी कि धुआं उड़ाने वाले इंसान ही मुझे मुक्ति दिलाएगा, अगर मैं उसे खुश कर सकी तो...।"

"खुश? मैं...मैं तो खुश ही हूं।" सोहनलाल के होंठों से निकला।

"ये खुश नहीं, दूसरा खुश। वो खुश तुम्हें मैं करूंगी। अपनी बांहों में समेटकर। झूला झुलाकर।"

सोहनलाल ने जगमोहन को देखा।

जगमोहन मुस्कराया।

"ये क्या कह रही है?"

"तुम्हें कह रही है। मुझे नहीं।"

"ये मुझे खुश करने को कह रही है, लेकिन मैं...दुखी ही कब था।" सोहनलाल के होंठ सिकुड़ चुके थे।

जगमोहन मुस्करा रहा था।

सोहनलाल ने रानी साहिबा को देखा।

रानी साहिबा हौले से हंस पड़ी, फिर कह उठी।

"तुम घबरा रहे हो धुआं उड़ाने वाले, जबकि मैं तुम्हारे इंतजार में 50 साल की होने पर भी कुंआरी हूं।"

"म...मेरे इंतजार में।" सोहनलाल ने सकपकाकर जगमोहन को देखा।

"जन्मों का साथ लगता है।" जगमोहन मुस्कराकर सोहनलाल से बोला।

"ऐ धुआं उड़ाने वाले, तू मुझसे घबरा मत, मैं तेरे को फूलों की तरह रखूंगी।" वो कह उठी।

"फूलों की तरह।" सोहनलाल ने रानी साहिबा को देखा।

"हां, मैं तेरे को हर पल खुश रखूंगी। क्योंकि तू ही मेरे को कालचक्र से मुक्ति दिलाएगा। तेरे इंतजार में मैं मरी जा रही थी कि तू कब मिलेगा मुझे। किताब में लिखा है कि 50 बरस की होने पर, मुझे धुआं उड़ाने वाला मिलेगा। सब कुछ सच लिखा है उसमें। मेरे को ये पहले ही पता था।" रानी साहिबा बराबर मुस्करा रही थी—"मेरी तलाश पूरी हुई। मेरी उदासी के दिन दूर हुए। अब हम दोनों बहुत अच्छा जीवन व्यतीत करेंगे।"

"ये मुझे पागल कर देगी।" सोहनलाल जगमोहन से कह उठा।

"हम किसी बड़ी मुसीबत में फंसने जा रहे हैं।" जगमोहन गम्भीर हो गया था।

"तुम्हारा सेवक तुम्हें भ्रम में डाल रहा है। मैं मुसीबत नहीं हूं। मैं तुम्हारा प्यार हूं धुआं उड़ाने वाले। कब से तुम्हारा ही इंतजार कर रही थी। तुम्हारे लिए अभी तक मैं कुंआरी रही। वरना मेरे को पाने के लिए लोग लड़ाइयां लड़ते रहे, परंतु मैंने किसी के संग प्यार नहीं किया। क्योंकि उस किताब में लिखा है कि अगर मैं तुम्हारे मिलने तक कुंआरी रही तो तभी तुम्हारे द्वारा मैं मुक्ति पा सकूंगी।" कहकर वो आगे बढ़ी और हाथ आगे किया—"मेरा हाथ थामो।"

"क्यों?" सोहनलाल के होंठों से निकला।

"मैं तुम्हें अपने महल में ले चलूंगी। वहां हम प्रेम से रहेंगे।"

सोहनलाल ने व्याकुल से अंदाज में जगमोहन को देखा।

जगमोहन उलझन भरी नजरों से रानी साहिबा को देख रहा था।

"तुम मुझसे बात करते-करते अपने सेवक को क्यों देखने लगते हो। क्या उससे डरते हो?"

रानी साहिबा का हाथ अभी भी सोहनलाल की तरफ बढ़ा हुआ था।

"थाम लो मेरा हाथ।"—वो बोली।

"नहीं।" सोहनलाल कह उठा।

"मैं तुम्हें अच्छी नहीं लगती? क्या मैं सुंदर नहीं जो तुम...।"

"मैं तुम्हें नहीं जानता।"

"मेरे साथ चलोगे तो जान जाओगे।"

"मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊंगा।"

रानी साहिबा ने हाथ पीछे कर लिया और नाराजगी भरी नजरों से सोहनलाल को देखा।

"मेरा नाम नानिया है। लोग मुझे रानी साहिबा कहते हैं।" वो कह उठी।

सोहनलाल खामोश रहा।

"तुम्हें मेरे साथ चलना ही होगा।"

"नहीं।"

"मेरे पहरेदार तुम्हें जबर्दस्ती साथ ले जा सकते हैं।" नानिया बोली—"लेकिन मैं नहीं चाहती कि तुम्हारे साथ जबर्दस्ती हो। क्योंकि तुम्हारे इंतजार में मैं कब से बैठी थी।"

"तुम जानती हो, ये कालचक्र है?" जगमोहन ने कहा।

"अवश्य सेवक। कालचक्र की भीतरी परतों में मुझे डाला गया है।" नानिया कह उठी।

"किसने किया ऐसा?"

"सोबरा ने। परंतु अब कालचक्र पर जथूरा का कब्जा हो चुका है। जथूरा के इशारे पर ही इस वक्त कालचक्र काम कर रहा है।"

"हमें कालचक्र ने फंसाकर यहां फेंका है।"

"जानती हूं। तभी तो तुम दोनों यहां तक आ गए। परंतु तुम्हें आना ही था। वो किताब में लिखा है ऐसा।"

"कहां है किताब?"

"मेरे पास—मेरे महल में।"

कुछ पल वहां चुप्पी रही।

"ऐ सेवक। क्या तुम अपने मालिक को मेरे साथ चलने पर तैयार कर सकते हो?"

"क्यों हम तुम्हारे साथ चलें?"

"मुझे मुक्ति चाहिए कालचक्र से और किताब में लिखा है कि धुआं उड़ाने वाला ही मुझे मुक्ति दिलाएगा।"

"तुम धोखा भी हो सकती हो, हमारे लिए...।"

"क्या मैं तुम्हें ऐसी लगती हूं?"

"कालचक्र में कुछ भी हो सकता है।"

नानिया ने गहरी सांस ली और बोली।

"तो मुझे धुआं उड़ाने वाले के साथ जबर्दस्ती करनी ही पड़ेगी।"

तभी सोहनलाल कह उठा।

"मैं तुम्हारे साथ चलने को तैयार हूं।"

नानिया का चेहरा खिल उठा।

"तुम सच में मुझे प्यार करते हो धुआं उड़ाने वाले...।"

"मेरे खयाल में ये गलत होगा।" जगमोहन ने सोहनलाल से कहा।

"यहां हमारे लिए सब कुछ अनजाना और नया है। कहीं तो हमें कदम आगे बढ़ाने ही हैं।"

"परंतु इसके साथ जाने से हम किसी बड़ी मुसीबत में..."

"इसके साथ नहीं गए तो क्या गारंटी है कि हम मुसीबत में नहीं फंसेंगे।" सोहनलाल ने कहा।

जगमोहन के होंठ भिंच गए।

"हम कालचक्र में हैं। यहां हमारे लिए सिर्फ खतरे हैं। जो तुम्हें जथूरा के हादसों का पूर्वाभास करा रहा था, उसने भी कुएं में हमें यही कहा कि कालचक्र की गहरी परतों में हमारे सामने खतरे आएंगे, जिनसे बचना कठिन है। अगर बच गए तो उस स्थिति में ही हम पूर्वजन्म में प्रवेश कर सकेंगे।"

जगमोहन ने गहरी सांस ली। नानिया को देखा।

नानिया मुस्कराकर सोहनलाल से बोली।

"मैंने तुम दोनों की बातें सुनीं। तुम दोनों आशंका में फंसे हो। परंतु मेरे से तुम्हें कोई नुकसान नहीं होगा।"

"नुकसान क्यों नहीं होगा।" सोहनलाल बोला—"तुम भी तो कालचक्र का ही हिस्सा हो।"

"तुम्हारा शक जायज है, परंतु मैं तुम्हें नुकसान नहीं पहुंचाऊंगी, एक बार मेरे साथ चल के तो देखो।"

"एक बार साथ चलने पर ही हमारा काम हो गया तो..."

"धुआं उड़ाने वाले, तुम तो बहुत डरपोक हो। ऐसे में मुझे क्या मुक्ति दिलाओगे?"

"मैंने कब कहा कि मैं तुम्हारे लिए कुछ करूंगा।"

"तो उस किताब में ऐसा क्यों लिखा है?" नानिया ने सोच-भरे स्वर में कहा।

"और क्या-क्या लिखा है उस किताब में?"

"बहुत कुछ, परंतु वो मुझे समझ नहीं आता। अपने मतलब की बात ही समझ पाती हूं।"

"किसने लिखी वो किताब?"

"सोबरा ने। जब उसने कालचक्र की भीतरी परतों में मुझे बिठाया तो वो किताब भी मुझे दे दी थी, कहा कि ये किताब मुझे कालचक्र से आजाद कराएगी।"

"हैरानी है। सोबरा ने कालचक्र का निर्माण किया और वो तुम्हें कालचक्र से मुक्ति का रास्ता भी बता रहा है।"

"शायद तब सोबरा को आशंका रही होगी कि कालचक्र पर उसका भाई जथूरा, अपना कब्जा जमा सकता है।" नानिया बोली—"इस बात पर मैंने भी बहुत बार सोचा, परंतु किसी नतीजे पर नहीं पहुंच सकी। अब तुम चलो मेरे साथ। देर क्यों कर रहे हो। यहां गर्मी भी बहुत है। महल में पहुंचकर तुम मेरे साथ गुलाब जल में नहाना।"

सोहनलाल ने जगमोहन को देखा।

"अब मैं क्या करूं?"

"जैसा तुम चाहो।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा।

"तुम बात-बात पर अपने सेवक से इजाजत क्यों लेते हो?" नानिया तीखे स्वर में बोली।

"इजाजत नहीं सलाह ले रहा हूं। ये मुझे सलाह देने की सेवा करता है।

"ओह—समझी।" नानिया ने सिर हिलाया—"तो क्या सलाह दी इसने?"

"इसे तुम पर भरोसा नहीं। फिर भी ये कहता है कि एक बार तुम्हें आजमाकर देख लूं।"

"सलाह तो समझदारी वाली है परंतु देखने में ये इतना समझदार नहीं लगता।"

जगमोहन ने दूसरी तरफ मुंह फेर लिया।

नानिया ने सोहनलाल की तरफ हाथ बढ़ाया।

सोहनलाल ने गहरी सांस ली और उसके हाथ पर अपना हाथ रख दिया।

"ओह, कितना अच्छा लग रहा है, तुम्हारा हाथ अपने हाथों में पाकर। आओ, मेरे साथ आओ।"

सोहनलाल उसके साथ चल पड़ा।

जगमोहन होंठ सिकोड़े चार कदम पीछे था।

वे चट्टानों के पीछे से निकले तो सामने बग्गी और घुड़सवार दिखने लगे।

"तुम्हारा नाम क्या है धुआं उड़ाने वाले?"

"सोहनलाल।"

"कितना अच्छा नाम है, तुम तो...।"

आगे के शब्द नानिया के होंठों में ही रह गए।

दूर धूल का गुब्बार उड़ता दिखा।

"ओह।" नानिया के होंठों से निकला—"इस दिशा से तो बोगस के आदमी आते हैं।"

"बोगस कौन?" सोहनलाल ने कहा।

तभी एक घुड़सवार घोड़े को दौड़ाता पास आया।

"रानी साहिबा, ये बोगस के आदमी हैं। यहां से निकल चलिए। उनकी संख्या ज्यादा लगती है।"

"आओ।" नानिया चीखी।

फिर वे सब बग्गी की तरफ दौड़े।

नानिया ने सोहनलाल का हाथ थाम रखा था।

आनन-फानन वे तीनों बग्गी में बैठे।

"चलो।" वो घुड़सवार चीखा।

इसके साथ ही काफिला पुनः दौड़ पड़ा।

सोहनलाल नानिया के साथ ही बग्गी पर बैठ गया था जबकि जगमोहन को बैठने के लिए जगह नहीं मिली तो वो नीचे बग्गी के फर्श पर बैठ गया था। दौड़ती बग्गी में खड़ा रह पाना आसान नहीं था। दोनों सेविकाओं ने बड़ा-सा छाता अभी भी संभाल रखा था। परंतु बग्गी की रफ्तार छाते को डगमगा रही थी।

"रफ्तार तेज करो।" एक घुड़सवार चीखा।

काफिला बहुत तेजी से दौड़ रहा था।

धूल उड़ रही थी।

घोड़ों की टापों की आवाज वातावरण में गूंज रही थी।

नानिया ने गर्दन घुमाकर उधर देखा, जिधर से बोगस वाले घुड़सवार आ रहे थे।

वो अब स्पष्ट नजर आने लगे थे। उनकी रफ्तार भी कम नहीं थी। वे दस से ज्यादा लग रहे थे।

तभी सामने जंगल नजर आने लगा।

नानिया विचलित-सी हो उठी।

"हम भागकर निकल नहीं सकेंगे। आगे जंगल आ गया है। हमारी रफ्तार कम हो जाएगी।" वो बड़बड़ाई।

"तो उनकी रफ्तार भी तो कम हो जाएगी।" सोहनलाल ने कहा।

"उनकी और हमारी स्थिति में फर्क है। वो झगड़ना चाहते हैं और हम झगड़े से बचना चाहते हैं।"

"तो तुम उससे डर रही हो?"

"मुझे तुम्हारी चिंता है सोहनलाल।"

"मेरी चिंता?" सोहनलाल के होंठों से निकला।

"हां। तुम्हारे दम पर मैं कालचक्र से मुक्ति पा लेना चाहती हूं, जैसा कि किताब में लिखा है। तुम मुझे इस कालचक्र से आजाद करा दोगे। इस झगड़े में अगर तुम्हें कुछ हो गया तो कालचक्र से मुझे मुक्ति कभी नहीं मिलेगी।"

सोहनलाल मुस्करा पड़ा।

तभी नीचे बैठा जगमोहन बोला।

"बोगस है कौन—क्यों तुम लोगों से झगड़ा करना चाहता है?"

"वो मुझे पाना चाहता है। बरसों से इसी चेष्टा में लगा है।"

"फिर तो तुम्हें डरना नहीं चाहिए।" सोहनलाल बोला।

"क्यों?"

"ज्यादा से ज्यादा यही होगा कि वो तुम्हें पा लेगा।"

नानिया के चेहरे पर कड़वे भाव उभरे।

"रफ्तार तेज करो।" एक घुड़सवार के चीखने की आवाज आई।

"सोहनलाल, मैंने तुम्हें बताया था कि मैं 50 साल की उम्र तक भी कुंआरी क्यों रही।"

"याद है।"

"तो मुझे तुम्हारे अलावा किसी और ने पा लिया तो मैं कालचक्र से मुक्ति नहीं पा सकूंगी। कालचक्र से बाहर निकलने तक मुझे तुम्हारी बनकर ही रहना होगा। तुम्हें खुश रखना होगा। तुम नहीं जानते कि बोगस बहुत बुरा आदमी है। उसने मुझे पकड़ लिया तो नौकरानी बनाकर रखेगा मुझे। जब चाहेगा ऊपर चढ़ जाएगा, जब चाहेगा नीचे उतर जाएगा। मेरे आदमी उसे हर बार हरा देते हैं, जब भी उसने मुझे पाने की चेष्टा की।"

"तुम्हारे आदमियों ने उसे मारा क्यों नहीं?" नीचे बैठा जगमोहन बोला।

"उसे मारा नहीं जा सकता। कालचक्र वाले आपस में किसी की जान नहीं ले सकते। सोबरा ने हमें बनाया ही इस तरह है। अगर हम आपस में झगड़कर मरते रहे तो कालचक्र तबाह हो जाएगा।"

"ओह।"

"परंतु किसी को भी कैद करके रख सकते हैं। मेरे सिपाही इस

बार भी बोगस और उसके आदमियों का मुकाबला करके उन्हें हरा देते, परंतु मुझे सिर्फ तुम्हारी चिंता है कि तुम्हें न कुछ हो जाए।"

"मुझे कुछ नहीं होगा। तुम्हें जो करना है करो। मैं अपनी रक्षा और सुरक्षा, दोनों ही कर सकता हूं।"

"लेकिन मुझे तुम्हारी बात पर भरोसा नहीं।"

"क्यों?"

"तुम कालचक्र के बाहर के हो। बोगस तुम्हारी जान ले सकता है। तुम मर सकते हो। मर गए तो मैं कालचक्र से कभी मुक्त नहीं हो पाऊंगी। इस बार बिना झगड़े के, हमें बचकर ही निकलना होगा।"

काफिला तेजी से दौड़ा जा रहा था।

टापों की घड़ाघड़ आवाजें गूंज रही थीं।

सामने का जंगल अब करीब आ गया था।

पीछे दाईं तरफ से सोबरा के 12-14 घुड़सवार दौड़े आ रहे थे। पहले की अपेक्षा वो अब करीब थे। यही गति रहती तो कुछ देर बाद उन्होंने करीब आ जाना था। परंतु अब मुख्य समस्या ये थी कि सामने जंगल था और जंगल में घोड़ों को रफ्तार से दौड़ाना सम्भव नहीं था।

यानी कि नानिया और बोगस के आदमियों में झगड़ा होना ही था। तभी एक घुड़सवार बग्गी के साथ दौड़ता चिल्ला उठा।

"आगे जंगल है रानी साहिबा। वहां हमारी रफ्तार खत्म हो जाएगी। घोड़ों को चलकर जंगल पार करना होगा और इस स्थिति में बोगस के आदमियों से झगड़ा होगा। वो हमारे पास पहुंच जाएंगे।"

"ऐसा है तो हमें मुकाबले के लिए तैयार रहना चाहिए।" नानिया दृढ़ स्वर में कह उठी—"मैं इस सोहनलाल की वजह से मुकाबला टालना चाहती थी। ये वो ही है, जो मुझे कालचक्र से आजाद कराएगा। परंतु अब मुकाबला टल नहीं सकता तो तैयार रहो, जंगल में पहुंचते ही, फौरन घात लगा लो। बोगस और उसके आदमी जब जंगल में प्रवेश करें तो उन पर हमला बोल दो। उन्हें संभलने मत दो और हरा दो।"

"ठीक है रानी साहिबा।"

"मैं सोहनलाल के साथ जंगल में निकल जाऊंगी। रुकूंगी नहीं।"

"हम सब कुछ संभाल लेंगे।" कहने के साथ ही वो घुड़सवार और तेज हो गया और आगे अपने साथियों से जा मिला।

"तो हम तुम्हारे सैनिकों से अलग हो जाएंगे।" सोहनलाल ने नानिया से कहा।

"इस वक्त इसी में हमारा भला है। मैं तुम्हें बचाना चाहती हूं।" नानिया व्याकुल थी।

उसी पल जगमोहन सिर उठाकर कह उठा।

"ऐसा तो नहीं कि तुम स्वयं बोगस से डर रही हो और भागने के लिए सोहनलाल की आड़ ले रही हो।"

नानिया ने जगमोहन को घूरकर देखा फिर सोहनलाल से कहा।

"तुम्हारा सेवक बकवास बहुत करता है।"

"इसकी परवाह मत करो। इसे चुप रहने की आदत नहीं है। वैसे क्या इसने सही नहीं कहा?"

"गलत कहा है। तुम भी इसकी बातों में आ रहे हो। मेरी ताकत नहीं जानते तुम दोनों। जानते होते तो ये सब न कहते। इस वक्त हालात मेरे विपरीत हैं, क्योंकि मेरे साथ सैनिक बहुत कम हैं।" नानिया का स्वर कठोर हो गया—"लेकिन अब मै सबसे पहला काम बोगस के ठिकाने पर हमला बोलकर, उसे बंदी बनाऊंगी।"

"ये बात तो तुमने बहादुरी वाली कही।" सोहनलाल मुस्करा पड़ा।

तभी उनका काफिला तेजी से जंगल में प्रवेश करता चला गया।

▭ ▭

फैले पेड़ों की डालों से दौड़ती बग्गी अटक रही थी। उसकी रफ्तार कम हो गई थी। युवतियों ने संभाल रखा छाता तो कब का जंगल में प्रवेश करते ही पेड़ में अटककर पीछे छूट गया था। फिर एकाएक घोड़े हिनहिनाकर ठिठक गए। आगे घना जंगल शुरू हो रहा था। घने पेड़ों की मोटी-मोटी डालें नीचे तक झुकी हुई थीं।

कोचवान बग्गी से उतरता कह उठा।

"रानी साहिबा, घने जंगल की वजह से बग्गी अब आगे नहीं जा पाएगी। वो रास्ता दूसरा था जहां से हम बग्गी ले जाते थे।"

"मेरे खयाल में हम सुरक्षित हैं।" नानिया बग्गी से उतरती कह उठी—"हम पैदल ही आगे जाएंगे।"

सोहनलाल, जगमोहन और दोनों सेविकाएं भी नीचे आ गईं।

सोहनलाल ने पीछे देखा, जहां से वे आए थे।

परंतु उधर जंगल ही दिखा।

"बोगस के आदमियों की परवाह मत करो।" नानिया सोहनलाल से बोली—"मेरे आदमी उन्हें हरा देंगे।"

"ऐसा है तो हमें वापस चलना चाहिए।" जगमोहन बोला।

"नहीं। वापस जाकर मैं सोहनलाल की जान खतरे में नहीं डालूंगी।" नानिया बोल पड़ी।

जगमोहन ने मुस्कराकर सोहनलाल से कहा।

"यहां तेरी वैल्यू बढ़ गई है।"

"भगवान जाने, किस्मत में क्या लिखा है।" सोहनलाल बड़बड़ा उठा।

नानिया ने आगे बढ़कर सोहनलाल का हाथ थामा और मुस्कराई।

सोहनलाल ने उसे देखा।

"क्या तुम्हें मुझ पर भरोसा नहीं सोहनलाल?" नानिया प्यार-भरे स्वर में कह उठी।

"भरोसा हो या न हो, क्या फर्क पड़ता है।" सोहनलाल मुस्कराया।

"बहुत फर्क पड़ता है। अगर तुम मुझ पर भरोसा करो तो मैं खुश हो जाऊंगी। फिर तुम्हें भी खुश रखूंगी।"

तभी कोचवान कह उठा।

"रानी साहिबा हमें फौरन आगे बढ़ना चाहिए। अभी हम खतरे से बाहर नहीं हैं।"

"चलो।" नानिया सोहनलाल का हाथ पकड़े रही।

सब आगे बढ़ने लगे।

आगे कोचवान फिर नानिया, सोहनलाल और जगमोहन।

सबसे पीछे नानिया की दोनों सेविकाएं चल रही थीं।

बेहद घना जंगल था ये। आसमान तो स्पष्ट नजर ही नहीं आ रहा था। न ही आसमान से रोशनी जंगल की जमीन तक पहुंच रही थी। गुम-सुम सा उजाला था जैसे अंधेरा और रोशनी घुल-मिल गए हो।

कोचवान ने अपनी तलवार निकालकर हाथ में ले रखी थी कि खतरे का सामना कर सके। जंगल की मिट्टी में नमी की वजह से उनके कदमों की आवाजें भी ठीक से नहीं सुनाई दे रही थीं।

तभी चलते-चलते सोहनलाल बोला।

"तुम्हारा महल कितनी दूर है?"

"अभी दूर है।"

"कितनी?"

"इसी तरह दिन भर चलते रहें तो महल तक पहुंच जाएंगे।"

"अभी तक कितना दिन बीता है?"

"आधा दिन।"

"थक जाऊंगा मैं चलते-चलते।"

"फिक्र मत करो। मेरी सेविकाएं तुम्हें उठा लेंगी।"

"इतना भी बुरा हाल नहीं होगा कि ऐसी नौबत आए।"

जगमोहन ने मुस्कराकर सोहनलाल को देखा।

"तुम्हारी ऐसी खातिर पहले कभी नहीं हुई होगी।" जगमोहन ने कहा।

"ठीक कहते हो। ये पहला मौका है।" सोहनलाल ने गहरी सांस ली।

"मुझे लगता है कि तुम्हारा सेवक तुम्हें ठीक से इज्जत नहीं देता।" नानिया बोली।

"हां, मैंने इसे ज्यादा सिर पर चढ़ा रखा है।"

वे सब तेजी से आगे बढ़ते जा रहे थे।

जंगल घना हो चुका था।

"तुम धुआं नहीं उड़ा रहे।" नानिया ने चलते-चलते सोहनलाल को देखा।

"उड़ाऊं क्या?"

"हां, तुम्हारा धुआं उड़ाना मुझे अच्छा लगता है।" नानिया ने प्यार से कहा।

सोहनलाल ने सिग्रेट सुलगाकर कश लिया।

"ओह।" नानिया ने गहरी सांस ली—"इस धुएं की खुशबू कितनी अच्छी है।"

"ये तुम्हें डुबो देगी।" जगमोहन ने कहा।

"तुम ऐसा क्यों कहते हो सेवक।" नानिया ने जगमोहन को देखा।

"मैं पागल हूं, इसलिए।"

"कभी-कभी तुम मुझे पागल ही लगते...।"

तभी आगे चलता कोचवान ठिठक गया।

सब ठिठके।

उनके कानों में घोड़े की टापों की आवाज पड़ी।

सबकी नजरें इधर-उधर घूमने लगीं।

जगमोहन ने ये बात फौरन महसूस कर ली कि वो एक ही घोड़े की टापों की आवाज है।

"एक घोड़ा है।" सोहनलाल ने जगमोहन को देखा।

"नानिया का कोई साथी होगा।" जगमोहन बोला।

"तुमने मेरा नाम लिया।" नानिया का स्वर कठोर हो गया—"सब मुझे रानी साहिबा कहते हैं।"

"कहते होंगे। मैं तुम्हारा सेवक या तुम्हारी जागीर का हिस्सा नहीं हूं।" जगमोहन बोला।

"बहुत बदतमीज हो तुम।"

"मेरे सेवक को कुछ मत कहो।" सोहनलाल बोला।

"ठीक है, तुम कहते हो तो, नहीं कहती। मैं अपने सोहनलाल को खुश रखूंगी। जो तुम चाहोगे, वही करूंगी।"

"क्या कहने।" जगमोहन व्यंग से कह उठा।

घोड़े की टापों की आवाज करीब आ गई थी।

वो सब वहीं खड़े नजरें घुमाते रहे। तभी कोचवान बोला।

"खतरा है।"

"ये तुमने कैसे कहा कोचवान?"

"रानी साहिबा। मैं अपने घोड़ों की टापों की आवाज पहचानता हूं। ये हमारे घोड़े की टापों की आवाज नहीं है।"

"तुम्हें धोखा भी हो सकता है।"

"नहीं रानी साहिबा। अपनी बात पर मुझे भरोसा है।"

"वो रहा।" तभी जगमोहन कह उठा।

पेड़ों के बीच में से वो घुड़सवार पचास कदम दूर नजर आ रहा था। वहां आकर उसने घोड़ा रोक लिया था।

"ये...ये तो बोगस है।" नानिया के होंठों से निकला—"अपने आदमियों को वहां मुकाबले के लिए छोड़ आया है और मुझे ढूंढ़ने के लिए जंगल तक आ गया।" नानिया के शब्दों में कठोरता आ गई थी।

"मैं उसे सबक सिखाता हूं।" कहकर कोचवान ने उस तरफ जाना चाहा।

"रुक जाओ कोचवान।" नानिया बोली—"क्या पता वो हताश होकर वापस चला जाए।"

कोचवान ठिठक गया।

"मुझे एक मौका दें रानी साहिबा।"

"तुम उसका मुकाबला नहीं कर सकोगे। वो ज्यादा बहादुर है। तुम्हें गिरा देगा।"

"मैं उसे सबक सिखा दूंगा।"

तभी जगमोहन कह उठा।

"उसने हमें देख लिया है।"

ये सुनते ही नानिया का चेहरा कठोर हो गया।

"सोहनलाल।" नानिया चिंतित स्वर में बोली—"जब वो पास आए तो तुम कहीं छिप जाना।"

"क्यों?"

"मुझे तुम्हारी जान बचानी है। तुम कालचक्र का हिस्सा नहीं हो। बोगस तुम्हें मार सकता है।"

"मैं उसकी परवाह नहीं करता।"

"समझा करो—वो...।"

"वो अब हमारी तरफ आ रहा है।" जगमोहन बोला।

पेड़ों के बीच में से नजर आता वो घुड़सवार, जगह बनाता इसी तरफ आ रहा था धीरे-धीरे। घोड़े की बेहद धीमी टापों की आवाज कभी कभार कानों में पड़ जाती थी।

सबकी निगाह उस पर रहीं।

आखिरकार वो करीब और सामने आ गया।

वो बोगस ही था।

पांच फीट का गठीले बदन वाला व्यक्ति। एक हाथ में लगाम थी तो दूसरे में तलवार। सिर पर कम मात्रा में बाल थे। उसकी उम्र पचास के आसपास थी। सुर्ख-सा चेहरा था उसका। कमर में कपड़ा बांध रखा था। घोड़े पर वो जिस अंदाज में बैठा था, उससे वो लड़ाका लग रहा था।

"तुम्हें इतने करीब से देखकर मुझे बहुत अच्छा लगा नानिया।" बोगस कह उठा।

नानिया का चेहरा कठोर हो गया।

"तुम मुझसे झगड़ा क्यों करती हो?" बोगस बोला—"मैं तो तुम्हें सिर्फ पाना चाहता हूं।"

"मुझे कोई नहीं पा सकता।"

"पागल हो तुम जो खुद को तुमने कुंआरा रखा हुआ है अभी तक। तुम जिसका इंतजार कर रही हो, वो कभी नहीं आएगा। क्यों अपने शरीर को बेकार कर रही हो, इसका इस्तेमाल करो। मैंने हमेशा तुमसे दोस्ती ही चाही, परंतु तुमने झगड़ा किया।" बोगस शांत स्वर में कह रहा था—"आओ, हम एक हो जाएं नानिया। मैं तुम्हें बहुत प्यार करूंगा।"

नानिया के दांत भिंचे रहे।

कोचवान बार-बार नानिया को देख रहा था।

"ये लोग कौन हैं?" बोगस ने जगमोहन और सोहनलाल को देखा—"पहले इन्हें देखा नहीं।"

"ये।" नानिया ने सोहनलाल का हाथ थामकर कहा—"वो ही है, जिसका मुझे इंतजार था।"

"नहीं।"

"सच कहा मैंने।"

"फिर तो आज तुम्हें पाने की इच्छा को छोड़कर, इसे मारूंगा।" बोगस का स्वर कठोर हो गया।

नानिया कुछ व्याकुल हुई।

"यहां से चले जाओ बोगस।" नानिया का स्वर गुस्से से कांपा—"वरना आज तुम बचोगे नहीं।"

"तुम मेरा कुछ भी नहीं कर सकती। हम सब कालचक्र के अंश हैं। हम तभी मर सकते हैं, जब कालचक्र का अंत हो जाए। परंतु कालचक्र इतना शक्तिशाली है कि कोई इसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता।" बोगस खतरनाक स्वर में बोला—"इस वक्त तुम्हारे साथ आदमी नहीं हैं। इसका फायदा मुझे मिलेगा। पहले मैं तुम्हारे आशिक की जान लूंगा फिर तुम्हें पाऊंगा। ये कालचक्र के बाहर से आया है। इसे मैं मौत दे सकता हूं।"

"मुझे हुक्म दीजिए रानी साहिबा।" तलवार थामे कोचवान कह उठा।

"जाओ और सबक सिखा दो इस कमीने को।" नानिया गुर्रा उठी।

कोचवान उसी पल तलवार थामे सतर्कता से, बोगस की तरफ बढ़ने लगा।

घोड़े पर बैठा बोगस कह उठा।

"तू मेरा क्या मुकाबला करेगा। कोचवान भी तलवार चलाने लगे अब तो।"

"भूल में है तू, कोचवान बनने से पहले मैं लड़ाका था।"

"पर मैंने तो तेरे को तलवार थामे कभी नहीं देखा।" बोगस हंसा।

जगमोहन और सोहनलाल की नजरें मिलीं।

वो खामोश रहे।

तभी नानिया सोहनलाल के कान में बोली।

"तुम यहां से भाग जाओ सोहनलाल। मैं तुम्हें दोबारा तलाश कर लूंगी।"

"फिक्र मत करो। इसे तो मेरा सेवक ठीक कर देगा।"

"तुम भागते क्यों नहीं?" परेशान सी नानिया कह उठी।

"मेरा सेवक सब ठीक करेगा। तुम देखती रहो।"

"पागल मत बनो। बोगस बहुत अच्छी तलवार चलाता है।"

"मैं भाग गया और बोगस ने तुम्हें हासिल कर लिया तो तुम्हारी मुक्ति पाने का सपना, सपना ही रह जाएगा।"

नानिया ने सख्ती से होंठ भींच लिए।

"इसलिए मेरे जाने या न जाने से कोई फर्क नहीं पड़ता।" सोहनलाल बोला—"हमें कुछ नहीं होगा।"

"तुम बोगस को नहीं जानते सोहनलाल।"

"तुम मेरे सेवक को नहीं जानती।" सोहनलाल मुस्करा पड़ा।

बोगस घोड़े पर बैठा था, तलवार थामे।

पास पहुंचकर कोचवान ने पूरी ताकत से तलवार का वार बोगस पर किया।

बोगस ने उसी पल अपनी तलवार से उसके वार को रोका और थोड़ा-सा नीचे झुकते हुए तलवार को कोचवान की छाती में धंसा दिया। कोचवान जोरों से चीखा। तलवार हाथ से छूटकर नीचे जा गिरी। बोगस ने अपनी तलवार झटके से उसके सीने से खींच ली तो कोचवान नीचे जा गिरा और गहरी-गहरी सांसें लगा। फिर उठ न सका।

बोगस ने हंसकर नानिया को देखा।

नानिया का चेहरा चिंतित था।

"अब कहो नानिया। तुम मेरे पास आती हो या तुम्हारे आशिक को मार दूं।"

"तुम...तुम मेरी दोनों सेविकाओं को ले लो। ये कम उम्र की हैं। तुम्हें आनंद देंगी।" नानिया बोली।

"मुझे तुम्हारी जरूरत है।"

तभी सोहनलाल नानिया से बोला।

"तुम तो कहती थी कि कालचक्र के भीतर वाले एक-दूसरे की जान नहीं ले सकते।"

"गलत क्या कहा मैंने।"

"तुम्हारा कोचवान तो...।"

"वो कुछ देर में उठ जाएगा। उसके घाव खुद-ब-खुद ही भर जाएंगे।"

"ओह।"

"अब मैं क्या करूं। ये मेरा कुंआरापन खत्म कर देगा जबकि तुम्हारे आ जाने की वजह से, ये वक्त, मेरे लिए कालचक्र से मुक्ति का है।" नानिया ने चिंतित स्वर में कहा—"इस वक्त मैं तुम्हें भी नहीं बचा सकती।"

"लेकिन मैं तुम्हें बचा सकता हूं।" सोहनलाल मुस्कराया।

"असम्भव।"

"मेरा सेवक, बोगस को हरा देगा, बल्कि मार देगा। क्योंकि हम कालचक्र के नहीं हैं। यहां पर हम किसी को भी मार सकते हैं और कोई भी हमें मार सकता है।" सोहनलाल ने शांत स्वर में कहा।

"बोगस बहुत ताकतवर हैं और तुम्हारा सेवक मुझे किसी काम का नहीं लगता।"

"ठीक है। अब तुम मेरे सेवक का काम देखो।" कहकर सोहनलाल ने जगमोहन को देखा।
"क्या करूं?" जगमोहन ने पूछा।
"मार साले को।"
"हमें क्या फायदा इससे?"
"फायदा नुकसान तो पता नहीं। लेकिन इस वक्त तो इसे खत्म कर। रिवॉल्वर है न?"
"है।" जगमोहन ने कहा और बोगस की तरफ बढ़ा।
उसे अपनी तरफ आते पाकर बोगस की आंखें सिकुड़ीं।
जगमोहन चंद कदम पहले ठिठका और शांत स्वर में कह उठा।
"मैं तुम्हें मारना नहीं चाहता। बेहतर है कि तुम यहां से चले जाओ।"
बोगस हंस पड़ा।
"तो तुम मेरी जान लोगे। ठीक है लो।"
"मैं मजाक नहीं कर रहा।" जगमोहन बोला—"चले जाओ यहां से।"
"मैं भी मजाक नहीं कर रहा। तुम मेरी जान लो।"
नानिया सोहनलाल से कह उठी।
"तुम्हारा सेवक तो पागल है। क्या इस तरह बातों से किसी को सबक सिखाया जाता है। फिर ये खाली हाथ बोगस का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता। बोगस अभी इसे मार देगा।"
सोहनलाल की शांत निगाह जगमोहन और बोगस पर थी।
जगमोहन ने रिवॉल्वर निकाली और बोगस से कहा।
"अभी भी तुम्हारे पास मौका है यहां से भाग जाने का।"
बोगस ने उसके हाथ में पकड़ी रिवॉल्वर को अजीब-सी नजरों से देखा।
"क्या तुम इससे मुझे मारोगे?"
"हां।"
"हैरानी है कि इस जरा-सी चीज से तुम तलवार का मुकाबला कैसे करोगे। आओ, हम मुकाबला करें। मैं भी तो देखूं कि तुम किस बूते पर मुझे यहां से चले जाने के लिए धमका रहे हो।"
जगमोहन ने रिवॉल्वर वाला हाथ घोड़े पर बैठे बोगस की तरफ किया और गोली चला दी।
कानों को फाड़ देने वाला धमाका गूंजा।
बोगस के हिलने की वजह से निशाना चूक गया और गोली कंधे पर रगड़ दे गई।

बोगस के होंठों से हल्की-सी कराह निकली।

उसी क्षण जगमोहन ने दूसरा फायर किया। बोगस के सिर में गोली जा लगी।

बोगस उछलकर घोड़े से नीचे गिरा और फिर हिला भी नहीं।

जगमोहन ने रिवॉल्वर जेब में रख ली।

"ये क्या हुआ?" नानिया के होंठों से हैरानी भरा स्वर निकला।

"बोगस मर गया।"

"क...कैसे?"

"मेरे सेवक ने मार दिया उसे।"

"ओह, कितनी हैरानी की बात है कि तलवार के बिना मार दिया उसे। उसके हाथ में क्या था, जिससे...।"

"वो हमारा हथियार है। हम तलवारों से नहीं लड़ते।" सोहनलाल मुस्कराया—"अब तो तुम खुश हो?"

"बहुत खुश।" नानिया वास्तव में खुश थी—"धमाके की आवाज कितनी मधुर है।"

"मधुर?" सोहनलाल ने नानिया को देखा।

"और नहीं तो क्या। मुझे धमाके की आवाज बहुत अच्छी लगी।"

"लेकिन हमारी दुनिया के लोग तो इस धमाके से डरते हैं।"

"मैं नहीं डरती।" कहकर नानिया बोगस की लाश की तरफ बढ़ गई।

सोहनलाल जगमोहन के पास पहुंचा।

"तुम्हारा क्या खयाल है कि हमें क्या करना चाहिए?" सोहनलाल बोला।

"मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा।"

"तो नानिया के साथ ही रहें? अंधेरे में रोशनी का बिंदु तो है हमारे लिए।"

"जैसा तुम्हें ठीक लगे। हमारे पास कोई और रास्ता भी तो नहीं।"

तभी नानिया की आवाज आई। वो बोगस की लाश के पास खड़ी थी।

"ये तो सच में मर गया।"

"तुम क्या समझी थी इस तरह गिरकर मजाक कर रहा था।" सोहनलाल हंसा।

"मुझे इस पर भरोसा नहीं।" जगमोहन बोला—"नानिया कालचक्र का ही हिस्सा है।"

"मैं नानिया पर पूरा भरोसा नहीं कर रहा। उससे सतर्क हूं।" सोहनलाल ने कहा।

"नानिया जिस किताब का जिक्र कर रही है मैं वो किताब देखना चाहता हूं।" जगमोहन बोला।

"किताब उसके महल में है। वो हमें वहीं तो ले जा रही है।"

नानिया कोचवान के पास पहुंची। सोहनलाल भी उस तरफ बढ़ गया।

"अब तुम कैसे हो?"

"पहले से ठीक हूं। घाव भर गया है। मैं बोगस से हार गया।"

"कोई बात नहीं। वो तुमसे ज्यादा ताकतवर था। उठ जाओ अब। हमें महल के लिए रवाना होना है।"

नानिया की दोनों सेविकाओं में से एक जगमोहन के पास पहुंची।

"तुम तो बहुत बहादुर हो।"

जगमोहन ने उसे देखा।

वो सांवले रंग की, तीखे नैन-नक्श वाली, खूबसूरत युवती थी। इतनी देर साथ रहने पर भी, जगमोहन ने अभी तक उसे नहीं देखा था। इस वक्त वो खुश थी।

"शुक्रिया।"

"तुम्हें मालूम है कि मैं भी अभी तक कुंआरी हूं।" वो फिर कह उठी।

"अच्छा। इसमें मेरी तो कोई गलती नहीं।"

"रानी साहिबा के करीब रहने वाली सेविका, कुंआरी ही हो। ये रानी साहिबा का हुक्म है। परंतु अब रानी साहिबा को वो मिल गया है, जिसका उन्हें इंतजार था। इसलिए हम पर से भी ये बंदिश हट जाएगी।"

"तो मैं क्या करूं?"

"मैं तुम्हारे साथ प्यार करूंगी। मेरा नाम कोमा है।"

"मेरे साथ?" जगमोहन ने उसे घूरा।

"हां, तुम बहादुर हो। वोगस को तुमने जिस तरह मारा, वो काम हर कोई नहीं कर सकता।"

"तुम मेरे पास से दूर चली जाओ वरना मैं तुम्हें भी बोगस की तरह मार दूंगा।"

"मैं जानती हूं तुम ऐसा नहीं करोगे।" कोमा मुस्कराई।

"क्यों नहीं करूंगा?"

"तुम सिर्फ रानी साहिबा के दुश्मन को ही मारोगे।"

जगमोहन ने उसे घूरा।

कोमा प्यार से जगमोहन को देख रही थी।

जगमोहन सोहनलाल और नानिया की तरफ बढ़ गया, जो कि कोचवान के पास मौजूद थे।

कोचवान अब उठ खड़ा हुआ था। वो स्वस्थ था। उसका घाव जैसे जादुई ताकत ने भर दिया था।

"तुम तो ठीक हो गए।" जगमोहन उसे देखकर मुस्कराया।

"परंतु मुझे दुख है कि मैं बोगस को हरा नहीं पाया।"

"कोई भी हराएं, काम होना चाहिए।"

सोहनलाल ने नानिया को देखकर पूछा।

"तुम हमसे मिलने से पहले, काफिले के साथ कहां से आ रही थीं?"

"अपने माता-पिता से मिलकर।"

"माता-पिता?"

"हां, वो भी कालचक्र का अंश बने हुए कैद हैं। कहीं दूर रहते हैं वो। कभी-कभी मैं उनसे मिलने जाती हूं। परंतु जब तुम मुझे आजाद कर दोगे, तो मेरे माता-पिता खुद-ब-खुद ही आजाद हो जाएंगे।"

"वो कैसे?"

"कालचक्र में एक ही खून के लोग, जो भी करते हैं, उसका असर दूसरे पर होता है। मैं मरूंगी तो मेरे माता-पिता भी मर जाएंगे। मैं आजाद होऊंगी तो वो भी कालचक्र से बाहर आ जाएंगे।"

"अजीब बात है।"

"सोबरा के कालचक्र को कोई समझ नहीं पाया।" नानिया बोली—"बहुत कुछ ऐसा है जो उलझन में डाल देता है।"

"मैं तुम्हारी वो किताब देखना चाहता हूं, जिसमें लिखा है कि धुआं उड़ाने वाला आकर तुम्हें कालचक्र से मुक्ति दिलाएगा।"

"अवश्य सेवक। वो किताब मेरे महल में है। वहां पहुंचकर तुम किताब देख लेना।"

"उसमें और भी कई बातें लिखी हैं?"

"हां। परंतु वो मेरी समझ में नहीं आतीं।"

तभी कोचवान कह उठा।

"हमें फौरन आगे बढ़ जाना चाहिए, ताकि दिन की रोशनी रहते महल तक पहुंच सके।"

"अवश्य...हम...।" नानिया अपने शब्द पूरे न कर सकी।

तभी कुछ दूर जैसे किसी ने होंठों से अजीब शब्द निकाला हो।

कोचवान घबराकर कह उठा।

"ओह ये तो चिमटा जाति के लोग हैं। आपके पक्के दुश्मन हैं।

आपने कुछ महीने पहले ही इनके पचास लोगों को कैद कर लिया था। क्योंकि ये आपके सेवक बनने से इंकार कर रहे थे।"

"ये यहां क्या कर रहे हैं?"

"इधर ही, जंगल में चिमटा जाति रहती है। वो लोग शायद धमाके सुनकर इस तरफ आ गए हैं। होंठों से आवाजें निकालकर वे इस तरह का इशारा तब देते हैं, जब वे जंगल में बहुत बड़ा घेरा बनाकर आगे बढ़ रहे हों।"

अबकी बार दूसरी तरफ से होंठों से निकलने वाली कल-कल की तीव्र आवाज गूंजी।

"ये तो बहुत बुरा होने वाला है रानी साहिबा। चिमटा जाति के लोग आपको कैद कर लेंगे।"

"घबराने की कोई जरूरत नहीं।" नानिया ने विश्वास-भरे स्वर में कहा।

"ये आप क्या कह रही हैं।" कोचवान ने व्याकुल निगाहों से रानी साहिबा को देखा।

"सोहनलाल का सेवक, उन सबको मार देगा।"

"क्या?" जगमोहन के होंठों से निकला।

"जिस तरह तुमने बोगस को मारा, उस तरह...।"

"दो-चार की बात हो तो, जुदा बात है, ज्यादा संख्या हो तो मैं नहीं मार सकता।" जगमोहन बोला।

"ये क्या कह रहे हो।" नानिया कह उठी।

"ये सच कह रहा है।" सोहनलाल बोला—"पांच-सात से ज्यादा के मरने की उम्मीद मत करना।"

"और रानी साहिबा।" कोचवान घबराया हुआ था—"उनकी संख्या तो ज्यादा होगी। वो समूह में एक साथ निकलते हैं।"

"कितनी संख्या हो सकती है?"

"50 या फिर 100।"

जगमोहन ने सोहनलाल से कहा।

"हम उनसे बच नहीं सकते।"

"लेकिन हमें बचना है।" सोहनलाल बोला।

"कैसे बचेंगे?"

सोहनलाल ने नानिया से पूछा।

"तुम बताओ कैसे बचेंगे?"

"मैं क्या बताऊं। अगर मेरे पास सैनिक होते तो उन्हें देखकर वो भाग जाते।" नानिया परेशान स्वर में कह उठी।

"ये सोचो कि हम कैसे बच सकते हैं।"

"मैं...मैं नहीं जानती।"

"तुम बताओ।" जगमोहन ने कोचवान से पूछा।

"मैं भी नहीं जानता। वो...वो हमें कैद कर लेंगे। रानी साहिबा से खार खाते हैं।" कोचवान ने कहा।

"यहां तो मुसीबतें ही मुसीबतें हैं।" सोहनलाल कह उठा।

"एक बार महल में पहुंच जाएं, फिर सब ठीक हो जाएगा।" नानिया ने जैसे उसे तसल्ली दी।

"पहुचेंगे, तब ना।" सोहनलाल ने बुरा सा मुंह बनाया।

"सब पेड़ों पर चढ़ जाओ।" जगमोहन बोला—"ऊपरी डाल पर खुद को छिपाने की चेष्टा करो। सतर्क रहकर ये काम करना होगा, ताकि वे लोग नीचे से निकल जाएं। सब अलग-अलग पेड़ों पर चढ़ेंगे।"

अब यही एकमात्र रास्ता था।

वे सब अलग-अलग पेड़ों पर चढ़ने लगे।

जगमोहन पेड़ पर चढ़ा। बीस फुट ऊपर चढ़कर नीचे देखा तो झल्ला उठा। कोमा भी उसी पेड़ पर चढ़ी आ रही थी। जगमोहन से जब नजरें मिलीं तो वो मुस्कराई।

"दांत क्या फाड़ रही है। अब ऊपर आ जा।" जगमोहन ने तीखे स्वर में कहा।

कुछ ही पलों में कोमा ऊपर उसके पास आ पहुंची। दोनों मोटी डाल पर बैठ गए।

"तू गुस्से में बहुत अच्छा लगता है।"

"चुप कर। जब मैंने कहा था कि अलग-अलग पेड़ पर चढ़ना है तो तू क्यों...।"

"तू मुझे अच्छा लगता...।"

"चुप...चुप। चुप कर।" जगमोहन मुंह बनाकर बोला।

कोमा चुप कर गई।

ऊपर बैठे जगमोहन की निगाह हर तरफ घूमने लगी।

वहां से जगमोहन को बोगस की लाश नजर आ रही थी। बोगस का घोड़ा नजर आ रहा था। जगमोहन को अपनी गलती का एहसास हुआ। जो लोग भी इस तरफ आ रहे थे, वो बोगस की लाश और घोड़ा देखकर यहीं रुक जाएंगे और आसपास की जगह की अच्छी तरह तलाशी लेंगे। शायद वे देख लें कि, वे पेड़ों पर हैं। उन्हें यहां से कुछ दूर जाकर पेड़ों पर छिपना चाहिए था। परंतु अब कुछ नहीं हो सकता था। वो लोग कभी भी यहां पहुंच सकते थे।

तभी कल-कल की आवाज जंगल में गूंजी।

वो आवाज पहले की अपेक्षा, करीब से आई थी।

जगमोहन ने कोमा को देखा तो उसे देखती कोमा मुस्करा पड़ी।

जगमोहन ने मुंह फेर लिया।

"जग्गू।"

जगमोहन इस आवाज को सुनकर चिहुंका।

कोमा भी हैरान हुई। वो कह उठी।

"हमारे पास कोई है।"

"चुप कर।" जगमोहन कह उठा।

"तू बहुत किस्मत वाला है जग्गू।" वो धीमी आवाज पुनः कानों में पड़ी।

जगमोहन के होंठ सिकुड़ चुके थे।

"पहचाना नहीं मुझे क्या। मैं वो ही हूं जो तेरे को जथूरा के हादसों का पूर्वाभास कराता रहा हूं।" (ये विस्तार से जानने के लिए पढ़ें **राजा पॉकेट बुक्स** से प्रकाशित **अनिल मोहन** का पूर्व प्रकाशित उपन्यास **'जथूरा'**।)

"पहचानता हूं तेरी आवाज को। लेकिन तू है कौन?"

"अभी अपने बारे में नहीं बता सकता। कालचक्र की भीतरी परतों में हूं। अपने बारे में कुछ कहा तो बात जथूरा तक पहुंच जाएगी।"

"तूने मेरे को किस्मत वाला कहा?"

"हां। शायद तू है।" कानों में पड़ने वाली मध्यम-सी आवाज में मुस्कान भरी थी।

"कैसे?"

"जथूरा ने अंजाने में तुझे कालचक्र के ऐसे हिस्से में ला फेंका है, जो कि कुछ खास है।"

"मैं समझा नहीं कि क्या खास है?"

"यूं तो कालचक्र दुश्मन को नुकसान ही पहुंचाता है। मैंने तो सोचा था कि तुम लोगों के सामने ढेरों खतरे आएंगे, परंतु कालचक्र का ये हिस्सा, शायद तुम लोगों को नुकसान नहीं पहुंचाएगा।"

"क्यों?"

"ये कालचक्र सोबरा का है। जिस पर जथूरा ने कब्जा कर रखा है। शायद ऐसा ही कोई अंदेशा होगा सोबरा को, तो उसने कालचक्र के इस हिस्से को ऐसा बनाया कि यहां कोई फंसे तो उसे जान का खतरा न हो।"

"ये बात तुम कैसे जानते हो?" जगमोहन ने पूछा।

"मैंने कालचक्र के इस हिस्से की जानकारी पाने के लिए भाग-दौड़ की तो मुझे कहीं भी खतरा नजर नहीं आया।"

"तो अब मैं क्या करूं?"
"अपनी समझ के हिसाब से चलो।"
"मैं कालचक्र से बाहर कैसे निकलूंगा।"
"नहीं जानता। कालचक्र को समझना मेरे लिए भी आसान नहीं।" धीमी आवाज कानों में पड़ी।
"मतलब कि तुम मेरी कोई सहायता नहीं कर सकते।"
"अभी तक तो नहीं। वैसे भी कालचक्र के इस हिस्से में तुम्हारे लिए खतरे कम हैं। सोबरा ने कालचक्र का ये हिस्सा जाने क्यों बनाया है। क्योंकि ये हिस्सा कमजोर है और कालचक्र के मालिक को नुकसान दे सकता है।"
"चिमटा जाति के लोग इस तरफ आ रहे हैं, उनसे हमें खतरा है।"
"मुझे तो ऐसा नहीं लगता। तुम समझदारी से काम लेना।" आवाज कानों में पड़ी।
"मुझे वापस पहुंचना है। देवराज चौहान मेरा इंतजार...।"
"देवा तो इस तरह उलझ चुका है कि उसे तेरा ध्यान ही नहीं है।"
"क्या मतलब?"
"कालचक्र में फंस चुके हैं वो।"
"ओह।"
"कालचक्र का ही कोई इंसान जग्गू बना इस वक्त देवा के पास मौजूद है।"
"नहीं।"
"मैंने सच कहा है। उसका नाम मखानी है।"
"वो देवराज चौहान को धोखे से नुकसान पहुंचा सकता है।" जगमोहन ने बेचैनी से कहा—"ये बात देवराज चौहान को बतानी होगी।"
"देवा तेरी बात क्यों मानेगा। वो तो उसी को असली जग्गू समझेगा, जो उसके पास है।"
"ओह।"
"तू अपनी फिक्र कर। मत भूल कि तू भी कालचक्र में फंसा है। यहां कभी भी कुछ भी हो सकता है। वो देख, चिमटा जाति वाले लोग आ गए हैं। अब तू उनसे निबट। मैं जाता हूं।" इसके साथ ही खामोशी छा गई।
जगमोहन ने कुछ दूरी पर नीचे देखा।
बोगस की लाश पर तीन-चार लोग झुके हुए थे। दो आदमी

उसके घोड़े पर हाथ फेर रहे थे। उनके जिस्म पर कमर पर, कपड़ा लिपटा हुआ था। शरीर के रंग काले जैसे थे। उनके हाथों में कुल्हाड़ी जैसे हथियार थे।

जगमोहन खामोशी से उन्हें देखता रहा।

तभी कुछ लोग और वहां आ गए।

उसी पल एक ने मुंह में उंगली डालकर जोरों से कल-कल की आवाज निकाली।

जवाब में कुछ दूर से वैसी ही आवाज आई।

"ये बोगस है।" एक आदमी बोला—"मैं इसे पहचानता हूं, लेकिन ये तो मरा पड़ा है।"

"असम्भव।" दूसरा बोला—"यहां कोई अपनी जान कैसे गंवा सकता है। कालचक्र वाले किसी की जान ले ही नहीं सकते।"

वो लोग आपस में एक-दूसरे को देखने लगे।

"बोगस की मौत से ये तो स्पष्ट है कि कोई बाहरी व्यक्ति कालचक्र में आ गया है। वो हम सबको मार सकता है।"

"वो ताकतवर होगा।"

"अवश्य वो ताकतवर है, तभी कालचक्र का सामना करता हुआ, वो यहां तक आ गया है।"

"वो तो हमारे लिए भी खतरा बन सकता है।"

"ओह, उसने तो हमें भी चिंता में डाल दिया है।"

जगमोहन सब कुछ सुन रहा था।

तभी तीस-चालीस लोग इकट्ठे वहां आ पहुंचे। उस भीड़ के आगे साढ़े चार फुट का एक व्यक्ति चल रहा था। जिसके सिर के बाल सफेद थे। वो फुर्तीला और सेहतमंद लग रहा था।

"सरदार।" पहले खड़े लोगों में से एक ने कहा—"गजब हो गया। बोगस की किसी ने हत्या कर दी।"

"हत्या? ये कैसे सम्भव है। कालचक्र में फंसा कोई भी दूसरे की जान लेने में सफल नहीं हो सकता।" सरदार ने कहा।

"आप खुद ही देख लीजिए।"

सरदार आगे बढ़ा और बोगस की लाश के पास पहुंचा।

सरदार के माथे पर बल पड़ गए। वो नीचे झुका और टटोलकर बोगस की लाश को देखने लगा फिर माथे पर देखा, जहां गोली धंसी थी और वहां से खून बाहर आ गया था।

"ओह।" सरदार का चेहरा एकाएक खुशी से भर उठा—"तो वो आ गया कालचक्र में।"

"कौन सरदार?"

"बाहर का आदमी। सोबरा ने कहा था कि बाहर से आने वाला ही हमें कालचक्र से मुक्ति दिलाएगा। वो हमें कालचक्र से बाहर ले जाएगा। मुझे अभी तक सोबरा की ये बात याद है।"

"ये तो सोबरा का कालचक्र है फिर उसने हमारी आजादी का रास्ता, तुम्हें क्यों बताया है?"

"ये मैं नहीं जानता। परंतु जो मैंने कहा, वो सच है।" सरदार सीधा खड़े होते कह उठा। उसका चेहरा खुशी से चमक रहा था—"हमारी आजादी का वक्त करीब आ गया है। पूरा जंगल छान मारो। उसे ढूंढ़ो और इज्जत से बस्ती तक ले आओ।"

"वो हमारे साथ क्यों आएगा। वो तो हमें भी मार देगा।"

▭ ▭

जगमोहन को उनकी बातें सुनकर महसूस हो गया कि इनसे उसे कोई खतरा नहीं। नानिया की तरह ये लोग भी यही सोचते हैं कि बाहर से आने वाला इंसान उन्हें कालचक्र से मुक्ति दिलाएगा। जगमोहन ने कोमा से कहा।

"तुम यहीं रहो।"

"लेकिन तुम कहां जा रहे हो?"

"नीचे।"

"वो चिमटा जाति के हैं। खतरनाक हैं। तुम्हें मार देंगे।"

"मेरी फिक्र करने की जरूरत नहीं। तुम यहीं रहो।" जगमोहन ने कहा और नीचे उतरने लगा।

जगमोहन उस तरफ बढ़ा जिधर वे सब खड़े थे।

चंद पलों में ही उनकी निगाह जगमोहन पर पड़ गई।

जगमोहन को पास आता पाकर, वो पीछे हटने लगे।

परंतु सरदार वहीं खड़ा, उसे देखता रहा।

जगमोहन पांच कदमों के फासले पर पहुंचकर ठिठक गया।

"बोगस को तुमने मारा?" सरदार ने तेज स्वर में पूछा।

"हां।" जगमोहन ने कहा।

"हमें कैसे यकीन हो?"

जगमोहन ने रिवॉल्वर निकाली और हाथ सरदार की तरफ उठाकर बोला।

"तुम्हें मार के दिखाऊं?"

"नहीं। मुझे मत मारना। तुम मुझे कालचक्र के नहीं लगते?" सरदार बोला।

"मैं बाहर से आया हूं।" जगमोहन रिवॉल्वर को जेब में रखता कह उठा।

एकाएक सरदार मुस्कराया और आगे बढ़कर जगमोहन का हाथ थाम लिया।

"तुम तो हमारे दोस्त हो।"

"तुम कौन हो?"

"मैं चिमटा जाति का सरदार हूं। मुझे तो कब से तुम्हारा इंतजार था।"

"क्यों?"

"सोबरा ने कहा था कि कालचक्र के इस हिस्से में कोई बाहरी व्यक्ति आएगा जो हम सबको आजाद कराएगा।"

"और क्या कहा था?"

"सोबरा ने कहा था कि ये वो वक्त होगा, जब उसके कालचक्र पर जथूरा अधिकार कर चुका होगा।"

"तो सोबरा को पहले ही पता था कि कालचक्र जथूरा के अधिकार में चला जाएगा।" जगमोहन बोला।

"तभी तो उसने ऐसा कहा।"

"लेकिन मैं तुम लोगों को कैसे कालचक्र से बाहर ले जा सकता हूं। मुझे बाहर जाने का रास्ता नहीं मालूम।"

"मुझे मालूम है।" सरदार कह उठा।

"तुम्हें मालूम है?" जगमोहन के होंठों से अजीब-सा स्वर निकला।

"हां, रास्ता मैं जानता...।"

"जानते हो तो तुम बाहर क्यों न निकल गए?"

"मैंने बाहर जाने की चेष्टा की, परंतु सफल नहीं हो सका। हर बार भटक जाता हूं।" सरदार उसका हाथ थपथपाकर कह उठा—"तुम हमें कालचक्र से बाहर निकाल दो। हम तुम्हारे एहसानमंद रहेंगे।"

"तुम्हारी बातें कालचक्र की कोई चाल भी हो सकती हैं।"

सरदार फौरन उसका हाथ छोड़कर दो कदम पीछे हटा।

"क्या तुम्हें मेरी बातों का भरोसा नहीं?"

"नहीं।" जगमोहन ने इंकार में सिर हिलाया।

"ऐसा मत कहो। तुम्हें मेरा कहा मान लेना चाहिए।" सरदार बोला।

अब तक बाकी लोगों के मन से जगमोहन का डर निकल गया था। वो जरा-जरा पास आने लगे थे।

यही वो वक्त था कि जब सोहनलाल पेड़ से उतरा और सामने आ गया।

सरदार और उसके साथी सोहनलाल को देखकर चौंके।

"ये कौन है?" सरदार ने सोहनलाल को घूरते हुए पूछा।
"मेरा साथी है?"
"तुम दो हो?"
"हां।"
"रानी साहिबा का कहा सुन रखा है मैंने कि दो लोग आएंगे बाहरी दुनिया से। उनमें से एक धुआं उड़ाने वाला होगा। धुआं उड़ाने वाला ही रानी साहिबा को कालचक्र से मुक्ति दिलाएगा।" सरदार बोला।
"और तुम्हें कौन मुक्ति दिलाएगा?" जगमोहन ने पूछा।
"नहीं जानता। सोबरा ने सिर्फ ये कहा था कि जब भी कालचक्र के इस हिस्से में बाहर से लोग आएंगे, तुम सबको मुक्ति मिलेगी।"
जगमोहन ने सोहनलाल को देखा।
तभी सरदार बोला।
"तुममें से धुआं उड़ाने वाला कौन है?"
"मैं।" सोहनलाल ने कहा और सिग्रेट सुलगा ली।
कश लिया। मुंह से धुआं निकाला।
"ओह—वो तुम ही हो।"
तभी सोहनलाल ने पलटकर ऊंचे स्वर में कहा।
"सब नीचे आ जाओ।"
"क्या और लोग भी हैं?" सरदार ने पूछा।
"हां, परंतु उन्हें तुम जानते हो।" जगमोहन ने कहा।
तभी कोचवान, नानिया और कोमा, अन्य सेविका पेड़ों से उतर आए।
नानिया को देखते ही सरदार के माथे पर बल पड़ गए थे। जबकि अन्य गुस्से से चिल्लाने लगे।
"ये रानी साहिबा है।"
"इसने हमारे साथियों को कैद करके सेवक बना लिया है।"
"हम इसे कैद करेंगे।"
"नहीं छोड़ेंगे तुझे।"
सरदार ने हाथ उठाकर अपने लोगों को देखा तो वो खामोश हो गए।
नानिया के चेहरे पर गम्भीरता थी। बगल में खड़ा कोचवान धीमे स्वर में कह उठा।
"रानी साहिबा, अब हमारी खैर नहीं।"
"चुप रहो। सोहनलाल सब ठीक कर लेगा। चिमटा जाति भी कालचक्र से बाहर निकलना चाहती है।" नानिया बोली।

सरदार ने जगमोहन और सोहनलाल को देखकर कहा।
"मुझे न पता था कि रानी साहिबा तुम लोगों के साथ हैं।"
"अब तो पता चल गया।" जगमोहन ने कहा।
"रानी साहिबा को हमारे हवाले कर दो।" सरदार ने कहा—"इसने हमारे लोग कैद कर रखे हैं।"
जगमोहन पलटकर नानिया से बोला।
"ये सच कह रहा है?"
"हां।"
"तुम्हें इसके लोगों को आजाद करना होगा।" जगमोहन कह उठा।
"तुम सेवक होकर मुझे आदेश कैसे दे सकते हो?" नानिया उखड़ी।
"क्या तुम्हें सरदार के हवाले कर दूं।" जगमोहन ने तीखे स्वर में कहा।
"ऐसा मत करना, ये ठीक नहीं होगा।" नानिया जल्दी-से कह उठी।
"ये जो कहे, वो मानो।" सोहनलाल बोला—"इसी में मेरी खुशी है।"
"ठीक है। मैं चिमटा जाति के लोगों को आजाद कर दूंगी।" नानिया बोली—"तुम्हारी खुशी के लिए।"
जगमोहन ने सरदार से कहा।
"सुन लिया तुमने।"
"मुझे रानी साहिवा पर भरोसा नहीं।" सरदार बोला।
पीछे खड़े उसके लोग भी कह उठे।
"हां—हमें इस औरत पर जरा भी भरोसा नहीं है।"
"मुझ पर भरोसा है?" जगमोहन ने कहा।
"तुम पर?"
"हां। मैं...।"
"लेकिन तुम तो अभी कह रहे थे कि तुम्हें मुझ पर भरोसा नहीं है।"
"मुझे नहीं है, परंतु तुम्हें मुझ पर भरोसा है क्या? सोबरा ने कहा था कि मैं तुम लोगों को कालचक्र से बाहर ले जाऊंगा।"
"तुम्हें हम पर भरोसा नहीं तो हम तुम पर कैसे भरोसा कर सकते हैं। भरोसा तो बनते-बनते ही बनता है।"
"तो अब तुम क्या चाहते हो?"
"हम रानी साहिबा को तब तक अपने यहां बंदी बनाकर रखेंगे, जब तक हमारे लोग इसकी कैद से लौट नहीं आते।"

"इसके लिए जरूरी है कि नानिया महल में जाए और तुम्हारे साथियों को आजाद करे।"...जगमोहन ने कहा।

"ये हम नहीं जानते। परंतु हम रानी साहिबा को कैद...।"

तभी सोहनलाल कह उठा।

"तुम तब तक इसे कैद रख सकते हो जब तक नानिया तुम्हारे लोगों को आजाद नहीं करती।"

"मुझे?" जगमोहन पल-भर के लिए सकपका उठा।

"हां—तुम...।"

"मैं ही क्यों, तुम क्यों नहीं?" जगमोहन का स्वर कड़वा हो गया।

"मैं...तो...मैं...।"

"बेटे औरत का नशा तेरे सिर पर चढ़ गया है।" जगमोहन ने तीखे स्वर में कहा।

"ये बात नहीं, मैं तो...।"

तभी सरदार कह उठा।

"हमें मंजूर है। हम इसे कैद में रखेंगे।"

"हो गया फैसला।" जगमोहन ने सोहनलाल को देखते हुए कड़वे स्वर में कहा।

"मैं नानिया के साथ महल जाकर, चिमटा जाति के लोगों को कैद से जल्दी छुड़वाऊंगा।" सोहनलाल कह उठा।

"क्यों नहीं, अब तो तू महल का राजा है। क्योंकि रानी तेरे पर फिदा है।"

"ये बात नहीं मैं तो...।"

तभी सरदार जगमोहन से कह उठा।

"तुम हमारे साथ चलो। मुझे तुमसे कई बातें भी करनी हैं।"

"बातें?" जगमोहन ने उसे देखा।

"हां, यही कि तुम हमें कालचक्र से कैसे बाहर निकालोगे। मैं तुम्हें बाहर निकलने का रास्ता भी बताऊंगा।"

जगमोहन ने सोहनलाल से कहा।

"नानिया जिस किताब का जिक्र कर रही थी, मुझे वो किताब भी चाहिए।"

"सरदार के लोगों को छोड़ने के बाद तुम महल में...।"

"मैं महल में कैसे आऊंगा। मुझे क्या पता कि महल कहां पर है।" जगमोहन झल्लाया।

सोहनलाल की निगाह नानिया की सेविकाओं पर गई, तभी नानिया कह उठी।

“मेरी एक सेविका तुम्हारे पास रहेगी। वो तुम्हें महल तक ले आएगी।”

“रानी साहिबा का हुक्म सिर-आंखों पर।” कोमा ने कहा और जगमोहन के पास आ खड़ी हुई।

जगमोहन ने कोमा को घूरा।

कोमा मुस्करा पड़ी।

‘हर तरफ मुसीबत ही मुसीबत है।’ जगमोहन बड़बड़ा उठा।

नानिया आगे बढ़ी और सोहनलाल का हाथ थाम लिया।

सोहनलाल ने कश लिया तो नानिया मुस्कराकर बोली।

“धुएं की सुगंध कितनी अच्छी है।”

सोहनलाल उसे देखकर मुस्कराया।

तभी कोचवान ने नानिया से कहा।

“हम चलें रानी साहिबा। फैसला हो गया। अब हमारा यहां कोई काम नहीं।”

“हां, हमें चलना चाहिए। क्यों सोहनलाल?” नानिया ने सोहनलाल को रेखा।

“हां-हां...चलो।”

“उल्लू का पट्ठा।” जगमोहन कह उठा—“चिमटा जाति के लोगों को जल्दी ही आजाद करा के भेजना।”

“मैं जाते ही ये काम करूंगा।” सोहनलाल बोला—“क्यों नानिया?”

“हां, सोहनलाल।” नानिया ने कहा—“तब अंधेरा हो जाएगा। परंतु ये काम अंधेरे में कर दिया जाएगा।”

उसके बाद कोचवान, एक सेविका, सोहनलाल और नानिया वहां से आगे बढ़ गए।

जगमोहन ने सरदार को देखा।

सरदार मुस्कराकर बोला।

“तुमने कैसे सोच लिया कि मैं तुम्हें आजाद कर दूंगा।”

“क्या कहना चाहते हो?”

“तुम मुझे कालचक्र से बाहर निकाल सकते हो। हम सबको बाहर निकाल सकते हो, तो मैं तुम्हें अपने से दूर क्यों जाने दूंगा।”

जगमोहन मुस्करा पड़ा।

“ये हमसे चालाकी कर रहा है जग्गू।” कोमा कह उठी।

“जग्गू?” जगमोहन ने कोमा को देखा।

“वो तुम किसी से बात कर रहे थे पेड़ पर। वो मुझे नजर नहीं आ रहा था। वो तुम्हें जग्गू ही तो कह रहा था।”

"और तुमने मेरा नाम याद रख लिया।"

"क्यों न रखूंगी। तुम मुझे अच्छे जो लगते हो।" कोमा ने प्यार से कहा।

"कहां जाऊं?" जगमोहन बड़बड़ाया फिर रिवॉल्वर निकालकर सरदार से कहा—"इसे जानते हो। इसी ने मेरे इशारे पर बोगस को मारा था। इससे मैं तुम सब लोगों को मार दूंगा।"

सरदार के चेहरे पर भय के भाव उभरे।

"मैं यहां तुम्हारे लिए नहीं, अपने लिए रुका हूं। ताकि तुमसे कालचक्र की बातें जान सकूं। उस रास्ते के बारे में जान सकूं, जिसका तुम जिक्र कर रहे हो। याद रखो, मुझसे तुम लोग मेहमानों की तरह बर्ताव करोगे। जहां भी तुम लोगों ने चालाकी दिखाई, वहीं मैं सबको बोगस की तरह मार दूंगा।"

सरदार बेचैन दिख रहा था।

"रही बात कालचक्र से तुम लोगों को बाहर निकालने की तो अगर मैं ऐसा कर सका तो, जरूर करूंगा। मुझे खुशी होगी तुम लोगों के काम आकर। अब चलो, मुझे वो जगह दिखाओ, जहां पर तुम लोग रहते हो।"

▭ ▭

अब हम दूसरे पात्रों की तरफ चलते हैं।

देवराज चौहान, मोना चौधरी, पारसनाथ, महाजन, रुस्तम राव, बांकेलाल राठौर, लक्ष्मण दास,सपन चड्ढा, मोमो जिन्न और जगमोहन के रूप मे मखानी। पूरा मजा लेने के लिए तो आपको पूर्व प्रकाशित उपन्यास **'जथूरा'** पढ़ना पड़ेगा। मोटे तौर पर इतना बता देता हूं कि पूर्वजन्म की महाशक्ति 'जथूरा' नहीं चाहता कि ये लोग पूर्वजन्म की यात्रा करें। क्योंकि इस बार इनका पूर्वजन्म में जाने का मतलब है, जथूरा से टकराव होगा। जो कि जथूरा के लिए नुकसान वाली बात है। जथूरा इन्हें रोकने के लिए भरपूर चेष्टा कर रहा है। अंत में जथूरा ने इन सब पर कालचक्र फेंका। उस कालचक्र में फंसकर ये सब एक-एक करके इस अज्ञात जगह पर आ गए। यहां सब बेहोश हैं।

सिवाय लक्ष्मण दाम, मोमो जिन्न, सपन चढ्ढा और जगमोहन बने मखानी के। हम एक बार फिर पाठकों को याद दिला दें कि मोमो जिन्न की इच्छाएं किसी शक्ति ने जगा दी हैं। अब मोमो जिन्न अपने मन में उठने वाली इंसानी इच्छाओं की वजह से परेशान है कि अगर ये बात जथूरा के सेवकों को पता चल गई तो वे उसे मार देंगे।

इधर अपनी इच्छाओं को पूरा करने की परेशानी भी उसे और व्याकुल कर रही हैं। अब आगे पढ़ें—

मोमो जिन्न की बांहें थामे लक्ष्मण दास और सपन चढ्ढा जिस जगह पहुंचे, वो समुद्र के बीचोबीच जमीन का थोड़ा-सा उभरा हिस्सा था।

टापू भी कह सकते हैं उसे, परंतु वो मात्र एक किलोमीटर से ज्यादा बड़ा नहीं था।

समुद्र की लहरें किनारे पर पड़े पत्थरों से टकरा रही थीं। पानी की आवाजें उभर रही थीं।

ठंडी नम हवा थी।

धूप थी, परंतु बे-असर थी।

"सपन।" लक्ष्मण दास कह उठा—"वाह, कितना खूबसूरत नजारा है।"

"सच में।" सपन चड्ढा समुद्र निहारता कह उठा।

"हम कितनी अच्छी जगह आ पहुंचे।"

"मुझे तो भूख लग रही है।"

दोनों फौरन पलटे।

पीछे मोमो जिन्न खड़ा था।

दोनों की खुशी हवा हो गई।

"ये साला हमारा पीछा कब छोड़ेगा।"

"ऐसा मत कहो। मैं अब तुम्हारे भरोसे हूं।" मोमो जिन्न ने गहरी सांस ली।

"हमारे भरोसे?"

"जब से मेरे भीतर किसी ने इच्छाएं जगा दी हैं, तब से मैं न तो जिन्न रहा हूं न इंसान। जथूरा द्वारा भेजा गया हूं कि तुम दोनों पर काबू रखूं और काम लेता रहूं। लेकिन...।"

"तेरे को हम कई दिनों से सह रहे हैं।"

"पहले तू कहता था कि हमें नंगा करके सड़कों पर घुमाएगा। जबसे तेरे में इच्छाएं जागी हैं, तब से तूने अपनी मांगों से हमें पागल कर दिया है। एक मिनट भी चैन से नहीं बैठने दिया।" लक्ष्मण दास गुस्से से बोला।

"लक्ष्मण।" सपन ने टोका।

"क्या है?"

"अब चिंता की कोई बात नहीं। यहां इस टापू पर ये हमें क्या तंग करेगा।"

"ये बात भी ठीक कही तूने।"

"यहां किसी को बताना मत कि मुझमें इच्छाएं जाग गई हैं।" मोमो जिन्न बोला—"वरना जथूरा मुझे मार देगा।"

"मार दे।"

"ऐसा मत कहो। मैं मर गया तो जथूरा मेरी जगह पर लोमा जिन्न को भेज देगा। लोमा तो वैसे ही बहुत अकड़ू है। वो बाद में बात करता है, पहले सिर पर चपत मारता है। तुम गंजे हो जाओगे।"

"कहां फंस गए।"

"मुझे भूख लगी है।"

"इतनी जल्दी तुम्हें भूख लग गई।"

"जल्दी कहां, मैं तुम दोनों को मुम्बई से पलों में यहां ले आया हूं। मेहनत करूंगा तो भूख भी लगेगी। इंसानों को भी तो मेहनत के बाद भूख लगती है। मुझे भी लग रही...।"

मोमो जिन्न कहते-कहते रुका और सिर एक तरफ करके इस तरह हिलाने लगा जैसे किसी की बात सुन रहा हो। इस दौरान उसकी आंखें बंद हो गई थीं।

करीब मिनट भर यही स्थिति रही फिर सिर सीधा करते बोला।

"जथूरा के सेवकों ने नए आदेश दिए हैं।"

"नए आदेश?" सपन चड्ढा ने मुसीबत भरे ढंग से उसे देखा।

"हां। हमें उस तरफ जाना होगा। वहां पेड़ों के पीछे देवराज चौहान और मोना चौधरी बेहोश पड़े हैं। उनके साथ के लोग भी वहां बेहोश हैं। उनमें जो जगमोहन है, वो कालचक्र का ही हिस्सा है। मखानी है वो...।"

"तो हमें क्या करना है?"

"हमें उन्हें चैन से नहीं रहने देना। उनमें झगड़ा कराना है कि वो चैन से न रह सकें। परंतु ये सब तो दिखावा है, हम कुछ नहीं करेंगे। जथूरा का काम करने का अब मेरा मन नहीं होता। जब से मेरी इच्छाएं जगी हैं, मैं अपने लिए ही कुछ करना चाहता हूं। सुनो, यहां जलेबी मिल सकती है।"

"जलेबी?" लक्ष्मण दास ने बुरा-सा मुंह बनाया।

"हां, मीठा खाने का मन हो रहा है। परंतु मैं जानता हूं कि इस वीरान टापू पर ऐसा कुछ नहीं मिलेगा खाने को। चलो मखानी से बात करनी है। इससे पहले कि उन सबको होश आए। ध्यान रखे, मखानी के सामने तुम लोग मेरे सामने इस तरह रहोगे कि जैसे मेरे गुलाम हो।"

"नहीं। ऐसा नहीं करेंगे हम।"

"समझा करो यार, दिखावा ही तो करना है। वरना मखानी ने रिपोर्ट आगे भेज दी कि मोमो जिन्न पर मुझे शक है तो मशीनों पर बैठे जथूरा के सेवक, फौरन मशीनों द्वारा मेरी तारों को चैक करेंगे और उन्हें पता लगते देर नहीं लगेगी कि मेरे में इच्छाएं जाग गई हैं। वो फौरन मुझे मार देंगे। उसके बाद तुम्हारे लिए लोमा जिन्न को भेज देंगे जो बात बाद में करेगा और सिर में चपत पहले...।"

"ठीक है, ठीक है दिमाग मत खा।"

"तूने हमसे वादा किया था कि मौका मिलते ही हमें आजाद कर देगा।"

"वादा याद है।"

"याद ही नहीं रखना, कुछ करना भी है हमें आजाद कराने के लिए।"

"जरूर करूंगा। अब एक काम और करो।"

"क्या?"

"बोलो जथूरा महान है।"

लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा ने मोमो जिन्न को घूरा।

"कह दो यार।" मोमो जिन्न खुशामंद भरे स्वर में बोला—"इधर तुम ये कहोगे तो उधर मेरे खाते में चढ़ जाएगा कि मोमो जिन्न का काम ठीक चल रहा है। मेरा भला होगा ये कह दोगे।"

"तुम बहुत कमीने हो।"

"जो भी कहो, परंतु एक बार कह दो कि जथूरा महान है।"

"तेरी हमारी ज्यादा पटने वाली नहीं।" सपन चड्ढा ने चेतावनी भरे स्वर में कहा।

"जितना समय निकलता है वो तो निकाल। फिर की फिर देखेंगे।"

लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा की नजरें मिलीं।

"कह दो यार।"

"जथूरा महान है।" लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा ने एक ही स्वर में कहा।

"जान बची।" मोमो जिन्न ने गहरी सांस ली—"आओ, उस तरफ चलते हैं। वहां कालचक्र का हिस्सा मखानी मौजूद है।"

"ये कौन है?" लक्ष्मण दास ने पूछा।

"पूछ मत बहुत बड़ा हरामी है।" मोमो जिन्न बोला।

"तुझसे भी बड़ा?"

"मुझ जैसे शरीफ को क्यों बदनाम करते हो। मौज तो मखानी ले रहा है।" मोमो जिन्न कह उठा।

▭ ▭

तीनों वहां से आगे बढ़े और चलते हुए उस जगह को पार करके वहां आ पहुंचे, जहां उन्हें हरियाली और पेड़ नजर आ रहे थे। चट्टानों से टकराने की लहरों की आवाज यहां भी स्पष्ट सुनाई दे रही थी।

कुछ आगे बढ़े कि सपन चड्ढा ठिठककर कह उठा।

"ये क्या।"

लक्ष्मण दास भी ठिठका।

सामने पेड़ों के बीच काफी बड़ी खुली जगह थी। वहां घास भी थी और पहाड़ी पत्थर भी बिखरे हुए थे। जहां कई लोग बेहोश पड़े नजर आ रहे थे। आसमान में सूरज के सामने बार-बार बादलों के टुकड़े आ जाते थे, जिसकी वजह से नीचे कुछ देर के लिए छाया हो जाती थी।

मोमो जिन्न ने अपनी चोंचदार नाक में पड़ी नथनी को छुआ। दोनों को देखा।

"बहुत सारे लोग बेहोश हैं यहां।"

"ये देवराज चौहान, मोना चौधरी और उनके साथी हैं।" मोमो जिन्न ने कहा।

"देवराज चौहान ने मुझे यहां तुम्हारे साथ देख लिया तो वो मुझे छोड़ेगा नहीं।" लक्ष्मण दास बोला।

"क्यों?" मोमो जिन्न बोला।

"क्योंकि हम तुम्हारे साथ हैं। तुम्हारे कहने पर हम देवराज चौहान और मोना चौधरी का झगड़ा करा रहे थे। ये बात सबको मालूम हो चुकी है। एक बार तो इन लोगों ने हमें छोड़ दिया, परंतु अब...।"

"वो देख लक्ष्मण।"

लक्ष्मण दास ने नजर घुमाई।

मोमो जिन्न ने भी उधर देखा।

जगमोहन एक तरफ से चला आ रहा था।

"सावधान।" मोमो जिन्न धीमे स्वर में बोला—"इसके सामने ये ही जाहिर करना कि तुम दोनों मेरे गुलाम हो। ये कालचक्र का ही हिस्सा मखानी है। सतर्क रहना इसके सामने।"

सपन चड्ढा और लक्ष्मण दास की नजरें मिलीं।

जगमोहन यानी मखानी पास आया और मुस्कराकर मोमो जिन्न से बोला।

"मुझे पहचानते हो?"

"हां। खबर मिल गई है मुझे तुम्हारे बारे में। तुम मखानी हो।"

"सही कहा।"

"अब जगमोहन के रूप में हो।" मोमो जिन्न ने अपनी अकड़ कायम रखी

"हां, इस बात को कोई नहीं जानता। ये दोनों तुम्हारे गुलाम हैं?" मखानी ने लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा को देखा।

"पक्के गुलाम हैं। जो मैं कहूंगा, वो ही करेंगे दोनों। देखो।" फिर मोमो जिन्न दोनों से बोला—"कहो, जथूरा महान है।"

लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा की नजरें मिलीं।

"बोलो।" मोमो जिन्न को लगा कि दोनों उखड़ने लगे हैं।

"जथूरा महान है।" दोनों ने एक साथ कहा।

मोमो जिन्न की जान में जान आई। उसने मुस्कराकर मखानी से कहा।

"देखा तुमने—मेरे एक इशारे पर बंदर की तरह नाचते हैं। इनकी लगाम मेरे हाथ में है।"

"ये तो अच्छी बात है।" मखानी बोला—"कुछ ही देर में इन सब लोगों को होश आ जाएगा। मैं जगमोहन के रूप में देवा के साथ ही रहूंगा। क्या तुम जानते हो कि यहां हम सबने क्या करना है।"

"देवा और मिन्नो का झगड़ा कराना है।" मोमो जिन्न ने कहा।

"खूब। तुम्हें किससे आदेश मिलते हैं मोमो जिन्न?"

"जथूरा के सेवक मशीनों पर बैठे हैं। वो ही हालातों पर नजर रखते, मुझे बताते हैं कि मुझे क्या करना है।"

"हम दोनों का मकसद एक ही है।"

"क्यों न होगा। आखिर हमारा मालिक भी तो एक ही है।"

"यहां पर मेरी एक साथिन भी मिलेगी। कमला रानी नाम है उसका।"

"वो किस रूप में है?" मोमो जिन्न ने पूछा।

"मैं नहीं जानता। परंतु इस वक्त वो इनमें नहीं है। जब वो आएगी, तुम्हें बता दूंगा।"

"इस जगह पर कौन रहता है?" मोमो जिन्न ने पूछा।

"मैं नहीं जानता। मै ये जगह देख नहीं पाया। अभी हमारा बातें करना ठीक नहीं। इन लोगो को होश आने वाला है। मुझे भी बेहोश होने का ड्रामा करना है। इन दोनों से भी कह दे कि ऐसा ही करें।"

"म...मैं क्या करूं?"

"तू तो जिन्न है। तू बेहोश नहीं हो सकता। आराम से एक तरफ बैठ जा।"

मोमो जिन्न लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा से कह उठा।

"चलो—चलो, उधर चलो। जमीन पर ऐसे लेट जाओ, जैसे बेहोश हो। दूसरे होश में आएं तो तुम भी उठ बैठना।"

मोमो जिन्न दोनों के साथ आगे बढ़ गया।

तभी मखानी के कानों में शौहरी की फुसफुसाहट पड़ी।

"मखानी।"

"ओह शौहरी।" मखानी एकाएक बेचैन स्वर में बोला—"कमला रानी कहां है?"

"तू तो कमला रानी के बिना एक पल भी नहीं रह सकता।"

"मुझ बूढ़े को तूने जवान बना दिया। वरना बूढ़ा होते हुए तो तरसता था औरतों को देखकर। अब तो औरतों को भोगने की उम्र है मेरी। दिल तो करता है कि हर वक्त कमला रानी के साथ...।"

"ये काम का वक्त है मखानी।" कानों में शौहरी की फुसफुसाहट पड़ी।

"काम तो कर ही रहा हूं।"

"तेरे को देवा और मिन्नो में झगड़ा कराना है।" शौहरी की फुसफुसाहट कानों में पड़ रही थी।

"करा दूंगा।"

"आसान नहीं है ये काम। सब लोग इस बारे में सतर्क हैं कि ये नहीं झगड़ेंगे।"

"ये मेरे पे छोड़। मैं झगड़ा करा दूंगा। कमला रानी के बारे में बता।"

"वो भी तेरे को मिलेगी।"

"कब?"

"जल्दी ही। इंतजार कर। बे-सब्र मत बन।"

"ठीक है।" मखानी ने गहरी सांस ली।

"कुछ ही देर में सबको होश आ जाएगा। मत भूलना कि तू जगमोहन के रूप में है। इस वक्त तेरे में वो हर चीज डाल रखी है जो जगमोहन में है। परंतु बीती बातों की वजह से देवा तेरे से ढेरों सवाल पूछेगा।"

"कैसे सवाल?"

"तूने ही तो देवा के सिर में डंडा मारकर बेहोश किया था।" (ये सब विस्तार से जानने के लिए पढ़ें **राजा पॉकेट** से प्रकाशित **अनिल मोहन** का पूर्व प्रकाशित उपन्यास **'जथूरा'**।)

"भूला नहीं हूं।"

"देवा कई तरह के सवाल करेगा तेरे से।"

"मैं सब संभाल लूंगा। तेरे को मेरे पर विश्वास नहीं रहा?"

"पूरा भरोसा है तुझ पर।" शौहरी की फुसफुसाहट कानों में पड़ी।

"जग्गू तो यहां नहीं आ सकेगा अब?"

"वो तो कालचक्र के भीतरी हिस्से में फंसा पड़ा है। गुलचंद भी उसके साथ है।"

"फिर तो वो बचने वाला नहीं।"

"सच में नहीं बचेगा। कालचक्र उनमें से किसी को छोड़ने वाला नहीं।"

"तेरे को पता है मैंने और कमला रानी ने तुम लोगों के साथ पूर्वजन्म में जाने का फैसला कर लिया है।"

"हां। भौरी ने बताया था। काम के वक्त ये बातें मत कर।" शौहरी की फुसफुसाहट कानों में पड़ी—"उनके होश में आने का समय हो गया है। मैं फिर आऊंगा।"

उसके बाद मखानी के कानों में कोई आवाज नहीं पड़ी।

सोचों में डूबा मखानी, बेहोश पड़े उन सबके बीच जा पहुंचा।

उधर मोमो जिन्न ने खुद को तीन इंच का बना लिया था कि कोई उसे देखे नहीं और एक झाड़ी में जाकर बैठ गया था। लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा इस तरह जा लेटे थे कि जैसे बेहोश हो।

▭ ▭

नगीना के होंठों से कराह निकली। शांत पड़ा उसका शरीर हिला। बंद पलकें कांपीं फिर आंखें खुल गईं। चंद पल वो खुली आंखों से आस-पास देखती रही। उसे एक-दो और दिखे जो बेहोश पड़े थे। नगीना ने सिर को तीव्र झटका दिया तो एकाएक बीती सोचें, उसके मस्तिष्क में उतरती चली गईं।

उस शाम वो बहुत खुश थी। देवराज चौहान और जगमोहन बंगले पर आ रहे थे। डिनर तैयार कर रही थी वो खुशी-खुशी, नौकरानी सत्या के साथ कि तभी बेल बजी। बाहर जाकर देखा तो मोना चौधरी को खड़े देखा। उसे मोना चौधरी का अपने यहां आना पसंद नहीं आया। चंद बातों के पश्चात मोना चौधरी ने उसे चालाकी से बेहोश कर दिया (वो मोना चौधरी नहीं कमला रानी थी। इन बातों को विस्तार से जानने के लिए पढ़ें पूर्व प्रकाशित उपन्यास **'जथूरा'**) उसके बाद क्या हुआ नगीना को नहीं मालूम। अब होश आया तो खुद को यहां पाया।

नगीना उठ खड़ी हुई।

शरीर में कमजोरी महसूस कर रही थी। वो नहीं जानती थी कि कितनी देर बेहोश रही। आगे बढ़कर रुस्तम राव के पास पहुंची। उसे भी बेहोश पाया। फिर मोना चौधरी के पास पहुंची, वो औंधी पड़ी थी।

सीधा किया तो मोना चौधरी को वहां देखकर चौंकी, वो भी बेहोशी की अवस्था में।

उसके बाद, पारसनाथ-महाजन, बांकेलाल राठौर, जगमोहन (मखानी) लक्ष्मण दास, सपन चड्ढा और देवराज चौहान को वहां बेहोशी की हालत में देखा।

देवराज चौहान को वहां पाकर उसे राहत मिली, परंतु उसे बेहोश देखकर बेचैन भी हुई।

नगीना ने देवराज चौहान को होश में लाने की चेष्टा की।

परंतु कोई फायदा नहीं हुआ।

समुद्र की लहरों के चट्टानों से टकराने की आवाजें नगीना को सुनाई दे रही थीं, वो पानी लाकर यहां पड़े बेहोशों के चेहरों पर डालना चाहती थी, परंतु पानी लाने के लिए कोई बर्तन वगैरा उसके पास न था।

अभी वो इसी उलझन में फंसी थी कि जगमोहन के होंठों से कराह निकली।

नगीना फौरन उसके पास आ पहुंची।

"जगमोहन—जगमोहन।" नगीना ने उसके गाल थपथपाए।

जगमोहन यानी मखानी ने आंखें खोल दीं।

"शुक्र है कि तुम्हें होश आ गया।" नगीना कह उठी।

"भाभी।" जगमोहन ने कहा और उठ बैठा—"तुम यहां—हम कहां हैं?" जगमोहन ने आसपास देखा।

"मैं नहीं जानती। मुझे भी अभी-अभी होश आया है।" नगीना बोली।

"देवराज चौहान कहां है?"

"उधर—वो उधर बेहोश पड़े हैं। यहां मोना चौधरी, पारसनाथ-महाजन, बांके-रुस्तम भी हैं। दो और लोग भी हैं। जिन्हें मैं नहीं पहचानती।" नगीना ने परेशान स्वर में कहा।

"ओह। ये सब कालचक्र का किया है—वो...।"

तभी उनके कानों में मोना चौधरी की कराह पड़ी।

नगीना ने उस तरफ सिर घुमाया तो देवराज चौहान को भी हिलते पाया।

सबको होश आने लगा था।

□ □

सबको होश आ गया था।

देवराज चौहान के चेहरे पर शक की छाया मंडरा रही थी।

नगीना उसके पास आ पहुंची थी।

"कैसे हैं आप?" पास बैठते नगीना ने पूछा।

"कौन हो तुम?" देवराज चौहान गम्भीर था।

"मैं?" नगीना हैरानी से कह उठी—"मैं नगीना हूं, आपने मुझे पहचाना नहीं?"

"हमारी आखिरी मुलाकात याद है तुम्हें?" पूछा देवराज चौहान ने।

"हम स्विटजरलैंड होकर आए थे। उसके बाद आप अपने कामों में व्यस्त हो गए और मैं अपने बंगले पर चली गई। उस शाम आप और जगमोहन, मेरे बंगले पर डिनर के लिए आ रहे थे कि मोना चौधरी वहां आ पहुंची। वो मुझे बेहोश करके साथ ले गई।"

"उसके बाद?" देवराज चौहान के होंठ भिंच गए।

"उसके बाद तो मुझे अब होश आया है। आप कैसी बहकी-बहकी बातें कर रहे हैं।"

देवराज चौहान लहरों की आवाज स्पष्ट सुन रहा था।

"तो तुम मेरे बंगले पर नहीं आईं?"

"नहीं, मैं कैसे आ सकती थी?"

"ओह, तो वो तुम्हारा नकली रूप था, जो मेरे पास आया। वो कालचक्र की चाल थी, परंतु जगमोहन...।"

"क्या जगमोहन?"

"जगमोहन ने मुझे बेहोश किया था, सिर पर डंडा मारकर।"

"नहीं।"

"ये सच है और अब मुझे होश...।" देवराज चौहान कहता-कहता ठिठका।

जगमोहन इसी तरफ आ रहा था।

"होश आ गया तुम्हें?" पास बैठता जगमोहन कह उठा।

देवराज चौहान ने गम्भीर-तीखी नजरों से जगमोहन को देखा।

"क्या हुआ?"

"तुमने डंडे से मेरे सिर पर बहुत जबर्दस्त वार किया था।"

"कब?" जगमोहन के होंठों से निकला।

"बंगले पर। तुमने कॉफी बनाई। एक प्याले में बेहोशी की दवा डाल दी। तुम मुझे बेहोश करना चाहते थे, परंतु गलती से वो प्याला नगीना की तरफ चला गया और नगीना बेहोश हो गई, फिर...।"

"ये तुम क्या कह रहे हो?"
"क्यों—गलत क्या कहा?"
नगीना समझने वाले ढंग से दोनों को देख रही थी।
"मैं...मैं तो सोहनलाल को लेने गया था।"
"उसके बाद तुम वापस आए और...।"
"मैं वापस कब आया। सोहनलाल के घर के बाहर ही तुम मुझे मिले और तुमने मुझे बेहोश कर दिया।"
"मैं मिला?" देवराज चौहान चौंका।
जगमोहन उर्फ मखानी ने कोरा झूठ कहा था।
"हां, तुम थे वो, परंतु अब सोचता हूं कि वो तुम्हारा बहरूप ही होगा, जिसने मुझे बेहोश किया। उसके बाद मुझे अब ही होश आया है और तुम ऐसी बातें कह रहे हो।"
"ओह, तो बंगले पर पहुंचने वाले तुम नहीं थे। वो...।"
"मेरा बहरूप होगा। कालचक्र तब तेज गति से अपनी चालें चल रहा था।"
"तब नगीना भी बंगले पर आई जो कि कालचक्र की ही चाल थी। मैं 'धोखा' खा गया।" देवराज चौहान समझने वाले ढंग में कह उठा—"हम कालचक्र का मुकाबला नहीं कर पा रहे थे।"
"अब भी तो कालचक्र में फंसे पड़े हैं।" जगमोहन ने कहा।
"कालचक्र में?"
"हां। कालचक्र ने ही तो हम सबको यहां ला फेंका है। वो हममें झगड़ा करवा देना चाहता है ताकि हम पूर्वजन्म के सफर पर नहीं जा सके। वहां जथूरा से न टकरा सके। जथूरा ने अपनी भरपूर कोशिश की है, हममें झगड़ा करवाने की।"
देवराज चौहान की निगाह कुछ कदमों ही दूरी पर मौजूद मोना चौधरी की तरफ उठी।
"इसका मतलब हम अब भी खतरे में हैं।" देवराज चौहान बोला।
तभी लक्ष्मण दास पास आ पहुंचा।
"देवराज चौहान, मुझे बचा लो। नहीं तो मैं पागल हो जाऊंगा।"
"तुम यहां कैसे?" देवराज चौहान कह उठा।
"पूछो मत किस्मत की मार है।" लक्ष्मण दास ने छिपी निगाहों से जगमोहन को देखा—"मैं और सपन बंगले पर थे कि मोमो जिन्न हमें उठाकर यहां ले आया। हमें उससे बचा लो देवराज चौहान।"
"मोमो जिन्न कहां है?"
"तुम लोगों के होश आने तक तो यहीं था, उसके बाद पता नहीं कहां चला गया?" लक्ष्मण दास ने इधर-उधर देखा।

"तुम्हें वो यहां क्यों लाया?"
"कहता है तुम्हारी और मोना चौधरी की लड़ाई करवानी है। एक को मार देना है।"
"मार देना है?"
"मतलब कि झगड़ा करवाकर मरवा देना है।"
जगमोहन उर्फ मखानी कह उठा।
"चिंता मत करो। मोमो जिन्न हमारे सामने आया तो उसे देख लेंगे।"
"तुम लोगों को यहां पाकर मुझे तसल्ली मिली है, वरना घबराहट में ही मेरी जान निकल जाती।"
तभी देवराज चौहान ने सब पर निगाह मारी फिर कह उठा।
"सोहनलाल कहीं नहीं है।"
"सोहनलाल?" जगमोहन ने नजरें घुमाईं—"हां, वो नहीं दिखा।"
"सब यहां हैं तो उसे भी यहीं होना चाहिए।" देवराज चौहान ने कहा—"उसका भी पूर्वजन्म से सम्बंध है।"
"ये सब क्या हो रहा है कुछ मुझे भी बताइए।" नगीना कह उठी।
देवराज चौहान नगीना को सारा मामला बताने लगा।
(ये सब विस्तार से जानने के लिए पढ़ें **अनिल मोहन** का **राजा पॉकेट बुक्स** से पूर्व प्रकाशित उपन्यास **'जथूरा'**।)

▭ ▭

होश आने पर महाजन और पारसनाथ मोना चौधरी के पास पहुंच गए।
मोना चौधरी ने मुस्कराकर पारसनाथ को देखा।
"अब तो तुम्हें विश्वास हो गया कि मैं ही असली मोना चौधरी हूं।"
"क्या करता, उस वक्त मैं ऐसा फंसा था कि, मुझे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था।"
"तो जो जगमोहन मेरे से टकराया।" महाजन बोला—"वो जगमोहन नहीं था?"
"नहीं, वो कालचक्र का भेजा, जगमोहन का बहरूप था।" मोना चौधरी ने कहा।
"ये कालचक्र आखिर है क्या?"
"जथूरा का भेजा कोई खतरनाक तमाशा है, जिसने हमें पागल बनाकर रख दिया है।" मोना चौधरी के दांत भिंच गए—"हम सबको

कालचक्र ने नचा रखा है कि हम आपस में उलझकर रह जाएं। पूर्वजन्म की यात्रा न कर सकें।"

"परंतु हमने सोचा ही कब था, पूर्वजन्म की यात्रा करने के लिए।"

"हमने नहीं सोचा, परंतु 'जथूरा' ने अपनी शक्तियों से जान लिया होगा कि हमारे द्वारा पूर्वजन्म की यात्रा सम्भव हो सकती है। उधर जगमोहन को जथूरा द्वारा रचे गए हादसों का पूर्वाभास होने लगा, ताकि वो हादसों को रोककर जथूरा को मात दे सके। लेकिन जथूरा ताकतवर निकला। उसने कालचक्र हम पर फेंका और नतीजतन हम सब अब यहां, इस अंजानी जगह पर पहुंच गए। कालचक्र ने हमें एक-एक करके यहां पहुंचा दिया।"

"ऐसा उसने क्यों किया?"

"वो हममें झगड़ा करवाना चाहता है। वो चाहता है कि मैं या देवराज चौहान, कोई एक खत्म हो जाए। जगमोहन के पास जथूरा का खास आदमी पोतेबाबा बात करने आता है। पोतेबाबा ने जगमोहन को बताया कि देवराज चौहान या मुझमें से एक खत्म हो जाएगा तो जथूरा को डर नहीं रहेगा कि हम उसे नुकसान पहुंचा सकते हैं।" मोना चौधरी गम्भीर स्वर में बोली—"अब इस बात का ध्यान रखना कि बेशक कुछ भी हो जाए। हमने देवराज चौहान और उसके साथियों से झगड़ा नहीं करना है। इस तरह हम जथूरा को मात दे सकते हैं। उसने हमें एक जगह इसलिए इकट्ठा किया है कि हम में झगड़ा हो जाए।"

"माना कि हम झगड़ा नहीं करते।" पारसनाथ गम्भीर स्वर में बोला—"परंतु यहां हम करेंगे क्या। कालचक्र हमें आराम से नहीं रहने देगा। जथूरा कोई नई चाल चलेगा, हमें परेशान करने को।"

"पहले हमें ये देखना है कि हम कहां पर हैं।"

"आस-पास समुद्र है। लहरों के टकराने की आवाजें आ रही हैं।" महाजन कह उठा।

"देखते हैं।" कहने के साथ ही मोना चौधरी उठ खड़ी हुई।

"लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा भी यहीं हैं। उन्होंने तुममें और देवराज चौहान में झगड़ा करवाने की चेष्टा की थी। तब तो वो सारा इलजाम किसी मोमो जिन्न पर थोप रहे थे। मैं समझ नहीं पाया कि दोनों यहां क्यों हैं?" महाजन बोला।

"इनके यहां होने का मतलब है कि मोमो जिन्न भी पास ही होगा।" मोना चौधरी बोली।

"फिर तो ये वो ही करेंगे, जो मोमो जिन्न चाहेगा।" पारसनाथ बोला—"हमें इनसे सतर्क रहना होगा।"

"देवराज चौहान से बात की जाए?" महाजन बोला।
"चलो, उसके पास चलते हैं। इन हालातों में हमें एक रहना चाहिए।"
वो तीनों देवराज चौहान के पास पहुंचे।
देवराज चौहान, जगमोहन और नगीना की निगाह उन पर टिक गई थी।
"अब तो तुम्हें पूरी तरह समझ आ गया होगा देवराज चौहान कि ये सब हममें झगड़ा करवाने के लिए किया जा रहा है।" मोना चौधरी ने कहा—"कम-से-कम मुझे तो ये ही महसूस हुआ है।"
"मैं ये बात पहले ही समझ रहा था।" देवराज चौहान ने कहा।
"हमें किसी भी हाल में आपस में झगड़ा नहीं करना है। जथूरा जो भी है, वो तुम्हें या मुझे, हममें से एक को मारना चाहता है। ताकि हममें से कोई उस स्थिति में पूर्वजन्म में प्रवेश कर जाएं तो उसका नुकसान न कर सके। मुझे पेशीराम (फकीर बाबा) की बात याद आती है कि हम दोनों के ग्रह जब इकट्ठे होकर राह पर चलेंगे तो, कोई हमारा मुकाबला नहीं कर सकेगा। यही वजह है कि जथूरा हममें से एक को मारना चाहता है।" मोना चौधरी का स्वर गम्भीर था।
"तुम ठीक कहती है। इस वक्ती तौर पर हमें एक होकर रहना है।" देवराज चौहान बोला।
तभी जगमोहन कह उठा।
"अब हमें ये जानना है कि यहां पर जथूरा क्या चाहता है हमसे?"
"वो जरूर कुछ करेगा।" महाजन बोला—"जल्दी ही करेगा।"
"हमें सतर्क रहना होगा।"
"ये जगह कौन-सी है?" नगीना ने पूछा।
"ये ही हम जानने की चेष्टा में जाने लगे हैं।" पारसनाथ ने कहा।
"मैं भी तुम लोगों के साथ चलता हूं।" जगमोहन उठ खड़ा हुआ।
"हम लोगों के साथ की अपेक्षा, अलग से जाओ दूसरी दिशा में।" मोना चौधरी बोली—"महाजन को अपने साथ ले जाओ। हम जहां भी होंगे, एक घंटे बाद वापस आ जाएंगे।"
"ठीक है। महाजन तुम मेरे साथ चलो।" जगमोहन ने कहा।
मोना चौधरी ने कुछ दूर बैठे बांके और रुस्तम राव को देखकर कहा।
"सोहनलाल का यहां न होना, उलझन वाली बात है। वो भी पूर्वजन्म का है। बाकी सब इधर हैं।"

"शायद वो आ जाए। या पास ही में बेहोश हो कहीं।" जगमोहन ने कहा।

मोना चौधरी ने कुछ नहीं कहा और पारसनाथ के साथ एक तरफ बढ़ गई।

जगमोहन भी, महाजन के साथ दूसरी दिशा में बढ़ गया।

तभी नगीना कह उठी।

"इस वक्त तो मोना चौधरी बहुत प्यार से बात कर रही है।"

"हम सब खतरे में हैं।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा।

□ □

"छोरे।" बाकेलाल राठौर कह उठा—"यो मोन्नो चौधरी तो म्हारे देवराज चौहान के पटावे लागे हो।"

"कोई फायदा नहीं होईला बाप।"

"क्यों?"

"नगीना दीदी पास में होईला।"

"यो कालचक्रो ने म्हारे को इधर ला पटको हो। जगमोनो म्हारो को बेहोश करो हो।"

"वो जगमोहन का नकली रूप होईला बाप।"

"अंम जथूरे को 'वड' दयो, वो म्हारे सामने पड़ो तो।"

"ये ई तो मुसीबत होईला बाप कि जथूरा अम्भी तक किसी को नेई दिखेला।"

"डरपोको होवे वो, जो अभी तक छिपो होवे।" बांके जगमोहन को महाजन के साथ दूर जाता देखकर कह उठा—"म्हारे को तो अभी भी जगमोनो पर शक हौवे। नकली रूप लागे हो मन्ने को।"

"क्योंकि बंगले पर वे तेरे को बेहोश करेला बाप।"

"वो बात न कर छोरे-म्हारे को गुस्सो चढ़ जावे।"

"आपुन की खोपड़ी पर भी जगमोहन ने स्टूल मारेला बाप। पर वो जगमोहन न हौवे।"

"यो घाटकोपरो वाले इधर का करो हो?"

"वो लक्ष्मण दास, सपन चड्ढा होईला। एक देवराज चौहान को जानता है और दूसरा...।"

"यो इधरो क्यों मरो हो।"

तभी दूर बैठी नगीना ऊंचे स्वर में कह उठी।

"तुम दोनों हमारे पास क्यों नहीं आ जाते?"

"आते हैं बहनो।" बांकेलाल राठौर ने कहा—"अम्भी आवे है।"

बांकेलाल राठौर और रुस्तम राव की नजरें मिलीं।
“छोरे। अंम सबो ही खतरों में हौवे।”
“सच कहेला बाप।”
“वो जथूरो और उसो का कालचक्रो म्हारा पीछा न छोड़े हो।”
“परफैक्ट कहेला बाप।”
“ईब का करो अंम?”
“तुम कहो बाप। तुम्हारी मूंछेला है। तुम बड़ा होईला मेरे से।”
“मूंछें थारी नाको के नीचे फिट कर दयो अंम।”
“क्यों बच्चे को बाप बनाईला, बाप।”
“म्हारे को इधरो इस वास्तो लायो कालचक्रो कि इधरो अंम बच न पायो।”
“राईट कहेला बाप।”
“अंम देखो कि अंम किधरो हौवे। यो जगहो किधरो की हौवे।”
“मोना चौधरी, जगमोहन येई देखने वास्ते गईला बाप। उनका इंतजार करेला।”
बांकेलाल राठौर ने लक्ष्मण दास को देखा जो सपन चड्ढा के पास बैठा था। दोनों इधर-उधर देख रहे थे। बांके ने दोनों को इशारे से पास बुलाया।
वो आ पहुंचे।
“तंम कौन से खेतों की मूलो हौवे?”
“मूलो?” सपन चड्ढा हड़बड़ाया।
“पंजाबो के खेतो की, हरियाणा, यू.पी., महाराष्ट्र-गुजरात, किधरो का बीजो हौवे?”
“ये क्या कह रहा है?” सपन चड्ढा ने लक्ष्मण दास से कहा।
“ये हमारा परिचय पूछ रहा है।”
“ये तो मूलो के बारे में पूछ...।”
“अब हमारी यही इज्जत रह गई है। मोमो जिन्न ने हमें कुत्ता बनाकर रख दिया है।” लक्ष्मण दास ने गहरी सांस ली।
“वो है किधर?”
दोनों की निगाह घूमी।
परंतु मोमो जिन्न कहीं न दिखा।
“वो पास ही कहीं पर होगा। बहुत हरामी है साला।” सपन चड्ढा कह उठा।

"अंम थारो बारे में पूछो हो कि कौणो खेतो की मूली...।"

"महाराष्ट्र। मुम्बई के खेतों में हम रहते हैं।"

"अंम भी मुम्बईयों के खेतों में ही पलो हो, पर थारी डाल कम्भो न देखो।"

लक्ष्मण दास सपन चड्ढा की नजरें फिर मिलीं।

"ये क्या कहता है मुझे समझ नहीं आती।" सपन चड्ढा कह उठा।

"तू चुप रह। मैं बात करूंगा।"

"थारे को इधरो कोणो लाया हो?"

"मोमो जिन्न।"

"वो कौण हौवे?"

"जिन्न है वो।"

"किधर है वो?"

"पता नहीं। हमें यहां छोड़कर, वो कहीं चला गया है।"

"वो जबो वापसो लौटे तो म्हारे को बतायो, अंम उसो को 'वड' दयो।"

"ठीक है।"

लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा उन दोनों से दूर हट गए।

"लक्ष्मण।"

"बोल।"

"क्यों न हम देवराज चौहान को बता दें कि जगमोहन असली जगमोहन नहीं, कालचक्र का हिस्सा है।"

"ऐसा मत सोच।" लक्ष्मण दास बेचैन हुआ।

"क्यों?"

"पता नहीं क्या मामला है। कहीं हम ही न रगड़े जाएं।" लक्ष्मण दास बोला।

"वो नकली जगमोहन पास रहकर, देवराज चौहान को रगड़ देगा। देवराज चौहान उस पर भरोसा कर रहा है।"

"जल्दी मत कर, सोचने दे। मोमो जिन्न को मत भूल। वो हमारे आस-पास ही है। उसकी इच्छाएं वापस आ गई हैं, इस वजह से वो कमजोर पड़ने लगा है, परंतु उसे हम पर गुस्सा आ गया तो, हमारा काम तमाम कर देगा।"

"मैं तो कहता हूं, देवराज चौहान को जगमोहन के बारे में बता दे।"

"जल्दी मत कर। सही वक्त आने दे। जरूर बताएंगे ये बात देवराज चौहान को।" लक्ष्मण दास ने धीमे स्वर में कहा।

□ □

सूर्य पश्चिम की तरफ सरक चुका था।

मोना चौधरी, पारसनाथ, जगमोहन और महाजन को गए, दो घंटे से ज्यादा हो गए थे।

परंतु वे अभी तक न लौटे थे।

अगले दो घंटों में अंधेरा हो जाना था। उनका इंतजार अब और न किया जा सकता था। जाहिर था कि अब उन्हें ढूंढ़ने जाना था कि वो वापस क्यों नहीं लौटे।

सपन चड्ढा ने धीमे स्वर में लक्ष्मण दास ने कहा।

"मुझे तो गड़बड़ लग रही है।"

"क्या?"

"जगमोहन बने मखानी ने ही कोई गड़बड़ की होगी। तभी वो वापस नहीं लौटे।"

"चुप कर।"

"मेरी मान तो देवराज चौहान को बता दे कि जगमोहन, जगमोहन नहीं, कालचक्र का हिस्सा मखानी है।"

"मेरे कहने से वो क्या मान जाएगा?"

"सतर्क तो हो जाएगा। उसके दिमाग में शक तो आ जाएगा।" सपन चड्ढा बोला।

"मेरे खयाल में तो इस उलझे मामले में हमारा चुप रहना ही अच्छा है।"

सपन चड्ढा ने कुछ दूर बैठे देवराज चौहान को देखा।

"यहां कोई भी हमारा सगा नहीं है।"

"मोमो जिन्न ने जाने किस मुसीबत में फंसा दिया हमें।"

"मुझे मौका लगा तो मैं मोमो जिन्न की गर्दन मरोड़ दूंगा।"

"ये आसान नहीं है।"

"साला नजर भी तो नहीं आता कि कहां मर गया।"

□ □

"उन चारों को गए काफी देर हो गई है।" देवराज चौहान बोला—"एक-दो घंटे में अंधेरा हो जाएगा। उन्हें ढूंढ़ने जाना होगा।"

"क्या पता वो किधर होईला बाप।" रुस्तम राव ने कहा।

"वो दो-दो में बंटे अलग-अलग दिशाओं में गए हैं। किसी एक पार्टी को तो वापस आना चाहिए।" नगीना बोली।

"अंम ढूंढ़ो उन्हों को—चल्लो।" बांकेलाल राठौर उठ खड़ा हुआ।

बाकी तीनों भी उठे।

"हम अलग-अलग होकर उन्हें...।" नगीना ने कहना चाहा।

"नहीं हम एक साथ ही उन्हें ढूंढ़ेंगे।" देवराज चौहान बोला—"उनके वापस न लौटने से जाहिर है कि यहां खतरे हो सकते हैं।"

"जैसी तुम्हारी मर्जी बाप।"

बांकेलाल राठौर ऊंचे स्वर में लक्ष्मण और सपन चड्ढा से कह उठा।

"तंम भी म्हारे साथ चल्लो।"

"किधर?" सपन और लक्ष्मण उठकर फौरन पास आ पहुंचे।

"उन सबों को ढूंढ़ने के वास्ते, वो लौटे ना अम्भी तक।"

"हां-हां, हम चलने को तैयार हैं।" लक्ष्मण दास कह उठा।

"म्हारे को समझ न आवे कि तंम दोनों इधरो क्यों आयो हो। तंम तो पूर्वजन्मो के न हौवो।"

"वो मोमो जिन्न हमें यहां लाया है।" सपन चड्ढा बोला—"हम तो आना ही नहीं चाहते थे यहां।"

तभी नगीना बोली।

"हमारे जाते ही वे लोग वापस लौट आए तो?"

"दीदी ठीक कहेला है। आपुन में से कोई इधर ही टिकेला।"

देवराज चौहान की निगाह सपन चड्ढा और लक्ष्मण दास पर गई।

"तुम दोनों यहीं रहो।" देवराज चौहान बोला—"वो लोग यहां आ जाएं तो उन्हें यहीं रोके रखना। हम यहीं पर लौटेंगे।"

"ठीक है।"

देवराज चौहान, नगीना और रुस्तम राव वहां से आगे बढ़ गए।

"कितनी सुनसान जगह है।" सपन चड्ढा बोला।

"लेकिन अच्छी जगह है। यहां पर...।"

"वो देख हरामी आ गया।" सपन चड्ढा ने कहा।

लक्ष्मण दास की निगाह घूमी।

चंद कदमों के फासले पर चार फुट का मोमो जिन्न खड़ा था।

"तू मरता क्यों नहीं।" लक्ष्मण दास गुस्से में कह उठा।

"ऐसा मत कहो। जिन्न की मौत नहीं होती।" वो पास आते कह उठा—"जिन्न को सिर्फ बोतल में बंद किया जा सकता है।"

"मुझे बता कि तेरे को बोतल में कैसे बंद...।"

"फालतू की बातें मत करो।" मोमो जिन्न पेट पर हाथ फेरता कह उठा—"मुझे भूख लगी है।"

"पत्थर खा ले।" सपन चड्ढा चिढ़कर बोला—"इसके अलावा तुम्हें कुछ भी खाने को नहीं मिलेगा।"

"तुम नाराज क्यों हो मुझसे?"

"हमें यहां क्यों लाए?"

"मजबूरी थी। न लाता तो जथूरा के सेवक जान जाते कि मुझमें इच्छाएं जाग गई हैं।"

"हम तो फंस गए।"

"एक बार मैं सोबरा के पास पहुंच जाऊं फिर सब ठीक हो जाएगा।"

"अभी चल।"

"कहां?"

"सोबरा के पास।"

"अभी नहीं जा सकता। हालात बहुत बिगड़ चुके हैं।"

"क्या मतलब?"

"मखानी कालचक्र के लिए काम कर रहा है। तुम क्या समझते हो कि उनमें से कोई वापस लौटेगा।"

"नहीं लौटेगा?"

"नहीं।" मोमो जिन्न ने इंकार में सिर हिलाया—"वो सब मुसीबत में पड़ते जा रहे हैं।"

"कैसे?"

"मैं देख आया हूं। यहां कालचक्र की बसाई बस्ती है। यहां आने वालों को वहीं पर, उस बस्ती में ही फंसना है। कालचक्र की कोशिश होगी कि वहां देवा और मिन्नो में झगड़ा करा दे।" मोमो जिन्न बोला—"एक की जान खत्म हो जाए।"

"ये तो बुरा होगा।"

"मखानी उन सबको फंसाता जा रहा है उस बस्ती में...।"

"परंतु वो...।"

"सवाल मत करो। मेरी सुनो। मैं तुम्हें समझाता हूं कि तुम दोनों ने उस बस्ती में जाकर क्या करना है।"

"बोलो।"

मोमो जिन्न बताने लगा।

जिसे सुनकर दोनों असहमत दिखे।

"हम ये नहीं करेंगे। हम...।"

"इसी में तुम्हारा और मेरा भला है। वरना जथूरा के सेवक समझ जाएंगे कि मोमो जिन्न ठीक से काम नहीं कर रहा। तुम फिक्र मत करो। तब मैं कोई चेष्टा करूंगा कि हालात ज्यादा न बिगड़ें।" मोमो जिन्न बोला—"मखानी को वहां कमला रानी मिल गई होगी। तब तो दोनों और भी खतरनाक हो जाएंगे। मुझे कुछ करना होगा। परंतु तुम वही करना जो मैंने कहा है।"

"हमारा ऐसा करना जरूरी है?"

"हां। तुम दोनों मेरी कही बात पर चलोगे तो कालचक्र में दर्ज हो जाएगा कि मोमो जिन्न का काम ठीक से चल रहा है। इसी की आड़ लेकर तो मैं हालातों को ठीक करने की चेष्टा करूंगा कि कोई मुझ पर शक न कर सके।"

"उस बस्ती तक तुम हमें ले चलो।"

"कुछ देर रुको। पहले उन सबको वहां फंस लेने दो।"

▭ ▭

"यहां हम किस तरफ जा रहे हैं।" महाजन कह उठा।

जगमोहन महाजन के साथ टापू पर एक दिशा में बढ़ता जा रहा था।

"टापू का ज्यादा हिस्सा हम देख लें तो ठीक रहेगा।" जगमोहन ने कहा।

"लेकिन इस तरफ तो टापू का जंगल गहरा होता जा रहा है।" महाजन ने कहा—"हमें दूसरी दिशा में देखना चाहिए।"

"उधर मोना चौधरी और पारसनाथ देख रहे हैं।"

"हमें घंटे-भर में वापस भी लौटना था। घंटा बीत चुका है।" महाजन ने कहा।

"तुम आगे बढ़ने से कतरा क्यों रहे हो?"

"तुम तो ऐसे आगे बढ़ रहे हो जैसे जानते हो कि कहां जाना है।"

जगमोहन मुस्करा पड़ा।

"शायद जानता हूं।"

"क्या मतलब?" महाजन ने जगमोहन को देखा।

"चलते रहो, अभी पता चल जाएगा।" जगमोहन बराबर मुस्करा रहा था।

"तुम अजीब-सी बातें कर रहे हो जगमोहन।"

तभी जगमोहन के कानों में शौहरी की फुसफुसाहट गूंजी।

"थोड़ा-सा आगे और जाना है मखानी। वो तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं।"

चलते-चलते जगमोहन उर्फ मखानी ने सिर हिला दिया।

"कितनी अजीब जगह है।" महाजन बोला—"पक्षी या जानवर भी नजर नहीं आ रहा।"

"मैं भी यही सोच रहा हूं।"

महाजन एकाएक ठिठका।

मखानी भी रुका।

"क्या हुआ?"

"बस, हमें अब वापस चलना चाहिए।" महाजन ने कहा।

"इतना आगे आ गए हैं तो कुछ आगे और देख लेते हैं।" मखानी ने आगे बढ़ने का उपक्रम किया।

"ये टापू खाली है। कोई यहां होता तो हमें अब तक आभास हो चुका होता।"

"जब आगे जाने में मुझे एतराज नहीं तो तुम क्यों कतरा रहे हो?"

"हमें वापस भी पहुंचना...।"

"आओ भी।" मखानी, महाजन की कलाई पकड़कर आगे बढ़ गया—"अभी पलटकर वापस चलते हैं।"

महाजन अनमने मन से मखानी के साथ चल पड़ा। जाने क्यों उसे इस वक्त जगमोहन का व्यवहार अजीब-सा लग रहा था। वो एक ही दिशा में आगे बढ़ता जा रहा था। दिशा का रास्ता उसने एक बार भी नहीं बदला था। जैसे कि वो कहीं पहुंचना चाहता हो और रास्ता उसे अच्छी तरह मालूम हो।

जल्दी ही महाजन का अंदेशा सही हो गया।

उन्हें आवाजें सी सुनाई देने लगीं।

"ये क्या?" महाजन के होंठों से निकला।

"बस्ती लगती है।"

"जंगली बस्ती?"

"ऐसा ही कुछ।"

"हमें सतर्क रहना होगा। वो हमें देखते ही मार सकते हैं।" महाजन ने कहा।

"परवाह मत करो। वो हमें कुछ नहीं कहेंगे। मैं उन्हें जानता हूं।" मखानी मुस्कराकर बोला।

"जानते हो?" चलते-चलते महाजन ने हैरानी से उसे देखा—"क्या तुम पहले यहां आए हो?"

"बस्ती में पहुंचकर तुम सब समझ जाओगे। तुम्हारे सवालों का जवाब तुम्हें मिल जाएगा।"

"तुम इस वक्त बहुत अजीब बातें कर रहे हो।"

तभी सामने जंगल में बनी बस्ती नजर आने लगी।

जंगल का बहुत बड़ा हिस्सा जैसे काटकर साफ कर दिया गया था। वहां झोंपड़ियां बनी हुई थीं। काले-काले लोग आते-जाते नजर आ रहे थे। किसी ने पूरे कपड़े पहने थे तो किसी ने अधूरे। एक तरफ से बच्चों के खेलने का शोर सुनाई दे रहा था।

मखानी बिना रुके आगे बढ़ता रहा तो महाजन फौरन ठिठककर बोला।

"वो हमें देखते ही मार सकते हैं जगमोहन।"

"तुम खामखाह डर रहे हो। मैं उन्हें जानता हूं।" मखानी मुस्कराया।

"मुझे तुम पर यकीन नहीं।"

"क्या मैं तुम्हारे साथ नहीं जा रहा वहां। मुझे अपनी जान प्यारी नहीं क्या?"

महाजन हिचकिचाया।

"आओ भी। वहां इन लोगों के बीच पहुंचकर तुम्हें अच्छा लगेगा।"

न चाहते हुए भी महाजन मखानी के साथ आगे बढ़ गया।

बस्ती वालों की निगाह उन पर पड़ी तो वहां शोर सा उठ खड़ा हुआ।

वो सब इनके गिर्द इकट्ठे होने लगे।

सबकी निगाहों में उत्सुकता थी।

"मखानी।" शौहरी की फुसफुसाहट कानों में पड़ी—"इन्हें बोल कमला रानी से मिलना है तुम्हें?"

"कमला रानी?" मखानी के होंठों से निकला—"वो यहां है?"

"हां, वो तो कब से तेरा इंतजार कर रही है।"

महाजन ने उलझन भरी निगाहों से उसे देखते हुए कहा।

"तुम किससे बात कर रहे हो?"

"तुम नहीं समझोगे। चुपचाप देखते रहो।" फिर वो आस-पास खड़ी भीड़ से बोला—"कमला रानी से मिलना है मुझे।"

उसी पल शोर-सा उठा। एक आदमी भीड़ में से आगे आया।

"आओ। मैं तुम्हें कमला रानी के पास ले चलूं।" कहकर वो एक तरफ चला गया।

मखानी और महाजन साथ हो गए।

"हैरानी है कि तुम इन सब लोगों को जानते हो?" महाजन बोला।

जवाब में मखानी मुस्कराया। बोला कुछ नहीं।

"तुम यहां पहले आ चुके हो जगमोहन?"

"नहीं। ये मेरी पहली बार है।" मखानी बोला।

"तो तुम्हें यहां के बारे में पहले से ही जानकारी होगी।"

"चुप रहो। धीरे-धीरे तुम्हें तुम्हारे सवालों के जवाब खुद ही मिल जाएंगे।"

कई झोंपड़ियों के पास से गुजरकर वे एक बड़ी-सी झोंपड़ी के

बाहर पहुंचे। जो कि छः झोंपड़ियां जितनी बड़ी थी। उसके सामने खुली जगह थी। वो आदमी मखानी से बोला।

"तुम रुको मैं कमला रानी को तुम्हारे आने की खबर देता हूं।"

"उससे कहना मखानी आया है।"

वो आदमी सिर हिलाकर झोंपड़े में प्रवेश कर गया।

महाजन उलझन-भरे स्वर में, मखानी को देखता कह उठा।

"क्या नाम बताया तुमने अपना?"

"मखानी।" वो मुस्कराया।

"क्या तुम्हारा पूरा नाम जगमोहन मखानी है?"

"नहीं।"

"तो तुमने अपना नाम मखानी क्यों बताया?"

"वो मुझे इसी नाम से जानती है।"

"लेकिन कमला रानी है कौन...।"

"वो आ गई।"

महाजन की नजर झोंपड़े की तरफ उठी।

अभी-अभी कमला रानी बाहर निकली थी। सजी-संवरी। हरे रंग के चमकते कपड़े पहन रखे थे। बालों को पीछे करके बांध रखा था। होंठों पर लिपस्टिक, चेहरे पर मेकअप। वो हसीन लग रही थी।

उसे देखते ही मखानी का चेहरा खिल उठा।

"कमला रानी।"

"मखानी, मेरे प्यार।"

मखानी उसकी तरफ दौड़ा।

कमला रानी भी आगे बढ़ी।

अगले ही पल दोनों एक-दूसरे की बांहों में थे।

महाजन हैरान-परेशान था जगमोहन का ये रूप देखकर।

"बस कर कमला रानी।" भौरी की फुसफुसाहट कमला रानी के कान में पड़ी—"काम की तरफ ध्यान दे।"

कमला रानी ने उसी पल मखानी को अपने से अलग किया।

"चल भीतर चलते हैं।" मखानी व्याकुल-सा कह उठा।

"भौरी कहती है पहले काम।"

"कुछ देर की बात...।"

"नहीं। मुझे भौरी की बात माननी है पहले। काम के वक्त बाकी बातें नहीं।"

उसी पल शौहरी की आवाज मखानी के कानों में पड़ी।

"कमला रानी को देखकर तू सब कुछ भूल जाता है मखानी।"

"क्या करूं, अपने पर काबू नहीं रख पाता।"

"काबू रख। काम कर। उसके बाद तेरे को और कमला रानी को अकेले में जाने का मौका मिलेगा।"

"ठीक है।" मखानी ने मुंह लटकाकर कहा।

कमला रानी की नजर महाजन पर गई।

"तो इसे लाया है तू—एक ही...।"

"बाकी भी टापू पर हैं। अपने आदमी भेज और उन्हें मंगवा ले।"

"अभी भेजती हूं।"

"तू किसके रूप में है कमला रानी?"

"ये कालचक्र का भीतरी हिस्सा है। यहां मैं इस बस्ती की मालकिन के रूप में हूं। ये सब बस्ती वाले मेरा हुक्म मानते हैं। कल ही मैं यहां आई। भौरी ने मुझे यहां पहुंचाया। जो यहां की मालकिन थी, वो भीतर कमरे में सोई पड़ी है। तब तक सोई रहेगी जब तक मैं अपने काम करके चली नहीं जाती। उसी का रूप मुझे भौरी ने दिया है।"

"क्या उसका नाम भी कमला रानी है?"

"नहीं। कल मैंने बस्ती में सबसे कह दिया था कि अब मेरा नया नाम कमला रानी है। यही वजह रही है कि तुम्हें मुझ तक आने में कोई परेशानी नहीं हुई।" कमला रानी ने कहा।

"तेरे को अपने करीब पाकर मैं बहुत खुश हूं।"

"ये बातें छोड़, आगे का काम कर।"

"तू बाकी लोगों को पकड़ने के लिए, बस्ती के आदमी भेज और...।"

"मैंने सब तैयारी कर रखी है। आज रात ही मैं देवा और मिन्नो का मुकाबला कराकर, एक की जान...।"

"लेकिन वो लोग तो तय किए बैठे हैं कि उन्हें झगड़ा नहीं करना है।" मखानी ने कहा।

"वो बेवकूफ हैं सब। मेरे इंतजाम के सामने वो बौने हैं।"

"वो कैसे?"

तभी महाजन पास आ पहुंचा।

"तुम दोनों क्या बातें कर रहे हो।" महाजन उलझन में बोला—"ये कौन-सी जगह है?"

मखानी और कमला रानी की नजरें मिलीं।

"इसका इंतजाम कर...।"

"हंसराज।" कमला रानी ऊंचे स्वर में कह उठी।

"किस इंतजाम की बात कर रहे हो तुम?" महाजन ने मखानी से पूछा।

"तेरा इंतजाम।" मखानी जहरीले स्वर में मुस्करा पड़ा।
"मेरा इंतजाम—क्या मतलब?" महाजन चौंका।
"मैं जगमोहन नहीं हूं।"
"नहीं है जगमोहन तू।" महाजन अचकचाया—"ये कैसे हो सकता है।"
"मैं जगमोहन का नकली रूप हूं। मखानी हूं मैं।" मखानी ने कड़वे स्वर में कहा—"कालचक्र का हिस्सा हूं।"
"ओह।" महाजन चौंका।
तभी तीस बरस का हट्टा-कट्ठा काला-सा व्यक्ति वहां आ पहुंचा।
महाजन इन पलों में समझ नहीं पाया कि क्या करे।
"बोल कमला रानी।" हंसराज बोला।
"इस टापू पर कुछ अजनबी लोग आए हैं—कितने मखानी?" कमला रानी ने मखानी को देखा।
"आठ हैं लक्ष्मण और सपन को मिलाकर।"
"उन आठों को पकड़ ले आओ। अपने आदमी हर तरफ भेज दो।"
"अभी उन्हें पकड़ मंगवाता हूं।" कहने के साथ ही हंसराज वहां से चला गया।
"कमीने।" तभी महाजन गुस्से से मखानी पर झपट पड़ा।
कमला रानी ने उसी पल जोरदार ठोकर महाजन के पेट पर मारी।
महाजन पेट पकड़कर चीखता हुआ दूर जा गिरा।
"वाह कमला रानी। तूने तो कमाल कर दिया।" मखानी हंस पड़ा।
कमला रानी ने दूर खड़े आदमी को बुलाकर कहा।
"इसे पकड़कर कैद में रखो और सख्त पहरा लगवा दो।"
"जी।" कहकर वह आगे बढ़ा और खड़े होते महाजन को बांह से पकड़ लिया।
"छोड़।" महाजन ने क्रोध से बांह छुड़वानी चाही।
परंतु उसने बांह नहीं छोड़ी और किसी को ऊंची आवाज में पुकारा।
फौरन ही दो आदमी वहां पहुंचे।
वो तीनों महाजन को थामे वहां से ले गए।
"कैसे फड़फड़ा रहा है।" मखानी बोल पड़ा।
"लक्ष्मण और सपन कौन हैं?"

"मोमो जिन्न ने, अपना काम निकालने के लिए उन पर अधिकार कर रखा है।"

"समझी।"

मखानी प्यार से कमला रानी को देखने लगा।

"ऐसे मत देख।" कमला रानी ने गहरी सांस ली—"दिल में कुछ होता है।"

"मैं तो तुझे पाने के लिए मरा जा रहा हूं।"

"पूछ मत, हाल मेरा भी ऐसा ही है। लेकिन ये काम निबटाना है मुझे। भौरी कहती है कि काम के बाद वो मुझे और तेरे को पूर्वजन्म की दुनिया में ले जाएगी। शौहरी से उसने बात कर ली है। वहां हम सप्ताह में एक बार मिला करेंगे।"

"सप्ताह में एक बार। कम नहीं लगता तेरे को?"

"कम तो है। परंतु मैं भौरी को धीरे-धीरे तैयार कर लूंगी कि कम-से-कम सप्ताह में दो बार हमें मिलने दे। तू भी इस बारे में शौहरी को राजी करना। वो भी क्या दिन थे जब मैं बूढ़ी होती थी। लाठी टेककर चला करती थी और अपनी मौत का इंतजार कर रही थी।"

"मैं भी तो बुड्ढा था। लेकिन शौहरी ने मुझे जवानी दी। तेरे से मिलवाया। कितना अच्छा हो गया है अब सब कुछ। कालचक्र कितना अच्छा है कि हमें हर तरफ से मौज करा रहा है, बदले में उसके थोड़े से काम ही तो करने पड़ते हैं।"

"बातों में मैं वक्त खराब कर रही हूं। वो सब लोग जल्दी ही यहां आ जाएंगे। उनके लिए तैयारी भी करनी है। तू भीतर आराम कर। मेरे हिस्से के काम अभी बाकी हैं। जाने दे मुझे।" कहकर कमला रानी आगे बढ़ने को हुई कि मखानी ने उसका हाथ थाम लिया।

"छोड़। तू जल्दी गर्म हो जाता है और...।"

"एक चुम्मी दे दे—मैं तो...।"

तभी मखानी के कानों में शौहरी की फुसफुसाहट पड़ी।

"तू मानेगा नहीं मखानी।"

"एक चुम्मी ही तो ले रहा...।"

"कमला रानी का हाथ छोड़ दे। उसे जाने दे। उसे बहुत काम करने हैं।" शौहरी की फुसफुसाहट उसके कानों में पड़ रही थी।

"ले, छोड़ दिया।" मखानी ने नाराजगी भरे स्वर में कहा और कमला रानी का हाथ छोड़ दिया।

कमला रानी हंसी। बोली।

"लगता है शौहरी से डांट पड़ी है।" इसके साथ ही वो चली गई।

मखानी नाराजगी से वहीं बैठ गया।

"मखानी।" शौहरी की फुसफुसाहट पुनः कानों में पड़ी।

"तूने मेरे को एक चुम्मी भी नहीं लेने दी।" मखानी उखड़े स्वर में कह उठा।

"ये चौंचले छोड़, मेरी बात सुन। गम्भीर बात है।"

"क्या?" मखानी अभी भी उखड़ा पड़ा था।

"आज की रात फैसले की रात है।"

"वो कैसे?"

"जथूरा के पास ज्यादा वक्त नहीं है कि इन कामों में वो वक्त बर्बाद कर सके। ये टापू समुद्र के बीचोबीच है और कालचक्र का ही हिस्सा है ये। आज की रात बीतेगी तो ये टापू वापस समुद्र में चला जाएगा।"

"ऐसा क्या?"

"हां। आज की रात तूने और कमला रानी ने सफल हो के ही रहना है।"

"सफल?"

"देवा और मिन्नो में से एक ही बचे। दोनों मर जाएं तो बहुत अच्छा, नहीं एक को मरना ही चाहिए।"

"समझ गया। परंतु हम कालचक्र का हिस्सा हैं। सीधे-सीधे उन्हें नहीं मार सकते।"

"तभी तो, कमला रानी कुछ योजना के साथ चल रही है।"

"कैसी योजना?"

"कमला रानी बताएगी तेरे को। उसने देवा और मिन्नो में झगड़ा कराने का इंतजाम तय कर रखा है। जथूरा के पास ज्यादा वक्त नहीं है। फैसला आज की रात ही होगा।" शौहरी की फुसफुसाहट कानों में पड़ी।

"न हुआ तो?"

"तू ये क्यों सोचता है कि फैसला न हुआ।"

"देवा और मिन्नो ने आपस में झगड़ा न करने के बारे में तय कर रखा है।"

"ये बात छोड़ो। कमला रानी इस बात को संभाल लेगी।"

मखानी चुप रहा।

"फिर भी तेरे को बता देता हूं कि अगर आज रात फैसला न हुआ तो क्या होगा।"

"क्या होगा?"

"जथूरा सबके लिए पूर्वजन्म में आने का रास्ता खोल देगा।"

"ये क्या बात हुई?" मखानी के होंठों से निकला—"जथूरा तो उन्हें पूर्वजन्म में आने से रोक रहा है।"

"हां, परंतु वो फैसला कर चुका है कि आज रात काम नहीं हुआ तो जथूरा उन्हें पूर्वजन्म के रास्ते की तरफ धकेल देगा। जथूरा यहां पर इनमें से किसी पर भी वार नहीं कर पा रहा, जबकि पूर्वजन्म से उसकी ताकत से लोग कांपते हैं। वहां पर इसका एक वार ही इन सबको खत्म करने के लिए बहुत होगा।" शौहरी की फुसफुसाहट कानों में पड़ी।

"जथूरा पहले तो इन सबके पूर्वजन्म में प्रवेश करने पर परहेज कर रहा था। तूने ही मेरे को बताया था।"

"अवश्य उसे इन सबके पूर्वजन्म में आने पर परहेज था। अब भी है। देवा और मिन्नो एक साथ पूर्वजन्म में पहुंचेंगे तो दोनों के ग्रह मिलकर जथूरा का नुकसान करेंगे। लेकिन अब जथूरा का विचार बदल गया लगता है, शायद उसकी शक्तियों ने उसे संकेत दिया है कि वो देवा और मिन्नो को मात दे सकता है। या ऐसा ही कुछ है। असल बात तो जथूरा जानता होगा। परंतु तुम लोगों ने भरपूर चेष्टा करनी है कि आज रात ही देवा और मिन्नो में से एक खत्म हो जाए।"

"मैं और कमला रानी इस बात की पूरी चेष्टा करेंगे।"

"अगर तुम लोग सफल रहे तो हो सकता है जथूरा खुश होकर तुम दोनों को ईनाम दे दे।"

"कैसा ईनाम?"

"तेरे को और कमला रानी को हमेशा के लिए एक साथ रहने का मौका दे दे वो।"

"फिर तो मैं बोर हो जाऊंगा।"

"कमला रानी के साथ रहकर?"

"हां। हर वक्त वो मेरे पास रहेगी तो मैं बोर नहीं होऊंगा उसे देखकर। कहीं और मुंह मारने का मौका ही नहीं मिलेगा।"

शौहरी के हंसने की आवाज मखानी के कानों में पड़ी।

"हंसता क्यों है?"

"तू तो बहुत चालाक है मखानी। घर का माल भी खाना चाहता है और बाहर का भी।"

"स्वाद बदलने में बुराई तो नहीं है।"

"इसका जवाब तो तेरे को कमला रानी ही देगी।"

"उसे मत बताना ये बात। वरना वो नाराज हो जाएगी।"

"चिंता मत कर मखानी। कमला रानी भी तेरे से कम नहीं है।"

"कम नहीं है, क्या मतलब?"

"मतलब छोड़। काम की तरफ ध्यान दे। तुम दोनों के पास काम के लिए आज की रात बची है।"

देवराज चौहान, नगीना, बांके, रुस्तम चट्टानी इलाके से पेड़ों वाले इलाके में प्रवेश कर चुके थे। परंतु अभी तक उन्हें कोई नजर नहीं आया था।

"छोरे।"

"बोल बाप।"

"यो टापू कां पे स्थित हौवे?"

"आपुन को क्या मालूम बाप।"

"म्हारे को पतो हौवे कि तेरे को नेई मालूम।" बांकेलाल राठौर ने सिर हिलाया।

वे सब मध्यम गति से आगे बढ़ते जा रहे थे।

"तो क्यों पूछेला बाप।"

"बात करने को मन करो हो।"

"आपुन को तो हर तरफ समुद्र ही लगेला बाप। ये टापू खास होईला।"

"एक बात तुम लोगों ने महसूस की।" नगीना बोली—"कोई पक्षी या जानवर भी नजर नहीं आ रहा है। जबकि इस हरी-भरी जगह पर दोनों की मौजूदगी होनी चाहिए।"

"लफड़े वाली जगह लगेला है बाप।"

देवराज चौहान की निगाह हर तरफ दौड़ रही थी। उसके चेहरे पर कठोरता थी।

"आप क्या सोच रहे हैं?" नगीना ने पूछा।

"मेरे खयाल में कालचक्र ने हमें मुसीबत वाली जगह पर ला फेंका है। इस टापू पर जरूर कुछ खास है।"

"ये आप कैसे कह सकते हैं।"

"जथूरा का फेंका कालचक्र यूं ही हमें यहां पर नहीं लाने वाला।"

"आपका मतलब कि यहां खतरा आएगा।"

"जरूर। परंतु हम समझ नहीं पा रहे कि खतरा कैसा होगा।" देवराज चौहान ने भिंचे स्वर में कहा।

"अंम खतरों को 'वड' दयो देवराज चौहानो।" बांकेलाल राठौर कह उठा।

"ये जथूरा के कालचक्र का खतरा होगा बांके। जिसका मुकाबला करना हमारे बस से बाहर की बात है। उसने हमें खिलौना बनाकर रखा हुआ है अभी तक। हमने उसे देखा नहीं। परंतु वो हमें देख रहा होगा। हम...।"

"यो जथूरो पूर्वजन्मो में हौवे?"

"हां।"

"अंम पूर्वजन्मो में पौंचकर जथूरा को 'वड' दयो।" बांकेलाल राठौर गुर्राया।

"मुझे ये आसान नहीं लगता।"

"क्यों?"

"पूर्वजन्म के बाहर की इस दुनिया में वो हमें खत्म नहीं कर सकता। उसकी ताकत हम पर काम नहीं कर रही। परंतु पूर्वजन्म में उसकी ताकत पूरा काम करेगी हम पर। वो कितना शक्तिशाली है, इसका आभास तो हमें हो ही चुका है। पूर्वजन्म में पहुंच गए तो वो हमें पलों में खत्म कर देगा।" देवराज चौहान ने सोच-भरे स्वर में कहा।

"ऐसा होता तो वो तुम सबको पूर्वजन्म में आने से रोकता नहीं।" नगीना कह उठी।

"दीदी परफैक्ट कहेला है।" रुस्तम राव ने कहा।

"अम पूर्वजन्मो में जा के जथूरा को 'वड' दयो।"

"बाप, पूर्वजन्म में जाने का रास्ता किधर होईला?"

"अंम ढूंढो रास्तो को—अंम...।"

तभी देवा के कानों में फुसफुसाहट पड़ी।

"देवा।"

देवराज चौहान बुरी तरह चौंका।

"पोतेबाबा?" उसके होंठों से निकला।

"हां, मैं ही हूं।" पोतेबाबा की फुसफुसाहट पुनः कानों में पड़ी।

"पोतेबाबो, फिर आ गयो हो।" बांकेलाल राठौर तीखे स्वर में कह उठा।

"मुझे सुन रहे हो देवा?"

"हां। तुम तो जगमोहन के पास ही आते थे।"

"वो हालात दूसरे थे, अब हालात बदल गए हैं।" पोतेबाबा की फुसफसाहट कानों में पड़ी।

"अब हालातों को क्या हुआ है?" देवराज चौहान बोला।

"जग्गू वो नहीं है, जो तू समझ रहा है।"

"क्या मतलब?"

"जो तेरे पास था, वो जग्गू का बहरूप था। कालचक्र का हिस्सा था। असली जग्गू तो वो था, जो सोहनलाल को लेने उसके फ्लैट पर गया था परंतु उसके बाद ये तेरे पास लौटा, जो जग्गू का बहरूप, कालचक्र का हिस्सा था।

देवराज चौहान से कुछ कहते न बना, सच्चाई सुनकर।

"देवा...।"

"तो—तो जो मेरे साथ जगमोहन था, वो नकली था?" देवराज चौहान के होंठों से निकला।

"हां। वो कालचक्र का पैदा किया जग्गू यानी कि मखानी था।"

"और नगीना?" देवराज चौहान की निगाह नगीना की तरफ गई।

"बेला इस वक्त असली है तेरे पास। परंतु वो नकली थी, जो बंगले पर आई थी, वो कमला रानी थी।"

देवराज चौहान के कदम ठिठक गए।

बाकी सब भी रुके।

"मैं तेरी बात का विश्वास क्यों करूं पोतेबाबा?" देवराज चौहान ने कहा।

"मैं कभी भी कोई बात गलत नहीं कहता।"

"तूने ही कहा था कि तू जथूरा का सबसे खास सेवक है।"

"ये बात तो मैं अब भी कहता हूं।"

"तो तू ये सब बातें मुझे क्यों बता रहा है, अगर सच कह रहा है तो?"

"मैं जानकारी दे रहा हूं तो तू ले। तुझे क्यों एतराज होता है।" पोतेबाबा की आवाज कानों में पड़ी।

"सबसे बड़ी बात तो ये है कि जथूरा का सबसे खास सेवक, मेरे से सच बात क्यों बोलेगा?"

"तेरी बात गलत भी नहीं है।"

"मुझे तेरी बात का जरा भी भरोसा नहीं है।" देवराज चौहान ने कहा।

"मैंने पहले ही कहा है कि मैं झूठ नहीं बोलता।"

"मैं इतना जानता हूं कि तू जथूरा का सेवक है। सबसे खास सेवक। फिर तू हमारे हक में बात क्यों करेगा?"

"क्योंकि इसकी भी कोई वजह पैदा हो गई है कि मै तुम्हारे काम आऊं।"

"कैसी वजह?"

"वो वजह कम-से-कम अभी तो नहीं बता सकता।"

"क्यों?"

"मेरी अपनी मजबूरी है। लेकिन सही वक्त आया तो जरूर बताऊंगा।"

"क्या तू जथूरा के साथ नहीं है?"

"जथूरा के साथ हूं।"

"वो हमारा दुश्मन है।"

"हां।"
"तो तू हमारा दोस्त नहीं हो सकता।"
"तुम्हारा शुभचिंतक तो बन सकता हूं।"
"तू हमारी चिंता क्यों करेगा पोतेबाबा?"
"क्योंकि तेरे एक एहसान का उधार है मुझ पर। पूर्वजन्म का एहसान। उसी एहसान को बराबर कर रहा हूं।"
"कैसा एहसान?"
"बेकार की बातों में वक्त बर्बाद मत कर देवा। मैं बहुत खतरे उठाकर तेरे तक, इस कालचक्र के हिस्से में प्रवेश कर सका हूं। मेरा फायदा उठा सकता है तो उठा। जबकि मैं चाहता हूं कि तू मेरा फायदा उठा ले।"
"कैसा फायदा?"
"मेरी बातें सुनने में ही तुम्हारा फायदा है।"
"सुना।" देवराज चौहान के माथे पर बल पड़े हुए थे।
"यो थारे को फंसावो हो। इसो की बतियों में मत फंसनो देवराज चौहान।" बांकेलाल राठौर गुस्से से बोला।
"ये भरोसे के काबिल नेई होईला बाप।" रुस्तम राव की आंखें सिकुड़ चुकी थीं।
नगीना असमंजस में खड़ी थी।
"मेरी बातें सुनने में तो कोई एतराज नहीं। मानो या न मानो, ये तुम लोगों पर है।" इस बार पोतेबाबा की आवाज सबने स्पष्ट सुनी—"मैं अपना फर्ज पूरा करना चाहता हूं।"
"कैसा फर्ज?"
"देवा के काम आना चाहता हूं।"
"यो तो अजीबो बातो हौवे। जथूरा का सेवक उसके दुश्मन के काम आयो हो।"
"मैं अपनी समझ के हिसाब से, जो कर रहा हूं, वो ठीक है।" पोतेबाबा की आवाज में गम्भीरता आ गई।
"पैले इसकी बात सुनेला बाप।"
तभी देवराज चौहान बोला।
"तुम कहते हो कि मेरे साथ यहां पर जगमोहन नहीं, उसका बहरूप था।"
"हां।" पोतेबाबा की आवाज सबने सुनी।
"तो जगमोहन कहां है?"
"गुलचंद को भूल रहे हो तुम।"
"हां, वो भी, दोनों कहां हैं?"

"कमला रानी ने उन्हें कालचक्र के भीतर की परतों में फंसा दिया है। इस वक्त वो दोनों कालचक्र में फंसे पड़े हैं।"

"कहां?"

"क्या करोगे जानकर, क्योंकि तुम अभी कालचक्र को जानते ही कहां हो। कालचक्र को तो ठीक से जथूरा भी नहीं जानता क्योंकि इसका निर्माता उसका भाई सोबरा है। सोबरा ने जथूरा को हानि पहुंचाने के लिए कालचक्र जथूरा पर फेंका था परंतु वक्त रहते जथूरा को सोबरा की हरकत का आभास हो गया और जथूरा ने बड़ी ताकत का इस्तेमाल करके, कालचक्र को बंदी बना लिया और उसके कंट्रोल करने वाली स्थिति पर काबू पाकर, कालचक्र का मालिक बन बैठा। कालचक्र के भीतर क्या है, कौन-सी चीज कैसे काम करती है, इस बात को तो जथूरा भी नहीं समझ पाया ठीक से।"

देवराज चौहान सोचों में डूबा खामोश रहा।

पोतेबाबा की आवाज फिर आई।

"लेकिन इतना बता देता हूं कि जग्गू और गुलचंद बिल्कुल ठीक हैं अभी तक तो।"

"तंम तो म्हारे वास्ते वो हड्डी हो कि ना तो खाई जावे न उगली जावे।"

"मुझ पर भरोसा रखो।" पोतेबाबा का स्वर गम्भीर था।

"तुम कहो, क्या कहना चाहते हो?" देवराज चौहान ने कहा।

"मैं तुम्हें आने वाले खतरे से सतर्क करने आया हूं, जिसमें तुम लोग अब फंसते जा रहे हो।"

"खतरे के बारे में बताओ।"

"जथूरा ने इस बात का फैसला ले लिया है कि तुम लोग बेशक पूर्वजन्म में आ सकते हो।"

"पहले तो वो हमें पूर्वजन्म में आने से रोक रहा था।"

"हां। क्योंकि तुम लोगों का पूर्वजन्म की यात्रा पर जाना, उसके लिए नुकसानदेह था।"

"तो अब उसे नुकसान नहीं रहा?"

"मेरे खयाल में उसने कोई इंतजाम कर लिया है इस बारे में।"

"कैसा इंतजाम?"

"उस बारे में मुझे खबर नहीं।" पोतेबाबा की धीमी आवाज सब सुन रहे थे—"परंतु उसका निश्चिंत हो जाना, इसी तरफ संकेत करता है कि उसे भरोसा है कि तुम लोग उसे नुकसान नहीं पहुंचा सकोगे।"

"फिर?"

"इस पर भी आज की रात उसने कालचक्र को छूट दे रखी है कि वो चाहे तो देवा और मिन्नो में झगड़ा कराकर किसी एक या दोनों को खत्म करा सकता है और कालचक्र ऐसा करने की भरपूर चेष्टा करेगा।"

"आज रात।"

"हां। कुछ ही देर में अंधेरा होने वाला है।"

"तुम हमारे लिए क्या कर सकते हो?"

"मैं सिर्फ तुम्हें सूचना दे सकता हूं। वो ही दे रहा हूं।" पोतेबाबा की आवाज सुनाई दी।

"मैं मोना चौधरी से झगड़ा नहीं करूंगा।" देवराज चौहान ने कहा।

"कमला रानी ऐसे हालात पैदा कर देगी कि तुम झगड़ा करो।"

"कमला रानी यहां है?"

"इस टापू पर कालचक्र का पूरा घेरा है। बहुत बड़ी बस्ती है जंगली जैसे लोगों की। कमला रानी उनके सरदार के रूप में यहां मौजूद है। जग्गू यानी कि मखानी उसके पास पहुंच चुका है। कमला रानी अपनी तैयारियों में लग चुकी है। नील सिंह को कैद कर लिया गया है और बाकी सब लोगों को पकड़ने के लिए आदमी भेजे जा चुके हैं।"

"तुम्हारा मतलब कि हमें आदमी पकड़ ले जाएंगे।"

"हां, एक टोली इसी तरफ आ रही है।"

"हम उनका मुकाबला करेंगे और...।"

"कोई फायदा नहीं होगा। तुम लोग उनसे मुकाबला नहीं कर सकते।"

"तो हम क्या करें?"

"वो तुम्हें—सबको कैद कर लेंगे।"

"तुमने कहा कि कालचक्र के पास आज की रात है।" एकाएक देवराज चौहान बोला।

"हां।"

"आज रात के बाद क्या होगा?"

"कालचक्र यूं तो तुम लोगों को खत्म कर देगा आज रात। या नहीं भी कर सका तो सुबह तक कालचक्र सिमट जाएगा। कालचक्र की सब चीजें अपने में सिमटती चली जाएंगी। सुबह तुम लोग खुद को गहरे समुद्र के बीचोबीच पाओगे, जहां से किनारा सैकड़ों मीलों दूर होगा।" पोतेबाबा की आवाज में गम्भीरता थी।

देवराज चौहान के होंठ सिकुड़ गए।

"फिर हमारा क्या होगा?"

"मैं नहीं जानता, परंतु ये मुझे पता है कि उस स्थिति में तुम्हारे पूर्वजन्म में प्रवेश करने के दरवाजे खुल जाएंगे। तुम लोग पूर्वजन्म के उस हिस्से में पहुंचोगे, जहां जथूरा का साम्राज्य है।"

"अगर हम जिंदा रहे तो।"

"हां। अगर ये रात तुम सबने सुरक्षित निकाल ली तो।"

"रात ठीक से बीत जाए। इसके लिए हमारे हक में कोई बेहतर बात बताओ।"

"मैं कुछ नहीं कर सकता। परंतु मोमो जिन्न शायद कुछ करे।"

"मोमो जिन्न। वो तो जथूरा के लिए काम करता...।"

"हां। परंतु मैंने उसके भीतर इंसानी इच्छाएं जगा दी हैं। अब उसके भीतर ममता के भाव आ गए हैं। वो किसी का बुरा नहीं कर सकता। अच्छा ही करेगा। क्योंकि इंसानी इच्छाएं उसे चैन से नहीं बैठने देतीं।"

"वो अब कहां है?"

"टापू पर ही है। लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा के पास ही कहीं होगा। उसकी ड्यूटी उन दोनों से काम लेने की है।"

देवराज चौहान के चेहरे पर सोचें दौड़ रही थीं।

"तुम जथूरा के बारे में बताओ कुछ।"

"वो माना हुआ वैज्ञानिक है और तपस्या करके उसने शक्तियां भी हासिल कर रखी हैं। ये सच है कि उसका मुकाबला कर पाना आसान नहीं है। वो करामाती इंसान है। हर कोई उसे इज्जत देता है। सच कहूं तो वो शानदार है।"

"और तुम उससे गद्दारी कर रहे हो।"

"जाहिर है कि गद्दारी की भी कोई वजह होगी।"

"वो वजह हमें नहीं बता रहे तुम?"

"जब वक्त आएगा, जरूर बताऊंगा।" पोतेबाबा ने कहा—"इस वक्त तुम्हें अपने बारे में सोचना चाहिए।"

"तुमने कहा कि आज रात कालचक्र सिमट जाएगा।"

"हां।"

"तो कालचक्र के उस हिस्से का क्या होगा, जहां जगमोहन और सोहनलाल हैं।"

"वो हिस्सा वैसे का वैसा ही रहेगा, जब तक जग्गू और सोहनलाल का जथूरा कोई फैसला नहीं लेता।"

"कैसा फैसला?"

चंद पलों की खामोशी के बाद पोतेबाबा की आवाज सुनाई दी।

"सब कुछ तुम पर और मिन्नो पर निर्भर है। आज रात फैसला हो जाएगा कि कालचक्र तुम दोनों में से एक को खत्म करा पाने में सफल होता है या नहीं। अगर कालचक्र सफल हो गया तो जथूरा की सारी परेशानी खत्म हो जाएगी। क्योंकि देवा और मिन्नो की जोड़ी टूट चुकी होगी। जो बचेगा, उसके ग्रह जथूरा का मुकाबला करने के काबिल नहीं रहेंगे। ऐसी स्थिति में जथूरा किसी की भी परवाह नहीं करेगा। परंतु तुम्हारे और मिन्नो के बच जाने की स्थिति में जथूरा चाहेगा कि तुम सब पूर्वजन्म में प्रवेश कर जाओ, ताकि जो उसने सोच रखा है, वैसा सलूक वो तुम लोगों के साथ करा सके। अब वो यूं ही नहीं तुम सबको पूर्वजन्म में आने देगा। उसके पास यकीनन तगड़ा इंतजाम होगा।"

"तुम उस इंतजाम के बारे में नहीं जानते?"

"नहीं जानता। क्योंकि मैं अभी वापस पूर्वजन्म में लौटा नहीं। जथूरा से बात की नहीं।"

"तो तुम्हें कैसे पता चला कि जथूरा क्या प्रोग्राम बना रहा है।"

"सेवकों से बात करके।"

"सेवक तुम्हें कहां मिल गए?"

"मेरी तारें पूर्वजन्म की दुनिया से जुड़ी हुई हैं। वो वहां हैं, मैं यहां हूं, परंतु हमारे पास एक दूसरे से बात करने का साधन है। मैं उन सेवकों से बात करके ताजा हाल जान सकता हूं।"

"वो तुम्हें सुन सकते हैं?" देवराज चौहान ने पूछा।

"अवश्य सुन सकते हैं।"

"इस वक्त तुम हमसे, जथूरा से गद्दारी से भरी बातें कर रहे हो, इन्हें भी तो वो सुन..।"

"इस वक्त हमारी बातों को वो नहीं सुन सकेंगे।"

"क्यों?"

"मैंने कुछ देर के लिए वो चीज अपने से अलग कर दी है, जिसकी वजह से वो बातें सुनते थे।"

"ओह।"

"आज की रात तुम लोगों के लिए महत्त्वपूर्ण है। मैं चाहता हूं कि तुम लोग पूर्वजन्म में प्रवेश कर जाओ। परंतु ये तभी हो सकता है, जबकि तुम और मिन्नो ये रात ठीक से बिता लो।"

"थारी बातों ने तो म्हारे को और परेशान कर दयो हो।" बांकेलाल राठौर बोला।

"आने वाले वक्त की थोड़ी-सी तस्वीर मैंने पहले दिखा दी है। हालातों से मुकाबले के लिए खुद को तैयार कर लो।"

"म्हारे को हथियार दयो ना और बोल्लो हो मुकाबलो के लिये तैयार हो जावो।"

"मैं अब जाऊंगा।" पोतेबाबा की आवाज आई—"वो लोग करीब आते जा रहे हैं।"

"म्हारे का फंसा के, खुदो भागो हो।"

उसके बाद पोतेबाबा की आवाज नहीं आई।

चारों एक-दूसरे को देखने लगे।

नगीना कह उठी।

"सबसे बड़ा सवाल है कि हम पोतेबाबा की बात का विश्वास करे या न करें?"

"आपुन को तो पोतेबाबा फ्राड दिखेला। तुम क्या कहेला बाप?"

"म्हारा तो दिमागो ही ठप हो गयो हो।"

"मुझे पोतेबाबा की बात का भरोसा नहीं।" नगीना ने कहा।

"हो तो म्हारे को भी नहीं। पर दिल कहो हो कि पोतेबाबा की बात, इस बारो मानो ही लो।"

"जो भी पोतेबाबा ने कहा है वो सच-झूठ के रूप में जल्दी ही हमारे सामने आ जाएगा।" देवराज चौहान ने सोच-भरे स्वर में कहा—"वो कहता है कि आज की रात फैसले की है और रात आने में ज्यादा वक्त नहीं।"

"अब क्या करें?"

"यहां रुके रहने से कोई फायदा नहीं। किस दिशा में जाना है, ये भी पता नहीं। मेरे खयाल में इसी तरह आगे चलते हैं।"

"चल्लो।"

वो सब पुनः पहले की तरह आगे बढ़ने लगे।

पेड़ घने थे। दिन का प्रकाश कम हो रहा था। कहीं-कहीं तो जमीन अंधेरे में डूबी दिखने लगती।

"पोतेबाबा की बातों ने म्हारी तो खोपड़ी हिल्ला दयो।" बांकेलाल राठौर जैसे अपने से कह उठा—"आयो, म्हारे पैरों में बमो फोड़ो और चल दयो। छोरे।"

"बाप।"

"पोतेबाबा बोल्लो हो कि अंम रात को बचो गयो तो कल्ल को पूर्वजन्म में प्रवेश करो हो।"

"हां बाप। खतरे वाला मामला बनेला।"

"पूर्वजन्मो में खतरो बोत बड़ो-बड़ो हौवो।"

"तुम तो हर खतरे को 'वडेला' बाप।"

"मजाको नेई छोरे। पूर्वोजन्मो में जानो के सोच के, म्हारा दिल बजो हो।"

रुस्तम राव ने नगीना को देखकर कहा।

"दीदी, पूर्वजन्म में जाने का सोचकर तुम्हें कैसा लगईला?"

"अभी रात बीच में बाकी है रुस्तम।"

"क्या मतलब?"

"पोतेबाबा की बात सच मानें तो ये रात हम पर भारी पड़ सकती है।" नगीना ने गम्भीर स्वर में कहा।

"कैसे दीदी?"

"कालचक्र कोई मामूली चीज नहीं है। इसका एहसास हमें हो चुका है। वो ही कालचक्र हम सबको घेरने वाला है कि रात के अंधेरे में देवराज चौहान और मोना चौधरी का झगड़ा करवा सके। खासतौर से कालचक्र की ये कोशिश होगी तो खुद ही सोचो कि वो कितनी खतरनाक कोशिश होगी।"

"परफैक्ट बोलेला दीदी।"

"जैसे भी हो, हमें ये रात आराम से गुजारनी होगी, बिना झगड़े के। जो कि मुझे सम्भव नहीं लगता।"

"म्हारी तो खोपड़ी हिल गयो। बहना की बातों में दमो हौवे।"

नगीना ने खामोशी से चल रहे देवराज चौहान को देखा।

"आप भी तो कुछ कहिए।" नगीना ने कहा।

"मेरे पास कहने को कुछ नहीं है।" देवराज चौहान बोला।

"अगर पोतेबाबा ने सच कहा है तो रात को बहुत कुछ हो सकता है।"

"जब तक हालात मेरे सामने न हों, मैं कुछ नहीं कह सकता।" देवराज चौहान का स्वर कठोर था।

"हालात तो रात को ही हमारे सामने आएंगे।" नगीना बोली।

रुस्तम राव कुछ कहने लगा कि शब्द उसके होंठों में ही रह गए।

'खटका' हुआ था।

स्पष्ट आवाज उभरी थी। जैसे किसी के पांव के नीचे सूखी टहनियां आ गई हैं।

वे चारों ठिठके।

नजरें हर तरफ घूमीं।

तभी एक आदमी दिखा। जिसके हाथ में कुल्हाड़ी जैसा हथियार था। वो सूखी लकड़ियों पर खड़ा था। उन लकड़ियों पर या तो उसने पैर जान-बूझकर रखा था या अनजाने में आ गया था।

उसे देखते ही देवराज चौहान के चेहरे पर छाई कठोरता में बढ़ोत्तरी हो गई।

"पोतेबाबा की पहली बात तो सच होईला बाप।"

"यो तो कल्ला ही दिखो हो। साथ में कोई न हौवे। अंम इसो को 'वड' दयो।"

तभी देवराज चौहान बिजली की सी तेजी से पलटा

उसके कानों ने सरसराहट सुनी थी।

दूसरी तरफ उसने दो व्यक्ति देखे।

फिर उनके गिर्द फैले आदमियों के दिखने में बढ़ोत्तरी होने लगी। पूरा घेरा था जो उन पर पड़ चुका था।

"हम घिर चुके हैं।" देवराज चौहान ने कठोर स्वर में कहा—"ये संख्या में बहुत ज्यादा है। इनका मुकाबला करना बेवकूफी होगी।"

"यो तो म्हारे को कुत्तों की तरहो खींचो के ले जायो।"

घेरा तंग होने लगा।

बचने को कोई रास्ता नहीं था।

☐ ☐

मोना चौधरी और पारसनाथ तेजी से आगे बढ़े जा रहे थे। वो जिस तरफ चल पड़े थे वो चट्टानों से भरा खुला इलाका था। सूर्य पश्चिम की तरफ चलता रहा था। समुद्र से लहरें टकराकर उनकी आंखें चौंधिया रही थीं। ठंडी हवा उन्हें राहत पहुंचा रही थी। वे दोनों समुद्र के किनारे-किनारे आगे बढ़ते रहे थे।

"अगर यहां कोई रहता है तो समुद्र के किनारे अवश्य कोई इंसान दिखेगा।" मोना चौधरी बोली।

"रहता तो जरूर होगा मोना चौधरी।" पारसनाथ ने कहा।

"ये तुम कैसे कह सकते हो?"

"वीरान जगह पर हमें ला फेंकने से जथूरा का कोई मतलब हल नहीं होने वाला।"

"क्या पता वो चाहता हो कि हम यहां पर भूख-प्यास से तड़पकर मर जाएं।"

"ये सम्भव नहीं।"

"क्यों?"

"जगमोहन ने मुझे अपनी और पोतेबाबा की बातचीत के बारे में बताया था, पोतेबाबा ने कहा था कि जथूरा हम सब लोगों पर सीधे-सीधे कोई वार नहीं कर सकता कि जिससे हमारी मौत हो सके। जथूरा का ऐसा वार तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक हम इस पूर्वजन्म में प्रवेश न कर जाएं।" पारसनाथ बोला—"वो हममें

झगड़ा करवाकर ही हमें मौत दे सकता है और इसी कारण उसने हम सबको एक जगह इकट्ठा किया है।"

"हम झगड़ा नहीं करेंगे।"

"मेरे खयाल में जथूरा की निगाहों में सबसे कमजोर कड़ी तुम हो।"

"मैं—वो कैसे?"

"क्योंकि तुम्हें जल्दी गुस्सा आ जाता है।"

"एक बार तो मुझसे गलती हो गई पारसनाथ जो मैं सपन चड्ढा की बातों में आ गई। परंतु अब ऐसा नहीं होगा। सपन चड्ढा और लक्ष्मण दास पर जथूरा के गुलाम मोमो जिन्न ने काबू पाया हुआ है। दोनों उसके कहने पर चलने को मजबूर थे।" (ये सब विस्तार से जानने के लिए पढ़ें **राजा पॉकेट बुक्स** से **अनिल मोहन** का पूर्व प्रकाशित उपन्यास **'जथूरा'**।)

"मोमो जिन्न इस वक्त टापू पर ही मौजूद है।"

"क्योंकि लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा भी यहां हैं।" मोना चौधरी की निगाह आगे बढ़ते हुए बातें करते हुए हर तरफ घूम रही थी। रास्ते में आने वाले छोटे-बड़े पहाड़ी पत्थरों को वो पार करते जा रहे थे।

"हां। उन दोनों की हरकतों से हमें सतर्क रहना होगा। वो मोमो जिन्न के हाथों फंसे, फिर कोई गड़बड़ कर सकते हैं।"

दोनों के बीच कुछ चुप्पी आ ठहरी।

उनके शरीर पर पड़ने वाली सीधी धूप कभी-कभी शरीर मे चुभन पैदा कर देती थी।

कुछ देर बाद ये चट्टानी इलाका खत्म होता दिखा। दूर, सामने घने पेड़ों का जंगल नजर आ रहा था।

"अभी तक कोई नजर नहीं आया।" पारसनाथ ने कहा।

"हो सकता है उन पेड़ों की तरफ कोई आबादी हो।" मोना चौधरी बोली।

"हमें वापस भी जाना है।"

"काम अधूरा छोड़कर वापस जाने का कोई फायदा नहीं। हम आगे जाएंगे। टापू का पूरा चक्कर लगाकर लौटेंगे।"

"क्या पता टापू कितना बड़ा है।" पारसनाथ ने गम्भीर स्वर में कहा।

"देखते हैं।" मोना चौधरी ने पारसनाथ को देखा—"शायद आगे हमें जगमोहन-महाजन मिल जाएं।"

पारसनाथ ने सहमति से सिर हिला दिया।

दोनों आगे बढ़ते रहे।

"सोहनलाल का हम सबके बीच न होना अजीब बात है।" पारसनाथ बोला—"सिर्फ वो ही नहीं है यहां।"

"इसकी अवश्य ही कोई वजह होगी।"

"क्या तुम्हें जथूरा की कुछ याद है?"

"नहीं।" मोना चौधरी ने कहा—"अभी तक तो ये नाम मुझे सुना हुआ नहीं लगता।"

तभी एक पत्थर उनके आगे आकर गिरा।

दोनों चौंके। उसी पल फुर्ती से पलटे।

फिर दोनों के चेहरों पर ही आश्चर्य नाच उठा।

पीछे, कुछ कदमों के फासले पर मुस्कराता हुआ पेशीराम (फकीरबाबा) खड़ा था। शरीर पर सफेद धोती। माथे पर चंदन का तिलक। चांदी जैसे बाल पीछे को जाते हुए। गले में मालाएं पड़ी थीं। चेहरे पर ऐसा तेज था कि देखते ही बनता था। अब उसके चेहरे की झुर्रियों में कुछ बढ़ोत्तरी हो गई थी पहले के मुकाबले।"

मोना चौधरी और पारसनाथ ने कम-से-कम इस वक्त तो पेशीराम को देखने की कल्पना नहीं की थी।

दोनों ने अपने चेहरे पर छाए हैरानी के भावों को संभाला।

"पेशीराम तुम?" मोना चौधरी के होंठों से निकला।

"कैसी हो मिन्नो?"

"ठीक—हूं...।"

"और तुम परसू मजे में हो?" पेशीराम ने पारसनाथ से पूछा।

पारसनाथ ने उसे देखते हुए सहमति में सिर हिला दिया।

पेशीराम दो कदम आगे आया और ठिठक गया।

सामने ही दूर तक जाता कभी न खत्म होने वाला समुद्र था।

"मैंने सोचा था कि इस बार तुममें से किसी से नहीं मिलूंगा। हालातों का मुकाबला तुम लोगों को स्वयं ही करने दूंगा।"

"तो अब क्यों आए पेशीराम?" मोना चौधरी ने पूछा।

"हालात बिगड़ चुके हैं।"

"ये तुम्हें अब पता चला?"

"मैं सब हालातों पर नजर रखे हुए था। परंतु अब मुझे सामने आना ही पड़ा। तुम लोग कालचक्र में फंसे हुए हो।"

"मालूम है पेशीराम।"

"बात सिर्फ इतनी ही होती तो मैं सामने न आता।"

"तो?"

"तुम लोगों का मुकाबला जथूरा से है। वो शैतान है या यूं कह लो कि बड़ा विद्वान है।"

मोना चौधरी और पारसनाथ की नजरें पेशीराम पर रहीं।

"जथूरा के मौत के खेल के सामने तुम लोग कमजोर हो। वो तुम सबको हरा देगा।"

"यही कहने आए हो।"

पेशीराम गम्भीर नजर आने लगा।

"मैं चाहता हूं कि तुम सब वापस पलट जाओ। जथूरा के रास्ते से हट जाओ।"

मोना चौधरी के होंठ सिकुड़े। चेहरे पर कड़वे भाव आ ठहरे।

"सुना मोना चौधरी।" पारसनाथ ने कठोर स्वर में कहा।

"अच्छी तरह से सुना।"

"तुम जानती हो मिन्नो कि मैं तुम्हें कभी भी गलत राय नहीं दूंगा।" पेशीराम बोला।

"लेकिन अब तू बूढ़ा हो गया है पेशीराम।" मोना चौधरी ने व्यंग से कहा।

"बेशक मैं बूढ़ा हो गया हूं।" पेशीराम ने गम्भीर स्वर में कहा—"मैं तो कब से इस शरीर को त्यागने की इच्छा रखता हूं। परंतु श्राप में फंसा पड़ा हूं। जब तक तेरे और देवा में दोस्ती न करा दूं, तब तक मुझे श्राप से मुक्ति नहीं मिलेगी। मैं अपने इस शरीर को त्याग नहीं सकता। बूढ़े पर बूढ़ा होता जाऊंगा। तीन जन्मों से मैं इस शरीर के साथ जी रहा हूं। अगर तुम्हारे इस जन्म में भी मैं अपनी कोशिश में सफल न हुआ तो मुझे तुम लोगों के चौथे जन्म का इंतजार करना होगा। फिर वहां कोशिश...।"

"ये बातें पुरानी हो चुकी हैं।"

"मेरे लिए तो नई हैं। मेरा तो वो ही जन्म चला आ रहा है।"

"पहले जन्म में सब तेरी ही गलतियां थीं। तूने ही मुझे देवा के खिलाफ भड़काया था।"

"उसी का फल तो मैं अभी तक भुगत रहा हूं।"

"पेशीराम।" पारसनाथ कह उठा—"बात अब की, इन हालातों की करो तो बेहतर होगा। हमारे पास वक्त कम है। अंधेरा होने वाला है।"

पेशीराम ने अपने बूढ़े चेहरे पर हाथ फेरा।

कुछ पलों तक वहां खामोशी रहीं, फिर पेशीराम कह उठा।

"तुम लोग शायद जथूरा का मुकाबला न कर सको। वो तुम पर भारी पड़ेगा।"

"तुम क्यों चिंता करते हो।" मोना चौधरी ने कहा।

"मुझे ही तो चिंता करनी है। अगर तेरे को या देवा को कुछ हो

गया तो मुझे तुम दोनों के अगले जन्म का इंतजार करना पड़ेगा। इसलिए मैं चाहता हूं कि तुम लोग जथूरा के रास्ते से हट जाओ।"

"हममें से कोई भी जथूरा के रास्ते में नहीं आया। जथूरा ही हमारे रास्ते में आया था पेशीराम।"

"हां उसकी शक्तियां उसे संकेत दे रही थीं कि देवा और मिन्नो का पूर्वजन्म के उस हिस्से में प्रवेश हो सकता है, जहां उसका साम्राज्य फैला हुआ है। ऐसा होना जथूरा के लिए नुकसानदेह होगा यही वजह रही कि आशंका में भरा जथूरा पहले से ही ऐसे इंतजाम में लग गया कि, तुम लोग पूर्वजन्म में प्रवेश न कर सको। परंतु उल्टा होता रहा। जथूरा की चेष्टाएं तुम लोगों के इरादों को मजबूत करती चली गईं, पूर्व जन्म में प्रवेश करने को। बेशक ये जथूरा की गलती थी, तुम लोगों को रोकने की चेष्टा करना। परंतु ये सच है कि वो तुम सब से ताकतवर है। उसका कुछ बिगाड़ पाना आसान नहीं है।"

"तुम हमें पीछे हटने को कह रहे हो?"

"हां।"

"पीछे कैसे हटेंगे। हम तो जथूरा के फेंके कालचक्र में फंसे पड़े हैं।" मोना चौधरी बोली।

"मैं तुम सबको कालचक्र से बाहर ले जाऊंगा। तुम लोगों की सामान्य दुनिया में पहुंचा दूंगा।"

"फिर क्या होगा?"

"फिर तुम लोगों का सामना जथूरा से नहीं होगा। सब कुछ पहले की तरह हो जाएगा।"

"तुम हमें कालचक्र से बाहर निकालने को क्यों उतावले हो रहे हो?"

"क्योंकि जथूरा भी ऐसा ही चाहता है।"

"जथूरा से मिले हो तुम?"

"नहीं। परंतु मैंने अपनी शक्तियों से जथूरा के विचारों को महसूस किया है।"

"जथूरा ऐसा चाहता है तो वो हमें इस कालचक्र से स्वयं ही निकाल सकता है।"

"वो मजबूर है। नहीं निकाल सकता।"

"क्यों?"

"अपनी मर्जी से वो किसी को भी कालचक्र में फंसा सकता है, परंतु कालचक्र में फंसे व्यक्ति को, कालचक्र से बाहर निकाल पाना उसके बूते से बाहर की बात है। जब कोई कालचक्र में फंसता है तो

कालचक्र की भीतरी शक्तियां सक्रिय हो उठती हैं, जिन पर जथूरा का कोई अधिकार नहीं है। फिर तो वो ही होगा जो कालचक्र की शक्तियां चाहेंगी।"

"जथूरा या तुम हमें कालचक्र से बाहर निकालने को व्याकुल क्यों हो?"

"मैंने अपनी वजह तुम्हें बता ही दी है और जथूरा भी नहीं चाहता कि तुम लोग का पूर्वजन्म में प्रवेश हो। तुम लोग अगर पूर्वजन्म में प्रवेश कर जाओगे तो जथूरा की ताकतों से तुम लोगों का झगड़ा होगा। जथूरा सोचता है कि ऐसा होने पर उसका कीमती समय बर्बाद होगा। उसके सेवकों का वक्त बर्बाद होगा।"

"तो तुम चाहते हो कि जथूरा का वक्त बर्बाद न हो।"

"मैंने जथूरा की सोचों को पढ़ा है।"

"तुम भी तो चाहते हो कि हम पूर्वजन्म में प्रवेश न करें।"

"अवश्य चाहता हूं। क्योंकि जथूरा से कोई मुकाबला नहीं कर सकता। वो आज के वक्त की महाशक्ति है।" पेशीराम ने गम्भीर स्वर में कहा—"मुझे तुम लोगों की चिंता है। आने वाले बुरे वक्त को मैं रोकना चाहता हूं।"

"क्या तुमने आने वाले वक्त की झलक देखी है?"

"नहीं। मैंने भविष्य में नहीं झांका। अपने विचार ही व्यक्त कर रहा हूं।" पेशीराम बोला।

"तुम्हें भविष्य में झांकना चाहिए था। शायद जीत हमारी हो।"

"अब भविष्य में झांकने का वक्त निकल चुका है। वैसे तुम्हें मेरी राय मान लेनी चाहिए।"

"देवराज चौहान से इस बारे में बात की?"

"देवा से तभी बात करूंगा, जब तुम्हारी हां हो। हमेशा तुम्हारी तरफ से ही समस्या आती है मिन्नो।"

"मुझे अब पीछे हटना गंवारा नहीं।" मोना चौधरी ने ठोस स्वर में कहा।

"मैं जानता था मिन्नो कि तू मेरी बात नहीं मानेगी।"

"जथूरा हमारे रास्ते में आया। उसी ने हमसे झगड़ा किया। पीछे हटना है तो वो हटे, हम क्यों हटें?"

"वो ताकतवर है।"

"जो होगा देखा जाएगा। मैं इससे डरती नहीं।"

"तुम्हारा क्या विचार है परसू। क्या तुम मिन्नो को समझाओगे कि...।"

"मैं मोना चौधरी के जवाब से सहमत हूं पेशीराम।"

"तुम और नील सिंह को तो मिन्नो की बात कभी गलत लगती नहीं।

पहले जन्म में भी, मिन्नो की बात पर आंख मूंदकर विश्वास कर लेते थे और अब भी वो ही सब कुछ है। कुछ भी तो नहीं बदला।"

मोना चौधरी कह उठी।

"हमारे पास वक्त कम है पेशीराम। हमें जाना है।"

"जबर्दस्ती तो मैं कर नहीं सकता। लेकिन आज तुम्हें एक बात कहना चाहूंगा मिन्नो।"

"कहो।"

"मैंने हमेशा तुम्हें रोका है कि देवा से झगड़ा नहीं करो। परंतु आज कहूंगा कि देवा से झगड़ा कर।"

मोना चौधरी चौंकी। पारसनाथ के माथे पर बल पड़े।

"तू सच में बूढ़ा हो गया है पेशीराम।" मोना चौधरी के होंठों से निकला।

पेशीराम मुस्कराया।

"क्या कहना चाहता है तू? सीधी तरह बता।"

"जथूरा ने कालचक्र का वक्त कम कर दिया है। सिर्फ आज की रात बाकी है कालचक्र की, उसके बाद कालचक्र सिमट जाएगा, अपने में। परंतु आज की रात फैसले की है।"

"कैसे फैसले की?"

"जथूरा आज रात तेरे और देवा में झगड़ा कराकर, एक को तो जरूर खत्म करवाना चाहेगा।"

"और तू चाहता है कि मैं देवा के साथ झगड़ा करूं?"

"हां।"

"ये नहीं होगा।"

"कमला रानी सब इंतजाम कर चुकी है। उसके आदमी तुम दोनों को ले जाने के लिए आ रहे हैं।"

"कमला रानी कौन है?"

"कालचक्र का ही हिस्सा है वो। इसी टापू पर कालचक्र की एक बस्ती है, उन सबकी बड़ी बनी हुई है कमला रानी इस वक्त।"

मोना चौधरी के होंठ भिंच गए।

"देवा और अन्य लोग कमला रानी की कैद में पहुंच चुके हैं।" पेशीराम ने पुनः कहा।

"तू मेरा दिमाग खराब कर रहा...।"

"मैं नहीं कर रहा, कालचक्र ने तुम सबको परेशान कर रखा है। मेरी बात भूलना मत। आज रात तेरे को देवा से झगड़ना...।"

"कभी नहीं। मैं जथूरा की चाल को सफल नहीं होने दूंगी।" मोना चौधरी गुर्रा उठी।

पेशीराम मुस्कराया।
"तू कुछ छिपा रहा है पेशीराम।" पारसनाथ बोला।
"मैं तो सिर्फ इतना कह रहा हूं कि जथूरा, कालचक्र के माध्यम से देवा और मिन्नो में झगड़ा कराकर एक को खत्म करवा देना चाहता है। रात की सारी तैयारियां कमला रानी कर चुकी है।"
"तू मोना चौधरी को झगड़ा करने को कह रहा...।"
"इसी में मिन्नो का भला है।"
"भला, वो कैसे?"
"सब सामने आ जाएगा। एक बात और कह दूं कि जग्गू बहरूप है, वो असली नहीं है।"
"ओह, तो जगमोहन कहां है?"
"जग्गू और गुलचंद भी कालचक्र में हैं। वो दोनों इकट्ठे हैं।"
मोना चौधरी के चेहरे पर कठोरता आ ठहरी थी।
पारसनाथ के होंठ भी भिंच गए थे।
"अब मेरा जाने का वक्त हो गया है।" पेशीराम ने गम्भीर स्वर में कहा—"जो बातें मैंने कही हैं, वो याद रखना। कुछ ही देर में कमला रानी के लोग तुम दोनों को पकड़ने के लिए यहां होंगे। उनसे मुकाबला करने की चेष्टा मत करना। कोई फायदा नहीं होगा।" इसके साथ ही पेशीराम का शरीर धुंधला-सा पड़ता चला गया।
कुछ पलों के लिए ऐसा लगा, जहां वो खड़ा है, वहां धुंध-सी आ गई हो। पेशीराम का शरीर उसी धुंध में छिप-सा गया था।
जब वो धुंध छंटी तो पेशीराम वहां नहीं था।
मोना चौधरी का सोच से भरा चेहरा कठोर हुआ पड़ा था। पारसनाथ बोला।
"पेशीराम जाते-जाते कह गया है कि जो उसने कहा है, वो ही याद रखा जाए। वो किया जाए।"
"लेकिन उसने मुझे देवराज चौहान से झगड़ा करने को क्यों कहा?"
"ये तो वो ही जानता होगा।"
"मैं उसकी बात नहीं मानूंगी। जैसे हालात सामने आएंगे, उसी के मुताबिक...।"
"वो आ गए।" पारसनाथ के होंठों से निकला।
मोना चौधरी की निगाह घूमी।
छोटे-से घेरे में पच्चीस-तीस को अपनी तरफ आते देखा उन्होंने।
"कुछ मत करना पारसनाथ। अपने आप को इनके हवाले कर दो।" मोना चौधरी कठोर स्वर में कह उठी।

दो घंटे की लगातार भाग-दौड़ के बाद कमला रानी ने झोंपड़ी में प्रवेश किया। उसके चेहरे पर थकान-सी नजर आ रही थी। लकड़ी की बनी कुर्सी पर वो जा बैठी कि तभी कानों में भौरी की आवाज पड़ी।

"थक गई कमला रानी?"

"हां।" कमला रानी ने गहरी सांस ली—"सारे काम अपनी आंखों के सामने कराए।"

"तू मेहनती है। तेरे को पूर्वजन्म में ले जाकर अपनी सेविका बनाऊंगी। मखानी से काम क्यों नहीं लिया?"

"वो चुम्मी मांगता है।"

"तो क्या हो गया, दे देती।"

"तू नहीं जानती भौरी।" कमला रानी ने कहा—"उसका हाथ पकड़ो तो वो गर्म हो जाता है। चुम्मी देती तो जाने क्या हाल हो जाता उसका।"

भौरी की हंसी सुनाई दी कमला रानी को।

"औरत के मामले में वो कमजोर है। हर वक्त तैयार रहता है।"

"तेरे को तो पसंद है वो।"

"पसंद तो है।"

"तुम दोनों को इस काम के बाद पूर्वजन्म में ले जाएंगे। आज की रात तो बाकी है।"

"हां, सिर्फ आज की रात...।"

"कल सुबह हम सब पूर्वजन्म में होंगे।"

"मुझे अपने काम की चिंता है कि काम कैसे भी हो, पूरा कर दूं।"

"देवा-मिन्नो में से एक को खत्म करने को कह रही है।"

"हां, ये ही काम तो तूने मेरे को सौंपा है।"

"ये काम हो जाए तो जथूरा खुश हो जाएगा। तब हमें ईनाम अवश्य देगा।"

"मुझे ईनाम की जरूरत नहीं। मैं तो सफल होना चाहती हूं।" कमला रानी ने कहा।

"तू मेहनत कर रही है तो जरूर सफल होगी। मखानी किधर है?"

"होगा कहीं। मैं तो व्यस्त थी उधर—वो...।"

कमला रानी के शब्द अधूरे रह गए।

तभी उसने मोमो जिन्न को एकाएक बड़े होते देखा। तीन इंच

के रूप में पहले से ही झोंपड़े में था, परंतु कमला रानी उसकी मौजूदगी भांप नहीं सकी थी। कमला रानी बुरी तरह चौंकी।

"कौन हो तुम?"

"मोमो जिन्न हूं कमला रानी...?"

"मैं तुम्हें नहीं जानती।"

"भौरी से पूछ मेरे बारे में।"

"तू भौरी को कैसे जानता है?"

"जथूरा का सेवक हूं। सबको जानता हूं। जिस काम को तुम कर रही हो। उसे मैं पहले से ही कर रहा था।"

"ये कौन है भौरी?" कमला रानी ने पूछा।

"है तो जथूरा का सेवक, मोमो जिन्न ही।" भौरी की आवाज कानों में पड़ी—"लेकिन...।"

"क्या लेकिन?"

"ये कुछ बदला-बदला लग रहा है। ठीक नहीं लग रहा मुझे। पूछ तो इससे?"

"भौरी कहती है कि तू कुछ बदला-बदला लग रहा है, ऐसा क्यों है?"

मोमो जिन्न का दिल धड़का, परंतु शांत स्वर में कह उठा।

"बहुत देर से काम पर लगा हुआ हूं। आराम करने का वक्त नहीं मिला। लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा को संभालना आसान नहीं।"

"जिन्न होकर तू ऐसी बात करता है।" कमला रानी बोली।

"मेरे सामने भी तो परेशानियां आती हैं।"

"कमला रानी।" भौरी की फुसफुसाहट कानों में पड़ी—"इसकी जिन्न जैसी अकड़ कहां गायब हो गई?"

"पूछूं?"

"पूछ।"

"तुम्हारी जिन्न जैसी अकड़ कहां गायब हो गई?"

"तुम्हारे सामने उस अकड़ को क्या दिखाना। हम सब एक ही तो हैं, जथूरा के सेवक। जथूरा महान है।"

"इसमें कोई शक नहीं।" कमला रानी ने कहा—"तू मेरे पास क्यों आया?"

"तुम्हारे आदमियों ने लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा को पकड़ लिया है।"

"तो?"

"वो मेरे सेवक हैं।"

"आज रात कालचक्र की आखिरी रात है। सुबह कालचक्र सिमट जाएगा।"
"फिर तो मुझे उन दोनों को वापस ले जाना चाहिए।"
"तू चिंता क्यों करता है उनकी। उनके साथ जो होता है, होने दे।"
"उन्होंने जथूरा का बहुत काम किया है। वो भी जथूरा को महान मानते हैं, उसके सेवक बनना चाहते हैं।"
"तो?"
"मैं उन्हें जथूरा की दुनिया में ले जाऊंगा।"
"क्यों भौरी।" कमला रानी बोली—"इसकी बात का क्या जवाब दूं?"
"ये जो करना चाहता है, करने दे। इसकी बातों से हमारा कोई नाता नहीं।"
"तू जो मर्जी कर मोमो जिन्न। जब भी चाहे, उन दोनों को तू यहां से ले जा सकता है।"
"मेरे लायक कोई सेवा बता कमला रानी।"
"क्या सेवा करेगा तू?"
"जो तू कहेगी। जो जथूरा के हक में होगी। मैं तो जथूरा की सेवा करने के लिए हमेशा तैयार रहता हूं।"
"अभी तो कोई सेवा नहीं है। होगी तो बताऊंगी।"
"मेरे को पता लगा है कि तू देवा और मिन्नो में आज रात झगड़ा कराने जा रही है।"
"हां।"
"उन्होंने सोच रखा है कि वो झगड़ा नहीं करेंगे।"
कमला रानी विषैले स्वर में मुस्करा पड़ी।
"मेरे जाल से वो बच नहीं सकेंगे।"
"देखूंगा।" मोमो जिन्न ने सिर हिलाया—"मैं तुम्हारे पास ही रहूंगा। तुम पुकारोगी तो मैं हाजिर हो जाऊंगा।"
कमला रानी ने सिर हिलाया।
तभी जगमोहन के रूप में मखानी ने भीतर प्रवेश किया।
"तू यहां।" मखानी मोमो जिन्न को देखते ही कह उठा।
"सबका सेवक हूं।"
"लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा को कैद में नहीं रखा, वो खुले में हैं।" मखानी बोला।
"शुक्रिया।" फिर मोमो जिन्न कमला रानी से कह उठा—"मैं जाता हूं। जरूरत पड़े तो बुला लेना।"

कमला रानी के सिर हिलाने पर मोमो जिन्न बाहर चला गया।
मखानी आगे बढ़कर स्टूल जैसी जगह पर बैठता कह उठा।
"मैं तेरे से नाराज हूं।"
"मैं तेरी परवाह नहीं करती।" कमला रानी ने मुंह बनाकर कहा।
"परवाह नहीं करती?"
"नहीं।" कमला रानी मुस्करा पड़ी।
"साली झूठ मत बोल। नखरे मत दिखा। एक चुम्मा ही मांगा है और तू हवा में उड़ने लगी।"
"चुम्मे के बाद तू अपने पर काबू नहीं रख पाएगा। मैं तेरी आदत जानती हूं।"
"तो क्या हो गया। वो सब भी हो गया तो।"
"ये काम का वक्त है और...।"
"तू तो बूढ़ी औरतों की तरह बात कर रही...।"
"पहले मैं बूढ़ी थी, अब जवान हूं। एकदम कड़क।"
तभी मखानी ने बाज की तरह झपट्टा मारा और कुर्सी पर बैठी कमला रानी को जकड़ लिया।
"ये क्या करता है मखानी।" कमला रानी हड़बड़ाई।
कानों में भौरी की हंसी गूंजी।
"छोड़। छोड़ मुझे।"
मखानी ने उसी पल उसकी चुम्मी ली और उसे छोड़कर पीछे हट गया।
कमला रानी ने अपने को संभाला और उठ खड़ी हुई। मखानी को घूरा।
मखानी दांत फाड़कर मुस्कराया।
"मैं तेरे को छोडूंगी नहीं मखानी के बच्चे।"
"चुम्मी लेने पे तेरा क्या घिस गया।"
"ये काम का वक्त है।"
"मैंने कब कहा कि तू काम न कर।"
कमला रानी ने गहरी सांस ली और मुस्करा पड़ी।
"तू बहुत शरारती है मखानी।"
"तो हो जाए।" मखानी मुस्करा रहा था।
"क्या?"
"पीछे कमरे में...।"
"हो गया ना गर्म।" कमला रानी कह उठी—"इसी वास्ते तेरे को चुम्मी नहीं देती थी।"

मखानी कुछ कहने लगा कि शौहरी की फुसफुसाहट कानों में पड़ी।

"ये गम्भीर वक्त चल रहा है और तू क्या कर रहा है।"

"म...मैंने क्या किया है। एक चुम्मी ही तो ली है कमला रानी की।"

"अब तू उसे पीछे वाले कमरे में चलने को कह रहा है।"

"वो तो—वो तो, मैंने सोचा शायद कमला रानी का मन कर आया हो कि...।"

"चुप कर।" शौहरी का स्वर सख्त हुआ—"ये रात कालचक्र की आखिरी रात है। तुम लोगों ने सफल होना है।"

मखानी ने सिर हिला दिया फिर बोला।

"मुझे काम बता।"

"कमला रानी के साथ रह।"

"ठीक है।"

"मखानी।" कमला रानी कह उठी—"मैं कैदियों से मिलने जा रही हूं।"

"मैं भी साथ चलता हूं।"

"चल।"

दोनों झोंपड़ी से बाहर निकले।

रात का अंधेरा चारों तरफ फैल गया था। बस्ती में मशालों द्वारा रोशनी होनी शुरू हो गई थी। जगह-जगह मशालों की रोशनी चमक रही थी। बस्ती वाले आते-जाते नजर आ रहे थे। आज बस्ती में उत्साह का माहौल था। शोर सा पैदा हो रहा था। एक जगह लक्ष्मण दास, सपन चड्ढा और मोमो जिन्न बैठे थे कि दोनों को आते पाकर मोमो जिन्न फुर्ती से उठा और कमर पर हाथ बांधे दिखावे के लिए अकड़कर खड़ा हो गया।

उनके पास आते ही मोमो जिन्न ऊंचे स्वर में कह उठा।

"कमला रानी और मखानी आ रहे हैं। सलाम करो इन्हें।"

लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा ने फौरन उठकर दोनों को सलाम किया।

"जो भी खाने-पीने को मांगना है इन्हें कह दो।" मोमो जिन्न बोला।

"खाने-पीने को?" सपन चड्ढा अचकचाया।

"तुम मुझसे कह रहे थे कि भूख लगी है। वो इनसे कहो।"

"ह...हां। हमें भूख लगी है।" सपन चड्ढा ने जल्दी से दोनों से कहा।

"किसी भी बस्ती वाले से कह दो। वो खाने को दे देगा।" कमला रानी ने कहा और मखानी के साथ आगे बढ़ गई।

मोमो जिन्न सपन चड्ढा के कानों में बोला।

"जो भी खाने को मिले, मुझे देना। मुझे बोत भूख लगी है।"

"तू कब मरेगा?" सपन चड्ढा परेशान सा कह उठा।

"नाराज मत होवो। इस वक्त तुम मेरे कारण ही बस्ती के मेहमान बने हो, वरना कैदी होते।"

"तू अगर हमें यहां नहीं लाता तो ये सब नौबत ही नहीं आती।" लक्ष्मण दास कह उठा।

"जथूरा के सेवकों का हुक्म था, बजाना पड़ा।"

"तो उन्हें ये भी कह कि तेरे में इंसानी इच्छाएं लौट आई हैं और तुझे भूख लगने लगी है।"

"ये उन्हें पता चल गया तो, वो मुझे मार देंगे। धीरे बोलो, कोई सुन लेगा। अब जाओ, खाने को लेकर आओ।"

▭ ▭

"कमला रानी।" भौरी की फुसफुसाहट कानों में पड़ी—"मोमो जिन्न को जब भी देखती हूं तो अजीब-सा लगता है।"

"क्या अजीब-सा?"

"वो मुझे जिन्न नहीं लगता। उस पर कोई संदेह होता है।"

"ये कैसे हो सकता है। तूने ही तो मुझे मोमो जिन्न के बारे में बताया था। अब संदेह कैसा?"

"कुछ समझ नहीं आता। वो कुछ बदला-बदला-सा लगता है।"

"वहम हो गया है तुझे।" कमला रानी ने कहा।

"कुछ तो बात है। आज की रात बीत जाए फिर मैं ऊपर कहकर मोमो जिन्न का चैकअप करवाऊंगी।"

"ये बात तू जान।"

तभी सामने से हंसराज आता दिखा। वो करीब आया।

"हंसराज। हमें कैदियों के पास ले चल।"

"कौन-से कैदियों के पास जाएंगी?" हंसराज ने पूछा।

"क्या मतलब?"

"कैदियों को जैसे-जैसे पकड़ा है, वैसे ही अलग-अलग रखा गया है।" हंसराज ने बताया।

"देवा के पास चलते हैं पहले।" मखानी कह उठा।

"आइए।" कहकर हंसराज दो कदम आगे चल पड़ा।

"सब तैयारी ठीक से हो गई है?"

"हां, कमला रानी।"

'अब आएगा मजा।' कमला रानी बड़बड़ा उठी।
"मुझे भी तो बता कि तूने क्या तैयारी की है।" मखानी ने पूछा।
"अभी देख लेना। ज्यादा वक्त नहीं बचा।"
"मतलब कि तू नहीं बताएगी। नखरे झाड़ रही है।"
कमला रानी ने मुस्कराकर मखानी को देखा।
"एक बात कहूं—सुनकर चौड़ा मत हो जाना।"
"बोल।"
"जग्गू के रूप में तू जंचता है।"
मखानी ने गहरी सांस ली और मुंह फेर लिया।
"क्या हुआ?"
"इसमें मेरे चौड़ा होने की क्या बात है। तूने जग्गू की तारीफ की है। चौड़ा होगा तो वो होगा।"
"कल सुबह भौरी मुझे पूर्वजन्म में ले जाएगी और शौहरी तेरे को ले जाएगा।"
"क्या पता वहां हमारा मिलना इतना भी न हो, जितना कि अब हो रहा है।"
"वहां हमारा ज्यादा मिलना होगा। भौरी ने मुझे इस बात का विश्वास दिलाया है।"
तभी आगे जाता हंसराज एक झोंपड़े में प्रवेश कर गया।
कमला रानी और मखानी उसके पीछे थे।
झोंपड़े के भीतर जाकर वे ठिठक गए।
सामने ही झोंपड़े के कच्चे फर्श पर देवराज चौहान, नगीना, बांके और रुस्तम पड़े थे। उनके हाथ-पांव बंधे हुए थे। एक तरफ मशाल जल रही थी। जिसका प्रकाश झोंपड़े में हर तरफ फैला था।
"तो ये हैं हमारे शिकार।" कमला रानी कह उठी—"क्यों देवा कैसा है तू?"
देवराज चौहान, नगीना, बांके और रुस्तम राव की निगाह मखानी पर टिकी थीं, जो जगमोहन के रूप में सामने था।
"तंम जगमोहनो नेई होवो। अंम थारे को 'वड' दयो।" बांकेलाल राठौर गुर्रा उठा।
मखानी मुस्कराया।
"ईक बारो म्हारे हाथ-पांव खोलो तम, अंम थारे को...।"
"बोत तड़प रहा है तू।" मखानी कड़वे स्वर में बोला।
"तंम मखानो होवे। अंम थारे को पक्को 'वड' दयो हो।"
"आपुन तो इसकी टांगें तोड़ेला।" रुस्तम राव ने खतरनाक स्वर में कहा।

"तुमने ही मेरे सिर पर डंडा मारकर मुझे बेहोश किया था।" देवराज चौहान बोला। (विस्तार से जानने के लिए पढ़ें **अनिल मोहन** का **राजा पॉकेट बुक्स** से पूर्व प्रकाशित उपन्यास **'जथूरा'**।)

"हां।" मखानी हंस पड़ा—"वो मैं ही था देवा।"

"तब तुम्हारे साथ नगीना कौन थी?"

"ये, कमला रानी।" मखानी ने कमला रानी की तरफ इशारा किया—"लेकिन तब मेरे से गलती हो गई थी। बेहोशी की दवा मिली काफी का प्याला, तुम्हारी अपेक्षा, कमला रानी उर्फ नगीना को दे दिया था। ये तो अच्छा हुआ कि मैंने तेरे को बेहोश कर दिया वरना मेरी सारी मेहनत बेकार हो जाती। बुरा बचा था तब मैं।"

"मैंने तुम्हें जगमोहन समझा। इसी धोखे में मात खा गया।" देवराज चौहान ने कहा।

"धोखा ही तो देना था तेरे को। इस काम में मैं सफल रहा देवा।"

तभी कमला रानी कह उठी।

"काम की बात कर ली जाए।"

सबकी निगाह कमला रानी पर गई।

कमला रानी देवराज चौहान को देख रही थी।

"मैं तेरा भला करने तेरे पास आई हूं।"

"तू मेरा भला कर ही नहीं सकती।" देवराज चौहान मुस्करा पड़ा।

"कर सकती हूं।"

"थारे को चक्कर में लायो देवराज चौहान।"

कमला रानी पीठ पर दोनों हाथ बांधे, चहलकदमी करती कह उठी।

"मैं तेरी जिंदगी बचा सकती हूं।"

"मेरी?"

"तेरे सब साथियों की भी।" कमला रानी ठिठककर मुस्कराई।

"यकीन नहीं होता।"

"बदले में तेरे को मेरी सिर्फ एक बात माननी होगी।"

"क्या?"

"मिन्नो से झगड़कर उसे खत्म कर दे।"

"तुमने कैसे सोच लिया कि मैं तुम्हारी ये बात मान जाऊंगा।"

"मेरी बात मानने में ही तेरा भला है देवा।"

"तेरे द्वारा मेरा भला नहीं हो सकता।"

मखानी ने चिढ़कर कमला रानी से कहा।

"ये तेरी बात नहीं मानेगा।"

"देवा।" कमला रानी गम्भीर स्वर में कह उठी—"आज की रात फैसले की रात है। जथूरा के कालचक्र ने दिन निकलते ही सिमट जाना है। उस स्थिति में तुम्हारा पूर्वजन्म में प्रवेश करना जरूरी हो जाएगा। परंतु मैं तुम्हें बचा सकती हूं। पूर्वजन्म में मौत से भरे खतरे होते हैं। तुम उन खतरों से बचना चाहोगे। ये तभी हो सकता है जब तुम मेरी बात मानो। मिन्नो को खत्म कर दो। उसे मारने का तुम्हें अच्छा मौका मिल रहा है। उसे खत्म करोगे तो मैं तुम सबको तुम्हारी दुनिया में भेज दूंगी। फिर तुम सबको पूर्वजन्म का सफर नहीं करना पड़ेगा। मजे से अपनी जिंदगी बिताओगे। इस बार पूर्वजन्म में पहुंचे तो जिंदा वापस लौट नहीं सकोगे। क्योंकि तुम्हारा मुकाबला जथूरा से होगा। आज जथूरा पूर्वजन्म की महाशक्ति बना हुआ है। वो सबको मार देगा।"

"हमारी बात मानने में भला है तुम्हारा।" मखानी बोला।

"इनकी बात कभी मत मानना।" नगीना कठोर स्वर में कह उठी।

कमला रानी ने मुस्कराकर नगीना को देखा और बोली।

"ये बात तुम इसलिए कह रही हो, क्योंकि तुम जथूरा की ताकतों को नहीं जानती। जथूरा महान है।"

"अंम उसकी महानता को 'वड' दयो।"

"आपुन तेरे साथ होईला बाप।"

"जवाब दे देवा।"

"नहीं, मैं मोना चौधरी से झगड़ा नहीं करूंगा।"

कमला रानी दांत पीस उठी।

"झगड़ा तो तू करेगा देवा। करना ही पड़ेगा। चल मखानी।"

कमला रानी और मखानी वहां से बाहर आ गए।

"बहुत टेढ़ा इंसान है देवराज चौहान।" मखानी बोला।

"आज रात सीधा हो जाएगा।"

"लगता तो नहीं।"

"तू अभी देख तमाशा।" कमला रानी क्रोध में थी। वो बाहर खड़े हंसराज से बोली—"मिन्नो के पास चल।"

"आओ।"

तीनों आगे बढ़ गए।

दो मिनट में ही वो एक झोंपड़े में मोना चौधरी के सामने खड़े थे। मोना चौधरी के हाथ-पांव भी बंधे हुए थे। हंसराज झोंपड़े के बाहर ही रहा। पारसनाथ भी एक तरफ बंधा पड़ा था।

"मैं कमला रानी हूं मिन्नो।"

"मैं मखानी।" जगमोहन के रूप में मखानी कहते हुए मुस्कराया।

"क्या तुम पूर्वजन्म के सफर पर जाना चाहती हो?" कमला रानी ने पूछा।

"इच्छा तो नहीं है।"

"आज रात के बाद कालचक्र सिमट जाएगा। कल सुबह तुम लोगों को पूर्वजन्म में प्रवेश करना ही पड़ेगा। क्योंकि कालचक्र तुम सब को ऐसी जगह ले आया है कि जहां से वापस आया ही नहीं जा सकता।"

"तुम कहना क्या चाहती हो?"

मखानी फौरन सिर हिलाकर बोला।

"हम तुम्हें पूर्वजन्म के सफर से रोककर, तुम्हें वापस तुम्हारी दुनिया में पहुंचा सकते हैं।"

"अच्छा, वो कैसे?"

"ये कोई चालाकी कर रहे हैं।" तभी पारसनाथ कह उठा।

"सुन तो लेने दो इनकी बात।" मोना चौधरी ने कहा।

"तुम्हें देवा से लड़ना होगा। उसे मार देना होगा। ऐसा होते ही तुम सबको वापस तुम्हारी दुनिया में पहुंचा दिया जाएगा।"

"मैं देवराज चौहान से झगड़ा नहीं करूंगी।"

"मेरी बात मानेगी तो खुश रहेगी।"

"कभी नहीं।" मोना चौधरी ने इंकार में सिर हिलाया।

कमला रानी क्रूर अंदाज में मुस्करा पड़ी।

"झगड़ा तो तुम करोगी ही। खुद कहोगी देवराज चौहान को मारने के लिए।"

"मैं नहीं कहूंगी।"

"कुछ ही देर में सब कुछ तुम्हारे सामने होगा। मैं तो चाहती थी कि सब कुछ तुम लोगों की मर्जी से हो जाए। मुझे मेहनत न करनी पड़े। परंतु लगता है तुम्हें मौत की सैर करानी ही पड़ेगी।"

मोना चौधरी एकटक कमला रानी को देख रही थी।

"जगमोहन कहां है?" पारसनाथ ने मखानी को देखकर पूछा।

"इस वक्त वो गुलचंद के साथ कालचक्र में फंसा हुआ है।" मखानी ने कहा।

"हम भी तो इस वक्त कालचक्र में हैं। जगमोहन-सोहनलाल तो कहीं नहीं दिखे।"

"वो दोनों कालचक्र के दूसरे हिस्से में हैं।"

"हंसराज।" कमला रानी ने ऊंचे स्वर में पुकारा।

हंसराज फौरन भीतर आया।

"काम शुरू कर दो।"

"समझ गया।" हंसराज ने गर्दन हिलाई।

"मान जा मिन्नो सुखी रहेगी।" मखानी कह उठा।

मोना चौधरी होंठ भींचे मखानी को देखती रही।

"चल मखानी।" कमला रानी बाहर की तरफ बढ़ते कह उठी—"अभी अक्ल ठिकाने आ जाएगी।"

मखानी व कमला रानी बाहर निकल गए।

"पेशीराम ने कहा था कि तुम्हें देवराज चौहान से झगड़ा करना है।" पारसनाथ कह उठा।

मोना चौधरी की निगाह हंसराज पर थी।

"कमला रानी क्या करने को कह गई है तेरे को?" मोना चौधरी ने हंसराज से कहा।

जवाब में हंसराज बेहद शांत अंदाज में मुस्कराया।

▭ ▭

लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा इस वक्त बहुत बड़े खुले मैदान में बैठे थे। पूरा मैदान मशालों से जगमगा रहा था। सैकड़ों लोग बैठे और खड़े हुए थे, जैसे उत्सव आरम्भ होने वाला हो। आकाश में तारे भी चमक रहे थे और काले बादलों के झुंड भी मंडरा रहे थे। चांद पूरा निकला हुआ था, जिसकी पर्याप्त रोशनी जमीन और पेड़ों पर पड़ रही थी, परंतु जब चांद के सामने बादलों का झुंड आ जाता तो, अंधेरा-सा घिर आता।

मशालों की रोशनी में चमकते मैदान पर चांद के छिपने-न-छिपने का कोई असर नहीं पड़ रहा था।

एक ऊंचे पेड़ के नीचे बड़ा-सा अलाव जल रहा था। जिस पर पत्थरों के सहारे बहुत बड़ा कड़ाहा रखा हुआ तप रहा था। कड़ाहे में आधे से ज्यादा तेल था, जो कि उबल रहा था। कड़ाहा इतना बड़ा था कि एक आदमी सीधे-सीधे उसके भीतर आसानी से लेट सकता था। उसमें उबलता तेल जैसे दिल को धड़का रहा था।

कंपा देने वाली बात तो ये थी कि उस पेड़ पर, कड़ाहे के ऊपर, मोटे रस्से के सहारे मोना चौधरी को बांधकर लटका रखा था। अगर रस्सा ढीला कर दिया जाए तो मोना चौधरी ने सीधे-सीधे, कड़ाहे में खौलते तेल पर आ गिरना था। उबलते तेल की गर्मी अभी भी मोना चौधरी को महसूस हो रही थी।

मैदान के बीचोबीच देवराज चौहान, नगीना, बांके, रुस्तम राव,

पारसनाथ और महाजन को हाथ-पांव बांधे डाल रखा था। वो सब बेबस-से ये सारा तमाशा देख रहे थे।

"यार सपन।" लक्ष्मण दास कह उठा—"ये हम कौन-से नर्क में आ फंसे हैं।"

"शुक्र कर कि हम बचे हुए हैं।" सपन चड्ढा धीमे स्वर में बोला।

"मुझे तो मोमो जिन्न पर क्रोध आ रहा है। वो ही हमें यहां लाया और...।"

"गुस्सा तो मुझे भी आ रहा है, लेकिन हम उसका कुछ नहीं कर सकते।"

"कड़ाहे में तेल खौल रहा है। मोमो जिन्न को उसमें फेंक दें तो?"

"तो हम भी नहीं बचेंगे। कमला रानी और मखानी हमारी जान ले लेंगे।"

"सब तरफ मुसीबत ही मुसीबत है।"

"असली मुसीबत में तो इस वक्त मोना चौधरी फंसी पड़ी है।" सपन चड्ढा ने व्याकुल भाव में कहा—"खौलते कड़ाहे के ऊपर। रस्सा ढीला हुआ नहीं कि वो सीधा कड़ाहे में। जिंदगी खत्म। मांस गल जाएगा और पलों में हड्डियों का ढांचा तेल में दिखने लगेगा। मोना चौधरी की हालत क्या हो रही होगी इस वक्त।"

"समझ में नहीं आता कि यहां क्या होने वाला है।"

"बुरा ही होगा, जो होगा।"

"मोमो जिन्न कहां चला गया?" लक्ष्मण दास ने इधर-उधर देखा।

"उधर अंधेरे में गया है। हमारा माल खाने। उसके कहने पर हम खाने का सामान वहीं छोड़ आए थे।"

"साला अभी तक माल पाड़ रहा है।" लक्ष्मण दास ने कड़वे स्वर में कहा।

एकाएक सपन चड्ढा बेचैनी से बोला।

"मोमो जिन्न हमें बकरा बना रहा है।"

"बकरा—क्या वो हमें खाने वाला है।" लक्ष्मण दास हड़बड़ाया।

"वो बकरा नहीं, दूसरा बकरा। याद है उसने क्या कहा था हमें करने को?"

"याद है। अभी कुछ देर पहले दोबारा हमें समझा रहा था।"

"वो सब करते हुए हमारे साथ बुरा हो गया तो?"

"नहीं करोगे तो मोमो जिन्न हमें छोड़ेगा नहीं।"

"मेरी मान तो मखानी-कमला रानी को बता देते हैं कि मोमो जिन्न में इंसानी इच्छाएं जाग उठी हैं।"

"क्या फायदा। वो कौन से हमारे सगे हैं।"

"हर तरफ हमारे लिए परेशानी है।"

"वो देख हरामी आ गया। कैसी मस्ती भरी चाल चल रहा है।"

दोनों की निगाह मोमो जिन्न पर जा टिकीं।

जो कि उनके पास आ पहुंचा था।

"खा आया सारा माल?" लक्ष्मण दास ने तीखे स्वर में कहा।

"धीरे बोलो।" मोमो जिन्न हड़बड़ाकर बोला—"क्यों मुझे मुसीबत में डाल रहे हो।"

"पेट तो भर गया होगा।"

मोमो जिन्न ने कुछ कहने के लिए मुंह खोला कि होंठों से 'डकार' निकल गया।

"सत्यानाश।" मोमो जिन्न ने आसपास देखा। परंतु किसी ने उसका 'डकार' नहीं सुना था।

"अब तो तेरा पेट भी आवाजें निकालने लगा।" सपन चड्ढा ने कहा।

पेट पर हाथ फेरता मोमो जिन्न बोला।

"अभी थोड़ा-सा पेट खाली है, लेकिन काम चल गया।"

"तेरा बस चले तो तू हमें ही खा ले।"

"क्या बात करते हो। तुम दोनों तो मेरे दोस्त हो।" मोमो जिन्न मुस्करा पड़ा।

"तुम दोस्त नहीं हो, हमारे दुश्मन हो।"

"ऐसा क्यों कहा?" मोमो जिन्न ने दोनों को देखा।

"तुम हमें जो करने को कह रहे हो, वो कोई दुश्मन ही कहता है। मखानी-कमला रानी हमें मार देंगे।"

"वो तुम दोनों का कुछ नहीं बिगाड़ सकते। मैं बचाऊंगा उनसे।"

"कैसे?"

"तुम अभी मेरी ताकतों को नहीं जानते। मैं बहुत कुछ कर सकता हूं।"

"जो हमें करने को कह रहे हो वो खुद ही क्यों नहीं कर लेते?"

"मुझे और भी काम करने हैं। तुम समझोगे नहीं।"

"लेकिन तुम हमसे ये काम क्यों करवाना चाहते हो?"

"समझा करो, मैं पूर्वजन्म में प्रवेश करके सोबरा के पास पहुंच जाना चाहता हूं। वो मुझे जथूरा से बचा सकता है।"

"तो ये काम तुम अपने लिए कर रहे हो। तब हमारा क्या होगा?"

"मैं बच जाऊंगा तो सोबरा से कहकर तुम दोनों को वापस तुम्हारी दुनिया में पहुंचा दूंगा।"

"हमें तुझ पर भरोसा नहीं।"

"ऐसा मत कहो। मैं अपने भले के साथ तुम्हारे भले के बारे में भी सोचता हूं। मैं तुम्हारा यार हूं।"

"मुसीबत का साथ है, वरना कहां के यार?"

"दिल तोड़ने वाली बातें मत करो—मैं...।"

"ये बताओ कि हमारे द्वारा वो करने पर तुम कैसे पूर्वजन्म में, सोबरा के पास पहुंच जाओगे।"

"इसका जवाब वक्त आने पर मिलेगा। ये कालचक्र की आखिरी रात है। मखानी और कमला रानी कालचक्र के आदेश पर आज रात देवा और मिन्नो में झगड़ा करवाकर, किसी एक को मरवा देना चाहते हैं। ऐसा होते ही बाकी बचे तुम सब लोग अपनी दुनिया में पहुंच जाओगे और बाकी का सब कुछ अपनी जगह पर पहुंच जाएगा। जथूरा इसी बात के लिए तो सारी कोशिशें कर रहा है, जबकि मैं चाहता हूं कि ऐसा न हो।"

"क्यों?"

"ताकि मैं पूर्वजन्म में सोबरा के पास पहुंच सकूं। अगर देवा-मिन्नो में झगड़ा हुआ। एक मर गया तो मुझे भी वापस जथूरा के पास जाना होगा। वापस जाने पर सबका पूरा चैकअप किया जाता है। मेरा चैकअप होने पर ये बात सामने आ जाएगी कि मेरे में इंसानी इच्छाएं आ चुकी हैं। तब मुझे फौरन मार दिया जाएगा। जबकि मैं मरना नहीं चाहता। इंसानी इच्छाएं आ जाने से मेरा जीवन कितना बेहतर हो गया है। अब मेरा मन जलेबी खाने का भी करता है। रबड़ी भी और...।"

"बस-बस। मुंह बंद रख।"

मोमो जिन्न ने गहरी सांस ली और कह उठा।

"मेरे से नाराज मत रहा करो।"

"अगर देवा और मिन्नो में से एक मर गया तो हम वापस अपनी दुनिया में पहुंच जाएंगे?"

"हां।"

"तो हम तुम्हारी बात क्यों मानें। दोनों में से एक को मरने दो। हम वापस अपनी दुनिया में तो जाना चाहते हैं।"

"तो मुझे मरने के लिए छोड़ जाओगे।" मोमो जिन्न घबराकर बोला।

"हमारा-तुम्हारा क्या नाता?"

"ऐसा मत कहो, हम यार हैं।"

"चुप कर और एक तरफ हो के बैठ जा।"

मोमो जिन्न पास में ही बैठ गया।

सपन चड्ढा कड़ाहे की तरफ देखता कह उठा।

"बेचारी, मोना चौधरी।"

"उसे बचाने के लिए वो ही करें, जो मोमो जिन्न ने कहा है।" लक्ष्मण दास बोला।

"मोना चौधरी तो बच जाएगी, लेकिन हम पूर्वजन्म में पहुंच जाएंगे। अपनी दुनिया में नहीं पहुंच सकेंगे।"

"हमारे साथ बाकी सब भी तो वहां पहुंचेंगे। हम अकेले तो नहीं होंगे।"

"क्या मतलब?"

"मैंने सुना है ये लोग पहले भी पूर्वजन्म में पहुंचकर, वापस लौट चुके हैं। एक बार हम भी तो इनके पूर्वजन्म में जाकर देखें कि वहां होता क्या है। अपनी दुनिया तो बहुत देख ली।"

"सोच ले। वहां खतरा भी हो सकता है।"

"सो तो है। तेरे को मोमो जिन्न पर भरोसा है?"

"हरामी है साला।"

मोमो जिन्न का एक कान इनकी बातों पर ही था।

"मैं हरामी नहीं हूं।" पास बैठा मोमो जिन्न कह उठा।

"तू हमारी बातें सुन रहा था।"

"नहीं, आखिरी बात मुझे सुनाई दे गई।"

"तू सच में हरामी है।" लक्ष्मण दास सिर हिलाकर कह उठा।

"मैं ऐसा नहीं हूं। सच्चे मन से तुम दोनों को अपना दोस्त मानता हूं।" मोमो जिन्न ने कहा।

"तू हमें नंगा करके सड़क पर घुमाने को कहता था।"

"वो पहले की बात थी। तब मेरे में इंसानी इच्छाएं नहीं जागी थीं। अब मेरे में इंसानों वाला व्यवहार आ गया है। इंसानों की तरह खाता हूं, इंसानों की तरह सोचता हूं। इंसानी व्यवहार पर काबू पा रखा है कि किसी को मुझ पर शक न हो।"

"है तो तू जिन्न ही।"

"समझा करो। अब मैं नाम का ही जथूरा का सेवक हूं। मैं तो जथूरा को छोड़कर उसके भाई सोबरा के पास जाना चाहता हूं।"

दोनों चुप रहे।

"पूर्वजन्म में तुम लोगों को अच्छा लगेगा। सब ठीक रहा तो तुम दोनों सबके साथ जल्दी वापस आ जाओगे।"

"वापस कहां?"

"अपनी दुनिया में।"

लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा ने एक-दूसरे को देखा।

"जो मैंने कहा है, वो ही करो। उसी में भला है। जिन्न हूं झूठ नहीं बोलूंगा।"

"सपन।" लक्ष्मण दास बोला—"इस झूठे जिन्न की बात मानकर देख लेते हैं। लक्ष्मण दास बोला।

"ये हमें फंसवा देगा।"

"सबके साथ होगा जो होगा।"

पास बैठे मोमो जिन्न ने सहमति में सिर हिलाया।

"देख तो हरामी कैसे फर्र-फर्र सिर हिला रहा है।"

"मैं तुम्हारी बातें कहां सुन रहा हूं। खाना हजम कर रहा हूं।" मोमो जिन्न मुस्कराकर बोला—"मोमो जिन्न कभी झूठ नहीं बोलता। मुझ पर भरोसा करके रहोगे तो खुश रहोगे।"

"चल, तेरी बात मानी। देखते हैं कि क्या होता है।" लक्ष्मण दास ने कहा।

"सब अच्छा होगा।"

▭ ▭

कमला रानी और मखानी ने उस मैदान में कदम रखे तो वहां मौजूद बस्ती वाले 'जथूरा महान है' के नारे लगाने लगे। जोर-जोर से इस नारे पर वो चिल्ला रहे थे।

"मखानी।" कमला रानी कह उठी—"कितना अच्छा लग रहा है। हम अचानक कितने बड़े बन गए हैं।"

"हमारी कितनी इज्जत हो रही है।" मखानी बोला—"शौहरी के साथ पूर्वजन्म में जाऊंगा तो वहां हमारी कितनी इज्जत होगी।"

"वहां तभी इज्जत होगी अगर हम देवा या मिन्नो में से एक को आज की रात खत्म कर सके, जथूरा पर आने वाला खतरा मिटा दें। हमें अपने काम में हर हाल में सफल होना है। आओ काम शुरू करें।" इसके साथ ही कमला रानी, उस तरफ बढ़ गई, जहां कड़ाहे पर तेल खौल रहा था और ऊपर पेड़ से बंधी, मोना चौधरी नीचे की तरफ लटक रही थी।

हंसराज उनके साथ था।

"हंसराज।" मखानी बोला—"इन सब लोगों को खामोश होने को कहो। नारे बंद करवा दो।"

हंसराज वहां से भीड़ की तरफ गया और चिल्लाकर खामोश होने को कहा। सब तरफ खामोशी आती चली गई।

हंसराज वापस कमला रानी और मखानी के पास आ पहुंचा।

दोनों कड़ाहे से चंद कदमों के फासले पर आ ठहरे थे।

रस्से से बंधी, कड़ाहे के ऊपर लटकती मोना चौधरी ने कमला रानी और मखानी को देखा। कड़ाहे के उबलते तेल की गर्मी से मोना चौधरी का चेहरा पसीने से भरा लाल हो रहा था। उसके चेहरे से टपकती पसीने की बूंदें कड़ाहे में टपक रही थीं। सेक की वजह से उसका बुरा हाल हो रहा था।

"कैसा लग रहा है मिन्नो।" कमला रानी खिलखिलाकर हंसी।

मोना चौधरी ने होंठ भींच लिए।

मशालों के प्रकाश में वहां का जर्रा-जर्रा स्पष्ट नजर आ रहा था।

"तेरी मौत आ ही गई।" कमला रानी ने कहा—"मौत देखकर कैसा लग रहा है।"

"मैं ऐसे हाल में हूं कि तेरी बात का जवाब दे ही नहीं सकती।" मोना चौधरी गुस्से में गुर्रा उठी।

"रस्सा ढीला करो।" मखानी ऊंचे स्वर में बोला।

मोना चौधरी से बंधा रस्सा, मोटी डाल से होकर, दो आदमियों ने थाम रखा था। उन्होंने रस्सा थोड़ा सा ढीला किया तो मोना चौधरी एक हाथ भर नीचे, कड़ाहे की तरफ आ गई।

मात्र पांच फुट दूर था कड़ाहा।

खौलते तेल की गर्मी से मोना चौधरी का बुरा हाल था।

"ये फैसले की रात है मिन्नो। फैसला तो हो के ही रहेगा।" कमला रानी ने कहा—"वरना तू रात भर इसी हाल में रहेगी और सुबह होने से पहले तेरे को कड़ाहे में फेंक दिया जाएगा।"

"तू कुतिया है।" मोना चौधरी चीखी।

"तेरी जगह मैं होती तो मैं भी तेरे को कुतिया कहती।" कमला रानी हंस पड़ी—"लेकिन मैं यहां तेरी बातों का बुरा मानने नहीं आई। अपना काम करने आई हूं, जथूरा महान है, उसकी महानता से ऊंचा दूसरा कोई नहीं है।"

"वो डरपोक है।"

"नहीं, वो बहादुर है।"

"बहादुर होता तो खुद सामने आता।" मोना चौधरी चीखी—"परंतु वो तो डरकर छिपा पड़ा है।"

"सेवकों के होते हुए उसे सामने आने की क्या जरूरत है।" मखानी ने कहा—"सेवक इसी काम के लिए होते हैं।"

तभी कमला रानी के कान में भौरी की फुसफुसाहट पड़ी।

"काम की बात कर कमला रानी।"

"बोल मिन्नो।" कमला रानी ऊंचे स्वर में बोली—"अब तेरे साथ क्या सलूक करूं। अपनी जान बचाना चाहती है तो तेरे को देवा का मुकाबला करना होगा। उसे मौत देनी होगी। नहीं तो तेरी मौत पक्की है।"

"देवराज चौहान से मेरा कोई झगड़ा नहीं है।"

"मानती हूं कि देवा से तेरा झगड़ा नहीं है। तेरा झगड़ा तेरी अपनी जिंदगी और मौत से है। अपनी जिदंगी बचानी है तो उसके लिए तेरे को देवा को खत्म करना होगा।"

"ये कभी नहीं होगा।"

"तो तूने मरने का फैसला कर लिया?" कमला रानी क्रोध से कह उठी।

मोना चौधरी खामोश रही। होंठ भींच लिए।

"जवाब दे। अगर तेरा पक्का इंकार है तो तुझे अभी कड़ाहे में फेंक दूती हूं।"

"फेंक इसे।" मखानी कह उठा।

"जवाब तो सुन लेने दे मखानी। तब मैं...।"

"फेंक दो इसे कड़ाहे में।" मखानी चीखा।

"ठहरो।" कमला रानी और जोरों से बोली—"पहले जवाब सुनने दो। बोल मिन्नो, पक्का इंकार है तो अभी फेंकूं कड़ाहे में?"

मोना चौधरी के होंठ भिंच गए।

"चुप रहने से काम नहीं चलेगा।"

"मुझे सोचने दे।"

"ठीक है, सोच ले, तेरे को कुछ देर का वक्त देती हूं।" कहकर कमला रानी ने मखानी को देखा।

"बहुत हिम्मत वाली है मिन्नो।" मखानी धीमे स्वर में बोला।

"उसकी हिम्मत तोड़ने के लिए ही तो, घंटों लगाकर कड़ाहे का तेल खौलाया गया है मखानी।" आवाज धीमी थी।

"जानता हूं।"

"हम तेल के कड़ाहे में फेंककर उसकी जान नहीं ले सकते। कालचक्र का कोई हिस्सा इन लोगों की जान को नुकसान नहीं पहुंचा सकता। अगर ये पूर्वजन्म में पहुंचे तो, तब जथूरा की ताकतें, इन लोगों पर काम करेंगी।"

"सब कुछ जानता हूं।" मखानी बोला—"चल जरा देवा से भी बात कर लें।"

देवराज चौहान, नगीना, बांके, रुस्तम राव, महाजन और पारसनाथ उस मैदान के बीचोबीच बैठे थे। हाथ-पांव बंधे हुए थे, जिससे कि उन्हें बैठने में परेशानी आ रही थी। मशालों की रोशनी में वहां पर्याप्त दिखाई दे रहा था। उन सबकी निगाह कड़ाहे के ऊपर लटकती मोना चौधरी पर थी।

पारसनाथ और महाजन बंधनों से मुक्ति पाने की भरपूर चेष्टा कर रहे थे। वे क्रोध में कांप रहे थे, परंतु कुछ भी कर पाने की स्थिति में नहीं थे।

देवराज चौहान के होंठ भिंचे हुए थे। नजरें मोना चौधरी पर थीं।

"मुझसे ये देखा नहीं जा रहा।" नगीना व्याकुल स्वर में कह उठी—"आप कुछ करते क्यों नहीं।"

"जब तक इन बंधनों में हूं, तब तक मैं कुछ नहीं कर सकता।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा।

"वो...वो, मोना चौधरी को मार रहे हैं।" नगीना परेशान थी।

देवराज चौहान के होंठ सख्ती से बंद रहे।

"ईक बारो म्हारे हाथो-पांवो खुल जावे, तब अंम सबों को 'बड' दयो।" बांकेलाल राठौर गुर्रा उठा।

"येई तो रगड़ेला है बाप कि हाथ-पांव नेई खुलने का।"

"पारसनाथ।" महाजन दांत किटकिटाकर कह उठा—"बहुत बुरा होने जा रहा है।"

"हाथ-पांव खोलने की कोशिश करो महाजन।" पारसनाथ ने खुरदरे कठोर स्वर में कहा।

"नहीं खुल रहे। कोशिश कर तो रहा हूं।"

"वो मोना चौधरी को मार देंगे।"

"बेबी को कुछ हुआ तो मैं यहां लाशें बिछा दूंगा।" महाजन दांत किटकिटा उठा।

देवराज चौहान महाजन को देखकर गम्भीर स्वर में बोला।

"तुम कुछ नहीं कर सकते। मोना चौधरी के बाद हमारी बारी होगी।"

महाजन दांत पीसकर रह गया।

"देवा।"

तभी देवराज चौहान के कानों में मध्यम-सी आवाज पड़ी।

देवराज चौहान बुरी तरह चौंका।

"पेशीराम।" देवराज चौहान के होंठों से निकला।

"ठीक पहचाना देवा। मैं पेशीराम ही हूं।"

"तुम...यहां...हैरानी है मुझे।"

"मैं तो अपनी ताकतों के दम पर कहीं भी आ-जा सकता हूं देवा।" पेशीराम की धीमी आवाज पुनः कानों में पड़ी।

सबकी निगाह देवराज चौहान की तरफ उठ गई थी।

"ये...ये सब क्या हो रहा है पेशीराम। हम सब बुरी तरह फंसे पड़े हैं। वो मोना चौधरी...।"

"जथूरा का मुकाबला करना सम्भव नहीं देवा।"

"लेकिन हमने उसे कुछ नहीं कहा। वो ही हमारे रास्ते में...।"

"इन बातों का वक्त पीछे छूट चुका है।"

"मोना चौधरी को बचाओ पेशीराम—वो उसे मार देंगे।" देवराज चौहान ने परेशानी से कहा।

"मिन्नो ने मेरी बात नहीं मानी, तभी तो कष्ट भुगत रही है।"

"क्या मतलब?" देवराज चौहान की आंखें सिकुड़ीं।

"मैंने मिन्नो से कहा था कि तुम्हारे साथ झगड़ा करें। परंतु वो नहीं मानी। जिद्दी जो है।"

"कब कहा था?" देवराज चौहान के होंठों से निकला।

"शाम को।"

"ओह।"

"अब ये ही बात तेरे को कहता हूं कि तू मिन्नो से झगड़ा कर। सब ठीक हो जाएगा।"

"कैसे ठीक होगा। तब तो बात और भी बढ़ जाएगी।"

"नहीं बढ़ेगी। ये वक्त टल जाएगा। मोमो जिन्न कुछ करने की सोच के बैठा हुआ है। उससे तुम सबका भला होगा।"

"मोमो जिन्न तो जथूरा का सेवक...।"

"अवश्य है।" पेशीराम की आवाज देवराज चौहान के कानों में पड़ रही थी—"परंतु पोतेबाबा ने उसमें इंसानी इच्छाएं डाल दी हैं। इस वजह से मोमो जिन्न, जथूरा की ठीक से सेवा नहीं कर पा रहा। वो जिन्न है, परंतु हरकतें इंसानों वाली हो गई हैं।"

"पोतेबाबा ने ऐसा क्यों किया, वो तो जथूरा का सबसे खास सेवक है।"

"सब सवालों का जवाब अभी पाएगा क्या। इस वक्त तेरे को मेरी बात मानकर...।"

उसी पल पोतेबाबा की आवाज देवराज चौहान के कानों में पड़ी।

"नहीं देवा, पेशीराम की बात हरगिज मत मानना। ये तेरे को गलत रास्ते पर डाल रहा है।"

देवराज चौहान चौंका।

"पोतेबाबा?"

"हां देवा, तू पेशीराम की बात मत मानना। इससे तेरे को बड़ा नुकसान होगा। ये तेरे को बहका रहा है।"

"पेशीराम मेरे को गलत राह नहीं दिखा सकता।" देवराज चौहान के होंठों से निकला।

"इस वक्त ये तेरे और मिन्नो में झगड़ा करवाकर, अपना ही कोई मतलब साधना चाहता है।"

"कैसा मतलब?"

"ये मैं नहीं जानता, लेकिन...।"

"पोतेबाबा।" पेशीराम की मुस्कराहट-भरी आवाज देवराज चौहान ने सुनी—"तू क्यों देवा को भटका रहा है?"

"मुझ पर इलजाम मत लगा पेशीराम।"

"तू मुझ पर इलजाम लगा सकता है तो मैं क्यों नहीं लगा सकता।"

"तू देवा को झगड़े के लिए उकसा रहा है, इसका अंजाम बुरा ही होगा।"

"अंजाम तो अब भी बुरा हो रहा है। मिन्नो मौत के दरवाजे पर खड़ी है।" पेशीराम बोला।

"तो झगड़ा करवाकर तू मिन्नो को बचा लेगा पेशीराम?"

"मोमो जिन्न देवा और मिन्नो का भला करेगा, जिसमें तूने इंसानी इच्छाएं डाल दी हैं। तू क्या खेल खेल रहा है, मैं नहीं समझ पा रहा। तू जथूरा का मुख्य सेवक है, परंतु जथूरा के हक के खिलाफ, हरकतें कर रहा है।"

"इससे तेरे को क्या?"

"मुझे देवा और मिन्नो से मतलब है?"

"झगड़े का अंजाम बुरा होगा। तू देवा को गलत राह पर मत डाल।"

"कमला रानी मिन्नो को मौत दे देगी। तब क्या होगा।"

पोतेबाबा की तरफ से आवाज नहीं आई।

"एक बात तो बता पोतेबाबा।"

"क्या?"

"तू चाहता क्या है। देवा और मिन्नो को पूर्वजन्म के सफर पर भेजना चाहता है या रोकना चाहता है।"

"ये सवाल तूने क्यों पूछा?"

"क्योंकि तेरी हरकतों से मैं उलझन में हूं और तेरा मतलब मैं अभी तक समझ नहीं पाया।"

"समझ भी नहीं पाएगा।"
"क्यों?"
"जथूरा ऐसा खिलाड़ी है, जिसके खेल को कोई समझ नहीं पाता। वो महान है।"
"तो तू ये सब जथूरा के इशारे पर कर रहा है। अपनी मर्जी से नहीं?"
"मैं तेरे को कुछ भी नहीं बताऊंगा।"
"तू जानता है कि तेरी कही बात सिर्फ मुझ तक ही रहेगी।"
"तब भी तेरे को कुछ नहीं बताऊंगा।"
"फिर तो मैं देवा से कहूंगा कि वो मिन्नो से झगड़ा करने को तैयार हो जाए।" पेशीराम बोला।
"ये गलत होगा।"
"तूने मोमो जिन्न में इंसानी इच्छाएं क्यों डालीं। क्या ये बात जथूरा को पता है।"
"मैंने कहा न, तेरी किसी बात का जवाब नहीं दूंगा।"
"देवा।" पेशीराम की आवाज कानों में पड़ी।
"हां।" देवराज चौहान के होंठ हिले।
"मिन्नो से झगड़ा करने के लिए तैयार हो जा।"
"ऐसा मत करना।" पोतेबाबा की तेज आवाज कानों में पड़ी—"ये तेरे को भटकाना चाहता है।"
"पेशीराम कभी भी बुरा नहीं सोचेगा।"
"ये सोच रहा है।"
"मैं नहीं मानता।" देवराज चौहान ने कहा।
"तू झगड़ा मत कर। मोमो जिन्न मिन्नो को बचा लेगा।" पोतेबाबा की आवाज कानों में पड़ी—"मोमो जिन्न पर भरोसा रख। वो बहुत तेज है और इस वक्त हालातों को जांच रहा है।"
"मैं वो ही करूंगा जो पेशीराम ने कहा है।" देवराज चौहान के होंठ हिले।
"तेरे को मुझ पर भरोसा नहीं?"
"तू मेरे लिए नया है, जबकि पेशीराम को मैं पुराना जानता हूं।"
"देवा तू...।"
"बस कर पोतेबाबा।" पेशीराम की आवाज कानों में पड़ी—"तेरी नहीं चलने वाली।"
"तू बहुत चालाक है पेशीराम, जो देवा को अपने पक्ष में कर रखा है।" देवराज चौहान को पोतेबाबा का उखड़ा स्वर सुनाई दिया।
पेशीराम के हंसने की आवाज कानों में पड़ी।

"इस वक्त हम देवा के माध्यम से बात कर रहे हैं। तू सामने पड़ेगा तो तब देखूंगा।"

"अच्छा यही होगा पोतेबाबा कि तू मुझे स्पष्ट बता दे कि आखिर तू किस फेर में है।" पेशीराम की आवाज आई।

"क्यों बताऊं?"

"तेरी हरकतें संदेह-भरी हैं। कभी तू जग्गू से बात करता है तो कभी देवा से। कभी तू मोमो जिन्न में इंसानी इच्छाएं डाल देता है, जो कि एकदम गलत बात है। तू जथूरा को धोखा क्यों दे रहा है?"

पोतेबाबा की आवाज नहीं आई।

"बता पोतेबाबा।"

"मैं कुछ नहीं बताऊंगा।"

"तो देवा के पास से चला जा। ये मेरा कहना मानेगा।" पेशीराम की आवाज कानों में पड़ी।

"मेरा काम तेरे को समझाना था देवा। तू बच्चा नहीं है। अच्छा बुरा सोच सकता है।" पोतेबाबा की आवाज देवराज चौहान के कानों में पड़ी—"मिन्नो से झगड़ा करेगा तो नुकसान उठाएगा। अभी सब सामने आ जाएगा।"

"इसे बोलने दे देवा। तू मिन्नो से झगड़ा कर। वक्त बर्बाद मत कर।"

देवराज चौहान ने अपने साथियों को देखा।

"क्या हुआ?" महाजन ने पूछा।

देवराज चौहान ने कम शब्दों में सारी बात बताई।

"तुम्हें पेशीराम की बात माननी चाहिए।" महाजन ने कहा।

"वो ही कर रहा हूं।"

"देख बाप। इधर के हीरो-हीरोइन आईला है।" रुस्तम राव कह उठा।

सबकी नजरें सामने उठीं तो कमला रानी, मखानी और हंसराज को इस तरफ आते पाया।

▭ ▭

"मिन्नो का हाल देख रहा है देवा?" पास पहुंचते ही कमला रानी ने कड़वे स्वर में कहा।

"हां।" देवराज चौहान का स्वर शांत था।

"तू चाहता है कि तेरा भी यही हाल हो।"

"नहीं।"

"अंम थारे को 'वड' दयो कमीनी कुतियो।" बांकेलाल राठौर गुर्रा उठा।

"चुप रह।" मखानी गुर्राया—"तेरे को अभी खौलते तेल के कड़ाहे में डाल दूंगा।"

"थारे को भी न छोड़ूं अंम।"

"मेरी बात मानेगा तो तेरा ये हाल नहीं होगा।" कमला रानी ने कहा।

"क्या करना होगा मुझे?"

"मिन्नो से झगड़ा करना है। उसे मार दे।"

"वो तो झगड़े के लिए तैयार नहीं हो रही।"

"इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। तू उसे मार दे।" कमला रानी ने कहा—"तू उसके हाथों मरे, या वो तेरे हाथों मरें। एक को तो मरना ही है, इसी में मेरा काम हो जाएगा। तुम दोनों को हथियार दिए जाएंगे। अगर कोई उस हथियार का इस्तेमाल नहीं करता न करें। तो तू लड़ाई को तैयार है देवा?"

"हां।"

कमला रानी ने पास खड़े हंसराज से कहा।

"सुना तूने?"

"हां।"

"तो जा मिन्नो को नीचे उतार। इसी मैदान में इनकी लड़ाई का इंतजाम कर।"

हंसराज फौरन चला गया।

देवराज चौहान बोला।

"मोना चौधरी ने मुझे या मैंने उसे मार दिया तो उसके बाद क्या होगा?"

"तुम सबको तुम्हारी दुनिया में पहुंचा दिया जाएगा।" कमला रानी बोली।

"कैसे पहुंचाओगे। कालचक्र तो आज रात के बाद सिमट जाएगा।" देवराज चौहान ने कहा।

"तुम लोगों को रात में ही यहां से निकाल दिया जाएगा।" कमला रानी ने कहा।

"क्या भरोसा?"

"भरोसा करो। इसके अलावा तुम्हारे पास कोई रास्ता भी नहीं है।"

कमला रानी मखानी के साथ, वहां से हट गई।

"मखानी।" कमला रानी दबी खुशी से बोली—"हम सफल होने जा रहे हैं। देवा या मिन्नो में से एक मर जाएगा।"

"देवा कोई चालाकी तो नहीं कर रहा?" मखानी बोला।

"वो कैसे?"

"एकदम तैयार हो गया है मिन्नो से झगड़ा करने के लिए।"

"मिन्नो की हालात देखकर डर गया है।"

"मुझे ऐसा नहीं लगता।"

"क्या लगता है तेरे को?"

"चालाकी की 'बू' आ रही है। देवा इस तरह घबराने-डरने वाला नहीं।"

"तू ज्यादा शक-वहम में मत पड़ा कर।"

"जब कठिन काम सीधे-सीधे होने लगे तो समझ जा कि कहीं तो गड़बड़ हो रही है।"

"वहम का मारा है तू।"

मखानी ने गहरी सांस ली फिर मुस्कराकर कह उठा।

"छोड़ इन बातों को। चुम्मी दे दे।"

"तेरे को कुछ और नहीं सूझता।"

"तू पास होती है तो सिर्फ तेरा ही खयाल आता है। दे दे एक।"

तभी भौरी की फुसफुसाहट कमला रानी के कानों में पड़ी।

"कमला रानी! मखानी की बात में दम है। देवा इतनी आसानी से मान जाने वालों में नहीं है।"

"तो?"

"देवा अवश्य कोई चाल चलने की सोच रहा है।"

"मुझे ऐसा नहीं लगता।"

"तू सतर्क रहना। देवा पर नजर रख।"

"ठीक है।"

"मुझे कुछ बुरा महसूस होने लगा है अचानक ही।" भौरी का धीमा स्वर कमला रानी के कानों में पड़ रहा था।

"कैसा बुरा?"

"कुछ समझ में नहीं आता। कहीं देवा तुझे और मखानी को न मार दे।"

"तो क्या हम मर जाएंगे?"

"तुम्हें कुछ नहीं होगा। जिस शरीर में तू है, वो घायल हो जाए तो उस शरीर को छोड़कर तुझे किसी दूसरे शरीर में प्रवेश करा दूंगी। मैं तेरे साथ हूं। फिक्र क्यों करती है।" भौरी की आवाज कानों में पड़ी।

"और मखानी?"

"उसके साथ भी ऐसा ही होगा। शौहरी मखानी का पूरा ध्यान रखेगा। तुम दोनों हमारे सेवक हो। तुम्हें कुछ न होगा।"

मखानी कमला रानी से पूछने लगा था कि क्या बात हो रही है तभी शौहरी की आवाज कानों में पड़ी।

"मखानी।"

"कह शौहरी।"

"तू मरने वाला है।"

"क्या?" मखानी हड़बड़ा उठा।

"तू मरने वाला है।" शौहरी का शांत स्वर कानों में पड़ा।

"ये तू क्या कह रहा है शौहरी, मैं कमला रानी के साथ जीना चाहता हूं।" मखानी तड़प उठा।

"शायद मैं गलत कह गया, मौत तेरी नहीं, उस शरीर की होगी, जिसके भीतर तू रह रहा है। तू इस वक्त जगमोहन के बहरूप में है। जग्गू का शरीर बेकार हो जाएगा। मुझे कुछ ऐसा ही लग रहा है।"

"कौन मारेगा मुझे?"

"पता नहीं। शायद देवा ही।"

"फिर मेरा क्या होगा?"

"तेरे को किसी और के शरीर में प्रवेश करा दूंगा। फिक्र मत कर।"

"और कमला रानी, वो...।"

"कमला रानी की बहुत फिक्र है तेरे को। चिंता मत कर। भौरी उसे भी दूसरे शरीर में प्रवेश करा देगी।"

"यहां पर हमारा राज्य है।" मखानी परेशान-सा कह उठा—"फिर कोई हमें कैसे मार सकता है?"

"पता नहीं, परंतु ये तो पक्का है कि यहां तुम लोगों के साथ कुछ बुरा होने वाला है।"

"तू मुझे डरा रहा है शौहरी।"

"तेरे को डराकर मुझे क्या मिलेगा। तू तो मेरा सेवक है। तेरे से गलत क्यों कहूंगा। फिक्र मत कर। जो जैसे चल रहा है, वैसा चलने दे। तेरे को कुछ हुआ तो मैं तेरे को दूसरा शरीर दिलवा दूंगा।"

मखानी ने गहरी सांस ली।

"क्या हुआ?" कमला रानी ने व्याकुल स्वर में पूछा।

"शौहरी ने बुरी खबर दी है कि...।"

"हम मारे जाएंगे।" कमला रानी कह उठी।

"तो भौरी ने सब बता दिया तेरे को?" मखानी परेशान था।

"भौरी कहती है कि मारे जाने की स्थिति में वो मेरे को दूसरा शरीर दिला देगी।"

"शौहरी भी ऐसा ही कहता है। मुझे आशंका है कि कहीं हम जुदा न हो जाएं।"

"मुझे भौरीं पर भरोसा है।"

"चल जरा अंधेरे में चलें।"

"क्यों?" कमला रानी ने उसे देखा।

"फिर पता नहीं मौका मिले न मिले, एक बार प्यार तो कर लें।"

"तू हमेशा यही टर्र-टर्र ही करता रहेगा।" कमला रानी ने कहा और मुंह फेर लिया।

"मखानी।" शौहरी की आवाज कानों में पड़ी—"मुझे मोमो जिन्न की तरफ का कुछ संकेत मिल रहा है।"

"संकेत में क्या है?"

"स्पष्ट संकेत नहीं है। तुम मोमो जिन्न से इस बारे में बात करो। शायद वो कुछ बता सके।"

▭ ▭

लक्ष्मण दास, सपन चड्ढा और मोमो जिन्न कुछ हटकर बैठे थे और सब कुछ देख रहे थे। मोमो जिन्न इस वक्त कम बात कर रहा था और हालातों पर ज्यादा निगाह रख रहा था।

"ये सब क्या हो रहा है मोमो जिन्न?" सपन चड्ढा ने पूछा।

"देवा-मिन्नो और बाकियों पर खतरा आने वाला है।"

"तू उन्हें बचाना चाहता है?"

"हां। मुझे उन सबका मारा जाना पसंद नहीं।" मोमो जिन्न ने धीमे स्वर में कहा—"जबसे मेरे भीतर इंसानी इच्छाएं जागी हैं तब से मुझे खून-खराबा देखना अच्छा नहीं लगता। कालचक्र देवा या मिन्नो में से एक को खत्म करने की चेष्टा में है।"

"उन्हें बचाने के लिए तू हमें खतरे में डालेगा?"

"थोड़ा सा खतरा उठाना जरूरी...।"

"वो।" लक्ष्मण दास जल्दी से कह उठा—"कमला रानी और मखानी इधर ही आ रहे हैं।"

मोमो जिन्न फुर्ती से उठा और पीठ पर हाथ बांधे अकड़कर खड़ा हो गया।

"वो देखो उधर, मिन्नो को पेड़ से नीचे उतारा जा रहा है।" सपन चड्ढा ने कहा।

"वो झगड़े के लिए तैयार हो गई होगी।" लक्ष्मण दास बोला।

तभी कमला रानी और मखानी पास आ पहुंचे।

"क्या हो रहा है ये सब?" मोमो जिन्न अकड़-भरे स्वर में कह उठा।

"देवा और मिन्नो का झगड़ा होने वाला है।" मखानी बोला।
"तो मिन्नो तैयार हो गई।" मोमो जिन्न ने मखानी को देखा।
"नहीं। देवा तैयार हो गया है।"
"तो अब देवा और मिन्नो में से एक ही बचेगा। ये अच्छी खबर है।" मोमो जिन्न मुस्करा पड़ा।
"हमें पता चला है कि आने वाले वक्त में कुछ बुरा होने वाला है।" मखानी बोला—"शौहरी ने कहा है कि तुम्हारी तरफ से उसे कुछ संकेत मिल रहे हैं। शायद तुम बता सको कि क्या होने वाला है।"
मोमो जिन्न ने सपन चड्ढा और लक्ष्मण दास से कहा।
"बोलो, जथूरा महान है।"
"क्या?" दोनों अचकाए।
"बोलो।" मोमो जिन्न का स्वर कठोर हो गया।
"जथूरा महान है।" दोनों एक साथ कह उठे।
"सच में जथूरा की महानता का जवाब नहीं।" मोमो जिन्न ने सिर हिलाया फिर मखानी से कहा—"मैं नहीं जानता कि शौहरी ने कैसे कह दिया कि मेरी तरफ से संकेत मिल रहे हैं। जबकि आने वाले वक्त का मुझे जरा भी आभास नहीं है।"
"शौहरी गलत नहीं कह सकता।" मखानी के होंठों से निकला।
"तो क्या मैं झूठ बोल रहा हूं।" मोमो जिन्न का स्वर कठोर हो गया।
"मेरा ये मतलब नहीं था।" मखानी ने परेशान स्वर में कहा।
मोमो जिन्न ने कमला रानी से कहा।
"क्या तेरे को भी भौरी ने ऐसा कुछ कहा?"
"नहीं।"
"तो मखानी ने शौहरी की बात गलत सुनी होगी। तुम लोग जाओ। मैं व्यस्त हूं।"
उसी पल भौरी की फुसफुसाहट कमला रानी के कानों में पड़ी।
"कमला रानी, इसी मोमो जिन्न की तरफ से गड़बड़ होगी। मेरी ताकतें मुझे इस बात का एहसास करा रही हैं।"
कमला रानी ने अपने पर काबू पाया और मखानी से बोली।
"चल यहां से।"
कमला रानी और मखानी वहां से दूर हट गए।
"ये कैसे हो सकता है कि मोमो जिन्न गड़बड़ कर दे।"
"मेरी ताकतें मुझे इस बात का संकेत दे रही हैं कि मोमो जिन्न ही गड़बड़ करेगा।"

"तो इस बारे में तुम्हें मोमो जिन्न से बात करनी चाहिए।" कमला रानी ने चिंतित स्वर में कहा—"पता तो चले कि आखिर उसके इरादे क्या हैं। वो क्यों हमारे काम में अड़चन डालना चाहता है।"

"मोमो जिन्न का कंट्रोल, सीधा जथूरा के सेवक करते हैं। हम उससे बात नहीं कर सकते।"

"तो क्या जथूरा के सेवक उसे गड़बड़ करने को कह रहे हैं।"

"वो ऐसा नहीं कर सकते।" भौरी की आवाज कानों में पड़ी।

"तो फिर माजरा क्या है?"

"तुम दोनों अपने काम में व्यस्त रहो। परंतु मोमो जिन्न की तरफ से अवश्य सतर्क रहना।"

▭ ▭

"लगता है शौहरी को मुझ पर कुछ शक हो गया है।" मोमो जिन्न बड़बड़ा उठा।

उसकी बड़बड़ाहट सुनकर सपन चड्ढा बोला।

"शौहरी कौन है?"

"तुम नहीं समझोगे—तुम...।"

कहते-कहते मोमो जिन्न एकाएक खामोश हो गया और इस तरह गर्दन टेढ़ी कर ली, जैसे पास में कोई खड़ा हो और उसे कुछ कह रहा हो। आंखें बंद हो गई थीं उसकी। मोमो जिन्न बीच-बीच में कभी सिर भी हिला देता था।

लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा समझ गए कि जथूरा के सेवक उसे कुछ कह रहे हैं।

उसी पल मोमो जिन्न चौंका और उसके होंठों से निकला।

"ये क्या कह रहे हो। मैं जथूरा के खिलाफ काम करूं। तुम जथूरा के सेवक होकर मुझे गलत आदेश दे रहे हो। मैं तुम्हारी बात मानकर कमला रानी और मखानी को कैसे मार सकता हूं। ये तो बहुत गलत होगा।"

लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा की नजरें मिलीं।

मोमो जिन्न उधर से कही जाने वाली बात सुनने लगा था।

"ओह, जथूरा ऐसा चाहता है। फिर तो अवश्य कोई बात रहस्य वाली होगी।" मोमो जिन्न कह उठा—"ठीक है, मुझे जिस कार्य का आदेश दिया है, वो पूरा हो जाएगा।"

मोमो जिन्न ने फिर उधर से कही जाने वाले बात सुनी।

"समझ गया। देवा और मिन्नो की मौत से पहले, ये मुझे करना है। उनमें से कोई मरना नहीं चाहिए। ठीक है, नहीं मरेगा। ये काम पहले कर दूंगा।" मोमो जिन्न ने कहा।

फिर मोमो जिन्न ने आंखें खोलीं। गर्दन सीधी कर ली।

"क्या हुआ?" लक्ष्मण दास ने पूछा।

"मजा आ गया।" मोमो जिन्न मुस्करा पड़ा।

"हुआ क्या?"

"जो हम सोच बैठे थे। जथूरा की तरफ से संदेश में वो ही करने को कहा है।"

"क्या?" सपन चड्ढा बोला—"तुम्हारा मतलब कि जथूरा ने आदेश दिया है कि कमला रानी और मखानी को मार देना है।"

"हां।"

"परंतु वो तो कालचक्र का ही हिस्सा है। जथूरा अपने कालचक्र को तुम्हारे हाथों नुकसान क्यों पहुंचाना चाहता है।"

"अवश्य इसमें कोई रहस्य छिपा है। जथूरा ही उस रहस्य को जानता होगा।" मोमो जिन्न ने कहा।

"कितनी अजीब बात है।" लक्ष्मण दास ने सपन चड्ढा को देखा।

"जथूरा के खेल को समझना आसान नहीं।" मोमो जिन्न कह उठा—"वो सच में महान है। जो मैंने तुम लोगों को करने को कह रखा है, तुम लोग वो ही करोगे। अब तो जथूरा भी ये ही हुआ देखना चाहता है।"

"मुझे समझ में नहीं आता कि गीत तुम जथूरा के गाते हो और वैसे भागकर उसके दुश्मन सोबरा के पास चले जाना चाहते हो।"

"ये मजबूरी है मेरी।"

"क्यों?"

"मुझ में इंसानी इच्छाएं जो आ गई हैं। जिस जिन्न में इंसानी इच्छाएं आ जाएं, वो मालिक की सेवा क्या करेगा। वो तो अपनी इच्छाओं को पूरा करने लग जाएगा। अब ये बात जथूरा के सेवकों को पता लग गई तो वो मुझे मार देंगे। देर-सबेर में पता चल ही जाएगा। इसलिए अपने को बचाने के लिए मुझे सोबरा की शरण में जाना ही होगा।"

"तुम में इंसानी इच्छाएं कैसे आ गईं?"

"बता तो चुका हूं कि ये किसी की शरारत है। किसी ने जान-बूझकर मुझमें इंसानी इच्छाएं डाल दी हैं कि मैं ठीक से जथूरा की सेवा न कर सकूं। कोई शक्ति जथूरा का काम बिगाड़ना चाहती होगी।"

"वो देखो। देवा और मिन्नो मुकाबले के लिए इकट्ठा हो रहे हैं।" सपन चड्ढा ने कहा।

"तुम दोनों कमला रानी और मखानी को नजर में रखो।" मोमो जिन्न ने गम्भीर स्वर में कहा।

□ □

"तुम मुझसे झगड़ा करने को क्यों तैयार हुए?" मोना चौधरी ऊंचे स्वर में बोली।

देवराज चौहान और मोना चौधरी मैदान के बीचोबीच खड़े थे। उनके हाथों में कुल्हाड़ी जैसा हथियार था और दोनों के बीच बीस फुट का फासला था। मशालों की रोशनी में सब कुछ स्पष्ट नजर आ रहा था। आस-पास घेरा लगाए भीड़ के हाथों में मशालें थीं। उसी भीड़ में आगे-आगे कमला रानी और मखानी भी खड़े थे।

नगीना, बांके, रुस्तम, पारसनाथ, महाजन, इन सबके हाथ-पांव बंधे हुए थे और वो मैदान में ही एक तरफ पड़े थे। वो सब व्याकुल थे कि अब क्या होगा।

"तुम्हें बचाने के लिए, मेरा तैयार हो जाना जरूरी था।" देवराज चौहान गम्भीर था।

"हमने पहले ही तय कर लिया था कि हमें नहीं झगड़ना है।" मोना चौधरी गुस्से से कह उठी।

"मैं तुमसे कह चुका हूं कि तुम्हें बचाने के लिए ये सब कर रहा हूं। हकीकत में तुमसे झगड़ा करने का मेरा कोई इरादा...।"

"तो अब क्या करोगे।" मोना चौधरी पहले जैसे स्वर में कह उठी—"हमें हथियार देकर मैदान में उतार दिया गया है। हम कब तक उन्हें बेवकूफ बना सकते हैं। वो जल्दी ही समझ जाएंगे कि हमारा झगड़ने का कोई इरादा नहीं है। तब वो वापस मुझे तेल के खौलते कड़ाहे पर लटका देंगे। तुम्हें भी नहीं छोड़ेंगे, तुम्हें भी...।"

"मैंने पेशीराम के कहने पर ये सब किया है।" देवराज चौहान बोला।

"पेशीराम...तो वो तुमसे भी मिला।" मोना चौधरी के दांत भिंच गए—"उसका दिमाग खराब है जो हमें...।"

"पेशीराम का कहना है कि मोमो जिन्न हमारी सहायता करेगा।"

"कैसी सहायता?"

"मैं नहीं जानता।"

"वो जथूरा का सेवक है, हमारी सहायता क्यों करेगा। वो तो...।"

"इस बारे में मैं कुछ नहीं कह सकता।" देवराज चौहान ने कहा।

"तो बेवकूफों की तरह आंखें मूंदकर पेशीराम की बात मान ली।"

"मेरे पास कोई और रास्ता भी नहीं है। हम सब फंसे पड़े हैं।" देवराज चौहान के होंठ भिंच गए।

तभी घेरा बांधे एक बस्ती वालों की तरफ से शोर उठने लगा।

मोना चौधरी और देवराज चौहान की निगाह भीड़ की तरफ घूमने लगी।

"वो हमें झगड़ने को कह रहे हैं।" मोना चौधरी ऊंचे स्वर में बोली।

देवराज चौहान के होंठ भिंच गए।

उसी पल हंसराज पास आता दिखा और कुछ पहले ही ठिठककर चिल्लाया।

"देवा। कमला रानी कहती है, मार दे मिन्नो को।" कहकर वो वापस पलट गया।

देवराज चौहान ने कुल्हाड़ी संभाल ली।

भीड़ में से शोर उठ रहा था।

"हमें कुछ देर झगड़ने का ड्रामा करना होगा।" देवराज चौहान ऊंचे स्वर में बोला।

"उसके बाद क्या होगा? हमारा ड्रामा हमें ज्यादा देर नहीं बचा सकता।"

"जो होगा देख लेंगे।" देवराज चौहान ने इधर-उधर नजरें घुमाते हुए कहा—"तुम मुझ पर वार करो।"

"पहला वार तुम करो।"

इसके साथ ही देवराज चौहान कुल्हाड़ी के साथ मोना चौधरी पर झपट पड़ा।

▭ ▭

"जल्दी जाओ।" मोमो जिन्न बोला—"इससे पहले कि देवा या मिन्नो एक-दूसरे पर घातक वार कर दें। तुम दोनों जाकर कमला रानी और मखानी को मार दो।" इसके साथ ही मोमो जिन्न ने अपना हाथ हवा में लहराया तो हाथों में दो खंजर आ गए।

उसने एक-एक खंजर दोनों को थमाया।

लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा के चेहरों पर घबराहट के भाव आए।

"सोच क्या रहे हो, जल्दी जाओ और दोनों को मार दो।" मोमो जिन्न के स्वर में आदेश था।

"हमने उन्हें मारा तो बस्ती वाले हमें मार देंगे।" लक्ष्मण दास बोला।

"चिंता मत करो। मैं हूं। मेरे होते हुए तुम्हारा बाल भी बांका न होगा। जथूरा के आदेश पर ही ये हो रहा है।"

"मुझे तो डर लग रहा है।"

मोमो जिन्न बुरा-सा मुंह बनाकर बोला।

"मौके पर आकर तुम लोगों की हिम्मत कम हो गई। ठीक है, मैं अभी तुम दोनों में हिम्मत डाल देता हूं।"

"हिम्मत डालोगे।" लक्ष्मण दास हड़बड़ाया—"क...कैसे?"

मोमो जिन्न ने अपना चेहरा आकाश की तरफ किया और उनके नाम लेकर कुछ बड़बड़ाया।

अगले ही पल लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा की हिम्मत बढ़ गई।

"अभी उन दोनों को खत्म कर देते हैं।"

"आ सपन।"

दोनों खंजर को थामे आगे बढ़ गए।

▭ ▭

कमला रानी ने मखानी का हाथ थाम रखा था। चेहरे पर खुशी चमक रही थी।

परंतु मखानी के चेहरे पर उलझन थी।

दोनों देवराज चौहान और मोना चौधरी को देख रहे थे।

दो-दो वार दोनों एक-दूसरे पर कर चुके थे।

"मखानी। कभी भी दोनों में से कोई भी खत्म हो सकता है।" कमला रानी कह उठी—"बता, कौन मरेगा। मुझे तो लगता है मिन्नो मरेगी।"

मखानी चुप-सा देवराज चौहान और मोना चौधरी को देखे जा रहा था।

"बोल मखानी, कुछ तो कह।" कमला रानी ने बेसब्री से कहा।

तभी मोना चौधरी ने देवराज चौहान पर वार किया।

देवराज चौहान वार बचा गया।

"कोई भी नहीं मरेगा।" मखानी होंठ भींचकर बोला।

"क्या मतलब?"

"मुझे लगता है ये झगड़ा नहीं कर रहे हैं, वक्त बिता रहे हैं।"

"तेरे को वहम की बीमारी हो गई है।" कमला रानी मुंह बनाकर कह उठी।

मखानी कुछ कहने लगा कि उसका मुंह खुला-का-खुला रह गया। होंठों से 'आह' निकली। चेहरे पर पीड़ा के भाव नाच उठे।

"कमला रानी।" मखानी दर्द-भरे स्वर में बोला—"मैं...मैं तो गया।"

"क्या कह रहा...।" कमला रानी ने मखानी उर्फ जगमोहन का चेहरा देखा तो हड़बड़ा उठी।

"क्या हुआ तेरे को?"

इसी पल कमला रानी की गर्दन में चाकू आ धंसा।

दोनों के पीछे लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा अपने खूंखार रूप में खड़े थे।

उन्होंने तीव्र झटके से चाकुओं को बाहर खींचा और फिर वार किया। दूसरे वार में दोनों ही नीचे जा गिरे।

कइयों की निगाह इस तरफ गई।

लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा ने उनके शरीरों से चाकू निकाला और ऊंचे स्वर में कह उठे—

"खबरदार! जो कोई आगे आया।"

"कमला रानी को मार दिया। कमला रानी को मार दिया।"

शोर मच गया।

देवराज चौहान और मोना चौधरी का ध्यान भी इस तरफ हुआ।

"सपन।" लक्ष्मण दास चीखा—"तू जाकर उन सबके बंधन खोल। इन सबको मैं देखता हूं।"

सपन चड्ढा खून सना खंजर थामे, नगीना और बाकियों की तरफ दौड़ पड़ा।

तभी बस्ती के लोग इधर-उधर भागने लगे। शोर तेज होने लगा।

चीखो-पुकार मच गई।

देवराज चौहान लक्ष्मण दास की तरफ आ गया। मोना चौधरी महाजन की तरफ बढ़ गई थी।

हैरत की बात थी कि कोई भी बस्ती वाला लक्ष्मण दास या सपन चड्ढा की तरफ नहीं आया था। वो सब चीखते हुए इधर-उधर दौड़कर बता रहे थे कि कमला रानी को मार दिया गया और वो अपनी झोंपड़ियों की तरफ भाग रहे थे।

तभी जमीन कांपी।

लगा जैसे समुद्र में टिकी टापू की जमीन ने अपना नियंत्रण खो दिया हो। वो पानी में आजाद होकर, जहाज की तरह इधर-उधर डोलने लगी हो। मध्यम गति से टापू की जमीन डोल रही थी। हिल रही थी। वो कभी दाएं होती तो कभी बाएं, तो कभी सामान्य-सी होकर स्थिर हो जाती। बेहद अजीब सन्न कर देने वाला नजारा था।

लोग भाग रहे थे।

चीखो-पुकार, शोर मचा हुआ था।

देवराज चौहान लक्ष्मण दास के पास आकर, शोर में ऊंचे स्वर में कह उठा।

"तुमने तो कमाल कर दिया लक्ष्मण दास। कमला रानी और मखानी को मार दिया।"

"सोचा, तुम कई बार मेरे काम आए हो, एक बार मैं भी तुम्हारे काम आ जाऊं।" लक्ष्मण दास ने उत्साह-भरे स्वर में कहा।

"मैंने तो तुम्हारे काम आने की कीमत ली...।"

"कोई बात नहीं तुम भी मुझे कीमत दे देना।" लक्ष्मण दास हंसा।

देवराज चौहान मुस्कराया।

"वैसे, मैंने कुछ नहीं किया, ये सब मोमो जिन्न का किया-धरा है।"

"वो कैसे?"

"मोमो जिन्न ने मुझमें और सपन में हिम्मत डाल दी, जिसकी वजह से हम ये सब कर सके। अब हमें किसी भी बात का डर नहीं लग रहा। पहले मेरे में इतनी हिम्मत नहीं थी।" लक्ष्मण दास के हाथ में अभी भी खून सना खंजर था।

देवराज चौहान की नजरें हर तरफ जा रही थीं।

चूंकि मशालें थामे लोग वहां से भागते जा रहे थे, इसलिए अंधेरा-सा होने लगा था। सिर्फ उन्हीं मशालों की रोशनी वहां फैल रही थी, जो पेड़ों पर या अन्य जगहों पर लगी थीं।

"देवराज चौहान।" लक्ष्मण दास बोला।

"हां।"

"ये टापू अचानक बेकाबू-सा हो गया है। लगता है जैसे समुद्र में जमीन का बड़ा-सा टुकड़ा डोल रहा हो।"

"हां, ऐसा ही हो रहा है।"

"हम कैसे बचेंगे। हम नहीं जानते कि हम कहां पर हैं।"

तभी नगीना पास आ पहुंची।

"ये अचानक ही टापू को क्या हो गया है?" नगीना ने हड़बड़ाए स्वर में कहा।

"मैं नहीं जानता कि ये क्या हो रहा है।" देवराज चौहान ने कहा।

"आज रात में कालचक्र सिमट जाएगा। पोतेबाबा ने यही कहा था। कहीं ये सिमटने की वजह से ही तो नहीं हो रहा।"

"कुछ भी हो सकता है। मैं स्वयं इन बातों से अंजान हूं नगीना।" देवराज चौहान के स्वर में चिंता थी।

तभी मोना चौधरी, पारसनाथ, महाजन, बांके और रुस्तम और सपन चड्ढा पास आ पहुंचे।

"क्यों लक्ष्मण मजा आया न?" सपन चड्ढा हंसकर कह उठा।

"बहुत, आखिर हमने मार दिया उन्हें।"

"मोमो जिन्न कहां है?"

"पता नहीं। अभी आ जाएगा। वो हमें अकेला छोड़कर कहीं नहीं जाएगा।"

मोना चौधरी देवराज चौहान से कह उठी।

"ये टापू समुद्र में समा जाएगा। तभी ये डोल रहा है।"

"मुझे भी ऐसा ही लगता है।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा—"ये जगह कालचक्र का ही हिस्सा है और कालचक्र ने सुबह होने तक सिमट जाना है। तब इस टापू का भी नामोनिशान नहीं रहेगा।"

"ये बात तुम्हें किसने बताई?"

"पोतेबाबा ने।"

"ओह। लेकिन अब हमारा क्या होगा?" मोना चौधरी बोली—"मेरे खयाल में हम गहरे समुद्र में हैं।"

"इस बारे में तो पोतेबाबा या पेशीराम ही बताएंगे।"

उसी पल सब जोरों से लड़खड़ाए।

टापू की जमीन टेढ़ी हुई थी।

अगले ही पल जमीन सामान्य हालत में आ गई।

सबने खुद को संभाला।

"छोरे।"

"बोल बाप।"

"तंम म्हारी बांहों को थामो लो। म्हारे को डर लागे कि तंम कहीं लुढ़ककर समंदरो में ना जा गिरो।"

"बाप समुद्र यहां से दूर होईला।"

"सतर्क रईयो छोरे। वक्त का कोई भरोसा नहीं।" बांकेलाल राठौर ने कहा—"म्हारा प्लानो फेल हो गयो हो।"

"कैसा प्लान बाप?"

"अंम सोच के रखो कि बंधनो से आजादो होते ही, अंम कमला रानी और मखानी को 'वड' दयो। पर वो पैले ही 'वडे' गयो हो।"

"तेरे को मेहनत नहीं करने पड़ेला बाप।"

"म्हारे को किसी को वडनो का मौको ना मिल्लो हो। अमं जथूरो को 'वडो' हो।"

"पता नहीं बाप, ईब क्या होने को लिखा है किस्मत में।"

तभी टापू की जमीन जोरों से हिली।

"छोरे। बोत मजो आयो हो। झूला मिल्लो हो म्हारे को। कम्भी इधरो, कम्भी उधरो।"

"बाप झूले का रस्सा टूटेला तो सीधो समंदरो में गिरेला।"

"तंम म्हारी बांह पकड़ो रयो।"

"तेरे को डर लगेला...।"
"म्हारे को थारी चिंतो हौवे कि तंम लुढ़क न जायो।"
तभी मोमो जिन्न वहां आ पहुंचा।
सबने पहली बार मोमो जिन्न को देखा था।
"कौन हो तुम?" देवराज चौहान के माथे पर बल पड़े।
"मोमो जिन्न।"
"ओह, तो तुमने हमें बचाया।" महाजन बोला।
"ऐसा ही समझ लो।"
"तुम तो जथूरा के सेवक हो।" मोना चौधरी बोली—"फिर हमें क्यों बचाया?"
"इसका जवाब नहीं दे सकता।"
"छोरे।" बांकेलाल राठौर मोमो जिन्न को देखता कह उठा—"यो मर्द जिन्न हौवे या महिला जिन्न हौवे?"
"क्यों बाप?"
"नाकों में नथ डाले हो ये। चूड़ियां तो म्हारे को नजर न आयो।"
"ऊपर मर्द होईला, नीचे औरत होईला बाप।"
"यो तो बोत गम्भीरो बातो हौवे कि...।"
तभी मोमो जिन्न ने बांकेलाल राठौर को गर्दन से पकड़ लिया।
"तुम मेरा मजाक उड़ाते हो।"
"अंम थारा मजाक न उड़ावे, अंम तो आपसो में बातो करें हो, क्यों छोरा।"
"बातें तो तुम करेला आपुन के साथ।"
"हां बोल छोरे।"
छोरा चुप।
मोमो जिन्न ने बांकेलाल राठौर की गर्दन छोड़ते हुए कहा।
"अबकी बार सीधे रहना। मुझे पसंद नहीं कि कोई मेरे बारे में उल्टा-सीधा बोले।"
"समझ गयो अंम। तंम गम्भीरो जिन्न हौवे।" बांकेलाल राठौर सकपकाकर बोला।
तभी टापू की जमीन जोरों से कांपी और एक तरफ टेढ़ी हुई।
सब लड़खड़ाकर रह गए।
जमीन पुनः सीधी होने लगी।
"मेरे को भूख लगी है।" मोमो जिन्न सपन चड्ढा से बोला।
"तेरे को खाने की पड़ी है। इधर तो जान पर बनी पड़ी है।" सपन चड्ढा गुस्से से बोला।

"मैं तो पूर्वजन्म में जा रहा हूं।" मोमो जिन्न ने कहा।

"पूर्वजन्म में?" पारसनाथ कह उठा—"कैसे जा सकते हो तुम पूर्वजन्म में?"

"ये टापू कालचक्र का हिस्सा है। कालचक्र अब सिमटना शुरू हो चुका है। दिन निकलने तक टापू पानी में जा चुका होगा। यहां कोई नहीं बचेगा।" मोमो जिन्न ने गम्भीर स्वर में कहा—"परंतु कालचक्र से निकलकर पूर्वजन्म में जाने के लिए एक रास्ता बन चुका है। जो जान बचाना चाहता है, उसे पूर्वजन्म में जाना होगा।"

"जरूरी है ऐसा?"

"कोई जरूरी नहीं। जो जान बचाने के लिए पूर्वजन्म में नहीं जाना चाहता, मत जाए।" मोमो जिन्न ने कहा।

"यहीं रहेगा तो वो मर जाएगा?"

"अवश्य मरेगा।" मोमो जिन्न ने कहा और सपन चड्ढा, लक्ष्मण दास से बोला—"तुम दोनों मेरे साथ चलो।"

"कहां?"

"पूर्वजन्म में प्रवेश करना होगा हमें।"

"हमारा जाना जरूरी है क्या?" लक्ष्मण दास के होंठों से निकला।

"जान बचाना चाहते हो?"

"ह...हां।"

"तो मेरे साथ चलो। वरना सुबह तक समुद्र में डूबकर मर जाओगे।"

"व...वहां, पूर्वजन्म में हम क्या करेंगे?"

"हम ऐसी जमीन पर पहुंचेंगे, जहां जथूरा का राज्य है। परंतु हम चुपके-से सोबरा की जमीन की तरफ चले जाएंगे। सोबरा के पास पहुंचकर ही मेरी जान बच सकती है—वहां पर...।"

"तुम्हारी जान तो बच जाएगी, लेकिन हमारा क्या होगा?" सपन चड्ढा बोला।

"सोबरा से कहकर मैं तुम दोनों को तुम्हारी दुनिया में पहुंचा दूंगा।"

"सोबरा हमें हमारी दुनिया में भेजने के लिए तैयार न हुआ तो?"

"वो खुशी से तैयार होगा क्योंकि उसे सेवा के लिए एक जिन्न मुफ्त में मिल रहा है। मतलब कि मैं...।"

लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा की नजरें मिलीं।

"हमारा क्या होगा?" मोना चौधरी बोली।

"चाहो तो मेरे साथ पूर्वजन्म में चल सकते हो।" मोमो जिन्न ने कहा—"सबको सोबरा के पास ले जाऊंगा।"

"अगर हम पूर्वजन्म में न जाना चाहें तो?"

"मत जाओ। सुबह तक ये टापू समुद्र में चला जाएगा। यहां से किनारा बहुत दूर है तैरकर नहीं पहुंचा जा सकता। तुम सब मर जाओगे।" मोमो जिन्न ने सरल स्वर में कहा।

"हमें कोई ऐसा रास्ता बताओ कि हम अपनी दुनिया में पहुंच सकें।"

"मैं सिर्फ एक ही रास्ते के बारे में जानता हूं, जो कि पूर्वजन्म में जाता है।" मोमो जिन्न ने गर्दन हिलाकर कहा—"बातों में मेरा वक्त खराब मत करो। तुम दोनों मेरे साथ चलो।"

लक्ष्मण-सपन ने एक-दूसरे को देखा।

"क्या कहता है सपन?"

"तू बता।"

"जान बचानी है तो इसकी बात माननी पड़ेगी।"

"बाकी सब भी तो हैं, जो...।"

"दूसरों की बात छोड़, अपनी चिंता कर।"

"ये हरामी जिन्न कहीं हमें, नई मुसीबत में तो नहीं डालने जा रहा।"

"क्या पता। हमारी हालत तो कटी पतंग की तरह हो रही है। समझ में नहीं आता कि क्या करें।"

"मैं तुम दोनों का दोस्त हूं।" मोमो जिन्न बोला—"तुम जानते ही हो कि मैं झूठ नहीं बोलता।"

"हम कहां जानते हैं।" लक्ष्मण दास बोला—"ये बात तो तू ही कहता रहता है कि मैं झूठ नहीं बोलता।"

"मैं सच में झूठ नहीं बोलता। तुम दोनों मेरे दोस्त हो। मेरे साथ चलो। जान बचा दूंगा तुम्हारी।"

"कोई और रास्ता तो है नहीं। तेरी बात तो माननी ही पड़ेगी।"

"तू ठीक कहता है लक्ष्मण दास।"

मोमो जिन्न ने बाकी सबको देखा और कह उठा।

"अगर तुम लोग जान बचाना चाहते हो तो पूर्वजन्म में जाने के लिए, मेरे साथ चल सकते हो।"

"क्या तुम हमें थोड़ा-सा वक्त सोचने को दोगे?" नगीना कह उठी।

"सोच लो। ज्यादा वक्त नहीं है हमारे पास। पूर्वजन्म में जाने का रास्ता बंद हो गया तो तुम सब मरोगे। मैं तो गायब होकर अपनी जान बचा लूंगा। परंतु तुम लोग न बच सकोगे।"

वो सब एक तरफ हट गए कि आपस में बात कर सकें।

तभी लक्ष्मण दास कह उठा।

"तुम इन्हें पूर्वजन्म में ले जाना चाहते हो। जथूरा को पता चल गया तो वो तेरे से बहुत नाराज होगा।"

"जथूरा का आदेश यही है कि सबको पूर्वजन्म में ले आऊं।" मोमो जिन्न आहिस्ता से कह उठा।

"जथूरा ने ऐसा कहा?" सपन चड्ढा कह उठा।

"हां। उसके सेवकों ने मेरे से ऐसा ही कहा।"

"पहले तो जथूरा नहीं चाहता था कि ये लोग पूर्वजन्म में प्रवेश करें।"

"ये तो जथूरा ही जाने कि वो क्या करना चाहता है। परंतु ये बात तो पक्की है कि 'जथूरा' महान है।"

"सोबरा की शरण में जाना चाहते हो और वाह-वाह, जथूरा की कर रहे हो।"

"सोबरा के पास जाना मजबूरी है, वरना मैं जथूरा को छोड़ने के बारे में कभी सोचता भी नहीं।" मोमो जिन्न ने गम्भीर स्वर में कहा—"मेरे में इंसानी इच्छाएं न जागतीं तो मुझे जथूरा से कोई समस्या नहीं थी। अब ये बात जल्दी ही जथूरा के सेवकों को पता चल जाएगी कि मुझमें इंसानी इच्छाएं जाग गई हैं। कायदे के अनुसार वो मुझे मार देंगे।"

"ये बुरी बात है।"

"यार मुझे भूख लग...।"

"चुप कर।" सपन चड्ढा ने कुढ़कर कहा—"हम इंसानों से ज्यादा भूख तुझे कैसे लग सकती है?"

"लगती है, कसम से।"

"जिन्न जाति को बदनाम मत कर जो दो रोटी खाने के लिए गिड़गिड़ा रहा है। जिन्न बन। छाती तान के रह।"

"कितना दुख होता है मुझे कि न तो मैं जिन्न रहा, न ही इंसान। लेकिन सोबरा सब ठीक कर देगा। एक बार उसके पास पहुंच जाऊं तो सब ठीक हो जाएगा। वो मुझमें से इंसानी इच्छाएं निकाल देगा। मैं फिर से जिन्न बन जाऊंगा।"

▭ ▭

"हम पूर्वजन्म में प्रवेश नहीं करना चाहते हैं।" महाजन बोला—"लेकिन अब लगता है कि हमें पूर्वजन्म में जाना ही पड़ेगा।"

"जथूरा जितनी चेष्टा कर रहा था कि हम पूर्वजन्म में न जाएं, अब उतना ही आसान हो गया है पूर्वजन्म में जाना।" देवराज चौहान ने कहा—"हैरत की बात तो ये महसूस होती है कि पूर्वजन्म में हमारे प्रवेश करने को लेकर, जथूरा के दो खास लोग ही हमारी सहायता करते लगते हैं।"

"कौन दो लोग?" मोना चौधरी बोली।

"पोतेबाबा और मोमो जिन्न।" देवराज चौहान ने कहा—"जबकि पोतेबाबा का कहना है कि वो जथूरा का सबसे खास सेवक है और हमें पूर्वजन्म में प्रवेश करने से रोकने के लिए वो आया है, परंतु वो तो अप्रत्यक्ष रूप से हमें पूर्वजन्म में प्रवेश कराने के लिए हमारी सहायता कर रहा है। यही हाल मोमो जिन्न का है। मोमो जिन्न ने लक्ष्मण दास और सपन चड्‌ढा पर काबू पाकर, उनसे मुझे और मोना चौधरी को लड़वाने का काम लिया। ये तो अच्छा रहा कि हम संभल गए। झगड़ा होते-होते रह गया। परंतु उसके बाद मोमो जिन्न ने ऐसी कोई चेष्टा नहीं की हमें लड़वाने की।"

"उसमें इंसानी इच्छाएं जो जाग गई हैं।" नगीना बोली।

"ये तो वो कहता है।" देवराज चौहान ने कहा—"लेकिन हमें क्या पता कि असल बात क्या है।"

"तुम कहना क्या चाहते हो?" मोना चौधरी की निगाह देवराज चौहान के चेहरे पर थी।

"पहले तो ये बात स्पष्ट थी कि जथूरा के दो सेवक मोमो जिन्न और पोतेबाबा, हमें पूर्वजन्म में प्रवेश करने से रोकना चाहते हैं, परंतु अब ये बात स्पष्ट हो रही है कि ये दोनों हमें पूर्वजन्म में ले जाने को व्याकुल हो रहे हैं।"

"यो बातों न हौवे।"

"तो?"

"कमला रानी और मखानी के मरते ही, पूर्वजन्म में जाणों का रास्ता खुल गयो। मोमो जिन्न, लक्ष्मणो-सपनो को लेके उधरो जाने को तैयारो हौवो हो औरो म्हारे को शराफत के नातो बोल्लो हो कि चलनो हो तो चल्लो, नई तो इधरो ही मरो। वो म्हारे पे तोप ना तान्नो हो कि म्हारा अपहरणो करो के म्हारे को ले जायो हो।"

"तू परफेक्ट बोल्ला बाप।"

बांकेलाल राठौर कहता जा रहा था।

"और थारे को पोतोबाबा कब कहो हो कि तम पूर्वजन्मो में चल्लो हो।"

"वो हमारी सहायता कर रहा है।"

"अंम बोल्लो कि थारे को कब बोल्लो हो कि अंम सब पूर्वजन्मों में चल्लो हो।"

"बांके, वो हमें रोकने की कोशिश भी तो नहीं कर रहा। वो हमसे नर्मी से...।"

"वो बोत बड़ो हरामी हौवे जो नर्मी से बोल्लो हो। मौका मिल्लो तो म्हारी गर्दनो तोड़ो हो।"

"मेरे खयाल में तो पोतेबाबा हमारे हक में बात कर रहा है।" देवराज चौहान बोला।

"वक्त बता दयो कि कोणो ठीक हौवे।"

"सवाल ये होता है कि अब हम क्या करें?" महाजन ने कहा।

"हमारे पास इस वक्त बचने का कोई रास्ता नहीं है।" पारसनाथ ने कहा—"कालचक्र का टापू समुद्र में जाना शुरू हो चुका है। दिन का उजाला फैलने तक ये पूरी तरह समुद्र में डूब जाएगा। यहां से किनारा दूर है। शायद हम बच न सकें।"

सबके चेहरों पर गम्भीरता थी।

"हमें फैसला जल्दी लेना चाहिए।" मोना चौधरी बोली—"मोमो जिन्न हमारे जवाब का इंतजार कर रहा है। अभी तो अपनी जान बचाने के लिए मोमो जिन्न का सहारा है। वो चला गया तो, उस स्थिति में हमारे सामने समस्या खड़ी हो जाएगी।"

वे एक-दूसरे को देखने लगे।

"जाना है तो नखरे क्यों लगाईला बाप।" रुस्तम राव सबको देखकर कह उठा।

"अंम भी ये ई सोच्चो हो छोरे।"

"जो जाना चाहता है, वो सिर हिलाए।"

सबने सिर हिलाया, देवराज चौहान और नगीना को छोड़कर।

नगीना की उलझन-भरी निगाह देवराज चौहान पर थी।

"क्या तुम पूर्वजन्म में नहीं जाना चाहते?" मोना चौधरी ने देवराज चौहान से पूछा।

"मैं उलझन में हूं। तय नहीं कर पा रहा।" देवराज चौहान गम्भीर स्वर में बोला।

"और तुम नगीना?"

"जो इनका जवाब होगा, वो ही मेरा जवाब होगा।" नगीना ने शांत स्वर में कहा।

मोना चौधरी की निगाह देवराज चौहान पर जा ठहरी।

सब देवराज चौहान को ही देख रहे थे।

"क्या फैसला किया तुम लोगों ने?" कुछ दूर खड़े मोमो जिन्न ने कहा—"मुझे जल्दी है।"

"कुछ ठहरो भैया।" नगीना कह उठी।

इसी पल देवराज चौहान के कानों में पोतेबाबा की फुसफुसाहट पड़ी।

"देवा।"

"तुम!" देवराज चौहान के होंठों से निकला।

"मैं चाहूं तो पूर्वजन्म में जाने के लिए अभी तेरा मन बना दूं।"

"तू आखिर चाहता क्या है पोतेबाबा।" देवराज चौहान ने ठोस स्वर में कहा—"पहले तू हमें पूर्वजन्म के सफर पर जाने से रोकना चाहता था, अब तू चाहता है कि हम पूर्वजन्म में जाएं। तेरी असलियत क्या है?"

सबकी नजरें पूरी तरह देवराज चौहान पर टिक चुकी थीं।

"क्या करेगा तू मेरी असलियत जानकर।" पोतेबाबा की आवाज कानों में पड़ी।

"तू बता।"

"मैं अपने बारे में तुझे बता चुका....।"

"तू जथूरा का सेवक है तो उसकी बात क्यों नहीं मान रहा। जथूरा तो नहीं चाहता कि हम पूर्वजन्म में जाएं। तेरे को चाहिए कि तू हमें रोके, न कि हमें पूर्वजन्म में धकेले। तेरे इरादे क्या हैं?"

"मैं चाहता हूं कि तू पूर्वजन्म में जाए।" पोतेबाबा की आवाज में गम्भीरता थी।

"मैं नहीं जाऊंगा।"

"जाएगा। तेरे को जाना पड़ेगा। क्योंकि अब तेरे पास कोई दूसरा रास्ता नहीं बचा। कालचक्र का भ्रम से भरा ये टापू सुबह तक पानी में डूब जाएगा। उसके बाद जो यहां रहेगा, उसकी मौत हो जाएगी।"

"मेरी मौत की तू क्यों चिंता करता है।" देवराज चौहान ने तेज स्वर में कहा।

"पूर्वजन्म में जाने का तेरा मन मैं अभी बना देता हूं।"

"वो कैसे?"

"जग्गू और गुलचंद को भूल गया।"

देवराज चौहान की आंखें सिकुड़ीं।

"क्या मतलब?"

"जग्गू और गुलचंद कालचक्र में फंसे पड़े हैं, अब वो बाहर नहीं निकल सकते। बाहर जाने के सारे रास्ते बंद हो चुके हैं। उन्हें भी हर हाल में पूर्वजन्म में प्रवेश करना ही पड़ेगा। तुम जग्गू और गुलचंद को पूर्वजन्म के भयानक खतरों में अकेला छोड़ देना चाहते हो। अगर वो वहां के हादसे में फंसकर जान गंवा बैठे तो जिंदगी जी पाओगे?"

देवराज चौहान के होंठ भिंच गए।

"जाता हूं मैं। सोच ले। फैसला कर ले। हो सकता है जग्गू या गुलचंद को पूर्वजन्म के चक्करों में फंसे तेरी सख्त जरूरत पड़े।"

उसके बाद पोतेबाबा की आवाज नहीं आई।

देवराज चौहान के कानों में कुछ खामोशी रही।

देवराज चौहान के चेहरे पर कठोरता के भाव देखकर, नगीना कह उठी।

"क्या हुआ आपको?"

"मैं।" देवराज चौहान ने गहरी सांस ली—"पूर्वजन्म में जाऊंगा।"

"मैं हर जगह आपके साथ हूं। आपका ये फैसला है तो, मेरा भी यही कहना है।" नगीना बोली।

"फैसला हो गयो।" बांकेलाल राठौर बोला—"छोरो अंम वां ये जथूरा की गर्दन को 'वड' दयो।"

"चलो मोमो जिन्न के पास चलें।" मोना चौधरी बोली।

फिर सब मोमो जिन्न के पास जा पहुंचे।

"चल बाप।" रुस्तम राव मोमो जिन्न से कह उठा—"पूर्वजन्म का रास्ता किधर होईला?"

"मैं किसी का बाप नहीं हूं।" मोमो जिन्न ने नाराजगी से कहा—"जिन्न किसी का बाप हो ही नहीं सकता।"

"क्यों?"

"तुम्हें सारी बात क्यों बताऊं, अपने काम से मतलब रखो।"

"छोरे। चुप्पो रहो। मोमो जिन्नो का मूड उखड़ गयो तो, गड़बड़ो हौवे।"

"आओ मेरे पीछे।" मोमो जिन्न ने कहा और एक तरफ बढ़ गया।

सब उसके पीछे चल पड़े।

टापू पर अब कुछ मशालें ही जलती नजर आ रही थीं। शांति छा चुकी थी टापू पर। अब कहीं से, कोई आवाज नहीं आ रही थी। रह-रहकर टापू की जमीन इधर-उधर डोल रही थी।

उनके कदमों की आवाजें गूंज रही थीं।

"ये टापू वाले लोग कहां चले गए?" पारसनाथ ने पूछा—"कोई नजर नहीं आ रहा।"

"पूर्वजन्म में प्रवेश करने के रास्ते पर जा चुके हैं।" मोमो जिन्न कह उठा।

"सब?"

"हां, सब। उन्हें भी तो जान प्यारी है। जो पूर्वजन्म में पहुंच जाएगा, उसे कालचक्र की कैद से मुक्ति मिल जाएगी।"

"परंतु इस जमीन के नीचे तो समुद्र है।" नगीना बोली—"हमारा सफर कैसे होगा?"

"देखते रहो। सब पता चल जाएगा।"

"यो जिन्न बोत चालू लागे हो म्हारे को।" बांकेलाल राठौर का हाथ मूंछ पर जा पहुंचा।

"तुम जथूरा के सेवक हो?" मोना चौधरी ने चलते-चलते पूछा।

"पक्का सेवक हूं।" आगे बढ़ता मोमो जिन्न बोला।

"जथूरा रहता है कि हम पूर्वजन्म में न जाएं तो तुम हमें क्यों वहां ले जा रहे हो?"

"मर्जी तुम लोगों की। बेशक मत चलो।"

"मेरा सवाल ये नहीं था, मोमो जिन्न। मैं पूछ...।"

"तुम्हारे सवाल का मैं जवाब नहीं देना चाहता। क्योंकि...।"

तभी उनके कानों में एक युवती की तेज आवाज पड़ी।

"रुको-रुको, कहां जा रहे हो, तुम—मेरी बात सुनो।"

इन आवाजों को सुनकर वो सब ठिठके।

उसी पल युवक और युवती पास आकर ठिठके और गहरी-गहरी सांसें लेने लगे।

सबकी निगाह उन दोनों पर जा टिकी थी।

सांवले रंग की उन्नीस-बीस बरस की वो युवती थी। कमीज-सलवार पहन रखा था। तीखे नैन-नक्श और आंखें कुछ बड़ी थी।

बालों की चुटिया बना रखी थी।

उसका छोटा-सा सीना उठ बैठ करता लग रहा था। युवक उसका हमउम्र ही था।

वो कमीज और पायजामे में था। कद उसका अवश्य लम्बा था।

"तुम इन्हें कहां ले जा रहे हो?" युवती एकाएक अधिकार-भरे स्वर में कह उठी।

मोमो जिन्न के चेहरे पर ना-पसंदगी के भाव उभरे।

"मेरे से इस तरह से सवाल करने वाली तुम कौन होती हो?" मोमो जिन्न ने तीखे स्वर में कहा।

"तुमने मुझे पहचाना नहीं। मैं कमला रानी हूं।" युवती कह उठी।

लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा घबराकर मोमो जिन्न के पीछे हो गए।

"और मैं मखानी हूं मोमो जिन्न।"

"समझा। तो तुम लोगों ने दूसरे शरीरों में प्रवेश पा लिया।" मोमो जिन्न हौले-से सिर हिलाकर कह उठा।

"हमें तो दूसरा शरीर मिलना ही था।" मखानी बोला—"तुम इन सबको लेकर कहां जा रहे हो?"

"कालचक्र की ये जमीन समुद्र में वापस धंसने जा रही है। मैं पूर्वजन्म में प्रवेश करने...।"

"इन्हें लेकर?"

"तो क्या हो गया?"

"भूल गया कि जथूरा नहीं चाहता कि इन लोगों का पूर्वजन्म के हिस्से में प्रवेश हो।"

"मैं तुम दोनों को जवाबदेही के लिए मजबूर नहीं हूं।"

"सुना मखानी।"

"मोमो जिन्न पागल हो गया है।"

कमला रानी ने लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा को देखा।

वो दोनों अभी तक मोमो जिन्न के पीछे थे।

"तुम दोनों।" कमला रानी क्रोध से कह उठी—"तुम दोनों ने हमें मारा। हमारा काम बिगाड़ दिया।"

"हम तुम्हें नहीं छोड़ेंगे।" मखानी गुर्राया।

"मोमो जिन्न।" लक्ष्मण दास हड़बड़ाकर बोला—"देख तो ये क्या कह रहे हैं।"

"चिंता मत करो। ये तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते।" मोमो जिन्न कह उठा।

"तू गद्दार है मोमो जिन्न। जथूरा तुझे सजा देगा।"

"मेरे पास वक्त नहीं है तुम लोगों से बात करने का।" फिर मोमो जिन्न ने सबसे कहा—"चलो।"

वो सब पुनः चल पड़े।

कमला रानी और मखानी वहीं खड़े रह गए।

"ये क्या हो रहा है कमला रानी।"

"जथूरा से मोमो जिन्न को सख्त सजा...।"

"कमला रानी।" तभी भौरी की फुसफुसाहट कमला रानी के कानों में पड़ी।

"ओह भौरी, कह।" कमला रानी के होंठों से निकला।

"इस वक्त अपनी जान बचाओ। तुम दोनों भी उन सबके साथ पूर्वजन्म में प्रवेश कर जाओ।"

"लेकिन मोमो जिन्न उन सबको क्यों...।"

"ये वक्त बातों का नहीं है। पूर्वजन्म में जाने का रास्ता जल्दी ही बंद होने वाला है।"

"ओह।" कमला रानी ने मखानी को देखा—"चल मखानी।"

"कहां?"

"हमें उनके साथ पूर्वजन्म में जाना है। भौरी ने कहा है ऐसा।"

"लेकिन मुझे तो शौहरी ने ऐसा कुछ नहीं...।"

"कमला रानी जैसा कहती है मखानी, वैसा ही कर।" शौहरी की फुसफुसाहट मखानी के कानों में पड़ी।

"ठीक है।" मखानी बोला फिर कमला रानी से कहा—"चल।"

मखानी और कमला रानी आगे जा रहे उन सबके पीछे चल पड़े। इधर अंधेरा था। परंतु उन सबको देखने में इन्हें कोई परेशानी नहीं हो रही थी।

"कमला रानी।" मखानी प्यार से कह उठा।

"बोल।"

"अब तो तू जवान हो गई है। उन्नीस-बीस की कड़क।"

"तो?"

"एक चुम्मा दे दे। बाकी सब काम के लिए तो अभी वक्त नहीं।"

"तेरा ध्यान सिर्फ इसी बात पर जाता है।" कमला रानी ने झल्लाकर कहा।

"दे दे ना।"

"नहीं दूंगी।" कमला रानी ने जिद-भरे स्वर में कहा।

"एक—छोटा-सा।"

"नहीं।" कमला रानी ने पुनः इंकार में सिर हिलाया।

मखानी ने चलते-चलते झपट्टा मारा और कमला रानी को बांहों में कैद करके चुम्मा ले लिया।

"बंदा बन जा मखानी।" कमला रानी झल्लाकर बोली।

"क्या करूं, तू देती नहीं तो फिर जबर्दस्ती ही सही।"

"अपना ध्यान मोमो जिन्न पर लगा। वो गड़बड़ करने लगा है। उसके इशारे पर ही हमें मारा गया।"

"आखिर जा तो वो भी पूर्वजन्म में ही रहा है। वहां जथूरा उसे छोड़ने वाला नहीं।" मखानी ने विश्वास-भरे स्वर में कहा।

दोनों तेजी से आगे बढ़ते जा रहे थे।

"हमारी किस्मत में चैन से बैठना नहीं है।" कमला रानी बोली—"मुसीबत-पर-मुसीबत हमारे सामने आ रही है।"

अंधेरे में आगे बढ़ता मोमो जिन्न ठिठका।

पीछे से आते सब उसके करीब पहुंचकर रुक गए।

सामने ही दस फुट ऊंची कोहरे से भरी दीवार जैसी कोई चीज थी।

"ये सामने क्या है?" मोना चौधरी कह उठी।

"हम आ पहुंचे हैं वहां, जहां से पूर्वजन्म को रास्ता जाता है।" मोमो जिन्न ने कहा।

"लेकिन सामने तो रास्ता बंद लग रहा है।" पारसनाथ ने कहा।

अगले ही पल मोमो जिन्न ने अपना दायां हाथ आसमान की तरफ उठाया और कुछ बड़बड़ाया।

उसी पल मोमो जिन्न की तर्जनी उंगली से तीव्र पीली लाइट की लकीर निकलकर, वहां की जगह को रोशन करने लगी। मोमो जिन्न ने हाथ नीचे किया तो रोशन कोहरे की दीवार पर पड़ी।

"सब मेरे पीछे चले आओ।" कहकर मोमो जिन्न कोहरे की दीवार में प्रवेश करता चला गया।

सब एक-एक करके उसके पीछे, कोहरे की दीवार में प्रवेश करते चले गए।

फिर उन्होंने खुद को कोहरे की दीवार में बने एक ऐसे कमरे जैसी जगह में पाया जहां से सिर उठाने पर, ऊपर आसमान तारों भरा नजर आ रहा था।

उसी पल टापू की जमीन जोरों से डोली।

वो सब लड़खड़ाए। टेढ़े-से हो गए। फिर धीरे-धीरे जमीन सीधी होने लगी।

मोमो जिन्न ने रोशनी वाली उंगली जमीन पर बने पांच फीट के गोल गड्ढे में डाली। वो गड्ढा किसी सुरंग जैसा लग रहा था। मोमो जिन्न सबसे कह उठा।

"ये सुरंग जैसा रास्ता देखा आप सबने। हम सबको इसके भीतर जाना है।"

"लेकिन इसका फर्श तो चिकना है।" महाजन ने कहा—"हम कैसे जाएंगे?"

"ये कांच की सुरंग है।" मोमो जिन्न ने कहा—"आपको कुछ नहीं करना, सिर्फ इसके भीतर प्रवेश कर जाना है। इसकी फिसलन ही इतनी है कि बैठने वाले को मंजिल तक ले जाएगी।"

"मंजिलों से थारा का मतलबो हौवे मोमो जिन्न?"

"मतलब सबको मंजिल पर पहुंच के ही समझ में आएगा।"

"क्या ये सुरंग पूर्वजन्म में जाकर खुलती है?" देवराज चौहान ने पूछा।

"नहीं। अब और कुछ मत पूछो।" मोमो जिन्न ने रोशनी सुरंग में मारते हुए कहा—"चलो, सब एक-एक करके इसके भीतर प्रवेश कर जाओ। जल्दी करो। हमारे पास वक्त कम है। ये रास्ता कभी भी बंद हो सकता है।"

सबसे पहले देवराज चौहान आगे बढ़ा और उस सुरंग जैसे रास्ते में बैठकर प्रवेश कर गया। दो पल ही हुए होंगे उसे भीतर बैठे कि एकाएक उसके शरीर को तीव्र झटका लगा और ऐसा महसूस हुआ जैसे कोई शक्ति तेजी से उसे खींचती हुई, सुरंग के भीतरी रास्ते पर लेती चली गई है। वहां घुप्प अंधेरा था।

वहां नजर आता देवराज चौहान अब गायब हो चुका था।

"म्हारे देवराज चौहानो तो गयो।"

"आपुन भी खिसकेला बाप।" कहकर रुस्तम राव आगे बढ़ा और सुरंग में जा बैठा।

वो भी देवराज चौहान की तरह पलों में गायब हो गया।

फिर महाजन-पारसनाथ-बांके और मोना चौधरी भी एक-एक करके उस रास्ते में चले गए।

मोमो जिन्न ने लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा को देखा।

दोनों सहमे से खड़े मोमो जिन्न को देख रहे थे।

"वक्त क्यों बर्बाद कर रहे हो?" मोमो जिन्न उन्हें देखकर बोला।

"हमें कुछ होगा तो नहीं?" सपन चड्ढा ने घबराए स्वर में कहा।

"क्यों होगा, क्या तुम्हें मुझ पर भरोसा नहीं?" मोमो जिन्न ने कहा।

"नहीं।" सपन चड्ढा के होंठों से निकला।

"क्या?" मोमो जिन्न के माथे पर बल पड़े—"तुम्हें मुझ पर...।"

"है...है...पूरा भरोसा है।" लक्ष्मण दास हड़बड़ाकर कह उठा—"ये तो मजाक कर रहा था...क्यों सपन।"

"ह...हां।" सपन चड्ढा बोल पड़ा।

"तुम दोनों भी जल्दी भीतर जाओ।"

दोनों घबराए से आगे बढ़े और एक-एक करके भीतर रास्ते में चले गए।

तभी मोमो जिन्न को आहट मिली तो उसने तुरंत नजरें घुमाईं।

कोहरे की दीवार से मखानी और कमला रानी ने वहां भीतर प्रवेश किया।

"तुम दोनों?" मोमो जिन्न की आंखें सिकुड़ीं।

"हमने भी पूर्वजन्म में जाना है।" मखानी ने कहा।

"तो कोई दूसरा रास्ता चुनो।" मोमो जिन्न ने मुंह बनाकर कहा—"इस तरफ ज्यादा जगह नहीं है।"

"तो हम क्या करें।" कमला रानी ने तीखे स्वर में कहा।

"ये रास्ता सिर्फ खास लोगों के लिए...।"

"हम भी खास हैं।" मखानी ने कहा—"मुझे शौहरी ने तुम्हारे साथ जाने को कहा है।"

"मुझे भौरी ने।"

"ठीक है।" मोमो जिन्न ने सिर हिलाया—"चलो भीतर।"

मखानी सुरंग के मुहाने पर जा बैठा। जरा-सा भीतर सरका।

अगले ही पल तेजी से सरकते हुए वो गायब हो गया।

"तुम्हारा बुरा हाल होने वाला है मोमो जिन्न।" कमला रानी आगे बढ़ती कठोर स्वर में बोली—"तुम जथूरा के खिलाफ बाहरी लोगों का साथ दे रहे हो। पूर्वजन्म में पहुंचते ही तुम्हारी खैर नहीं। जथूरा तुम्हें...।"

"फालतू मत बोलो।" मोमो जिन्न का स्वर सख्त हो गया—"जल्दी करो।"

गुस्से से भरी कमला रानी आगे बढ़ी और उस रास्ते पर जा बैठी। थोड़ा-सा भीतर सरकी।

फिर भीतर सरकती गुम होती चली गई।

उसी पल जोरों से जमीन कापी और टेढ़ी होती चली गई।

मोमो जिन्न जोर से लड़खड़ाया।

'ये क्या हो रहा है। कहीं मेरा जाना रह न जाए।' वो बड़बड़ा उठा।

फिर मोमो जिन्न तेजी से आगे बढ़ा और उस रास्ते पर जा बैठा। थोड़ा आगे सरका और कह उठा।

"जथूरा महान है। उससे महान कोई और नहीं।"

इसके साथ ही वह सरकता चला गया भीतर की तरफ। तर्जनी उंगली से तीव्र रोशनी निकल रही थी। जिसकी वजह से वो कांच की सुरंग तीव्रता से चमक रही थी।

▭ ▭

घुप्प अंधेरा था वहां।

हाथ को हाथ न सुझाई दे रहा था।

एक-एक करके वे सब, एक अंधेरे से भरी जगह पर आ पहुंचे थे। दस मिनट हर एक को लगे थे वहां तक पहुंचने में। सफर आरामदेह रहा था। परंतु परेशानी तो अब थी कि अंधेरे की वजह

से वो कुछ भी देख-समझ न पा रहे थे कि इस वक्त वे सब किस स्थिति में हैं। ये जगह भी कमरे जैसी खुली जगह थी।

पानी के टकराने की आवाजें। समुद्र के पानी की नमी भरी हवा उनकी सांसों से टकरा रही थी।

"म्हारे को तो लागो हो कि मोमो जिन्नो खिसक लयो हो म्हारे को इधर भेजो के।"

"वो कहीं नहीं जाएगा।"

"यो तो कमला रानी की आवाज हौवे हो। तंम भी इधरो आ मरो हो।"

"मैं भी हूं।" मखानी कह उठा।

"सभी बीमारी इधर आ मरेला है बाप।"

"छोरे। ईब तो भूचाल आयो हो। कमलो रानो और मखानो को तो अंम अम्भी 'वड' दयो हो।"

"कोई कुछ नहीं करेगा।" देवराज चौहान का गम्भीर स्वर उन्हें सुनाई दिया—"एक वार करे तो तभी दूसरा वार करे।"

"तंम म्हारे हाथ बांध दयो हो। वरनो अंम तो ईब्बी...।"

तभी दूर कहीं रोशनी चमकी।

सबकी निगाह उधर उठी।

वो कुछ समझ नहीं पाए कि रोशनी का गोला भीतर आ लुढ़का।

वो मोमो जिन्न था।

उसकी तर्जनी उंगली से तीव्र रोशनी निकल रही थी। वहां भरपूर प्रकाश हो गया। अब सब कुछ नजर आने लगा। उस रोशनी में सबके चेहरे चमकते से महसूस हो रहे थे। उन्होंने खुद को एक मिट्टी के कमरे में मौजूद पाया। एक तरफ खोह जैसा रास्ता, जिसके बाहर कुछ नजर नहीं आ रहा था, परंतु उस खोह में कांच का बड़ा-सा हिस्सा फंसा हुआ था। वो हिस्सा ऊपर-नीचे की ओर खुला था और बीच में, भीतर जाने का रास्ता बना हुआ था।

"म्हारे को तो यो किसी राक्षस का खुला मुंह लागे हो।"

मोमो जिन्न वहां पहुंचते ही तुरंत उठा और रोशनी उस खुले मुंह पर डालते कह उठा।

"सब एक-एक करके भीतर प्रवेश कर जाओ।"

"ये क्या होईला बाप?"

"पूर्वजन्म में प्रवेश करने का ये वाहन है।" मोमो जिन्न ने कहा—"हमने अब इसी में सफर करना है।"

"भीतर कहीं भी रोशनी नहीं है।" महाजन ने कहा—"आखिर ये है क्या चीज?"

"रोशनी भी हो जाएगी। सब जल्दी से भीतर जाओ। हमारे पास वक्त कम रह गया है।" मोमो जिन्न की आवाज सुनाई दी।

फिर सब एक-एक करके उस खुले मुंह में भीतर प्रवेश करने लगे।

जब सब चले गए तो मोमो जिन्न ने तर्जनी उंगली से रोशनी उस तरफ भीतर की, जहां वे सब गए थे।

भीतर का नजारा रोशन हो उठा।

वे सब भीतर भीड़ की तरह खड़े थे। रोशनी के भीतर आते ही उन्हें साफ स्पष्ट दिखा। उन्होंने खुद को कांच की पनडुब्बी जैसी चीज में पाया। जिसके बाहर समुद्र का पानी मचलता दिखाई दे रहा था। पानी में छोटी-बड़ी मछलियां भी दिखीं। अंधेरे की वजह से वे समुद्र के पानी को ज्यादा दूर तक न देख पा रहे थे।

पीछे लम्बी बैंच जैसी जगह बनी हुई थी।

वे सब उस पर बैठते चले गए।

फर्श का हिस्सा भी कांच का था। जैसे वो नीचे पानी की सतह पर खड़े हो। नीचे भी दौड़ती मछलियां नजर आ रही थीं। ठीक बीचोबीच, नीचे की तरफ बड़े से बक्शे जैसे चीज सटी थी।

मोमो जिन्न भीतर आकर बोला।

"कैसी जगह लगी ये?" चेहरे पर मुस्कान थी।

"ये क्या है?" देवराज चौहान बोला।

"ये कांच की आकृति, जथूरा की पनडुब्बी है।" मोमो जिन्न बोला।

"कांच की पनडुब्बी?" महाजन ने अजीब-से स्वर में कहा।

"चिंता मत करो। लोहे से भी मजबूत है। हम लोग आसानी से मंजिल पर पहुंच जाएंगे।" मोमो जिन्न ने कहा।

"इसका इंजन कहां है?" मोना चौधरी ने पूछा।

"नीचे जो बक्सा लगा देख रहे हो, वो ही इंजन है।"

"इसे चलाने वाला उस बक्से में बैठा है क्या?"

"नहीं-नहीं।" मोमो जिन्न गर्दन हिलाकर बोला—"तुम लोग गलत मत समझो। वो सिर्फ इंजन है। पनडुब्बी में चालक नहीं होता। ये आटोमेटिक सिस्टम से चलती है और रिमोट द्वारा इसे जथूरा के सेवक कंट्रोल करते हैं।"

"जथूरा के सेवक? वो कहां हैं?"

"पूर्वजन्म की दुनिया में। जहां हम जा रहे हैं।"

"वो क्या?" लक्ष्मण दास कह उठा।

सबकी निगाह उस तरफ उठी।

जिस रास्ते से वे भीतर आए थे। वो रास्ता बंद हो रहा था। नीचे और ऊपर का हिस्सा आपस में मिल रहा था। कांच की पनडुब्बी का वो पूंछ वाला हिस्सा था जो देखते-ही-देखते बंद हो गया था।

तभी देवराज चौहान बोला।

"वो हमें देख रहे हैं?"

"कैसे जाना देवा?" मोमो जिन्न ने उसे देखा।

"उस रास्ते का बंद होना। वो तभी बंद हो सकता है, जब जथूरा के सेवकों को यकीन हो जाए कि हम भीतर आ चुके हैं।"

"वो हमें देख ही नहीं रहे। सुन भी रहे हैं।" मोमो जिन्न मुस्कराकर बोला फिर सपन चड्ढा-लक्ष्मण दास से कहा—"बोलो।"

"जथूरा महान है।" दोनों बेहद शराफत से बोले।

मखानी और कमला रानी ने खा जाने वाली निगाहों से लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा को देखा।

दोनों ने हड़बड़ाकर मुंह फेर लिया।

"अब तुम दोनों नहीं बचोगे।" कमला रानी कड़वे स्वर में कह उठी—"तुमने हमें मारा, हमारा काम बिगाड़ा।"

"मोमो जिन्न।" लक्ष्मण दास घबराकर बोला—"ये...।"

"इनकी फिक्र मत करो।" मोमो जिन्न ने मुंह बनाकर कहा—"मैं इनसे नहीं डरता।"

"ले...लेकिन हम तो डरते हैं।" सपन चड्ढा ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी।

"तुम भी मत डरो। जब तक मैं हूं पास में, तब तक ये दोनों तुम्हें छू भी नहीं सकते।"

"तुम हमारे पास ही रहना।" सपन चड्ढा घबराया हुआ था।

"फिक्र क्यों करते हो। तुम तो हमारे यार हो।"

"हां, हम तो तुम्हारे यार हैं।" दोनों शराफत से सिर हिलाने लगे।

"इस मोमो जिन्न की भी खैर नहीं। एक बार हम जथूरा की जमीन पर पहुंच जाएं—फिर...।"

"मुंह बंद रखो।" मोमो जिन्न तीखे स्वर में बोला—"वरना तुम दोनों पछताओगे, अगर मुझे गुस्सा आ गया तो।"

"चुप रह मखानी।" कमला रानी ने कहा—"मोमो जिन्न को तो बाद में सीधा करेंगे।"

तभी कांच की पनडुब्बी में कम्पन-सा हुआ। सब संभल गए। नजरें पानी की तरफ उठ गईं।

वो पनडुब्बी धीरे-धीरे पानी में सरकने लगी।

"मार दयो जथूरो ने तो।" बांकेलाल राठौर कह उठा—"जथूरो क्या बढ़ियो चीजो पेश करो हो।"

"दिन के उजाले में पनडुब्बी के बाहर, समुद्र के भीतरी हिस्से के और भी शानदार दृश्य नजर आएंगे।" मोमो जिन्न बोला।

"तुम पहले भी ऐसी पनडुब्बी में सफर कर चुके हो?" मोना चौधरी ने पूछा।

"कई बार। मेरा तो तुम लोगों की दुनिया में आना-जाना लगा ही रहता है।" मोमो जिन्न ने कहा।

"तो क्या जथूरा के पूर्वजन्म को, समुद्र से ही रास्ता जाता है?" नगीना ने पूछा।

"हर तरफ का रास्ता है जथूरा के पास। मैंने हर तरफ का रास्ता तय किया हुआ है।"

"कितनी देर का रास्ता है, कितना वक्त लगेगा हमें?"

"रात पूरी। फिर दिन आएगा तो, आधे दिन के बाद हम पूर्वजन्म की जथूरा की धरती पर पहुंच जाएंगे।"

"लम्बा रास्ता है।"

"तुम बैठ क्यों नहीं जाते?" पारसनाथ बोला।

"जिन्न को कभी भी थकावट नहीं होती।" मोमो जिन्न ने कहा।

"खड़े रहो। म्हारे को चौकीदारों की भी जरूरतो हौवे।"

पनडुब्बी की रफ्तार अब धीरे-धीरे तेज होने लगी थी।

सबकी नजरें पानी के बाहर लगी थीं।

मोमो जिन्न के हाथ की उंगली से निकलने वाली रोशनी ही, अंधेरे में उनका सहारा बनी हुई थी।

तभी वहां बेहद शांत और भारी आवाज गूंजी।

"मुझे खुशी है कि आप लोग हमारी दुनिया की तरफ बढ़ रहे हैं।"

"ये कौन है?" देवराज चौहान के माथे पर बल पड़े। उसने मोमो जिन्न को देखा।

"जथूरा महान है।" मोमो जिन्न फौरन कह उठा—"उससे महान कोई दूसरा नहीं है।"

"ये जथूरा का आवाज होईला बाप?"

"अंम थारे को 'वड' दयो जथूरो।" बांकेलाल राठौर गुर्रा उठा।

"लगता है भंवर सिंह जथूरा से मिलने को बहुत बेताब है।" उस आवाज में खुशनुमा भाव थे।

"स्वागत है भंवर सिंह अगर मैं तुम्हारे किसी काम आ सका परंतु मैं जथूरा नहीं, उसका सेवक हूं।"

"तुम आखिर हमसे चाहते क्या हो?" मोना चौधरी कह उठी।

"मैं तो आप सबको दोस्ती चाहता हूं। सबको अपना बनाना चाहता हूं।" वो मीठा-मधुर स्वर सबने सुना।

"हममें से किसी का मन पूर्वजन्म का सफर करने का नहीं था, परंतु हालात ऐसे बनते चले गए कि हमें यहां तक आ जाना पड़ा।"

"मिन्नो। सब बातें यहीं हो जाएंगी तो मिलने पर हम कुछ भी बात नहीं कर पाएंगे। क्यों न ये सब बातें हम मिलने पर करें।"

मोना चौधरी होंठ भींचकर रह गई।

"तुम कैसे हो देवा?" जथूरा के सेवक की आवाज आई।

"जगमोहन और सोहनलाल कहां हैं?"

"वो दोनों कालचक्र में फंसे हुए हैं। दोनों सुरक्षित हैं और जल्दी ही वे कालचक्र से बाहर, जथूरा की जमीन पर आ पहुंचेंगे। सारा कालचक्र सिमटता जा रहा है। सिर्फ वो हिस्सा ही वैसे-का-वैसा है, जहां जग्गू और गुलचंद मौजूद हैं।"

"तुम लोगों के इरादे स्पष्ट नहीं हैं।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा।

"कैसे इरादे?"

"तुम हमें पूर्वजन्म के सफर से रोकना चाहते थे या सफर कराना चाहते थे?"

"तुम्हारा क्या विचार है देवा कि हम क्या चाहते हैं?"

"इस बारे में मेरा विचार स्पष्ट नहीं है।" देवराज चौहान ने कहा।

"अपने दिमाग पर ज्यादा जोर मत दो। उस वक्त का इंतजार करो, जब हमारी मुलाकात होगी और उस वक्त में ज्यादा समय नहीं है। अब तुम लोग आराम से सफर करो। मुझे कुछ जरूरी काम करने हैं।"

इसके साथ ही आवाज आनी बंद हो गई।

"यो सबो तो बोत टेड़ो बंदो लगो हो।"

कांच की पनडुब्बी की रफ्तार तेज हो चुकी थी।

▭ ▭

रानी साहिबा यानी कि नानिया सोहनलाल का हाथ पकड़े, घने जंगल में तेजी से भागी जा रही थी। पचास बरस की खूबसूरत नानिया की चुस्ती-फुर्ती युवतियों जैसी थी। देखने में भी वो किसी भी तरफ से पचास की नहीं लगती थी। इसका राज सिर्फ ये था कि वो आज तक पुरुषों से दूर रही थी। अभी तक कुंआरी थी। देर तक दौड़ते रहने की वजह से नानिया का चेहरा गुलाबी सा हो रहा था। पसीने की वजह से बालों की लटें, माथे पर चिपक रही थीं।

जबकि सोहनलाल की सांस फूल रही थी।

आखिरकार सोहनलाल ठिठक गया और गहरी-गहरी सांसें लेने लगा।

"थक गए क्या?" नानिया बोली। वो हल्की सांसें ले रही थी।

"मेरा हाथ छोड़ो।"

नानिया ने फौरन उसका हाथ छोड़ दिया।

"तुमने तो इस तरह मेरा हाथ पकड़ा हुआ है जैसे कि मैं बच्चा हूं।" सोहनलाल हांफते हुए बोला।

"तुम नहीं समझोगे कि तुम मेरे लिए कितने कीमती हो।" नानिया प्यार से बोली—"मैं कालचक्र से मुक्त होकर आजाद जीवन जीना चाहती हूं। अपनी इच्छा से जीवन बिताना चाहती हूं। कालचक्र में तो मैं सिर्फ मोहरा भर हूं। एक तुम ही हो कि जो मुझे कालचक्र से मुक्ति दिला सकते हो। मैं तुम्हें अपने से दूर नहीं होने देना चाहती।"

"मैं तुम्हारे पास ही हूं।"

"जब तक तुम्हें थाम न लूं, तब तक तुम मुझे दूर ही लगते हो सोहनलाल।" नानिया गहरी आह भरकर बोली—"तुममें कुछ है कि मैं तुम्हारी दीवानी होती जा रही हूं। परंतु उस किताब में ये नहीं लिखा कि मेरा ऐसा हाल होगा।"

"ये बताओ कि अभी कितनी दूर जाना है। मुझसे और नहीं दौड़ा जाता।"

"सूर्य पश्चिम में जा चुका है। हम अंधेरा होने तक महल में पहुंच जाएंगे। जंगल खत्म होने को है। वो देखो, पेड़ों के बीच में से। पहाड़ नजर आ रहे हैं। आगे पहाड़ और झरने हैं। उन्हें पार करके हम महल तक जा पहुंचेंगे। अगर तुम दौड़ नहीं सकते तो हम चलते हुए आगे बढ़ते हैं। इससे तुम्हें आराम मिलेगा।"

"ठीक है। चलकर आगे बढ़ते हैं।"

दोनों आगे बढ़ने लगे।

नानिया ने सोहनलाल का हाथ थामना चाहा।

परंतु सोहनलाल अपनी बांह पीछे करता कह उठा।

"रहने दो। कुछ देर हाथ को भी आराम करने दो।"

"तुम अजीब हो।" नानिया तुनककर बोली।

"मैं अजीब नहीं हूं। बल्कि तुम मेरा हाथ नहीं छोड़ना चाहतीं। तुम परेशान लगती हो।"

"शायद।" नानिया ने चलते हुए गहरी सांस ली—"तुम बहुत लम्बे इंतजार के बाद मिले हो धुआं उड़ाने वाले इंसान। तुम्हारे

इंतजार में मैं मरी जा रही थी। क्योंकि मैं कालचक्र से आजाद होना चाहती हूं। मुझे बहुत अच्छा लग रहा है कि तुम मिल गए।”

सोहनलाल ने कुछ नहीं कहा।

“तुम मुझे कालचक्र से आजाद करा दोगे?” नानिया ने पूछा।

“करा सका तो जरूर कराऊंगा।”

“जरूर कराना। मैं तुम्हारी हमेशा आभारी रहूंगी। तुम्हारा उपकार रहेगा मुझ पर।”

“मुझे जगमोहन की चिंता हो रही है।” सोहनलाल बोला।

“अपने सेवक की बात कर रहे हो। उसकी फिक्र मत करो। वो चिमटा जाति वालों के पास है। चिमटा जाति का सरदार कह तो रहा था कि इस धरती पर बाहरी आदमी, उन्हें कालचक्र से बाहर ले जाएगा। सरदार तुम्हारे सेवक का ध्यान रखेगा।”

“तुमने महल में पहुंचते ही सबसे पहले चिमटा जाति के लोगों को आजाद करके वापस भेजना है।”

“हां। ऐसा ही करूंगी।”

“वो किताब भी जगमोहन को देनी है। उसे वो पढ़ना चाहता है।” सोहनलाल बोला।

“तुम क्यों नहीं पढ़ते वो किताब?”

“ये काम मेरा सेवक ही करता है। उसे ही करने दो। उसमें कुछ खास होगा तो वो मुझे बताएगा।”

कुछ ही देर में सोहनलाल और नानिया जंगल से बाहर आ गए।

पूरी तरह छांव हो चुकी थी। सूर्य छिप चुका था।

सामने के पहाड़ और एक तरफ से नदी जाती दिख रही थी, जो कि कुछ आगे जाकर झरने का रूप ले लेती। पानी गिरने की मध्यम-सी आवाज उनके कानों में पड़ रही थी।

“बस, उस पहाड़ के उस पार मेरा महल है।”

सोहनलाल ने पहाड़ को देखा फिर कह उठा।

“तुम पहाड़ कैसे पार करतीं?”

“तब तो हम दूसरे रास्ते से आते।”

“समझा।”

“जंगल में मैं इसलिए भाग रही थी कि वहां थोड़ा खतरा था। घोघा जाति के लोग शाम को टोलियों में घूमने निकलते हैं। मुझे डर था कि कहीं वो न मिल जाएं। वो मुझे कभी न छोड़ते।”

“क्या तुमने सबसे दुश्मनी ले रखी है।”

“कुछ भी समझो।” नानिया ने कहा—“घोघा जाति के लोग चाहते

हैं कि उन्हें अपनी नगरी में रहने को जगह दे दूं। परंतु मैं उनकी बात नहीं मानती क्योंकि वो मेरी नगरी के नियमों पर नहीं चलते।"

"तुमने उन्हें कहा कि उन्हें तुम्हारे नियमों पर चलना पड़ेगा।"

"कहा। परंतु इस बात को वे इनकार करते हैं। यही वजह है कि वो मुझे अच्छा नहीं समझते। उनका बस चले तो वो मुझे जान से मार दें। परंतु ये अच्छा रहा कि उनमें से हमें कोई नहीं मिला।"

"मिल गए।" सोहनलाल के होंठों से निकला।

"क्या?"

नानिया की निगाह भी सोहनलाल के साथ, उस तरफ घूमी।

वो पांच लोग थे। उनकी कमर पर कटोरों जैसे हथियार फंसे लटक रहे थे।

लम्बे ऊंचे सेहतमंद। उन पांचों की निगाह इसी तरफ थी।

"ये घोघा जाति के लोग हैं?" सोहनलाल ने पूछा।

"यही हैं। नानिया घबरा उठी—"मेरे साथ ये तुम्हें भी मार देंगे।"

सोहनलाल के होंठ सिकुड़ गए थे।

"तुम्हारे पास वो है, जिससे तुम्हारे सेवक ने बोगस को मारा था।" नानिया हड़बड़ाकर कह उठी।

"नहीं। तुम रिवॉल्वर की बात कर रही हो।"

"वो तुम्हें अपने पास रख लेना चाहिए था।"

तभी वो पांचों इसी तरफ आने लगे थे।

"भागो सोहनलाल।"

"तब भी वो हमें पकड़ लेंगे।" सोहनलाल ने परेशान स्वर में कहा।

"भागो।" नानिया उसका हाथ पकड़कर खींचती हुई बोली—"झरने की ओर भागो।"

सोहनलाल को भागना पड़ा।

"झरने पर हम कैसे बचेंगे?" दौड़ते-दौड़ते सोहनलाल ने पूछा।

"वहां से हम नीचे कूद जाएंगे।"

"कितनी ऊंचाई है पानी के गिरने की?"

"तुम देख लेना। तैरना जानते हो न?"

"ज्यादा नहीं।"

"ठीक है, काम चल जाएगा।"

"वो भी तो हमारे पीछे कूद जाएंगे।" सोहनलाल ने दौड़ते हुए कहा—"वो पांचों...।"

"घोघा जाति के लोगों को तैरना नहीं आता। वो पानी से दूर रहना पसंद करते हैं।"

"अजीब बात है।"

पीछे वो पांचों दौड़ते आ रहे थे। कटारें हाथों में आ चुकी थीं। परंतु पर्याप्त फासले पर थे वे।

"लगता है तुम यहां चैन से नहीं रहतीं।" सोहनलाल ने कहा।

"कालचक्र में किसी को भी चैन से रहने को नहीं मिलता।"

जल्दी ही वे दोनों नदी के किनारे पर जा पहुंचे। वहां से पानी नीचे गिर रहा था। नीचे पानी के टकराने की तेज आवाज ऊपर तक कानों में पड़ रही थी।

"चलो, कूदो सोहनलाल।" नानिया पीछे देखती चीखी।

"लेकिन नीचे तो कुछ भी नजर नहीं आ रहा कि कहां कूदना है।"

"मुझे नीचे का सब पता है। तुम्हें कुछ नहीं होगा। वो आ गए हमारे सिर पर—कूद जाओ।"

इसके साथ ही नानिया ने उसका हाथ पकड़ा और कूद गई।

सोहनलाल कूदने को तैयार नहीं था। नानिया के साथ लगभग वो लुढ़कता चला गया। हवा में उसका नीचे गिरने का अंदाज, तीव्र गति से घूमने जैसा था। इस दौरान उसे निचाई दिखाई दी तो वो कांप गया। बहुत ही नीचे था पानी। नानिया का हाथ छूट चुका था। सोहनलाल को पानी में गिरने के साथ ही अपनी मौत महसूस होने लगी।

सोहनलाल को ये नहीं पता चला कि पानी में टकराने के साथ ही, वो मर गया था या जिंदा रहा। परंतु पक्की बात तो ये थी कि उसके होश गुम हो गए थे।

▭ ▭

अंधेरा घिरना आरम्भ हो चुका था। आकाश में टिमटिमाते तारे नजर आने लगे थे। बेहद मध्यम-सी हवा चल रही थी। परंतु वातावरण स्पष्ट नजर आ रहा था। नानिया बेहोश सोहनलाल को कंधे पर डाले आगे बढ़ रही थी। आखिरकार वो एक दीवार के पास जा पहुंची। जहां छोटा-सा दरवाजा था और दो पहरेदार खड़े थे।

ये उसकी नगरी का पश्चिम की तरफ का छोटा द्वार था।

इस चारदीवारी के भीतर ही उसका महल था और नगरी थी।

चारदीवारी मीलों लम्बी थी, जो कि महल के एक तरफ से आरम्भ होकर, मीलों लम्बा चक्कर काटकर महल के दूसरे हिस्से में लगी हुई थी। सुरक्षा के लिए पर्याप्त पहरेदार थे, चारदीवारी के पास। चिमटा और घोघा जाति ने कई बार महल पर हमला करने की चेष्टा की, परंतु सफल नहीं हो पाए वे अपने इरादों में।

"कौन हो तुम?" अंधेरे में किसी को आते पाकर, पहरेदारों ने हथियार संभाल लिए।

"दरवाजा खोलो। मैं नानिया हूं।" वो अधिकार भरे स्वर में बोली।

"ओह रानी साहिबा, आप इस हाल में।" पहरेदार के होंठों से निकला।

दूसरे पहरेदार ने उसी पल दरवाजा खोल दिया था।

नानिया सोहनलाल को कंधे पर लादे, झुकते हुए छोटे दरवाजे से भीतर प्रवेश कर गई। फिर ठिठककर हर तरफ नजरें घुमाईं। सामने परंतु दूर, शानदार महल बना नजर आ रहा था, जो कि रोशनियों में चमक-दमक रहा था। सामने सड़क के किनारे रोशनियों का पर्याप्त प्रबंध था। यहां पहुंचकर नानिया को राहत महसूस हुई।

वो आगे बढ़ गई।

हर कोई अपने आप में व्यस्त था। ऊपर से अंधेरा। नानिया को कोई पहचान न पाया, अलबत्ता कई लोगों ने देखा अवश्य कि कोई और किसी को कंधे पर डाले तेजी से आगे बढ़ी जा रही है।

नानिया सीधे महल की तरफ बढ़ती जा रही थी।

कुछ देर बाद एक मोड़ पर नीली वर्दी पहने एक ओहदेदार टकरा गया।

"ऐ रुको।" वो कह उठा—"तुम कौन हो और इसे कहां ले जा रहे हो। अपना चेहरा दिखाओ। इधर रोशनी की तरफ।"

नानिया ने अपना चेहरा रोशनी की तरफ घुमाया।

"ओह, रानी साहिबा। आप इस हाल में। लाइए इसे मैं कंधे पर उठा लेता हूं।"

"जरूरत नहीं। इसे मैं ले जाऊंगी।" कहने के साथ ही नानिया आगे बढ़ती चली गई।

पंद्रह मिनट बाद वो महल के बड़े से फाटक पर जा पहुंची। वहां आठ-दस पहरेदार खड़े थे। रोशनी थी।

उन्होंने नानिया को फौरन पहचान लिया।

"ओह रानी साहिबा।"

"फाटक खोलो।"

फाटक खुलते ही नानिया सोहनलाल को उठाए भीतर प्रवेश कर गई।

महल का बाहरी हिस्सा बेहद खूबसूरत था। फूलों की क्यारियां। पेड़। फव्वारे। रंग-बिरंगी रोशनियां।

वहां का माहौल देखते ही बनता था।

नानिया जिस रास्ते पर बढ़ रही थी, वहां तीन-चार घोड़ा-गाड़ियां खड़ी थीं।

बहरहाल नानिया महल के भीतर कमरे में पहुंची और सोहनलाल को बैड पर लिटा दिया और प्यार से उसके गालों पर हाथ फेरा। महल के नौकरों ने नानिया को इस तरह आते देखा तो वे हैरान हुए।

बात मंत्री तक पहुंची तो वो फौरन महल में आ पहुंचा।

नानिया कमरे से बाहर निकली तो बाहर तीन नौकरों को खड़े पाया।

"यहीं खड़े होकर पहरा दो।" नानिया ने कहा—"मेरी इजाजत के बिना कोई भीतर न जाए।"

"जी।"

नानिया आगे बढ़ गई।

एक राहदारी से गुजर रही थी तो सामने से आते मंत्री से मिलन हुआ।

"ओह रानी साहिबा।" मंत्री कह उठा—"ये मैं क्या सुन रहा हूं। आप तो काफिले के साथ गई थीं। परंतु आपकी वापसी अकेले में हुई। आपने किसी को कंधे पर उठा रखा था। ये सब क्या हो रहा है?"

"वापसी पर कुछ परेशानियां आईं। तुम्हें ये सुनकर खुशी होगी कि बोगस मर गया।"

"मर गया?" मंत्री के होंठों से निकला—"असम्भव, यहां भला कोई कैसे मर सकता है।"

नानिया मुस्कराई।

"बाहरी दुनिया से धुआं उड़ाने वाला आ गया है, जिसके बारे में मैं तुमसे कहा करती थी।"

"यकीन नहीं होता।"

"वो धुआं उड़ाने वाला कमरे में बेहोश पड़ा है।"

"ओह।"

"उसने ही बोगस को खत्म कर दिया। बोगस के लोगों के साथ मेरे सिपाहियों का झगड़ा हुआ। वो आते ही होंगे।"

"ओह। लेकिन आप तो कहा करती थीं कि वो दो होंगे।"

"दो ही हैं। दूसरा इस वक्त चिमटा जाति के लोगों के पास बंधक है। वो चाहते हैं कि हम चिमटा जाति के सब सेवकों को छोड़ दें। उसके साथ मेरी दासी कोमा भी है।" नानिया बोल रही थी—"दूसरी दासी और कोचवान मेरे साथ ही आ रहे थे परंतु घोघा

जाति के लोगों की वजह से मैंने उन्हें अलग से आने को कह दिया। ज्यादा लोग एक साथ रहते तो घोघा जाति के लोग हमारी टोह पा लेते। फिर भी एक जगह टकराव हुआ, परंतु हम बच निकले।"

"परंतु ये धुआं उड़ाने वाला बेहोश कैसे हुआ?"

"हमें झरने से नीचे कूदना पड़ा। घोघा जाति के लोगों से बचने के लिए। इसी दौरान धुआं उड़ाने वाला बेहोश हो गया। उसका नाम सोहनलाल है। वो अच्छा इंसान है।" नानिया ने कहा।

"उसने कहा कि वो आपको कालचक्र से बाहर निकाल देगा।"

"उसने तो अभी तक नहीं कहा, परंतु वो निकालेगा, किताब में ऐसा ही लिखा है। मंत्रीजी, रात ही रात में तुम्हें कई काम करने हैं। चिमटा जाति के लोगों को आजाद करके उन्हें उनकी बस्ती में वापस भेजना है।"

"जो हुक्म।"

"सोबरा की लिखी जो किताब मेरे पास है, उस किताब को चिमटा जाति के पास मौजूद सोहनलाल के सेवक जगमोहन के पास पहुंचाना है। बेहतर होगा कि ये काम किसी जिम्मेवार आदमी को सौंपा जाए।"

"मैं ऐसा ही करूंगा। रानी साहिबा।"

"चिमटा जाति के लोगों को आजाद करने के बाद मुझसे मिलिए, मैं आपको किताब दूंगी।"

"जी।" मंत्री ने कहा और पलटकर तेज-तेज कदमों से वहां से चला गया।

▭ ▭

सोहनलाल के होंठों से कराह निकली।

धीरे-धीरे उसे होश आने लगा।

फिर आंखें खोलीं।

सबसे पहले उसे नानिया का चेहरा दिखा, जो उनके ऊपर झुका हुआ था।

"नानिया।" सोहनलाल के होंठों से धीमा-सा स्वर निकला।

"तुम ठीक हो मेरे प्यारे सोहनलाल।" नानिया ने उसके माथे पर हाथ फेरा।

सोहनलाल ने आंखें खोलीं। कमरे में नजर दौड़ाई।

"तुम मेरे महल में हो।" नानिया मुस्कराकर बोली।

"महल में—मुझे यहां कौन लाया?"

"मैं। तुम झरने से कूदने के पश्चात बेहोश हो गए थे। मैंने तुम्हें पानी से बाहर निकाला और कंधे पर लादकर यहां ले आई।"

"ओह, फिर तो तुमने बहुत तकलीफ उठाई।"

"तकलीफ कैसी। तुम्हारा बोझ ज्यादा नहीं है। तुम पतले और हल्के हो।"

सोहनलाल ने नानिया को देखा।

"तुम मुझे जरूर कालचक्र से बाहर निकाल दोगे।"

"पता नहीं।" एकाएक सोहनलाल कह उठा—"चिमटा जाति के लोगों को फौरन आजाद करो।"

"मैंने मंत्री से ऐसा करने को कह दिया है।"

"मंत्री को?"

"हां, मैं यहां की मालकिन हूं। तुमने अभी मेरे ठाठ देखे ही कहां हैं।" नानिया हंसी—"सोहनलाल, आज की रात का मुझे बरसों से इंतजार था। ये मेरे जीवन की महत्त्वपूर्ण रात है।"

"क्यों?"

"क्योंकि मैं खुद को तुम्हारे हवाले करने वाली हूं। आज पहली बार कोई मर्द मेरे कुंआरे जिस्म को छुएगा। पचास की हो गई हूं मैं, परंतु तुम्हारे इंतजार में कुंआरी थी।" नानिया मादकता भरे स्वर में कह उठी।

"ये तुम क्या कह रही हो?"

"क्यों?"

"मैं...मैं बहुत थका हुआ हूं।"

"कोई बात नहीं। तुम कुछ मत करना। सब कुछ मैं ही करूंगी। तुम्हें आनंद आएगा।"

"ये...ये कैसे हो सकता है।" सोहनलाल हड़बड़ाया।

"नहीं हो सकता तो तुम कर लेना—मैं...।"

"मेरा मतलब है कि मैं ये सब नहीं करना चाहता।" सोहनलाल अजीब-सी उलझन में था।

"क्यों?"

"यूं ही—मैं...।"

"उस किताब में लिखा है जब तक हम रात को एक साथ नहीं सोएंगे, कालचक्र से बाहर जाने का रास्ता नहीं खुलेगा।"

"ये लिखा है?"

"हां। तुम्हें मेरे कुंआरेपन को तोड़ना होगा। तभी हम कालचक्र से बाहर निकल पाएंगे।"

सोहनलाल ने मुंह लटकाकर, नानिया को देखा।

"क्या हुआ—तुम...तुम परेशान क्यों हो गए?"

"परेशान नहीं हूं। हिम्मत इकट्ठी कर रहा हूं।"

"मेरे साथ रात बिताने के लिए?"
"हां।"
"तुम फिक्र मत करो। सब कुछ मैं ही...।"
"तुम तो तब करोगी कुछ, जब मेरी तरफ से सिग्नल होगा। सिग्नल ही नहीं होगा तो...।"
"सिग्नल क्या होता है?" नानिया ने पूछा।
"नहीं जानती?"
"नहीं।"
"वो ही तो सब कुछ होता है औरत-मर्द के बीच। सिग्नल नहीं दिखेगा तो गाड़ी कैसे चलेगी।"
"मैं अभी भी नहीं समझी।"
"रात को समझाऊंगा सिग्नल के बारे में।"
"ठीक है।" नानिया के चेहरे पर खुशी दिखी—"अब चलो गुलाब जल में स्नान करेंगे।"
"गुलाब जल?" सोहनलाल गहरी सांस लेकर कह उठा।
"उसके बाद नशा करेंगे। बंद कमरे में कपड़े उतारकर।"
"तुम तो सिग्नल का बुरा हाल कर दोगी।"
"ये सिग्नल क्या...।"
"बताऊंगा-बताऊंगा।" सोहनलाल बैड से नीचे उतरा—"बता गुलाब जल किधर है। शायद उससे कुछ हिम्मत बंधे।"

▭ ▭

चिमटा जाति का सरदार जगमोहन को अपनी बस्ती में ले गया। साथ में बस्ती के बाकी लोग भी थे। जंगल में बनी झोंपड़ियों की साधारण-सी बस्ती थी। बस्ती में औरतें और बच्चे भी थे। शाम के सूर्य की तीव्र पीली रोशनी पेड़ों से छनकर, तीखी होकर वहां तक आ रही थी।
एक बड़े-से झोंपड़े में सरदार जगमोहन को ले गया। कोमा साथ में थी। बाकी सब लोग बाहर ही रह गए थे।
"बैठो।" सरदार बोला—"नशा करोगे?"
"मैं नशा नहीं करता।" लकड़ी की कुर्सी पर बैठता जगमोहन बोला।
"आराम कर लो। खाना-पीना चाहो तो बता दो।"
"कॉफी मिलेगी?" जगमोहन ने पूछा।
"कॉफी, वो क्या होती है?"
"रहने दो। तुम नहीं समझोगे। मुझे आराम की जरूरत नहीं है। क्या तुम मुझे वो रास्ता दिखाओगे?"
"कालचक्र से बाहर निकलने का?"

"हां, जिसके बारे में तुम कह रहे थे कि तुम कालचक्र से बाहर निकलने का रास्ता जानते हो।"

"क्यों नहीं, तुम चलो मेरे साथ।"

तभी कोमा कह उठी।

"इतनी जल्दी भी क्या है। तुम थोड़ा आराम कर लो। मैं भी तुम्हारे साथ आराम...।"

"तुम जैसा आराम करना चाहती हो, वैसा आराम करने की मुझे आदत नहीं है।" जगमोहन कह उठा।

"वैसा आराम तो सब मर्द करते हैं।"

"सब नहीं करते।"

"जो नहीं करते, वो मर्द नहीं होते।"

"तुम्हारा मतलब कि मैं मर्द नहीं हूं।" जगमोहन तेज स्वर में कह उठा।

"मैंने कब कहा।"

"अभी कहा, सरदार से पूछ लो।"

सरदार मुस्करा रहा था।

"तुम नाराज क्यों होते हो। मैं क्या तुमसे मजाक भी नहीं कर सकती।" कोमा मुंह फुलाकर बोली।

जगमोहन ने गहरी सांस लेकर मुंह घुमा लिया।

"अगर तुम्हें किसी मर्द की जरूरत है तो मैं अभी मर्द को बुला देता हूं।" सरदार बोला।

"मर्दों की कमी नहीं है मुझे। मैं तो जग्गू के साथ ही प्यार करना चाहती थी।"

"इसका अभी मन नहीं लगता।"

"कोई बात नहीं। मैं इंतजार कर लूंगी।"

"ये तो अच्छी बात है।" सरदार ने कहा फिर जगमोहन से बोला—"चलो, मैं तुम्हें रास्ता दिखाऊं।"

जगमोहन उठ खड़ा हुआ।

"मैं भी साथ चलूंगी।" कोमा कह उठी।

वे तीनों झोंपड़े से बाहर निकले।

सरदार ने दस लोग साथ लिए और चल पड़े। जंगली रास्ता था।

"तुमने इन लोगों को साथ क्यों लिया?" जगमोहन ने पूछा।

"तुम्हारे लिए। ताकि तुम भागने का प्रयत्न न करो।"

"मैं क्यों भागूंगा।"

"आखिर हो तो तुम मेरे कैदी ही। जब तक रानी साहिबा चिमटा जाति के लोगों को नहीं छोड़तीं। तब तक तुम मेरे पास रहोगे।"

"वो छोड़ देगी। उसके बाद मैं चला जाऊंगा।"

"मैं तुम्हें नहीं जाने दूंगा।" सरदार बोला।

बातों के दौरान वो सब तेजी से आगे बढ़े जा रहे थे।

"क्यों?"

"क्योंकि तुम मुझे कालचक्र से बाहर निकालोगे। सोबरा ने कालचक्र में फंसाते वक्त मुझे बताया था कि तुम आओगे तो मुझे इस कालचक्र से मुक्ति मिलेगी। क्या तुम मुझे आजाद कराओगे?"

"ये बात तुमने पहले भी पूछी थी। कोशिश करूंगा।" जगमोहन ने कहा।

"मुझे कालचक्र से जरूर आजाद कराना।" सरदार खुशामद-भरे स्वर में कह उठा।

करीब आधे घंटे बाद वे सब एक पहाड़ के पास पहुंचे।

नीचे से पहाड़ खोखला था। रास्ता भीतर को जा रहा था।

सूर्य ने अब पश्चिम में छिपना आरम्भ कर दिया था।

"चार लोग मशालें जलाकर साथ आओ।" सरदार बोला—"बाकी सब यहीं खड़े रहो।"

ऐसा ही किया गया।

जलती मशालें थामे चार लोग भीतर प्रवेश कर गए। सरदार, जगमोहन और कोमा साथ में थे।

शुरू में रास्ता चौड़ा था फिर धीरे-धीरे रास्ता तंग होने लगा। घुटन बढ़ने लगीं।

"तीन मशालें बंद कर दो।" जगमोहन बोला—"मशालों का धुआं, सांस लेने में परेशानी पैदा कर रहा है।"

फौरन तीन मशालें बुझा दी गईं।

अब वे एक मशाल की रोशनी में आगे बढ़ रहे थे, जो कि सबसे आगे के आदमी ने थाम रखी थी। तंग होती वो सुरंग जैसी जगह, अब ऐसी हो गई कि सिर्फ एक ही आदमी आगे बढ़ सकता था।

वे एक-एक करके आगे बढ़ने लगे।

"आगे क्या है?" जगमोहन ने पूछा।

"कुछ देर बाद देख लेना।" सरदार बोला।

इसी प्रकार थोड़ा-सा रास्ता और तय किया गया।

फिर उन सबने खुद को पहाड़ी के खोखले हिस्से में पाया, जो कि एक बड़े कमरे जैसा था। बेढंगी-सी छत थी उस जगह की। दीवारें पहाड़ की थीं। फर्श दीवारों की अपेक्षा समतल था, परंतु उबड़-खाबड़ था। उसी पहाड़ी दीवार पर एक तरफ किसी खेल जैसा बोर्ड लगा हुआ था। उस पर गोटियां लटक रही थीं हवा में।

जगमोहन ने सब तरफ नजरें घुमाईं।

अजीब सी जगह थी ये।

समझ में नहीं आया कुछ तो उसने सरदार को देखा।

"यहां रास्ता किधर है?"

"सोबरा ने मुझे बताया था कि जब बाहरी आदमी यहां आएगा तो वो इन लटकती गोटियों को ठीक नम्बरों पर लगा देगा, जिससे कि यहां की एक तरफ की दीवार सरक जाएगी और बाहर निकलने का रास्ता बन जाएगा।"

"तुमने गोटियों को ठीक से खानों में लगाने की चेष्टा की होगी?" जगमोहन ने पूछा।

"मैं तो कब से कर रहा हूं कोशिश, परंतु कभी सफल नहीं हो सका।"

जगमोहन उन गोटियों के पास जा पहुंचा।

धागे में बंधी वो हवा में लटक रही थीं। दीवार पर जो खेल जैसा बोर्ड लगा था, वहां हर खाने में एक छेद था गोटी के साइज का। गोटियों को पकड़कर उन छेदों में फिट करना था।

सरदार पास आ गया।

"सिर्फ एक ही बात परेशान करती है।" सरदार बोला।

"क्या?"

"एक गोटी कम है। एक छेद हमेशा खाली रह जाता है।" सरदार ने बताया।

"तो वहां पर गोटी के साइज का कोई पत्थर रख दो।" जगमोहन बोला।

"कर चुका हूं ऐसा। परंतु कोई फायदा नहीं हुआ।"

"मैं देखता हूं।" कहने के साथ ही जगमोहन गोटियों को, उस खेल जैसे बोर्ड पर लगाने लगा।

बाकी सब भी पास आ गए थे।

सब गोटियों को खाने में फिट किया गया। परंतु एक खाना खाली रह गया। उसमें फंसाने को कोई गोटी नहीं बची थी। जगमोहन ने गोटी के साइज का पत्थर ढूंढ़ा और उस खाली जगह में फिट कर दिया।

परंतु जवाब में कुछ भी नहीं हुआ।

जगमोहन ने गोटियों को निकाला और उन्हें पुनः फिट करने लगा।

"ये सब करते-करते मेरी जिंदगी बीत गई।" सरदार बोला—"अब तो तंग आ गया हूं इस काम से।"

लेकिन जगमोहन लगा रहा अपने काम में।

एक घंटे में उसने कई बार गोटियां अलग-अलग खानों में फिट कीं और खाली बचे खाने में पत्थर फंसाया, लेकिन नतीजा जीरो ही रहा। मशाल धीमी पड़ने लगी।

"हमें चलना चाहिए।" सरदार बोला—"मैं तुम्हें कल फिर यहां ले आऊंगा।"

"अगर तुम्हें सोबरा ने कहा कि बाहरी आदमी ये सब करके रास्ता बनाएगा, तो अब तक रास्ता बन जाना चाहिए था।" जगमोहन ने कहा—"हो सकता है तुमने सोबरा की बात गलत सुनी हो। उसका मतलब कुछ और हो।"

"मैंने ठीक सुना था।" सरदार बोला—"सोबरा ने ये बात मुझे तीन बार बताई थी।"

"तब तुमने सोबरा से नहीं पूछा कि एक गोटी क्यों कम है। क्यों एक खाना ज्यादा है।"

"कैसे पूछता। उस वक्त मुझे नहीं पता था कि एक गोटी कम है।" सरदार ने बताया।

"चलो वापस चलते हैं।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा।

सब वापस चल पड़े।

रास्ते में नदी आई तो जगमोहन ने नहाना पसंद किया। कपड़े उतारकर वो नदी में उतर गया। सरदार और उसके साथी बाहर खड़े रहे। अंधेरे का मौका देखकर, कोमा कपड़े उतारकर नदी में उतर गई।

जगमोहन के पास पहुंची कोमा।

"तुम।" उसे देखते ही जगमोहन बोला—"तुम क्यों आ गईं। तुम्हारे कपड़े भीग जाएंगे।"

"उतार आई हूं उन्हें।"

"कपड़ों को?" जगमोहन सकपकाया।

"हां।"

जगमोहन ने उसी पल पलटकर किनारे की तरफ बढ़ना चाहा।

कोमा ने फुर्ती से उसका हाथ थाम लिया।

"तुम मुझसे दूर क्यों भागते हो जग्गू?"

"हाथ छोड़ो। मैं नहीं भागता।" जगमोहन ने अपना हाथ छुड़ाया।

"मैं तुम्हारा हाथ पकड़ लूंगी तो क्या हो जाएगा। तुम्हारा नुकसान होगा?"

"नहीं।"

"तो मुझे हाथ पकड़ने दो।" कोमा ने फौरन उसका हाथ थाम लिया। वो कुछ करीब आई—"क्या तुम कुंआरे हो?"

"कुंआरा—हां—मैंने शादी नहीं की।"

"वो कुंआरा नहीं, दूसरा कुंआरा, क्या कभी लड़की को नहीं छुआ?"

"छू...छुआ है।" जगमोहन फंसे स्वर में कह उठा।

"तो फिर मुझे क्यों नहीं छूते।"

"समझा करो।" जगमोहन सकपकाया।

"क्या समझूं।"

"सरदार और उसके आदमी आंखें फाड़े हमें ही देख रहे हैं। सबके सामने अच्छा नहीं लगता।"

"समझ गई। रात को करेंगे। अकेले में...।"

जगमोहन ने बिजली की तेजी से अपना हाथ खींचा।

"क्या हुआ?"

"तुम मेरे हाथ को कहां ले जा रही थीं?" जगमोहन की हालत बुरी-सी होने लगी थी।

"जहां तुम्हारा हाथ ले जा रही थी। वो बुरी जगह तो नहीं है।" कोमा चंचल स्वर में कह उठी।

जगमोहन से कुछ कहते न बना।

"हाथ दो न अपना।" कोमा की आवाज में आग्रह था।

"नहीं। वो सरदार...सरदार देख रहा है।"

"ठीक है। रात को तैयार रहना। जानते हो मैं अभी तक कुंआरी हूं। रानी साहिबा का सख्त हुक्म था कि जब तक उन्हें धुआं उड़ाने वाला नहीं मिल जाता, तब तक उनकी सेविकाएं कुंआरी रहेंगी।"

जगमोहन ने गहरी सांस ली।

"तुम नशा नहीं करते।"

"नहीं, वैसे कसम भी नहीं खा रखी, कभी-कभी कर भी लेता हूं।"

"तो आज रात कर लेना। बहुत मजा आएगा। मैं भी नशा करूंगी।" कोमा ने जगमोहन का हाथ थाम लिया।

"नदी से बाहर आ जाओ।" जगमोहन हाथ छुड़ाकर किनारे की तरफ बढ़ गया—"ज्यादा नहाना भी अच्छा नहीं होता। साली, पीछे ही पड़ गई है। बार-बार हाथ पकड़कर वहां...।"

"वो धुआं उड़ाने वाला तो, रानी साहिबा के साथ मजा कर रहा होगा।" पीछे कोमा कह उठी।

"करने दे उन्हें, तेरे को क्यों खुरक उठ रहा है।" जगमोहन नदी से बाहर आकर कपड़े पहनने लगा।

"होगी नहीं क्या।" कोमा हंस पड़ी—"रात को बताऊंगी।"

'खामखाह की मुसीबत।' जगमोहन बड़बड़ा उठा।

रात का खाना खाने के बाद वे सब अपने-अपने झोंपड़ों में नींद लेने के लिए जाने लगीं। परंतु तब कोमा परेशान हो गई, जब उसने देखा कि जगमोहन को जिस झोंपड़े में सुलाया गया है, वहां दो आदमी, पहरे के लिए मौजूद हैं।

जबकि कोमा एकांत चाहती थी।

उसकी हालत पर जगमोहन मुस्कराया।

"तुम तो यही चाहते थे न।" कोमा ने नाराजगी से कहा।

"मैंने तो नहीं कहा सरदार से कि ये सब इंतजाम किए जाएं।" जगमोहन हंसा।

"मैं अभी सरदार से बात करती...।"

तभी सरदार कमरे में आ पहुंचा।

"तुम्हें यहां कोई तकलीफ तो नहीं जग्गू?" सरदार ने पूछा।

"मुझे है।" कोमा कह उठी—"तुम इन दोनों को पहरे पर से हटा लो, हमें एकांत चाहिए।"

"ये नहीं हो सकता। मुझे जग्गू की रखवाली करनी है कि कहीं ये भाग न जाए। रानी साहिबा के यहां मेरी जाति के जो कैदी लोग हैं, उन्हें मैं वापस पाना चाहता हूं। जग्गू भाग गया तो मुझे मेरे लोग नहीं मिलेंगे।"

"तुम इन पहरेदारों को झोंपड़े के बाहर खड़ा कर दो।" कोमा बोली।

"ये नहीं हो सकता।" सरदार ने कहा और वहां से चला गया।

कोमा चिढ़कर रह गई।

"अब तुम एक ही काम कर सकती हो।" जगमोहन ने शरारत-भरे स्वर में कहा।

"क्या?"

"मेरे पांव दबाओ।"

"नहीं दबाती।" कोमा ने नाराजगी से कहा—"तुम सरदार से कहते तो वो मान जाता। परंतु तुमने जरा भी कोशिश नहीं की।"

"तुम कोशिश करती रहो।"

रात का जाने कौन-सा पहर था।

कानों में शोर पड़ा तो जगमोहन की आंख खुल गई। उसने नजर घुमाई तो सामने की चारपाई पर कोमा को गुड़मुड़ नींद में पाया। सरदार के दोनों पहरेदार सतर्कता से पहरा दे रहे थे। एक तरफ मशाल जल रही थी।

"क्या हो रहा है बाहर?" जगमोहन ने कहा।

"हमें नहीं मालूम।" पहरेदार ने कहा।

"मालूम करो।"

"हमारा काम तुम पर नजर रखना है। हम यहां से हट नहीं सकते।" पहरेदार ने जवाब दिया।

जगमोहन उठ बैठा। तभी एक व्यक्ति ने भीतर प्रवेश करके कहा।

"रानी साहिबा ने हमारी जाति के लोगों को आजाद कर दिया है। वे आ पहुंचे हैं।" खबर देकर वो चला गया।

अब तक कोमा की आंख खुल चुकी थी। वो खुशी से बोली।

"ये तो अच्छी बात है। सरदार अब इन दोनों को पहरे से हटा लेगा।"

"तुम नींद में भी इसी बात के सपने ले रही थी।"

"तुम मेरे साथ सोने में चिढ़ते क्यों हो?" कोमा ने मुंह फुलाया।

"मैं कहां चिढ़ता हूं। परंतु इस बात की तरफ ज्यादा सोचना भी ठीक नहीं होता।"

"ज्यादा सोचना? तुम समझते क्यों नहीं कि मैं कुंआरी हूं। एक बार तुम्हें पा लूंगी तो चैन मिल जाएगा।"

"चैन मिल नहीं जाएगा, चैन छिन जाएगा। तब तुम खाते-पीते, जागते-सोते, इसी बात के सपने देखोगी।"

"ये नहीं होगा।"

"ये ही होगा।"

"देखूंगी, पहले तुम एक बार तो मेरे हाथ के नीचे आओ।" कोमा ने चंचल स्वर मे कहा।

"तुम किसी और के साथ...।"

"मुझे, तुम ही चाहिए।" कोमा की प्यार-भरी आवाज में, जिद के भाव भरे थे।

"करो इंतजार।"

"अब कोई इंतजार नहीं है। सरदार अभी इन दोनों को यहां से हटा लेगा, उसके बाद तो...।"

तभी सरदार ने झोंपड़े में प्रवेश किया। साथ में नीली वर्दी पहने एक और व्यक्ति था। जिसने कपड़े में बंधा कुछ उठा रखा था। जगमोहन उसे देखते ही बोला।

"तुम्हारे सब आदमी नानिया ने छोड़ दिए?"

"हां—वो...।"

"तो अब इन पहरेदारों को यहां से हटा लो।" कोमा कह उठी—"तुमने ही कहा था कि...।"

"अभी मुझे जग्गू की जरूरत है।" सरदार बोला।
"क्या मतलब?"
"ये हमें कालचक्र से बाहर निकालेगा। अगर ये भाग गया तो फिर हमें कौन यहां से बाहर निकालेगा।"
"तुम अपनी बात से फिर रहे हो।" कोमा ने तीखे स्वर में कहा।
"तुम जग्गू को पाने के लिए बल क्यों खा रही हो। कोई और मर्द ले लो। बढ़िया मर्द दूंगा।"
"नहीं, मुझे जग्गू ही चाहिए।" कोमा ने सिर हिलाकर कहा।
"ऐसा है तो ये बात मुझे जग्गू ने एक बार भी नहीं कही।"
"तुम कह दो जग्गू।" कोमा ने जगमोहन को देखा।
जगमोहन सरदार से कह उठा।
"ये नीले कपड़ों वाला मुझे, नानिया का सेवक लगता है।"
"हां। रानी साहिबा ने तुम्हारे लिए कोई किताब भेजी है।" सरदार बोला।
"जरूर। मुझे किताब की जरूरत थी।" कहकर जगमोहन ने नीले कपड़े पहने सैनिक से किताब थामी।
"तुम सरदार से कह दो जग्गू कि तुम्हें एकांत चाहिए।"
"ये ठीक कहती है। मुझे एकांत चाहिए। किताब को पढ़ना है मैंने। तुम कोमा को बाहर ले जाओ।"
"ये क्या कर रहे हो?" कोमा गुस्से से बोली।
"मुझे किताब पढ़नी है। ये जरूरी है।"
"तो मुझे क्यों बाहर निकलवा रहे हो?"
"तुम मुझे परेशान करोगी। किताब नहीं पढ़ने दोगी।"
"नहीं करती परेशान। मुझे कम-से-कम अपने पास तो रहने दो।" कोमा ने नाराजगी से कहा—"पता नहीं कैसे मर्द हो, जो एक कुंआरी से दूर भाग रहे हो। दूसरा होता तो अब तक जाने क्या से क्या हो गया होता।"
जवाब में जगमोहन मुस्कराकर रह गया।

☐ ☐

अगले दिन की सुबह नानिया के लिए बहुत खुशगवार थी। उसका एक-एक अंग हिला-सा हुआ था। रात उसने जिंदगी के नए स्वाद का मजा चखा था। पचास साल की उम्र में इस नए स्वाद का मजा चखना, उसके लिए बहुत बड़ा अनुभव था। सोहनलाल ने अपनी तरफ से कोई कसर न छोड़ी थी। रात भर मस्ती में कराहती रही थी नानिया। कई बार तो उसके होंठों से निकलने वाली आवाज में ऐसे भाव थे कि जैसे कोई उसका गला काट रहा हो। ये सब एक

बार नहीं, पांच बार चला। सोहनलाल ने तो एक बार के बाद ही बस कर दी थी, परंतु नानिया को चैन कहां था। वो तो जैसे पचास साल की कमी को एक ही रात में पूरा कर लेना चाहती थी। आधी रात के बाद जाकर ही वो सो पाए थे। तब शायद रात के तीन बज रहे थे।

अगले दिन जब नानिया की आंख खुली तो चेहरे पर बच्चों जैसी मासूम मुस्कान थी।

जैसे उसे पसंदीदा चीज मिल रही हो। बीती रात का जागता सपना उसकी आंखों के सामने घूमने लगता कि रात क्या-क्या—कैसे हुआ।

आज नानिया को दुनिया की रंगीन तस्वीर कुछ अलग ही नजर आ रही थी।

नानिया के शरीर पर गाऊन जैसा एक ही कपड़ा था। वो आगे बढ़ी और खिड़की खोलकर बाहर देखने लगी।

नगरी में तो कब की जाग हो गई थी। हर कोई अपने काम में व्यस्त दिखा। सिपाही नीली वर्दियों में अपने कामों में लगे दिखाई दिए। नानिया आंखों में रात की मस्ती समेटे देर तक बाहर देखती रही।

तभी नानिया पल भर के लिए चौंकी।

पीछे से सोहनलाल ने आकर उसकी कमर के गिर्द बांह डाल दी थी।

"शरारती हो तुम।" नानिया बिना पलटे मीठे स्वर में कह उठी।

"तुमसे कम।" सोहनलाल के स्वर में मस्ती थी—"रात तुमने क्या किया?"

"मैंने तो कुछ नहीं किया। जो किया तुमने किया।"

"मैंने तो एक बार किया, लेकिन तुमने चार बार...।"

तभी नानिया उसकी बांहों के घेरे में फंसी घूम गई।

दोनों की नजरें मिलीं।

नानिया ने सोहनलाल के होंठों को चूमा।

"मेरे लिए ये सब नया है।"

"नया?"

"वो देखो, चादर का हाल। खून के दो-तीन धब्बे हैं वहां। तुम्हें इसी से समझना चाहिए कि रात जो हुआ, मेरे साथ पहली बार हुआ।"

सोहनलाल मुस्करा पड़ा।

"मैं भाग्यशाली निकला जो तुम मुझे मिलीं।" सोहनलाल ने कहा।

"शायद। लेकिन मैं तो कब से तुम्हारा इंतजार कर रही थी। पचास बरस से।"

"अब मैं आ गया हूं नानिया।"

"तुम चले जाओगे।"

"तुम्हें कालचक्र से बाहर निकालूंगा।" सोहनलाल ने उसका गाल थपथपाया।

"उसके बाद चले जाओगे।"

सोहनलाल ने नानिया को गहरी निगाहों से देखा।

नानिया की आंखों में पानी चमकता दिखाई दिया।

"तुम मत जाना सोहनलाल।" नानिया का स्वर भीग गया।

"जाना तो मुझे है ही। यहां रुक नहीं सकता।"

"मैं—मैं तुम्हारे बिना कैसे रह पाऊंगी। हर वक्त तुम मुझे याद आओगे।" आंसू गालों पर आ लुढ़के।

सोहनलाल ने उंगली से उसके गालों पर आ पहुंचे आंसुओं को साफ किया।

"जानती हो नानिया, मैंने अभी तक शादी नहीं की।"

"नहीं की?"

"नहीं। लेकिन अब कर सकता हूं।" सोहनलाल मुस्करा पड़ा।

"तुम किसी से शादी कर रहे हो सोहनलाल?"

"हां।"

"किससे?"

"अगर वो तैयार हो जाए तो।"

"वो तैयार क्यों न होगी?" नानिया ने भीगे स्वर में कहा।

सोहनलाल कुछ पल नानिया को देखता रहा फिर प्यार से कह उठा।

"जानती हो नानिया। बीती रात तुम्हारे लिए ही नहीं, मेरे लिए भी महत्त्वपूर्ण थी।"

"तुम्हारे लिए कैसे?"

"रात पहली बार मुझे लगा कि मेरे पास कोई सम्पूर्ण औरत मौजूद है। मैंने रात तुम्हें भोगा नहीं, प्यार किया तुमसे।"

नानिया की निगाह सोहनलाल के चेहरे पर फिरती रही।

"मुझसे शादी करोगी?"

"मैं?" नानिया का स्वर कांप उठा।

"हां तुम—मैं तुमसे शादी करना चाहता हूं। क्या तुम्हें मंजूर है?"

नानिया की आंखों से आंसू बह उठे। चेहरा खुशी से भर उठा।

"सच सोहनलाल। हम—हम शादी करेंगे?"

"जरूर करेंगे। लेकिन यहां नहीं। ये पूर्वजन्म की दुनिया है। यहां से वापस जाना है मुझे, तुम्हें भी अपने साथ ले जाऊंगा आगे की दुनिया में। वहां मेरा घर है। उस घर में हम शादी करके रहेंगे नानिया।" सोहनलाल मुस्करा रहा था।

"सोहनलाल।" नानिया सोहनलाल से लिपट गई।

सोहनलाल उसकी पीठ पर हाथ फेरने लगा।

"वो दुनिया कैसी है सोहनलाल?"

"बहुत अच्छी। वहां हर कोई आजाद है और अपनी मर्जी कर सकता है। तुम्हें वहां पहुंचकर अच्छा लगेगा।"

"चलो, हम आज ही, उस दुनिया में चल देते हैं।" नानिया बोली।

सोहनलाल ने नानिया को अपने से अलग किया और कह उठा।

"ये आसान नहीं।"

"क्यों?"

"मेरे साथ रहोगी तो धीरे-धीरे समझ जाओगी। सब कुछ अभी जानने की चेष्टा मत करो।"

"ओह। लेकिन तुम कालचक्र में कैसे आ फंसे?" नानिया ने पूछा।

"जथूरा की वजह से।" सोहनलाल ने गम्भीर स्वर में कहा—"जथूरा नहीं चाहता था कि हम पूर्वजन्म में पहुंचे।"

"हम कौन?"

"बहुत सारे लोग हैं। धीरे-धीरे तुम उनके बारे में जान जाओगी। जिसे तुम मेरा सेवक कहती हो, वो मेरा दोस्त है। हम दोनों कालचक्र में फंस चुके हैं तो बाकी लोग भी सुरक्षित न होंगे। उनके सामने भी समस्याएं आ रही होंगी। एक बात बताओ नानिया।"

"क्या?"

"कालचक्र से बाहर कैसे निकला जा सकता है, अगर मैं अपनी दुनिया में जाना चाहूं तो?"

"शायद ये बहुत कठिन काम है।" नानिया गम्भीर हो उठी।

"क्यों?"

"ये कालचक्र का भीतरी हिस्सा है, जहां हम मौजूद हैं। कालचक्र की ऊपरी परत मौजूद होती तो शायद बाहर निकलने की चेष्टा की जा सकती थी। परंतु यहां से बाहर नहीं निकला जा सकता।"

"कल चिमटा जाति का सरदार कह रहा था कि वो एक रास्ते को जानता है, वो बाहर जाता है।"

"अगर उसकी बात सच है तो कम-से-कम वो रास्ता, तुम्हारी दुनिया में नहीं जाता होगा। मेरे खयाल में ऐसा कोई रास्ता है तो वो जथूरा की जमीन पर जाकर ही खुलेगा।" नानिया ने कहा।

"जथूरा की जमीन?"

"हां। क्योंकि ये कालचक्र जथूरा का है इस वक्त। पहले कभी सोबरा का हुआ करता था। सोबरा ने जथूरा को तबाह करने के लिए कालचक्र उस पर फेंका कि सतर्क जथूरा ने कालचक्र को अपने काबू में कर लिया। अब ये कालचक्र जथूरा के इशारों पर ही काम करता है। ऐसी स्थिति में कोई कालचक्र से बाहर निकलेगा तो, वो अवश्य जथूरा की जमीन पर ही पहुंचेगा। जथूरा भला क्यों चाहेगा कि उसके कालचक्र से बाहर निकलने वाला इंसान, किसी और जमीन पर पहुंचे।"

"ये कालचक्र है क्या?" सोहनलाल ने कहा।

"कालचक्र के बारे में मैं ज्यादा नहीं जानती, परंतु ये पता है कि कालचक्र मुसीबतों का बेड़ा है। जिसे कालचक्र घेर ले तो उसका बच पाना आसान नहीं रहता। सारी जिंदगी कालचक्र से आई मुसीबतों से मुकाबला करता है।" नानिया ने गहरी सांस ली—"मैं तो कहूंगी कि कोई दुश्मन भी कालचक्र की छाया में न आए।"

सोहनलाल गम्भीर-सा सोचने लगा।

"तुम कहां खो गए?"

"सोच रहा हूं कि हम कालचक्र से कैसे निकलेंगे।"

"मुझे विश्वास है कि हम निकल जाएंगे।"

"कैसे?"

"ये तो मैं नहीं जानती। परंतु उस किताब में लिखी सोबरा की बात गलत नहीं हो सकती कि धुआं उड़ाने वाला आएगा और मुझे कालचक्र से आजाद कराएगा। साथ में उसका साथी भी होगा।"

"और क्या-क्या लिखा था उस किताब में?"

"बहुत कुछ परंतु वो बातें मुझे समझ नहीं आईं। या यूं कह लो कि उन्हें समझने की चेष्टा नहीं की मैंने। जब-जब किताब को खोला तो अपने काम की बात पढ़ी और किताब बंद कर दी।" नानिया ने कहा।

"मुझे जगमोहन के पास जाना होगा।" सोहनलाल बोला।

"क्यों?"

"रात तुमने किताब उस तक पहुंचा दी थी। मुझे जानना है कि उसने किताब में क्या-क्या पढ़ा।"

"जल्दी मत करो। उसे किताब पढ़ लेने दो। रात के चंद घंटों में उसने किताब नहीं पढ़ी होगी।"

"लेकिन मैं उसके पास जाना चाहता...।"

"जरूर चलेंगे। मैं भी चलूंगी। लेकिन पहले चिमटा जाति की तरफ से संदेश आने दो।"

"संदेश?"

"किताब में कोई खास बात हुई तो तुम्हारा दोस्त अवश्य तुम्हारे लिए कोई संदेश भेजेगा। अभी इंतजार करो।" कहने के साथ ही नानिया कमरे के कोने में पहुंची और वहां लटकता रस्सा खींचा तो कमरे के बाहर कहीं घंटा बजा।

सोहनलाल सोचों में था।

तभी दरवाजे पर लटका पर्दा हटाकर, एक युवती ने भीतर प्रवेश किया।

"हुक्म रानी साहिबा।"

"हमारे लिए कहवा ले आओ।"

"जी।"

"और मंत्रीजी से मालूम करो कि रात चिमटा जाति के सब सेवकों को आजाद कर दिया था। वो किताब भी क्या वहां भिजवा दी थी?"

"अभी मालूम करती हूं।" युवती ने कहा और पलटकर बाहर निकल गई।

नानिया ने मुस्कराकर सोहनलाल से कहा।

"हम आज के दिन की शुरुआत गुलाब जल से नहाने से शुरू करेंगे। उसके बाद कुछ खाएंगे। उसके बाद तुम्हें नगरी दिखाने ले चलूंगी। तुम खुद को नगरी का मालिक समझना। मालिक हो भी तुम, क्योंकि तुम मेरे मालिक बन गए हो। हर कोई तुम्हें सलाम करेगा। ये सब तुम्हें जरूर अच्छा लगेगा। तुम खुद को शानदार महसूस करोगे।"

"जो आराम तुम्हें यहां है, वैसा आराम तुम्हें मेरी दुनिया में नहीं मिलेगा।" सोहनलाल मुस्करा पड़ा।

"मैं समझी नहीं।"

"वहां नौकर-दासियां नहीं होंगे। हर काम तुम्हें खुद ही करना पड़ेगा।"

"वो मेरा घर होगा।" नानिया मुस्कराई।

"हां।"

"तो अपने घर में मैं अपना काम क्यों नहीं करूंगी। ये सब तो

कालचक्र के ठाठ-बाट हैं। सोबरा ने किसी को रानी बना दिया तो किसी को नौकरानी। यहां कोई भी अपना असली जीवन नहीं जी रहा। ये तो शीशे में दिखने वाली छाया जैसा नकली जीवन है। जब तक हम कालचक्र में रहेंगे। ये ही जीवन जिएंगे।"

"तुम कालचक्र से मुक्त क्यों होना चाहती हो। यहां हर चीज की सुविधा है तुम्हें।"

"मुझे अपने बचपन की याद आती है। जब मैं पांच साल की थी और मुझे कालचक्र में डाल दिया गया। कितना अच्छा लगता था तब। पेड़ों पर झूला डालकर मैं अपनी सहेलियों के साथ झूला झूला करती थी। पेड़ों पर पत्थर मारकर पके आमों को गिराती और उन्हें खाती थी। बहुत मजा आता था। वो मैं कभी नहीं भूल सकती।" नानिया उदास भी हो उठी—"अब वो जीवन तो वापस नहीं आ सकता, परंतु आजादी पा लेना चहाती हूं, कालचक्र से निकलकर।"

"जरूर।" सोहनलाल ने गम्भीर स्वर में कहा—"मैं तुम्हें कालचक्र से बाहर निकालने की चेष्टा करूंगा।"

तभी उसी युवती ने भीतर प्रवेश किया।

हाथ में पकड़ी चांदी की ट्रे में दो चांदी के प्याले थे।

"रानी साहिबा, कहवा?"

सोहनलाल और नानिया ने कहवे का एक-एक गिलास उठा लिया।

"मंत्रीजी कहते हैं कि रात आपने जैसे कहा उन्होंने वैसे ही काम कर दिया है।" युवती बोली।

"ठीक है—जाओ तुम।"

युवती बाहर निकल गई।

सोहनलाल कुर्सी पर जा बैठा और कहवे का घूंट भरा।

नानिया भी बैठ गई।

"नगरी घूमना जरूरी नहीं है।" सोहनलाल ने कहा—"मैं जगमोहन के पास जाना चाहता हूं।"

"अगर तुम जरूरी समझते हो तो ऐसा ही करेंगे।"

"ये जरूरी है नानिया। हमें कालचक्र से बाहर निकलने का रास्ता तैयार करना है।"

"ठीक है। हम चिमटा जाति के पास चलेंगे। जगमोहन से मिलेंगे। उस किताब में लिखा है कि तुम्हें खुश रखने पर ही, मैं कालचक्र से निकल पाऊंगी। इसलिए तुम्हारी हर बात मैं मानूंगी।" नानिया बोली।

□ □

चिमटा जाति की बस्ती में चहल-पहल जारी थी।

रोज की तरह ही, सारे काम हो रहे थे।

परंतु जिस झोंपड़े में जगमोहन को रखा गया था, वहां के जैसे सारे काम रुके हुए थे। जगमोहन सोबरा की लिखी किताब पढ़ने में व्यस्त था। इसके अलावा जैसे उसे कोई होश ही नहीं था। अब किताब के कुछ आखिरी पन्ने ही बाकी बचे थे। दो पहरेदार झोंपड़ी के उसी कमरे में थे। दिन निकलते ही रात के पहरेदार चले गए थे और उनकी जगह नए पहरेदार आ गए थे। परंतु जगमोहन को तो जैसे आसपास की सुध ही नहीं थी।

कोमा उन पहरेदारों की वजह से रात-भर कुढ़ते-कुढ़ते सो गई थी।

सुबह जब आंख खुली तो तब भी जगमोहन को किताब पढ़ते ही पाया।

"तुम इंसान हो या जानवर!" कोमा गुस्से से कह उठी।

जगमोहन ने किताब से नजर हटाकर उसे देखा।

"क्या हुआ?" जगमोहन बोला।

"कुछ नहीं हुआ, तभी तो तुम्हें जानवर कह रही हूं।" गुस्से में ही थी कोमा—"मैं रात भर तुम्हें पाने के लिए तड़प रही थी और एक बार भी इन पहरेदारों को दूर भगाने की चेष्टा नहीं की।"

"वो जरूरी काम नहीं था।"

"किताब पढ़ना जरूरी है।" कोमा चिल्लाई।

"शायद हां—ये तो अच्छा हुआ कि मैंने किताब पढ़ ली।"

"क्यों ऐसा क्या लिखा है इसमें?"

"लिखा है कि जो आदमी चिमटा जाति की बस्ती में रहेगा, उसे औरत को भोगना मना है।"

"ऐसा लिखा है?"

"हां। अगर मैंने तुम्हें भोग लिया होता तो हमारे लिए कालचक्र से बाहर जाने का रास्ता कभी न खुलता।"

"तुम झूठे हो।"

"सच कह रहा हूं।" जगमोहन गम्भीर था—"तुम पढ़ सकती हो तो, पढ़ लेना।"

"तुम तो ऐसे कह रहे हो कि जैसे कालचक्र से बाहर निकलने का रास्ता तुम्हें मालूम हो गया हो।"

जगमोहन ने कुछ न कहा और पुनः किताब पढ़ने लगा।

तभी सरदार ने भीतर प्रवेश किया।

"क्या बात है।" वो बोला—"तुम्हारे चिल्लाने की आवाज मैंने सुनी है।"

"कह तो ऐसे रहे हो कि जैसे तुम्हें पता ही न हो कि मुझे गुस्सा किस बात का है।" कोमा कह उठी।

"जग्गू तुम्हें प्यार नहीं करना चाहता तो...।"

"जग्गू को तो मैं सीधा कर देती, परंतु तुमने रात-भर से ये जो दो झंडे खड़े कर रखे हैं, इनका क्या करूं?"

"ये मैंने इसी वास्ते खड़े किए कि सब ठीक रहे।"

"क्या मतलब?"

"सोबरा ने इस बस्ती का सरदार बनाते वक्त मुझे कहा था कि अगर बाहरी दुनिया से आने वाला व्यक्ति तुम्हारी बस्ती में सम्भोग करेगा तो हालात बदल जाएंगे। फिर तुम कालचक्र से कभी बाहर निकल पाओगे।" सरदार बोला।

जगमोहन ने नजरें उठाकर सरदार को देखते हुए कहा।

"इस किताब में भी ऐसा ही कुछ लिखा है।"

"फिर तो अच्छा हुआ कि जो तुमने सम्भोग नहीं किया।"

कोमा एकाएक कुछ शांत-सी दिखने लगी।

"मैं तो समझी थी कि जग्गू ये बात झूठ कह रहा है।" वो बोली।

"किताब से कोई फायदा हुआ?" सरदार ने पूछा।

"हां।"

"कालचक्र से बाहर निकलने का रास्ता पता चल गया?"

"कुछ—कुछ।"

"ओह—कैसे—हम...।"

"जल्दी मत करो। कुछ पन्ने बचे हैं। वो मुझे पढ़ लेने दो। लेकिन इतना जान लो कि रास्ता पता होने के बाद भी निकलना आसान नहीं।"

"वो क्यों?"

"वक्त आएगा तो पता चल जाएगा।" जगमोहन ने गहरी सांस लेकर कोमा से कहा—"तुम नहा-धो लो।"

"गंदी हुई नहीं तो नहाने-धोने में क्या मजा जाएगा।" कोमा ने तीखे स्वर में कहा।

जगमोहन मुस्कराया।

"कम-से-कम मुझे चाट तो सकता था।" कोमा उठते हुए बोली—"पर तू तो सामने बैठा ढोलकी बजाता रहा।"

"तुम्हें कहा तो था कि मैं तुम्हें कोई बढ़िया मर्द दे देता...।" सरदार ने कहना चाहा।

"जो करूंगी, जग्गू के साथ करूंगी। मुझे ये ही अच्छा लगता है।" कहकर कोमा बाहर निकल गई।

सरदार मुस्करा पड़ा।

"सरदार।" जगमोहन बोला—"मेरे दोस्त सोहनलाल और नानिया को यहां बुला लो। किसी को भेजो उन्हें बुलाने के लिए।"

"अभी अपने बंदे दौड़ा देता हूं।" सरदार ने कहा और पलटकर बाहर चला गया।

□ □

जगमोहन पूरी किताब पढ़ चुका था।

उसके बाद वो पास की नदी पर जाकर नहाया। कोमा उसके साथ थी और नहाने के दौरान, वो भी पानी में उतरकर उसके पास आ गई थी। जगमोहन पर नजर रखने वाले दो पहरेदार नदी किनारे ही खड़े रहे।

"सुनो।" कोमा पास पहुंचकर जग्गू की बांह थामते कह उठी—"तुम यहां से भागना चाहते हो?"

"क्यों?" जगमोहन ने उसे देखा।

"मैंने कहा है भागना चाहते हो तो, मेरे पास रास्ता है। ये पहरेदार हमें नहीं पकड़ सकेंगे। नदी के उस पार एक ऐसा रास्ता है मैं जानती हूं, जहां से हम जल्दी ही रानी साहिबा की नगरी में पहुंच जाएंगे।" कोमा का स्वर धीमा था।

"लेकिन मैं नहीं भागना चाहता।"

"बेवकूफ हो तुम। सरदार ने तुम्हें बंदी बना रखा है, वो तुम्हारे पर पहरेदारी...।"

जगमोहन मुस्करा पड़ा।

"तुम्हें लगता है कि मैं बंदी हूं, लेकिन मैं तो यहां अपनी मर्जी से रह रहा हूं। जब चाहूंगा, निकल जाऊंगा।"

"बहुत बहादुर हो?" कोमा ने आंखें नचाईं।

"पता नहीं।"

"ठीक है, तुम मुझे यहां से निकलकर दिखाओ। मैं भी तो देखूं कि जग्गू कितना बहादुर है।"

"सरदार हमारा दुश्मन नहीं दोस्त है।"

"वो दुश्मन है। रानी साहिबा के सिपाहियों के साथ हमेशा, इसके आदमी झगड़ते हैं।"

"अब झगड़ा नहीं होगा। वो वक्त निकल चुका है।" जगमोहन बोला।

"तुम मुझे पागल लगते हो कभी-कभी।"

जगमोहन नहाने में व्यस्त हो गया।

कोमा पानी में उसके करीब आ गई। उसके अंग जगमोहन के शरीर को छूने लगे।

जगमोहन ने कोमा को देखा।

कोमा 'आह' भरकर मुस्कराई।

"पीछे हट जाओ।"

"हम सम्भोग तो नहीं कर रहे। यूं ही मजे ले रहे हैं।" कोमा ने कहा—"इस पर तुम्हें क्या ऐतराज है।"

"सम्भोग क्रिया की शुरुआत यहीं से होती है। मेरे से दूर रहो।"

कोमा का चेहरा नाराजगी से भर उठा।

तभी किनारे पर खड़े दोनों में से एक पहरेदार बोला।

"ऐ तुम बाहर आ जाओ।"

"क्यों?" कोमा ने तीखे स्वर में कहा।

"सरदार का आदेश है कि तुम्हें, जग्गू के ज्यादा करीब न जाने दिया जाए।"

"ये क्या बात हुई। मैं क्या सरदार की नौकर हूं। मैं रानी साहिबा की सेविका हूं। नहीं बाहर आती, जाओ।"

"मैंने कहा न कि सरदार हमारा दुश्मन नहीं है। वो हमें दूर रखकर हमारा भला करना चाहता है।" जगमोहन कह उठा।

"इससे मेरा भला नहीं होता जग्गू। मेरा भला तो सम्भोग से होगा।"

"और फिर हममें से कोई भी कालचक्र से बाहर नहीं निकल सकेगा।"

कोमा गहरी सांस लेकर रह गई।

जगमोहन नहाने में व्यस्त हो गया।

कोमा उदास सी नदी से बाहर निकलकर, किनारे पर आ खड़ी हुई।

नहाने के बाद जगमोहन ने वो ही कपड़े पहने, जो उतार रखे थे। कोमा हसरत भरी नजरों से जगमोहन के शरीर को देखती रही। उसके बाद वो चारों बस्ती में पहुंचे तो जगमोहन को एक पेड़ के नीचे बैठाकर खाने को दिया गया। खाने में अजीब-सी चपाती और बे-स्वाद सी चटनी जैसी कोई चीज थी। परंतु इस स्थान पर ये सब खाना उसे अच्छा लगा।

खाने से फारिग हुआ तो सरदार उसके पास आ बैठा।

जगमोहन अपने कामों में व्यस्त, बस्ती के आते-आते लोगों पर नजरें दौड़ाने लगा। फिर बोला।

"तुमने सोहनलाल और नानिया को बुलाने के लिए किसी को भेजा?"

"चार आदमी भेज दिए हैं। वो वहां पहुंचने वाले होंगे अब तो।" सरदार ने कहा।

जगमोहन ने सिर हिलाया।

"किताब तो तुमने पूरी पढ़ ली?" सरदार कह उठा।

"हां।" जगमोहन ने उसे देखा।

"क्या लिखा है उसमें?"

जगमोहन कुछ नहीं बोला।

"कालचक्र से बाहर निकलने वाले रास्ते का पता चला।"

"रास्ता वहीं से है, जहां कल शाम तुम मुझे ले गए थे।"

"वो गोटियों पर?"

"वहीं।"

"एक गोटी कम क्यों है, उसका रहस्य पता चला?" सरदार ने सिर आगे करके पूछा।

"हां।"

"क्यों कम है गोटी?"

"जो कम है वो मिल जाएगी।"

"कैसे?"

जगमोहन चुप रहा।

"तुम मुझे कुछ बता नहीं रहे?" सरदार ने कहा।

"मेरे सामने कोई समस्या है। उसका समाधान ढूंढ़ने की चेष्टा कर रहा हूं।"

"कैसी समस्या?" सरदार ने कहा—"कुछ मुझे भी तो बताओ।"

जगमोहन ने सरदार को देखा फिर बोला।

"गोटी, जो कम है, वो खाने में फिट करने पर, वहां की कोई दीवार रास्ते से हट जाएगी। उस जगह से बाहर निकलते ही हम कालचक्र से बाहर, जथूरा की जमीन पर पहुंच जाएंगे।"

"तो समस्या कहां है?"

"समस्या ये है कि किताब में लिखा है, रास्ता बनने के पश्चात, जो भी सबसे पहले बाहर निकलेगा, वो मारा जाएगा।"

"नहीं।" सरदार के होंठों से निकला।

"ये सच है।"

"ओह। तुमने ठीक से किताब पढ़ी थी?"

जगमोहन ने हां में सिर हिला दिया।

सरदार चिंतित दिखने लगा।

"अब सवाल ये उठता है कि कौन अपनी जान गंवाना चाहेगा।" जगमोहन बोला।

"मैं तो अपने किसी आदमी की जान खतरे में नहीं डालूंगा। किसी को धोखे में रखकर आगे नहीं भेजूंगा।"

"मैं भी नहीं चाहूंगा कि ऐसा हो।"

"ये तो सच में समस्या वाली बात हो गई।" सरदार चिंतित हो उठा।

दोनों कुछ देर खामोश रहे।

"तुम्हीं कुछ सोचो कि क्या हो सकता है। कैसे हम बाहर निकलेंगे?"

"वो ही तो सोच रहा हूं।"

"मैं बस्ती के लोगों से इस बारे में बात करूंगा। शायद कोई हिम्मती दूसरों की खातिर जान गंवाना पसंद कर ले।"

"ये बेवकूफी होगी।"

"होगी तो सही। तुम कोई और रास्ता निकाल लो तो किसी-न-किसी की तो जान बचेगी ही।"

"अभी तो मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा।" जगमोहन बोला—"पहले हम वो रास्ता खोलेंगे। उसके बाद ही कुछ सोचेंगे।"

"ठीक है, चलो। पहले वो रास्ता खोल...।"

"रास्ता खोलने में नानिया की जरूरत पड़ेगी। उसे आ लेने दो।"

"रानी साहिबा की जरूरत पड़ेगी, भला उसकी क्या जरूरत है रास्ता खोलने में?"

"देख लेना।" जगमोहन ने कहा—"मैं रात-भर का जगा हुआ हूं। जब सोहनलाल और नानिया आएं तो मुझे नींद से जगा देना।"

"सो रहे हो?"

"हां। जरूरी है। कोमा को मुझसे दूर ही रखना। कहीं वो पास आकर, मेरी नींद खराब न कर दें।"

सरदार ने सिर हिला दिया।

▭ ▭

सोहनलाल और नानिया बस्ती में पहुंचे तो दोपहर का एक बज रहा था।

जगमोहन को उठाया गया।

सोहनलाल के चेहरे पर उभरी चमक को देखकर जगमोहन मुस्कराया।

"तुझे क्या हो गया है?" जगमोहन ने पूछा।

"मुझे? मुझे क्या होना है।" सोहनलाल भी मुस्करा पड़ा।

"कल तक तो तेरा चेहरा बुझा-बुझा सा था, लेकिन आज तो तेरे चेहरे के नजारे ही कुछ और हैं।" कहते हुए जगमोहन ने नानिया को देखा—"तुम भी कुछ अलग सी दिख रही हो आज।"

"मुझे नानिया से प्यार हो गया है।" सोहनलाल ने बेहिचक कहा।

जगमोहन के होंठ सिकुड़े।

"सोहनलाल को प्यार?"

"क्यों—क्या सोहनलाल को प्यार नहीं हो सकता?"

"अटपटा-सा लग रहा है सुनकर।" जगमोहन ने गहरी सांस ली।

"हम शादी करेंगे, तुम्हारी दुनिया में जाकर।" नानिया ने कहा।

जगमोहन ने सोहनलाल को देखा तो सोहनलाल ने 'हां' में सिर हिलाया।

"ये अच्छी बात है। जगमोहन ने कहा—"परंतु हमारी दुनिया में पहुंचोगे कैसे? कालचक्र से कैसे बाहर निकलोगे?"

"क्या तुम्हें रास्ता नहीं मिला।" नानिया बोली—"सरदार ने नहीं बताया?"

"बताया भी, दिखाया भी। वो अजीब-सा रास्ता है।"

"वो किताब पढ़ी तुमने?" सोहनलाल ने पूछा।

"हां।" जगमोहन की निगाह नानिया के हाथ में फंसी मोटी-सी अंगूठी पर जा टिकी—"किताब पढ़ी। सारी पढ़ ली। रास्ता हमें मिल जाएगा, परंतु पहले जो बाहर निकलेगा, वो जान गंवा बैठेगा।"

"क्या मतलब?"

"मतलब भी समझ में आ जाएगा।" फिर जगमोहन ने नानिया से कहा—"वो अंगूठी मुझे दे दो।"

नानिया ने अपने हाथ में पड़ी अंगूठी को देखा फिर कह उठी।

"ये अंगूठी मैं किसी को नहीं दूंगी। सोबरा ने कहा था कि ये अंगूठी मैं अपने से अलग न करूं।"

"अब अंगूठी को अलग करने का वक्त आ गया है।"

"तुमसे किसने कहा?"

"किताब में लिखा है।"

"लेकिन तुम इसका करोगे क्या?"

"साथ रहना और देख लेना।"

नानिया ने सोहनलाल को देखा।

सोहनलाल के सिर हिलाने पर नानिया ने अंगूठी निकालकर जगमोहन को थमा दी।

"तुमने।" सोहनलाल बोला—"किताब में क्या पढ़ा?"

जगमोहन ने सब कुछ बताया।

सरदार का दिखाया रास्ता भी बताया और गोटियों के बारे में भी बताया।

फिर बताया कि किताब में लिखे मुताबिक, उस जगह पर जो गोटी कम है, उसकी जगह नानिया की उंगली में फंसी अंगूठी रखी जाएगी तो वो दरवाजा खुल जाएगा।

"ओह, इतनी-सी बात।" नानिया के होंठों से निकला—"ये बात किताब में मुझे क्यों न समझ आई?"

"तुमने किताब पूरी पढ़ी?"

"कभी नहीं। पढ़ने की चेष्टा की, लेकिन हमेशा कोई-न-कोई अड़चन आ जाती और मुझे पढ़ने से रुक जाना पड़ता।"

"सरदार से हमेशा तुम्हारी अनबन रही। तुम सरदार का बताया रास्ता भी कभी नहीं देख सकी।"

"लेकिन सवाल ये पैदा होता है कि रास्ता खुलने के बाद कौन सबसे पहले बाहर निकलकर अपनी जान गंवाएगा?" सोहनलाल ने गम्भीर स्वर में कहा—"इस बात पर विचार करना बहुत जरूरी है।"

"इसकी परवाह मत करो सोहनलाल।" नानिया बोली।

"क्यों?"

"मेरे पास हजारों सैनिक हैं। मैं किसी को भी पहले उस रास्ते से बाहर जाने को कह दूंगी।"

"धोखे से।"

"हां, तो क्या फर्क पड़ता है।" नानिया मुस्करा पड़ी।

"ये नहीं होगा।" जगमोहन बोला—"हम धोखे से ये काम नहीं करवाएंगे। कोई खुशी से आगे आए तो, जुदा बात है।"

"तुम्हें एतराज क्यों?"

"ये जान जाने का मामला है। सच में अंजान रखकर, धोखा देकर किसी को इस्तेमाल नहीं किया जाएगा।"

"जगमोहन ठीक कहता है।" सोहनलाल ने सिर हिलाया।

"तुम दोनों की ही ये मर्जी है तो मैं दोबारा कुछ नहीं कहूंगी।" नानिया ने कहा।

"मेरे खयाल में हमें पहले रास्ता खोलना चाहिए, कालचक्र से बाहर निकलने का।" सोहनलाल ने कहा।

"हां, अभी चलते हैं। रास्ता खोलने के बाद सोचेंगे कि क्या करना है।" जगमोहन बोला और सामने से जाती एक औरत से कहा—"सरदार को यहां भेजो। उससे बात करनी है।"

वो औरत चली गई।

सोहनलाल सोचों में डूबा पास ही टहलने लगा।

"तुम।" नानिया पास आकर धीमे से जगमोहन से बोली—"बहुत खराब हो।"

"क्यों?"

"एक ही रात में कोमा की ऐसी हालत कर दी कि वो अभी तक उठ नहीं सकी।"

जगमोहन ने नानिया को घूरा।

"तुम्हारा दिमाग खराब है।" जगमोहन ने भिन्नाकर कहा।

"क्या मतलब?" नानिया अचकचाई।

"मैंने उसे छुआ भी नहीं।"

"ये कैसे हो सकता है।" नानिया के होंठों से निकला।

"ये ही हुआ है। तुम्हारे दिमाग में इन बातों के अलावा कुछ और नहीं आता क्या?"

"वो—वो कुंआरी है, मैने उसे...।"

"चुप रहो।"

नानिया अजीब सी निगाहों से जगमोहन को देखने लगी।

"तुम सोहनलाल से शादी करने की सोचे बैठी हो?" जगमोहन ने पूछा।

"हां।"

"तो तब तुम मेरी भाभी बन जाओगी। रिश्ते का खयाल करो और मेरे से ऐसी बेकार की बातें मत करो।"

"ये बेकार की बातें हैं।" नानिया कह उठी।

"सवाल मत करो। जो मैं कह रहा हूं वह याद रखो। रिश्ते की कद्र करो।"

"ठीक है। तुम्हारी ये इच्छा है तो मैं ये ही करूंगी।" नानिया ने सिर हिला दिया।

तभी सरदार और साथ में कोमा भी वहां आ पहुंची।

"क्या बात है?" सरदार ने पूछा।

"हमने गोटियों वाली जगह पर जाना है। जहां कल गए थे।" जगमोहन ने कहा।

"तो रास्ता खोलना है, ठीक है चलो।"

"हम सब चलेंगे। साथ में पांच-सात लोगों को ले लेना। हमने सिर्फ रास्ता खोलना है। बाहर नहीं निकलना।"

"कभी तो बाहर निकलना ही पड़ेगा।" सरदार बोला।

"जरूर निकलेंगे।"

"मैं अभी आया।" कहकर सरदार चला गया।

नानिया कोमा को एक तरफ ले गई और धीमे से बातें करने लगी।

जगमोहन मुंह फेर लिया। वो जानता था कि इनमें क्या बातें हो रही हैं और सोचने लगा कि औरतों की जिंदगी कुछ बातों के गिर्द ही घूमती रहती है। दूर तक शायद वो कभी सोच ही नहीं पातीं। कोशिश ही नहीं करतीं।

□ □

दिन के तीन बजे, जगमोहन, सोहनलाल, नानिया, सरदार और बस्ती के दो अन्य लोग उसी गोटियों वाले उबड़-खाबड़ कमरे में थे। एक आदमी ने मशाल थाम रखी थी, जिससे वहां रोशनी थी।

दीवार पर वो ही गेम बनी हुई थी और उस पर धागे में फंसी गोटियां लटक रही थीं।

"कितनी अजीब जगह है ये।" सोहनलाल कह उठा।

"ये जगह हमें कालचक्र से बाहर ले जाएगी।" कहकर जगमोहन आगे बढ़ा और उसी दीवार के सामने जा खड़ा हुआ, जहां गोटियां लटक रही थीं और गेम बनी हुई थी।

नानिया ने सोहनलाल का हाथ थामकर धीमे स्वर में पूछा।

"ये क्या करेगा?"

"देखती रहो।"

जगमोहन गोटियों को गेम के छेदों में फंसाने लगा।

तभी कोमा जगमोहन के पास आ पहुंची।

"ये तुम क्या कर रहे हो जग्गू?"

जगमोहन ने कुछ नहीं कहा।

"कहीं कुछ बुरा न हो जाए।" कोमा पुनः कह उठी।

"मैं वो ही कर रहा हूं, जो किताब में लिखा है।" जगमोहन बोला।

"किताब में लिखा गलत भी हो सकता है।" कोमा चिंता में थी।

"पता नहीं। लेकिन मुझे लगता है कि किताब में सही लिखा है।" जगमोहन का स्वर गम्भीर था।

"मुझे तुम्हारी चिंता है।"

जगमोहन कुछ नहीं बोला।

सारी गोटियों को छेदों में फंसाने के बाद एक जगह खाली रह गई।

जगमोहन ने हाथ में पकड़ी, नानिया की उंगली वाली रिंग उस, एक खाली जगह में रख दी।

कुछ भी नहीं हुआ।

सब सामान्य रहा। सरदार पास में आ गया।

"तुमने किताब में ध्यान से पढ़ा था?" सरदार बोला।

"हां।"

"तो फिर कुछ हुआ क्यों नहीं। कालचक्र से बाहर निकलने का रास्ता नहीं बन पाया अभी तक।"

जगमोहन की निगाह पुनः दीवार में फंसी गोटियों की तरफ उठी।

तभी जगमोहन ने उस खाने में रखी रिंग में हल्का-सा कम्पन होते पाया। उसकी आंखें सिकुड़ीं।

"कुछ होने वाला है।" जगमोहन कह उठा—"वो रिंग उस खाने के भीतर चली गई है।"

"तुम पीछे हट जाओ।" सोहनलाल कह उठा।

जगमोहन पीछे हटा तो कोमा भी पीछे हट गई।

सबकी निगाह दीवार पर बने उस खेल के बोर्ड पर थी।

एकाएक फर्श में कम्पन-सा उभरा।

"ये जगह बर्बाद होने वाली है।" सरदार हड़बड़ाकर ऊंचे स्वर में कह उठा।

"तुम बाहर चले जाओ।" जगमोहन कह उठा।

"तुम सब?"

"हम यहीं रहेंगे।"

"तो मैं बाहर क्यों जाऊं।" सरदार कह उठा।

तभी एक तरफ की दीवार बे-आवाज-सी धीमे-धीमे एक तरफ सरकने लगी।

"ओह।" कोमा के होंठों से निकला—"ये क्या हो रहा है।"

सबकी निगाह उस दीवार पर टिक चुकी थी।

वो बेहद मध्यम गति से सरक रही थी।

जितनी सरकी, उसके पीछे हरा-भरा बाग और आसमान नजर आने लगा था।

सबके चेहरे खुशी से खिलते जा रहे थे।

"ओह।" नानिया खुशी से चिल्ला उठी—"सोहनलाल हमें कालचक्र से बाहर जाने का रास्ता मिल गया।"

सरदार की आंखों में भी तीव्र चमक लहरा रही थी।

कोमा ने जगमोहन का हाथ, आवेश और उत्साह में पकड़ लिया था।

वो दीवार अब तक आधी सरक चुकी थी।

उसके पीछे का दृश्य अब पूरी तरह स्पष्ट हो गया था।

वहां हरा-भरा बाग था। फलों के पेड़ लगे नजर आ रहे थे। तेज हवा चलने की वजह से पेड़ झूमते हुए लग रहे थे। आसमान में काले-सफेद बादलों के टुकड़े तैर रहे थे। बाग के एक तरफ दूर तक जाता रास्ता दिखाई दे रहा था।

परंतु हैरत की बात थी कि वहां की हवा, इस तरफ भीतर नहीं आ रही थी।

वो दीवार पूरी सरककर ठहर चुकी थी।

सब हैरानी और अविश्वास-भरी निगाहों से उस तरफ देख रहे थे।

जगमोहन के चेहरे पर राहत के भाव थे।

"जग्गू। तुमने तो कमाल कर दिया।" कोमा खुशी से कह उठी।

"मैंने कुछ नहीं किया।"

"झूठ बोलते हो। तुमने ही तो किया है, तभी तो...।"

"ये सारा कमाल किताब ने किया है। उसमें लिखा था कि मैं ऐसा-ऐसा करूं, वो ही कर दिया मैंने।"

सोहनलाल और नानिया एक-दूसरे का हाथ पकड़े जगमोहन के पास आ गए।

"हमने कालचक्र से बाहर निकलने का रास्ता पा लिया जगमोहन।" सोहनलाल बोला।

"हां, परंतु अभी हम बाहर नहीं निकल सकते।" जगमोहन ने होंठ सिकोड़कर कहा—"किताब में ये बात स्पष्ट तौर पर लिखी है कि सबसे पहले जो बाहर निकलेगा, वो मौत को गले लगा लेगा।"

"तो क्या किया जाए?"

जगमोहन बाहर की तरफ देखता रहा।

तभी सोहनलाल ने नीचे से पत्थर उठाया और उस तरफ फेंका।

पत्थर बाहर को गया और उस जमीन पर जा गिरा। सब कुछ शांत रहा।

"सब ठीक लगता है।" सोहनलाल बोला।

"बच्चों जैसी बातें मत करो।" जगमोहन ने कहा—"किताब में गलत लिखा नहीं हो सकता।"

"सोहनलाल।" नानिया कह उठी—"जगमोहन की बात मानो। उसने किताब को पूरा पढ़ा है।"

"मैं कहां उसकी बात को इंकार कर रहा हूं।"

"अब क्या किया जाए?" सरदार जगमोहन के पास आकर बोला।

जगमोहन ने सरदार को देखा फिर बोला।

"तुम एक पुतला तैयार करो।"

"पुतला?"

"हां। उसमें घास-फूस भरकर, उसे इंसान के जैसा बना दो।" जगमोहन ने कहा।

"उससे क्या होगा?"

"पता नहीं क्या होगा। मैं तो सिर्फ बेकार कोशिश करने की सोच रहा हूं।"

"मेरे खयाल में पुतले से कोई फायदा नहीं होगा।" सरदार बोला।

"क्यों?"

"क्योंकि वो चलकर बाहर नहीं जा सकता। तुम क्या करोगे, क्या उसे बाहर को फेंकोगे?"

"यही सोच रहा था कि ऐसा करने पर जो मुसीबत आनी हो पुतले पर आए।" जगमोहन ने कहा।

"ये तो बचकानी बात है।"

"कुछ न करने से तो कुछ करना बेहतर है।" जगमोहन मुस्कराया।

"बेकार का काम करने से बेहतर है कि आराम कर लिया जाए। जल्दी मत करो। हमें आराम से सोचना चाहिए।" सरदार ने कहा।

"ठीक है। वापस बस्ती में चलते हैं। लेकिन तुम पुतला जरूर बनाना। जो मेरे दिमाग में आया है, वो कर लेने दो।"

"ठीक है, पुतला बन जाएगा।"

जगमोहन ने नानिया और सोहनलाल को देखा। तभी उसे ध्यान आया कि कोमा ने उसका हाथ थाम रखा है।

"चलो, वापस बस्ती में चलते हैं।" जगमोहन ने कहा—"वहां कुछ सोचेंगे।" कोमा के हाथ में फंसा अपना हाथ छुड़ा लिया।

सब उस रास्ते को पार करके बाहर निकले और बस्ती की तरफ चल पड़े। सोहनलाल नानिया के पास से हटकर जगमोहन के पास आकर बोला।

"आखिर कोई तो सुरक्षित रास्ता होगा ही।"

"होना तो चाहिए।" जगमोहन ने सिर हिलाया—"परंतु उस रास्ते के बारे में किताब में कुछ नहीं लिखा।"

"हमें ही सोचना पड़ेगा।"

जगमोहन ने सिर हिला दिया।

"जग्गू।" साथ चलती कोमा कह उठी—"मैं तुम्हें परेशान नहीं देख सकती।"

"क्यों?"

"तुम मुझे अच्छे लगते हो। मैं तुम्हें खुश देखना चाहती हूं।"

जगमोहन ने कुछ नहीं कहा।

नानिया भी पास आ पहुंची। वो बोली।

"अब हम क्या करेंगे सोहनलाल?"

"देखेंगे कि...।"

"ओह।" एकाएक कोमा ठिठकी और कह उठी—"मेरे हाथ में कुछ था, वो तो मैं वहीं भूल आई।"

जगमोहन रुका। बाकी सब भी रुक गए।

"कोई बात नहीं।" जगमोहन ने कहा—"दोबारा जब आएंगे तो तब ले लेना।"

"मैं अभी लाऊंगी। बहुत जल्दी आ जाऊंगी।" कहकर कोमा पलटकर भाग खड़ी हुई।

सब वहीं खड़े रह गए।

"कोमा कहां गई है?" सरदार ने पूछा।

"अपनी कोई चीज उस कमरे में भूल गई है। वो लेने गई है।" सोहनलाल ने कहा।

"लेकिन उसके पास तो कुछ भी नहीं था।" सरदार कह उठा—"वो खाली हाथ थी।"

"कुछ होगा। तुमने ध्यान नहीं दिया होगा।"

"आ जाएगी।" नानिया बोली—"वो सामने तो वो जगह है।"

एकाएक जगमोहन बुरी तरह चौंका।

"ओह।" उसने उस तरफ देखा, जहां कोमा गई थी। अब वो नजर नहीं आ रही थी।

"क्या हुआ?" सोहनलाल ने जगमोहन को देखा।

"वो, वो पागल, हम सबके लिए, अपनी जान गंवाने गई है।" जगमोहन चीखा।

"तुम्हारा मतलब कि वो कालचक्र से बाहर निकलने गई है।" सोहनलाल के होंठों से निकला।

जगमोहन तेजी से उस तरफ दौड़ पड़ा, जिधर कोमा गई थी।

बाकी सब भी जगमोहन के पीछे दौड़े।

▭ ▭

कोमा वापस उस कमरे में पहुंच गई थी, जहां कालचक्र से बाहर निकलने का रास्ता था। चंद पल वो खड़ी उस रास्ते के पार हवा में हिलते पेड़ों को देखती रही फिर आगे बढ़ने लगी। उसके चेहरे पर गम्भीरता थी। दृढ़ता थी। वो फैसला ले चुकी थी कि जग्गू की इस परेशानी को दूर करना है उसने।

तभी उसके कानों में जगमोहन की आवाज पड़ी।
"कोमा। रुक जाओ कोमा।"
आगे बढ़ती कोमा मुस्कराकर बुदबुदा उठी।
'तो जग्गू समझ गया कि मेरे इरादे क्या हैं। तभी तो दौड़ा आया।'
कोमा उस जगह पर जा पहुंची, जहां से दीवार हटी थी।
दो कदम का फासला था और उसने कालचक्र से बाहर होना था।
तभी हांफता हुआ जगमोहन वहां पहुंचा।
"रुक जाओ कोमा।" जगमोहन तेज स्वर में बोला—"ऐसा मत करो। कोई और रास्ता निकल आएगा।"
कोमा ने एक बार भी पलटकर पीछे नहीं देखा और आगे बढ़ गई।
"कोमा।" जगमोहन चीखा।
परंतु तब तक कोमा कालचक्र से बाहर निकलकर उस बाग के हिस्से में जा पहुंची थी।
जगमोहन ठगा-सा खड़ा उसे देखता रह गया।
वहां बहती तेज हवा में कोमा के बाल उड़ते स्पष्ट महसूस हो रहे थे। जगमोहन अवाक्-सा उसे देखता रहा।
उसी पल बाकी सब भी वहां आ पहुंचे और कोमा को कालचक्र से बाहर देखकर ठगे से रह गए।
"ये...ये तो बाहर निकल गई।" सरदार के होंठों से निकला।
"कोमा को कुछ नहीं हुआ।" नानिया बोली—"सुरक्षित है वो।"
तभी कोमा ने पलटकर उन सबको देखा। अगले ही पल उसके होंठ हिलते देखे।
वो कुछ कह रही थी।
परंतु उसकी आवाज इधर किसी को सुनाई न दे रही थी।
फिर अगला पल कयामत का था जैसे।
उस तरफ, ऊपर से कहीं, बड़ा-सा पत्थर गिरा कोमा पर। कोमा उस पत्थर के तले पिसती चली गई।
"न-हींऽ...ऽ...ऽ...।" नानिया चीख उठी।
जगमोहन जड़ रह गया था।
सोहनलाल ने आंखें बंद कर ली थीं।
सरदार हक्का-बक्का खड़ा था।
"वो-वो मर गई।" सरदार के होंठों से निकला।
"हमारा काम आसान कर गई।" जगमोहन ने फीके स्वर में कहा। कोमा की मौत का उसे बहुत दुख था।

☐ ☐

अब वो सब आजाद थे।

कालचक्र से बाहर आ चुके थे।

नानिया खुश थी। सरदार खुश था। बस्ती वाले खुश थे। जगमोहन भी खुश ही था, परंतु कोमा की मौत का ध्यान उसे बार-बार आ रहा था। नानिया को खुश पाकर, सोहनलाल खुश था। सरदार जगमोहन के पास पहुंचा और आभार भरे स्वर में कह उठा।

"तुम्हारी वजह से हम कालचक्र से मुक्ति पा सके।"

"सबकी ही कोशिश थी।" जगमोहन ने कहा—"इसका सेहरा कोमा के सिर पर जाता है।"

"वो शायद तुम्हें सच्चा प्यार करती थी। तुम्हारी खातिर उसने अपनी जान दे दी।"

जगमोहन कुछ नहीं बोला।

"अब हम अपनी बस्ती में जाएंगे, जहां कालचक्र में फंसने से पहले रहा करते थे।" सरदार बोला।

"तुम इस जगह को जानते हो?"

"क्यों नहीं जानूंगा। यहीं पर तो बचपन बिताया था।"

"तो ये क्या जगह है?"

"जथूरा की जमीन है ये।"

"ओह। तो पूर्वजन्म में प्रवेश कर लिया है मैंने।"

"क्या कहा?"

"कुछ नहीं।" जगमोहन हर तरफ नजरें घुमाता कह उठा—"जथूरा का भाई सोबरा कहां रहता है?"

"पूर्व की तरफ। जथूरा और सोबरा में जमती नहीं। झगड़ा है।"

"क्यों?"

"पुरानी बातें हैं। अब ठीक से याद नहीं। लेकिन इतना ध्यान है कि जथूरा के पिता गिरधारीलाल के पास खास ताकतें थीं। जिन्हें उन्होंने कैद करके अपने पास रखा था। परंतु गिरधारीलाल की मौत के पश्चात जथूरा ने ताकतों पर अपना कब्जा जमा लिया। जबकि सोबरा का कहना था कि पिता की चीजें दोनों भाइयों में बराबर-बराबर बंटनी चाहिए।"

"सोबरा ठीक कहता है।"

"लेकिन जथूरा ने उसकी एक न सुनी। सुनने में आता है कि उन्हीं ताकतों के दम पर जथूरा हादसों का देवता बन गया। उसने और ताकतें भी इकट्ठी कर लीं। सोबरा भी कम नहीं रहा। परंतु जथूरा उससे काफी आगे निकल गया।"

"दोनों में सच्चा कौन है?"
"शायद सोबरा।" सरदार ने कहा।
"पोतेबाबा के बारे में सुना है?"
"पोतेबाबा जथूरा का सबसे खास सेवक है। जथूरा अगर किसी पर भरोसा करता है तो वो पोतेबाबा ही है।"
जगमोहन के चेहरे पर सोच के भाव दौड़ने लगे थे।
"तुम मेरे साथ मेरी बस्ती में चल सकते हो।" सरदार बोला।
"नहीं। मुझे जथूरा या सोबरा में से किसी एक के पास जाना है। तुम कहो, किसके पास जाना चाहिए?"
"मैं इस बारे में अपनी राय नहीं दे सकता।" सरदार ने इनकार में सिर हिलाया।
"क्यों?"
"मुझे दोनों ही पसंद नहीं। क्या तुम मेरे साथ चलोगे?"
"नहीं।"
"बाकी भी नहीं जाएंगे?"
"उनसे तुम पूछ सकते हो।"
सरदार सोहनलाल और नानिया की तरफ बढ़ गया।
आखिरकार सरदार अपने लोगों के साथ वहां से चला गया।
सोहनलाल और नानिया जगमोहन के पास पहुंचे।
"जगमोहन, हम पूर्वजन्म में आ पहुंचे हैं।" सोहनलाल ने कहा।
"तो यहां के खतरों का सामना करने के लिए हमें तैयार रहना चाहिए।" जगमोहन मुस्करा पड़ा।
सोहनलाल ने गहरी सांस ली।
"पूर्वजन्म की क्या बातें हैं?" नानिया ने पूछा।
"कभी हम भी इन्हीं जगहों पर पैदा हुए थे।" सोहनलाल ने कहा।
"फिर?"
"बताऊंगा सब कुछ।" सोहनलाल ने कहा—"ये वक्त इन बातों का नहीं है।" उसने जगमोहन को देखा—"अब क्या करना है?"
"मैं उलझन में हूं।" जगमोहन ने कहा—"उस तरफ का रास्ता जथूरा की तरफ जाता है और उधर का, सोबरा की तरफ। समझ में नहीं आता कि किस तरफ जाऊं। कहां की तरफ जाना हमारे हित में होगा।"
"जथूरा की तरफ तो बिल्कुल मत जाओ।" नानिया बोली।
"क्यों?"
"वो अच्छा नहीं है।"

"और सोबरा अच्छा है?"

नानिया के चेहरे पर हिचकिचाहट के भाव उभरे। वो कह उठी।

"सोबरा भी ज्यादा अच्छा नहीं है। लेकिन जथूरा से तो अच्छा ही है।"

जगमोहन ने फौरन कुछ नहीं कहा।

"सोहनलाल मैं कितनी खुश हूं कि कालचक्र से आजाद हो गई।" नानिया बहुत खुश थी—"तुम फल खाओगे?"

"हां।"

"मैं अभी लाती हूं।" कहने के साथ ही नानिया फल वाले वृक्षों की तरफ भागती चली गई।

सोहनलाल और जगमोहन की नजरें मिलीं।

"मैं देवराज चौहान के बारे में सोच रहा हूं।" जगमोहन बोला—"वो कहां होगा?"

"देवराज चौहान ही नहीं, वो सब।" सोहनलाल बोला—"नगीना, बांके-रुस्तम, मोना चौधरी, पारसनाथ, महाजन। हम दोनों पूर्वजन्म में प्रवेश कर आए हैं तो वो लोग भी पूर्वजन्म से दूर नहीं होंगे।"

जगमोहन कुछ कहने लगा कि तभी उसके कानों में फुसफुसाहट पड़ी।

"जग्गू।"

"तुम?" जगमोहन के होंठों से निकला।

सोहनलाल की नजरें जगमोहन पर टिक गईं।

"मैं वो ही हूं जो तुमसे कुएं में मिला था। तुमसे बात की थी।" आवाज पुनः कानों में पड़ी। (ये सब विस्तार से जानने के लिए पढ़ें **'जथूरा'**।)

"पहचान चुका हूं तुम्हें।" जगमोहन बोला—"अब हम कालचक्र में नहीं हैं। तम अपने बारे में बताओ।"

"अवश्य। बहुत जल्द मैं तुम्हारे सामने आऊंगा। परंतु इस वक्त मैं तुम्हारी समस्या का समाधान करना चाहता हूं।"

"कैसी समस्या?"

तभी नानिया दोनों हाथों में फल थामे पास आ पहुंची।

"लो सोहनलाल, फल खाओ।"

सोहनलाल ने एक फल उठा लिया।

नानिया ने फल जगमोहन की तरफ बढ़ाए तो जगमोहन ने भी एक फल उठा लिया।

"तुम उलझन में हो कि जथूरा की तरफ जाओ या सोबरा की तरफ।"

"हां।"

"तुम्हें सोबरा की तरफ जाना चाहिए। तभी संतुलन कायम रहेगा।"

"कैसा संतुलन?"

"इस बात का जवाब तो तुम्हें वक्त आने पर पता चलेगा।"

"तुम मेरी किसी बात का स्पष्ट जवाब नहीं दे रहे।" जगमोहन बोला—"ये बताओ कि तुम किसकी तरफ हो?"

"मैं सोबरा की तरफ से आया हूं।"

"तभी मुझे सोबरा की तरफ जाने को कह रहे हो।"

नानिया सोहनलाल को देखकर अजीब स्वर में बोली।

"ये किससे बात कर रहा है। कोई दिखता तो नहीं।"

"चुप रहो।" सोहनलाल शांत स्वर में कह उठा।

"मैं सिर्फ संतुलन कायम रखने की चेष्टा कर रहा हूं। देवा, मिन्नो और बाकी सब भी इस जमीन पर पहुंचने वाले हैं। मैं उनसे बात करने की स्थिति में नहीं हूं, परंतु तुमसे बात कर पा रहा हूं, इसलिए तुम्हें रास्ता सुझाकर संतुलन कायम रखने को कह रहा हूं। आने वाले वक्त में जो होने वाला है, वो तुम नहीं देख पा रहे, परंतु मैं देख रहा हूं।"

"कुछ मुझे भी बताओ।"

"अभी नहीं। परंतु बहुत जल्द मैं तुम्हारे सामने आऊंगा। तब सब बातें होंगी। ये जथूरा की जमीन है। ज्यादा नहीं रुक सकता मैं यहां। मुझे खतरा है। तुम सोबरा के पास पहुंचने का प्रयत्न करो।"

"देवराज चौहान किस स्थिति में है?" जगमोहन ने पूछा।

"देवा-मिन्नो, पूरी तरह तो नहीं, परंतु कुछ हद तक जथूरा की पहुंच के भीतर हैं और तेजी से इसी तरफ आ रहे हैं। उनके इस धरती पर पांव रखते ही, जथूरा पूरी तरह हरकत में आ जाएगा। मैं उससे पहले ही तुम्हें इस धरती से निकाल देना चाहता हूं, ताकि संतुलन कायम रहे। तुम भी वक्त बर्बाद मत...।"

"मैं समझ नहीं पा रहा कि तुम किस संतुलन की बात कर रहे...।"

"ये बात हम बाद में करेंगे—जग्गू तुम...।"

"देवराज चौहान इस धरती पर आ रहा है तो मैं यहीं रहना चाहूंगा, उससे मिलना...।"

"देवा से जल्दी मुलाकात होगी तुम्हारी। परंतु इस तरह नहीं। तुम्हें मुझ पर भरोसा है तो मेरी बात मानो और फौरन पूर्व दिशा की तरफ चल दो। जहां सोबरा की जमीन है। अब मैं जाता हूं। तुम यहीं वक्त बर्बाद मत करना।"

इसके बाद कोई आवाज नहीं आई।

सोहनलाल और नानिया की नजरें उस पर थीं।

"क्या बात हुई?" सोहनलाल ने पूछा।

जगमोहन ने बता दिया।

"तो अब हमें क्या करना चाहिए?"

"मैं नहीं जानता वो कौन है जो हमें सोबरा के पास पहुंचने को कह रहा है, जबकि देवराज चौहान इसी जमीन पर पहुंचने वाला है। वो संतुलन कायम रखने को कह रहा है, परंतु बता नहीं रहा कि किस तरह का संतुलन चाहता है वो।"

"तुमने क्या फैसला किया कि हमें किस तरफ जाना चाहिए?" सोहनलाल गम्भीर था।

"हमारे लिए सोबरा हो या जथूरा दोनों ही अंजान हैं। परंतु जथूरा के बारे में काफी कुछ सुन रखा है। वो हादसों का देवता है और हमारी उस दुनिया में हादसे तैयार करके भेजता है। उन हादसों को मैं देख चुका हूं। वे बेहद खतरनाक होते हैं।" (विस्तार से जानने के लिए पढ़िए **अनिल मोहन** का **राजा पॉकेट बुक्स** से पूर्व प्रकाशित उपन्यास—**'जथूरा'**।)

"मेरे खयाल में हमें सोबरा को भी देखना चाहिए कि वो कैसा है।"

"सोबरा जथूरा का दुश्मन है। वो किसी मौके पर हमारे काम आ सकता है।" सोहनलाल ने कहा।

"परंतु देवराज चौहान इस धरती पर पहुंचने वाला है।" जगमोहन ने उलझन-भरे स्वर में कहा।

"उसे अपना काम करने दो। उसके सामने अपने हालात होंगे, जिनका मुकाबला उसे करना ही पड़ेगा। वो बच्चा नहीं है। हमें अपने हालातों के बारे में सोच-विचार करना चाहिए। अपना रास्ता चुनना चाहिए हमें।"

"हम सोबरा की तरफ ही जाएंगे।" जगमोहन सोच-भरे स्वर में कह उठा।

तभी नानिया कह उठी।

"देवराज चौहान कौन है?"

"वो हम सबका बड़ा है।" सोहनलाल ने कहा।

"बड़ा है? क्यों वो पेड़ जितना बड़ा...।"

"वो बड़ा भाई है। उसे अच्छे-बुरे हालातों का ज्यादा अनुभव है।" सोहनलाल बोला।

"अब समझी।" नानिया ने सिर हिलाया—"वैसे सोबरा के पास जाने की सोचकर ठीक किया।"

"तुम जानती हो कि सोबरा कहां रहता है?" जगमोहन ने पूछा।
"क्यों नहीं, मैं यहां के बारे में सब जानती हूं, यहीं की तो हूं मैं।"
"तो चलो, हमें सोबरा के पास पहुंचना है।"
नानिया ने सोहनलाल का हाथ पकड़ा और कह उठी।
"आओ, सोबरा की तरफ चलते हैं।"
वो तीनों चल पड़े।
"कितना लम्बा रास्ता है?" जगमोहन ने पूछा।
"रास्ता तो लम्बा है।" नानिया बोली—"वक्त तो काफी लगेगा पहुंचने में। सोहनलाल।"
"हां।"
"मैं तुम्हारी दुनिया में कब पहुंचूंगी?"
"पता नहीं।"
"ये क्या बात हुई। मैं जल्द से जल्द वहां पहुंचकर तुमसे शादी कर लेना चाहती हूं।"
"जल्दी क्या है। हो जाएगी।"
"मुझे जल्दी है।"
सोहनलाल ने प्यार से नानिया को देखा और मुस्करा दिया।
दो कदम पीछे आते जगमोहन ने मुंह बनाया और बड़बड़ा उठा।
'उल्लू का पट्ठा।'

▭ ▭

कांच की मछली जैसी पनडुब्बी समुद्र में गोली की रफ्तार से सरक रही थी। कब का दिन निकल चुका था। समुद्र का नजारा बेहद मजेदार दिख रहा था उन्हें। छोटी-बड़ी मछलियां, व्हेल मछली के अलावा तरह-तरह के समुद्री जीवों के पास से पनडुब्बी निकल रही थी। समुद्र के नीचे का नजारा, इस तरह से उन्होंने पहली बार देखा था। दो बार पनडुब्बी व्हेल मछली से टकरा चुकी थी। परंतु पनडुब्बी का कुछ नहीं बिगड़ा था।
"ये कांच की पनडुब्बी नहीं है।" देवराज चौहान बोला—"कांच जैसी किसी पारदर्शी धातु की पनडुब्बी है।"
"मैं भी यही सोच रहा हूं।" पारसनाथ बोला—"देखने में कांच जैसी लगती है, परंतु पनडुब्बी के बाहरी हिस्से में लचक है। जब ये पहली बार व्हेल से टकराई तो मैंने देखा था, पनडुब्बी का बाहरी हिस्सा थोड़ा-सा दब गया था जो कि बाद में ठीक हो गया।"
"इसी से सोचा जा सकता है कि जथूरा के पास अजूबे की तरह कई चीजें हैं।" देवराज चौहान ने कहा।

"शायद।"

"वो वैज्ञानिक भी है और तंत्र-मंत्र की ताकतें भी उसके पास हैं। पता नहीं वो कैसा है। वो कालचक्र जैसी शक्तियां भी रखता है और इस तरह की अजूबी पनडुब्बी भी रखता है। मेरे खयाल में उसके पास और भी बहुत कुछ होगा, हमें हैरान करने के लिए।"

"लेकिन हम उसके पास क्यों जा रहे हैं। आखिर हमारी मंजिल क्या है?" पारसनाथ ने पूछा।

"हमने जब-जब भी पूर्वजन्म का सफर किया है, हमें मालूम नहीं होता कि हम ऐसा क्यों कर रहे हैं। परंतु पूर्वजन्म की जमीन पर पहुंचकर हमें हमारी मंजिल नजर आने लगती है, जिसकी वजह से पूर्वजन्म में आ पहुंचते हैं।"

"ओह।"

"परंतु एक बात इस बार खतरे से भरी है।"

"वो क्या?"

"जथूरा के पास जादुई ताकतें भी हैं और वैज्ञानिक शक्तियां भी। वो हादसों का देवता है। पेशीराम इस बात को स्पष्ट कह चुका है कि जथूरा की ताकत का मुकाबला नहीं किया जा सकता। हम उसका मुकाबला नहीं कर सकते।" देवराज चौहान बोला।

दो कदम दूर बैठी मोना चौधरी कह उठी।

"पेशीराम ने ये बात मुझसे भी कही थी।"

"तब हमें गम्भीरता से सोचना चाहिए कि हम जथूरा से कैसे टकरा सकेंगे?" महाजन कह उठा।

"पेशीराम ने जो कहा, वो अपनी जगह है। हम लोग ये क्यों सोचें कि उससे नहीं टकरा सकते। हम अपनी कोशिश जारी रखेंगे।" देवराज चौहान ने कहा—"कोशिश करने पर पहाड़ को भी सरकाया जा सकता है।"

"तंम चिंतो मतो करो। अंम जथूरा को 'वड' दयो।"

"पक्का बाप। आपुन टांगें पकड़ेगा उसकी और तुम उसकी गर्दन काटेला।"

"तंम भी चिंतो मतो करो, उसो की टांगो भी अंम ही पकड़ लयो।" बांकेलाल राठौर का हाथ मूंछ पर जा पहुंचा।

"तुम बोत बहादुर होईला बाप।"

"अंम हौवे।"

"आपुन को तो पैले ई मालूम होईला।" रुस्तम राव ने गहरी सांस लेकर सिर हिलाया—"सब कुछ तुम ही करेला तो देवराज चौहान क्या करेला। कुछ उसके वास्ते भी छोड़ेला बाप।"

"छोरे। देवराज चौहानो को आराम करने दयो, बोत भाग दौड़ कर लयो उसो ने।"

"बहुत चिंता हो रही है तुम्हें बांके।" देवराज चौहान मुस्कराकर कह उठा।

"क्यों न हौवे। थारे दमो परो ही तो अंम उछल-कूद करो हो। तंम म्हारी पॉवरो हौवे।"

"जथूरो की, पूर्वजन्म की जमीन पर हमें भारी खतरे से सामना करना पड़ सकता है।" देवराज चौहान ने कहा।

"अंम खतरो को 'वड' दयो।"

"शायद इतना आसान न हो।"

"तंम सबो कुछो म्हारे पे छोड़ दयो।"

"तुम तो तोप होईला बाप।"

"ठीको बोल्लो, देवराज चौहानो की छायो में अंम तोप होईला।"

सपन चड्ढा और लक्ष्मण दास की नजरें मिलीं।

"सपन यार, ये कहां फंस गए।" लक्ष्मण दास मुंह लटकाकर बोला।

"मुझे भी कुछ समझ नहीं आ रहा।"

"ये कौन-से पूर्वजन्म जा रहे हैं हम।"

"हमारा कोई पूर्वजन्म नहीं है। इन सबका है।"

"तो हम इनके बीच क्यों आ फंसे?"

"ये साले कमीने मोमो जिन्न ने हमें फंसाया है।"

"पता नहीं ये हरामी क्यों हमें साथ रखे हुए है। साला हमें मरवा के ही छोड़ेगा।"

"पूर्वजन्म पड़ता कहां पर है। आखिर कोई तो जगह होगी।"

"मुझे क्या पता जो तेरे को बता दूं। मोमो जिन्न को मैं नहीं छोड़ूंगा। मौका मिलने दे।"

तभी अपने पीछे सांसें लेने की आवाज सुनाई पड़ी।

दोनों ने फौरन पीछे देखा।

पीछे मोमो जिन्न बैठा उनकी बातें सुन रहा था। वो दांत फाड़कर कह उठा।

"मुझे मारने की योजना बना रहे हो। लेकिन याद रखो मुझे सिर्फ जथूरा या सोबरा मार सकता है।"

"क्यों?"

"जिन्न को बड़ी ताकतें ही मार सकती हैं। जिन्न इंसान तो होता नहीं।"

"लेकिन हम तुम्हें मारने की नहीं सोच रहे।" लक्ष्मण दास कह

उठा—"हम तो आपस में बात कर रहे थे कि मोमो जिन्न कितना अच्छा है। हमें यार कहता है। हमारा कितना ध्यान रखता है, क्यों सपन।"

"मुझे क्या पता।"

"यार हां कह दे।" लक्ष्मण दास ने सकपकाकर कहा।

"मैं तुम दोनों की बातें पीछे बैठा सुन रहा था। तुम लोगों के मधुर वचन मेरे कानों में पड़ रहे थे।" मोमो जिन्न ने कहा।

लक्ष्मण दास बैठे-बैठे पीछे घूम गया और बोला।

"यार मोमो जिन्न आखिर तुम हमारा करना क्या चाहते हो। साफ-साफ क्यों नहीं बताते हमें।"

"जथूरा के सेवकों ने मेरी ड्यूटी तुम दोनों पर लगाई है।"

"तो?"

"मुझे तुम दोनों को साथ में रखना है। अगर उन्हें पता चल गया कि तुम दोनो का कोई काम नहीं रहा तो, वो मुझे वापस बुला लेंगे और वापस जाने पर जब मेरा निरीक्षण होगा तो उन्हें पता चल जाएगा, मेरी इच्छाएं वापस आ गई हैं तो वो मुझे मार देंगे।"

"तो इसलिए तुम हमें पास में रखे हुए हो।"

"हां।"

"ये बात उन्हें पता नहीं चल सकती कि अब हम दोनों का कोई काम नहीं बचा।" सपन चड्ढा भी उसकी तरफ पलट गया।

"चल सकती है। एक बार पता चल गई थी, परंतु मैंने कह दिया कि तुम दोनों से कभी भी कोई काम पड़ सकता है।"

"इस तरह तुम अपने को कब तक बचाते रहोगे?"

"हम जथूरा की जमीन पर पहुंचने ही वाले हैं।" मोमो जिन्न ने कहा—"वहां पहुंचते ही मैं तुम दोनों के साथ सोबरा की जमीन पर जा पहुंचूंगा और सोबरा मुझे अपने पास पनाह दे देगा।"

"तो हमारा क्या होगा?"

"सोबरा तुम दोनों को वापस भेज देगा, तुम्हारी दुनिया में।"

"पक्का?"

"तुम दोनों मेरे यार हो। मुझ पर शक मत करो। मेरी बात मानो। मैं सच कहता हूं। जिन्न झूठ नहीं बोलता।"

लक्ष्मण दास सपन चड्ढा को देखकर कह उठा।

"ये कहता है, जिन्न झूठ नहीं बोलता।"

"मुझे क्या पता।" सपन चड्ढा ने मुंह फुलाकर कहा।

"ये मुझसे ज्यादा नाराज रहता है।" मोमो जिन्न कह उठा।

"इसकी शक्ल ही ऐसी है। तुम इसकी परवाह मत किया करो। एक बात तो बताओ।"

"क्या?"

"तुमने मुझे कहा था कि तुम्हें हुक्म मिला है, इन लोगों को, जथूरा के पास ले चलने का।"

"तो?"

"जथूरा तो चाहता ही नहीं था कि ये लोग उसकी जमीन पर पहुंचे।"

"जथूरा महान है। उसकी सोचों का मुकाबला कोई नहीं कर सकता। कोई सोच भी नहीं सकता कि वो क्या खेल खेलने जा रहा है। उस जैसा दूसरा कोई नहीं।" मोमो जिन्न ने भक्ति वाले अंदाज में कहा, जैसे प्रवचन सुना रहा हो।

"ये क्या जवाब हुआ।"

तभी मोमो जिन्न ने गर्दन एक तरफ कर ली। आंखें बंद कर लीं, कुछ इस तरह कि उसे कुछ कहा जा रहा हो और वो सुन-समझ रहा हो। वो दोनों समझ गए कि जथूरा के सेवक उसे कुछ कह रहे हैं। कुछ पल मोमो जिन्न सिर हिलाता रहा।

फिर उसने सिर सीधा किया और आंखें खोलते हुए कह उठा।

"बोलो, जथूरा महान है।"

"ये तुम्हें अचानक क्या हो गया?"

"जथूरा के सेवकों की तरफ से शिकायत आई है कि देर से उन्हें सिग्नल नहीं मिला कि मेरा काम ठीक चल रहा है। तुम दोनों ने भी याद नहीं दिलाया कि जथूरा की सेवा में हाजिरी लगानी है, बोलो, जथूरा महान है।"

"जथूरा महान है।" दोनों कह उठे।

"सच में।" मोमो जिन्न मुस्कराकर बोला—"तुम दोनों मेरे सच्चे यार हो।"

"मैं तुम्हें पसंद नहीं करता।" सपन चड्ढा कह उठा।

"मैं जानता हूं। इससे मुझे कोई फर्क भी नहीं पड़ता।" फिर मोमो जिन्न खड़ा होता ऊंचे स्वर में बोला—"मैं मोमो जिन्न सबको इस बात की सूचना देता हूं कि हम जथूरा की जमीन पर आ पहुंचे हैं। जथूरा के सेवकों ने मुझे कहा कि ये बात सबको बता दूं। इस बात को सब याद रखो कि यहां जथूरा की हुकूमत चलती है। जो 'जथूरा महान है' बोलेगा, वो खुश रहेगा।"

"कमीना।" सपन चड्ढा बड़बड़ा उठा—"जथूरा को महान कह रहा है और बाहर निकलते ही सोबरा की तरफ दौड़ लगा देगा।"

"चुप कर।" उसकी बड़बड़ाहट सुनकर लक्ष्मण दास धीमे स्वर में कह उठा।

"क्या बातें हो रही हैं?" सामने खड़े मोमो जिन्न ने पूछा।

"हम आपस में तय कर रहे थे कि जथूरा महान है, ये बात हम दिन में दस बार कहेंगे।" लक्ष्मण दास बोला।

"तो खुश रहोगे।" मोमो जिन्न मुस्कराया।

तभी बांकेलाल राठौर कह उठा।

"मोमो जिन्नो। म्हारे स्वागत की तैयारियां तो खूब होंगी?"

"जथूरा की जमीन पर स्वागत नहीं होता। कोई अपना वक्त बर्बाद नहीं करता इन कामों के लिए। वहां सिर्फ काम होता है और सबको बराबर-बराबर समझा जाता है। तुम्हारी दुनिया की तरह नहीं कि बड़ा आए तो उसके स्वागत के लिए, बाकी अपना काम छोड़ दें।"

"थारो मतलब कि जथूरो की जमीनो पर, बड़ो की इज्जतो न हौवे।"

"काम छोड़ के इज्जत करना मना है। किसी के पास वक्त ही नहीं है। सब अपने कामों में व्यस्त हैं। हजारों लोग हर वक्त जथूरा के हादसों को तैयार करने में व्यस्त रहते हैं। वो ऐसी गोलियां खाकर काम करते हैं जिससे कि उन्हें नींद न आए। ये तुम्हारी तरह की आलसी दुनिया नहीं है। जथूरा यूं ही महान नहीं है। उसकी महानता, उसके कामों में झलकती है।"

"देख तो साला कैसे भाषण दे रहा है।" लक्ष्मण दास धीमे से बोला।

"और वहां पहुंचते ही सोबरा की तरफ दौड़ पड़ेगा।"

"इसकी जुबान का कोई भरोसा नहीं। कहता है जिन्न झूठ नहीं बोलते, परंतु ये तो महाझूठा है।"

"थारो जथूरो को अंम समझायो कि स्वागतो बोत जरूरो हौवे।"

तभी पनडुब्बी को हल्के-हल्के झटके लगने लगे।

सबकी निगाह बाहर की तरफ उठ गई।

पनडुब्बी गहरे पानी से ऊपर उठ आई थी। परंतु अभी भी वो पानी में थी। बराबर पनडुब्बी में कम्पन हो रहा था, फिर एकाएक ही पनडुब्बी आगे को झुकने लगी और पीछे से ऊपर को उठने लगी।

"ये क्या होईला बाप?" रुस्तम राव कह उठा।

"घबराने की जरूरत नहीं।" मोमो जिन्न कह उठा—"पनडुब्बी तट पर लग रही है कुछ ही देर में हम बाहर...।"

"लेकिन ये टेढ़ी क्यों हो रही है?" महाजन कह उठा।

"पनडुब्बी में प्रवेश और बाहरी रास्ता पीछे से है।" मोमो जिन्न ने कहा—"पिछला हिस्सा वैसे ही पानी से बाहर आ जाएगा, जैसा कि तुम लोगों के भीतर प्रवेश करते वक्त, बाहर था। वहां से हम बाहर निकलेंगे।"

"पनडुब्बो की पूंछों में बोत कुछ हौवे।"

"सब अपने को संभाले रहे। अभी सब ठीक हो जाएगा।" मोमो जिन्न की आवाज सुनाई दी।

फिर शीघ्र ही सब ठीक हो गया।

आगे से झुकी और पीछे को उठी, पनडुब्बी एक जगह ठहर गई। उसकी पारदर्शी बॉडी से बाहर के तट का बहुत बड़ा हिस्सा स्पष्ट नजर आ रहा था।

सफर ठहर गया था।

"चलो बाहर निकलो।" मोमो जिन्न पनडुब्बी के पीछे वाले हिस्से की तरफ बढ़ता कह उठा।

▭ ▭

समुद्र के किनारे रेत ही रेत नजर आ रही थीं। वीरान तट था। दूर नारियल के पेड़ खड़े हवा के संग गोते लगा रहे थे। वहां के जंगल जैसी जगह की शुरुआत का आभास हो रहा था।

सबसे पहले मोमो जिन्न कांच की मछली की खुली पूंछ (मुंह) से बाहर निकला और कूदकर रेत भरी जमीन पर आ पहुंचा। बरबस ही उसका हाथ पेट पर पहुंच गया।

"भूख लग रही है। जब मेरे में इंसानी इच्छाएं नहीं थीं तो मैं काम में कितना व्यस्त रहता था। खाने-पीने की जरूरत ही नहीं रहती थी।" मोमो जिन्न आसपास देखता बड़बड़ा उठा।

उसके बाद एक-एक करके सब बाहर निकल आए।

उसके बाद पनडुब्बी का मुंह बंद हुआ और वो वापस पानी में प्रवेश करके गुम हो गई।

मोमो जिन्न लक्ष्मण और सपन के पास जाकर कह उठा।

"कितना अच्छा मौसम है यहां।"

"होगा।" सपन चड्ढा ने कटु स्वर में कहा।

"यहां पर खाने को जलेबी मिल जाती तो कितना अच्छा रहता।" मोमो जिन्न ने धीमे स्वर में कहा।

सपन चड्ढा ने चिढ़कर कहा।

"तुम्हें हर वक्त खाने की पड़ी रहती है।"

"धीरे बोल यार। जथूरा के सेवक सुन लेंगे।" मोमो जिन्न घबराकर बोला।

"अब क्या करना है?" लक्ष्मण दास ने पूछा।
"हम सोबरा की जमीन की तरफ चलेंगे।" मोमो जिन्न ने कहा।
"चलेंगे?"
"और क्या?"
"लेकिन तुम तो हमें पलों में कहीं भी पहुंचा देते हो, जहां हमें जाना होता है।" लक्ष्मण दास ने कहा।
"ऐसा करना अब ठीक नहीं।"
"क्यों?"
"हम जथूरा की जमीन पर आ पहुंचे हैं।" मोमो जिन्न ने गम्भीर स्वर में कहा—"यहां मैं अपनी ताकतें इस्तेमाल करूंगा तो उसी पल जथूरा के सेवकों को स्क्रीन पर, मेरी हरकतें नजर आने लगेंगी। वो चैक करेंगे कि मैं किधर जा रहा हूं तो उन्हें पता चल जाएगा कि मैं सोबरा की जमीन की तरफ जा रहा हूं तो बाधा डालकर मुझे रोक देंगे। उसके बाद मेरे मस्तिष्क को अपनी इच्छा के अनुसार चलाएंगे और मुझे अपने पास बुला लेंगे। तब मशीन द्वारा मेरा निरीक्षण करेंगे कि मेरे में गड़बड़ कहां है और फौरन ही मशीन से एक पर्चा बाहर आ जाएगा, जिस पर लिखा होगा कि—मेरे में इंसानी इच्छाएं आ गई हैं।"
"तुम्हारा मतलब कि पैदल चलने के अलावा हमारे पास कोई और रास्ता नहीं?"
"हां। हमें खामोशी से पैदल ही चलना होगा। तब वो सोचेंगे कि मैं उनके पास आ रहा हूं। इस तरह रास्ता कट जाएगा।"
"ठीक है जैसा तुम ठीक समझो।"
"और ये बाकी लोग?" सपन चड्ढा ने मोमो जिन्न से पूछा।
"हमें अपनी चिंता करनी चाहिए। मेरा काम इन लोगों को जथूरा की जमीन पर लाना था। वो ला दिया।" मोमो जिन्न बोला।
"जाने से पहले इन्हें तो कुछ कहेंगे ही।"
"वो मैं संभाल लूंगा।" मोमो जिन्न ने कहा और पलटकर सबसे बोला—"तुम लोग यहीं रुको। मैं लक्ष्मण और सपन को उन पेड़ों के पीछे ले जाऊं। ये कहते हैं कि पेट में गड़बड़ हो रही है।"
"तुम साथ में क्यों जाईला बाप। पेट में गड़बड़ तो इनके होईला।"
"ये अकेले जाने से डर रहे हैं।" मोमो जिन्न ने कहा और उन्हें लेकर दूर नजर आ रहे पेड़ों की तरफ चल दिया।
"वहां सोबरा कहीं हमें डंडे मारकर भगा तो नहीं देगा?" सपन चड्ढा ने कहा।

"मेरे साथ वो अच्छा सलूक करेगा। क्योंकि उसे मुफ्त में जिन्न मिल रहा है। अब तुम दोनों बोलो।"

"क्या?"

"जथूरा महान है।"

"जथूरा महान है।" दोनों कह उठे।

"वो सच में महान है।" मोमो जिन्न कह उठा—"उसकी महानता का कोई अंत नहीं।"

सपन चड्ढा और लक्ष्मण दास की नजरें मिलीं।

"पागल है साला। जथूरा के गाने गा रहा है और सोबरा के पास जाकर बचना चाहता है।" सपन चड्ढा बोला।

"चुप कर। इसके साथ लगा रहने में ही हमारा भला है। हम इस पूरी जगह से अंजान हैं।"

▭ ▭

बांकेलाल राठौर रुस्तम राव के पास आकर कह उठा।

"छोरे, यो मोमो जिन्न म्हारे को गड़बड़ो लागे हो।"

"क्यों बाप?"

"हर वक्तो इन दोनों के साथो ही चिपको रहो। ईब देख, पेट में दर्दो उन दोनों के हौवो, और खुदो साथो चल दयो।"

"आपुन को क्या पता होएला बाप कि भीतरी लफड़ा क्या होईला।"

"गड़बड़ी तो हौवे ही कुछो।" बांकेलाल राठौर का हाथ मूंछ पर जा पहुंचा।

देवराज चौहान की नजरें हर तरफ घूम रही थीं।

परंतु दूर-दूर तक सुनसानी थी। कोई भी नहीं दिख रहा था।

तभी मोना चौधरी पास आकर बोली।

"तुम्हें कुछ अजीब नहीं लग रहा देवराज चौहान?"

"कैसा अजीब?" देवराज चौहान ने मोना चौधरी को देखा।

"यही कि हमें यहां लाकर पटक दिया और यहां कोई भी नहीं है। हमें ये भी नहीं पता कि हमें कहां जाना है।"

"मोमो जिन्न हमारे साथ है।"

मोना चौधरी की निगाह मोमो जिन्न की तरफ उठी जो लक्ष्मण-सपन के साथ पेड़ों की तरफ जा रहा था।

"फिर भी जथूरा के लोगों को यहां अवश्य होना चाहिए था।" मोना चौधरी ने कहा।

"इतना ही बहुत है कि पूर्वजन्म तक पहुंचने का सफर आसानी से कट गया।" देवराज चौहान ने कहा।

"हम अपनी इच्छा से पूर्वजन्म में नहीं आए, बल्कि हमें घेरकर पूर्वजन्म में पहुंचाया गया है।"

देवराज चौहान ने मोना चौधरी को देखा।

नगीना भी पास आ पहुंची थी।

"पहले हम सबको कालचक्र ने उस वीरान टापू पर पहुंचाया। फिर हमें वहां के अजीब हालातों में फंसाया गया। उसके बाद मजबूरन हमें पनडुब्बी में आना पड़ा और फिर हम यहां पहुंच गए।" मोना चौधरी ने कहा।

"ये ठीक कहती है।" नगीना कह उठी—"जथूरा हमें पूर्वजन्म में लाना चाहता था।"

"परंतु वो तो हमें पूर्वजन्म में आने से रोकना चाहता था।" देवराज चौहान बोला।

"अवश्य ऐसा था।" नगीना बोली—"लेकिन मुझे लगता है कि बाद में उसने अपना इरादा बदल दिया था।"

देवराज चौहान के चेहरे पर सोच के भाव उभरे।

तभी महाजन पास आता कह उठा।

"अब हम क्या करें—किधर जाना है हमें?"

देवराज चौहान की निगाह कमला रानी और मखानी की तरफ उठी। वो सबसे हटकर रेत में अलग बैठे हुए थे। फिर उसने मोमो जिन्न को देखा। परंतु वो नजर नहीं आया। लक्ष्मण-सपन के साथ पेड़ों के पीछे पहुंचकर वो नजरों से गुम हो गया था। पारसनाथ भी करीब आ गया था।

"यहां पर किसी का न होना हमें परेशान कर रहा है।" पारसनाथ बोला।

"शायद वे लोग आ रहे हो।" देवराज चौहान ने हर तरफ नजरें घुमाईं।

"उन्हें आना होता तो वे अब तक आ चुके होते।" मोना चौधरी ने गम्भीर स्वर में कहा।

"मैं भी यही कहने वाली थी।" नगीना कह उठी।

"देखते हैं। मोमो जिन्न को वापस आ लेने दो।" देवराज चौहान ने सिर हिलाकर कहा।

बांकेलाल राठौर और रुस्तम राव कमला रानी और मखानी के पास पहुंचे।

"का बात हौवे। जबो से सफरो शुरु हौवो, तंम दोनों चुपो हौवे?"

कमला रानी और मखानी ने उन्हें देखा, परंतु खामोश रहे।

"कुछो तो बोल्लो हो।" बांकेलाल राठौर ने पुनः कहा।

वे फिर भी चुप रहे।

"सांप सुंघेला इन्हें बाप।"

"म्हारे को अजगरो सूंघो लागे हो।"

दोनों उसके पास से हट गए।

"शौहरी।" मखानी धीमे स्वर में बोला।

"बोल।"

"जब से हमने सफर शुरू किया पनडुब्बी का, तब से तुमने हमें चुप रहने को क्यों कहा?"

"मुझे गड़बड़ का अंदेशा हो रहा है।" शौहरी की फुसफुसाहट कानों में पड़ी।

"कैसी गड़बड़?"

"मोमो जिन्न की तरफ से मुझे परेशानी आ रही है। उसकी तरफ से संकेत ठीक नहीं मिल रहे। जो भी जथूरा के हक में काम करता है, एक ही काम पर होने की वजह से, हमें संकेत मिलते रहते हैं कि काम ठीक चल रहा है। परंतु मोमो जिन्न की तरफ से मिलने वाले संकेत बीच-बीच में टूटते जा रहे हैं।"

"क्या वो जथूरा के खिलाफ चल रहा है?"

"लगता तो ऐसा ही है। तभी लक्ष्मण और सपन ने तुम दोनों पर हमला किया। जान ले ली तुम दोनों की। तुम्हें नए शरीर में आना पड़ा।"

"ये बात तो है। तू कहे तो मैं मोमो जिन्न से बात करूं।"

"मोमो जिन्न तेरे हाथ के नीचे नहीं आने वाला। वो ताकतवर है। परंतु लगता है जैसे कि नई गड़बड़ हो गई है।"

"नई गड़बड़? वो कैसे?"

"अब मुझे मोमो जिन्न की तरफ से कोई संकेत नहीं मिल रहे।"

"इसका क्या मतलब हुआ?"

"वो यहां से काफी दूर चला गया लगता है।"

"वो तो उन दोनों के साथ पेड़ों की तरफ गया है।" मखानी ने उस तरफ देखा।

"मेरे खयाल में मोमो जिन्न उन दोनों के साथ वहां से भी दूर चला गया है।" शौहरी की फुसफुसाहट कानों में पड़ी।

"ये तो बुरा हुआ। मैं लक्ष्मण और सपन को सबक सिखाना चाहता था।" मखानी बोला।

शौहरी की तरफ से कोई आवाज नहीं आई।

"तुम चुप क्यों हो गए?"

"संकेतों को चैक कर रहा था। परंतु कोई फायदा नहीं। मोमो जिन्न की तरफ से कोई संकेत नहीं है।"

"तो अब हम क्या करें?"

"कुछ देर बाद बताऊंगा।"

मखानी ने कमला रानी को देखा, वो उसे ही देख रही थी।

"क्या बात हुई शौहरी से।"

मखानी ने सब बता दिया।

"मुझे तो लगता है कि हम नई मुसीबत में पहुंच गए हैं।" कमला रानी गहरी सांस लेकर कह उठी।

"वो कैसे?"

"हम पूर्वजन्म में आ पहुंचे हैं। इन सब लोगों का पूर्वजन्म। भौरी ने बताया कि हम अपनी दुनिया से दूर निकल आए हैं।"

"ये जगह कहां पर है?"

"मुझे क्या मालूम?" कमला रानी ने आस-पास नजरें दौड़ाईं।

"भौरी से पूछा।"

"जब भी भौरी से बात करती हूं तो व्यस्त होने को कह देती है। जबसे हम जथूरा की जमीन पर पहुंचे हैं, वो बहुत व्यस्त हो गई है।"

"छोड़ इन बातों को।" मखानी मुस्कराया—"वैसे ये जगह अच्छी लगती है।"

"अभी देखी कहां है ये जगह। समुद्र और वो दूर पेड़ ही देखे हैं।"

"तू साथ है तो मुझे हर जगह अच्छी लगेगी।" मखानी मुस्करा पड़ा।

"मुस्करा मत।" कमला रानी ने मुंह बनाया।

"क्यों?"

"जब भी तू मुस्कराकर मेरे से बात करता है तो उसके बाद चुम्मी मांगता है।"

"तेरे को पहले ही पता चल गया।"

"क्या?"

"मैं तो चुम्मी मांगने वाला था।"

कमला रानी ने मखानी को घूरा।

मखानी दांत फाड़कर कह उठा।

"सिर्फ एक।"

"नहीं।" कमला रानी ने इनकार में सिर हिलाया।

"एक बार।"

"एक बार भी नहीं—मैं...।"

तभी मखानी ने झपट्टा मारा और कमला रानी की चुम्मी ले ली।

कमला रानी ने धक्का दिया तो मखानी दो कदम दूर जा लुढ़का।

"चुम्मी तो ले ही ली। तेरे में यही बुराई है कि जब तेरी जरूरत पड़ती है तू मना कर देती है।" मखानी बोला।

"गलती तेरी है।"

"मेरी?"

"तू मांगता क्यों है। सीधे-सीधे ले लिया कर। औरत मांगने पर नहीं देती। शर्म आती है। चुपचाप पास आ और ले लिया कर।"

▭ ▭

मोमो जिन्न, लक्ष्मण और सपन को गए जब देर होने लगी तो नगीना बोली।

"उन्हें अब तक आ जाना चाहिए था।"

"मैं देखकर आता हूं।" कहने के साथ ही देवराज चौहान पेड़ों की तरफ बढ़ गया।

"अंम भी थारे साथ चल्लो हो। गड़बड़ो हौवे तो थारे को म्हारी जरूरत पड़ जावो।"

बांकेलाल राठौर भी देवराज चौहान के साथ चल पड़ा।

"मेरे खयाल में वो तीनों वहां नहीं मिलेंगे।" मोना चौधरी कह उठी—"वहां होते तो अब तक उन्हें आ जाना चाहिए था।"

"क्या कहना चाहती हो?" पारसनाथ बोला।

"अब तक वो खिसक चुके होंगे।"

"मुझे नहीं लगता।" महाजन ने कहा—"आखिर वो ऐसा क्यों करेंगे।"

"ये तो वो ही जाने।" मोना चौधरी कह उठी।

नगीना और बांके पास में खामोश खड़े रहे।

कमला रानी और मखानी कई कदम दूर इस तरह बैठे थे कि जैसे उन्हें किसी बात से कोई मतलब ही न हो।

"मखानी।" कमला रानी बोली—"हम बेकार हो गए। कुछ भी नहीं कर पा रहे।"

"हम जिनके शरीरों में घुसे हुए हैं, वे कमजोर हैं। हमारे लिए जग्गू-मिन्नो के बहरूप बढ़िया थे।"

"मैंने तो सोचा था कि पूर्वजन्म में आकर मजा रहेगा। लेकिन यहां तो दिल लगाने को कुछ भी नहीं है।"

"मैं हूं तो।"

"तू सिर्फ चुम्मी ही लेता है।"

"मैं तो आगे भी बढ़ना चाहता हूं, परंतु तू ही लाल बत्ती दिखा देती है।"

"तेरे को कभी भी अक्ल नहीं आएगी।" कमला रानी ने मुंह बनाया।

"क्यों?"

"औरत जब लाल बत्ती दिखाए तो उसे हरी समझा कर। औरत कभी भी हरी बत्ती नहीं दिखाएगी मर्द को।"

"ऐसा क्यों?"

"यही तो औरत की फितरत है। औरत की न में हां छिपी होती है, वरना वो न शब्द का भी इस्तेमाल न करे।"

"ये तो तूने नई बात बताई। आऊं क्या?"

"फिर पूछने लगा। तू कभी भी...।"

"कमला रानी।"

तभी कमला रानी के कानों में भौरी की आवाज गूंजी।

"भौरी तू।" कमला रानी के होंठ हिले—"तूने तो मेरे से बात करना ही बंद कर दिया।"

"जथूरा की जमीन पर पहुंचते ही मैं अचानक व्यस्त हो गई थी।"

"अब फुर्सत मिल गई?"

"थोड़ी-बहुत। अब तेरे और मखानी के काम का वक्त आ गया है।"

"हमें कमजोर शरीर मिले हुए हैं। झगड़े वाला काम नहीं कर सकते हम।"

"झगड़ा नहीं करना है।"

"तो—बोल।"

"देवा और भंवर सिंह, मोमो जिन्न, लक्ष्मण, सपन को देखने उधर गए हैं कि वो देर क्यों लगा रहे हैं।"

"हमें उससे क्या?"

"सच बात तो ये है कि वो तीनों सोबरा की जमीन पर जाने के लिए निकल पड़े हैं।"

"सोबरा की जमीन पर...मोमो जिन्न जाएगा। लेकिन क्यों?"

"तू इस चक्कर में न पड़। अपने काम की बात सुन।"

"बोल भौरी।"

"तूने इन सबको जथूरा की नगरी में लाना है।"

"जथूरा की नगरी, मैं तो जानती नहीं कि वो किधर है।" कमला रानी के होंठों से निकला।

मखानी कमला रानी को देख रहा था।

"मैं हूं न, तेरे को रास्ता बताने वाली।"

"समझ गई।"

"इनमें से कोई नहीं जानता कि किधर जाना है। तेरे को इन्हें जथूरा की नगरी तक ले जाना है। रास्ते के बारे में तू निश्चिंत रह, वो तेरे को मैं बताती रहूंगी।" भौरी का शांत स्वर कानों में पड़ा।

"ये काम तो हो जाएगा।" कमला रानी बोली—"ये बता कि हमारा ठिकाना कहां है। यहां तो हमें कोई नजर नहीं आता।"

"तू मेरे साथ रहेगी, परंतु अभी नहीं। अभी कई काम पड़े हैं करने को।"

"मुझे और मखानी को एक साथ रहने का वक्त कब मिलेगा?"

"जल्दी मिलेगा। तुम दोनों इन सबको लेकर जथूरा की नगरी पहुंचो।"

"वो कितनी दूर है?"

"पास ही है। कुछ ही देर में तुम लोग वहां पहुंच सकते हो।"

इसके बाद भौरी की आवाज नहीं आई।

कमला रानी ने मखानी को सब कुछ बताया।

"तो मोमो जिन्न गड़बड़ कर गया। वो पहले से ही गलत चल रहा था। उसके कहने पर ही लक्ष्मण और सपन ने हमारी जानें लीं।"

"वो तो है।" कमला रानी कह उठी—"अभी तो वो तीनों जथूरा की जमीन पर ही होंगे। जथूरा उन्हें पकड़ क्यों नहीं लेता।"

"क्या पता जथूरा उन्हें पकड़ने के फेर में हो।"

"ये हो सकता है।"

"अब हमें इन सब पर ध्यान देना चाहिए। हमें काम मिल गया है। सबको जथूरा की नगरी में ले जाना है।"

▭ ▭

मोमो जिन्न, लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा उन्हें नहीं मिले।

वे सब हैरान-परेशान थे कि आखिर वे इस तरह गायब क्यों हो गए। तब कमला रानी और मखानी अपनी दाल गलाने पास आ पहुंचे।

"मैं जानता था, वे तीनों भाग जाएंगे।" मखानी कह उठा।

"क्यों?" नगीना ने उन्हें देखा।

"क्योंकि मोमो जिन्न ने जथूरा से विद्रोह कर दिया है। जथूरा के खिलाफ चल रहा है वो। हम दोनों को लक्ष्मण और सपन ने उसी

के कहने पर मारा था। इस बात का उसे जथूरा को जवाब तो देना ही पड़ेगा।" मखानी ने भोलेपन से कहा।

"तंम पैले ही सबो कुछ जानो हो।"

"हां।"

"तो म्हारे को कोणो न बतायो हो?"

"तुमने पूछा ही नहीं।"

"तंम टेढ़ा चल्ले हो। अंम भूलो नेई कि तंमने म्हारे को, मारना चाहते हो। अंम पैले तंम दोनों को वडो हो।" कहने के साथ ही बांकेलाल राठौर आगे बढ़ा तो देवराज चौहान बोल पड़ा।

"रुक जाओ बांके।"

"यो दोनों हरामो हौवे—म्हारे को मारणों को पूरो तैयारी कर लयो हो।"

"इस वक्त ये हमारे काम आ सकते हैं।"

"का काम आवे यो फुसड़े दोनों।"

देवराज चौहान ने दोनों से कहा।

"तुममें से कोई यहां के रास्ते जानता है?"

"नहीं।" मखानी ने इनकार में सिर हिलाया।

"मैं जानती हूं।" कमला रानी बोली।

मखानी ने कमला रानी को देखा और सिर हिलाकर कह उठा।

"ये जानती है। मैं बताना भूल गया था।"

"जथूरा कहां मिलेगा?" देवराज चौहान ने पूछा।

"अपनी नगरी में। मैं तुम सबको वहां ले जा सकती हूं।" कमला रानी ने कहा।

"तुम्हें कैसे पता कि हम वहां जाना चाहते हैं।"

"तो और कहां जाओगे। जथूरा की इस जमीन पर यूं ही तो घूमते नहीं रहोगे। नगरी में जाओगे ही।"

"तुम इतनी आसानी से हमें नगरी तक ले जाने के लिए कैसे तैयार हो गईं?" मोना चौधरी बोली।

"मत जाओ।"

"तुम मेरे सवाल का जवाब नहीं दे रहीं, ये कहकर बात को टाल रही हो।"

"मैंने ठीक ही तो कहा है कि यहां तक पहुंच गए हो तो तुम्हें जथूरा की नगरी तक जाना ही होगा। और तो कोई जगह ही नहीं है कि तुम लोग जा सको।" कमला रानी ने सरल स्वर में कहा—"सोबरा की तरफ जाना चाहते हो तो जुदा बात है।"

"हम जथूरा के पास ही जाना चाहते हैं।" देवराज चौहान ने कहा।
"सोबरा के पास जाने में क्या बुराई है।" मोना चौधरी ने देवराज चौहान को देखा।
"तुम जा सकती हो।"
"तुम क्यों जथूरा के पास ही जाना चाहते हो?"
"मुझे लगता है कि जथूरा ने हमसे चालाकी खेली है।" देवराज चौहान ने सोच-भरे स्वर में कहा—"वो ये ही दर्शाता रहा कि हमें पूर्वजन्म में आने से रोकना चाहता है, जबकि वो हमें यहां बुलाना चाहता था।"
"नेई बाप।" रुस्तम राव के होंठों से निकला।
पारसनाथ और महाजन की नजरें मिलीं।
"ये बात तो शायद मैं भी स्वीकार करती हूं।" मोना चौधरी ने गम्भीर स्वर में कहा।
"मुझे जथूरा से जानना है कि वो चाहता क्या है। क्यों उसने हमें चक्कर में डालकर, यहां तक लाने की कोशिश की।"
"ऐसा कुछ था तो जथूरा सीधे-सीधे कहकर भी हमें बुला सकता था।" नगीना बोली।
"वो ऐसा नहीं कह सकता था नगीना।"
"क्यों?"
"क्या हम उसके बुलावे पर पूर्वजन्म में जाना पसंद करते? शायद कभी नहीं करते।"
"तो इसलिए उसने हमें चक्कर में डालकर यहां तक पहुंचा दिया?" नगीना ने सिर हिलाया।
"शायद, यह बात हो सकती है, परंतु पक्का कुछ नहीं है। असल बात तो जथूरा ही बताएगा।"
"तो अब हम जथूरा के पास चलें?"
"जरूर।" देवराज चौहान ने कमला रानी और मखानी को देखा—"क्या हम चलें?"
"क्यों नहीं। आओ।" कहकर कमला रानी आगे-आगे एक दिशा की तरफ चल पड़ी।
सब उसके पीछे चल पड़े।
मखानी रुस्तम राव के पास पहुंचा और कह उठा।
"मैं लक्ष्मण दास और सपन को नहीं छोड़ूंगा।"
"काये को?"
"उन्होंने हमें मार दिया था उस रात।"
"तुम दोनों भी तो उस रात हम सबको मारने जा रहे थे।" पीछे आता महाजन कह उठा।

"तुमसे किसने बात की।" मखानी ने माथे पर बल डालकर कहा।

"बात कर ली तो तेरा क्या घिस गया।" महाजन मुस्कराया।

"मैं बात नहीं करता।" कहकर मखानी आगे जाती कमला रानी के पास पहुंच गया।

"मखानी।" कमला रानी धीमे स्वर में बोली—"ये सब तो आसानी से हमारे साथ चल पड़े। ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ी।"

"फंसे पड़े हैं कि इस अंजान-वीरान जगह पर, कहां जाए। अपनी जरूरत को हमारे साथ चले हैं।"

"जथूरा की नगरी देखने की मेरी बहुत इच्छा हो रही है कि वो कैसी होगी।"

"मैं तो कुछ और ही सोच रहा हूं।"

"क्या मखानी।"

"यहीं कि हम दोनों को एकांत कब मिलेगा। कब हम प्यार करेंगे।" मखानी ने गहरी सांस लेकर कहा।

"मेरे खयाल में हमें जथूरा की नगरी में अवश्य एक कमरा मिल जाएगा।"

"कमरा न भी मिले। किसे परवाह है, पेड़ की छाया और तने की ओट मिल जाए, हम अपना काम चला लेंगे।"

"शरारतें तूने छोड़ी नहीं मखानी।"

"एक चुम्मी दे दे।" मखानी दांत फाड़कर कह उठा।

"यही तो तेरे में बुराई है, जरा-सी हंसकर बात की नहीं कि चुम्मी मांगने लगता है।"

मखानी ने झपट्टा मारा और कमला रानी की चुम्मी ले ली।

"ये ठीक किया।" कमला रानी बोली—"तेरे को पहले भी समझाया है कि औरत से मांगते कुछ नहीं, आगे बढ़कर चुपचाप ले लेते हैं।"

"वाह री औरत।" मखानी ने गहरी सांस ली—"एक नम्बर की हरामी जात है।"

"ये तेरे को अब पता चला।"

"पता तो पहले से ही था, पर सही तस्वीर तो तेरी देखी है। तूने तो औरतों की जात पर डंडा घुमा दिया।"

"सब थोड़े न, मेरे जैसी दिलदार होती हैं।"

"तू तो...।"

तभी पीछे कुछ आहटें उभरीं।

दोनों ने चलते-चलते गर्दन घुमाकर देखा पीछे।

"ओह, देवा को क्या हुआ?" कमला रानी के होंठों से निकला।

एकाएक देवराज चौहान के मस्तिष्क में पीड़ा की तीव्र लहर उठी। देवराज चौहान के होंठों से हल्की-सी कराह निकली। दोनों हाथों से उसने सिर थाम लिया। आंखें बंद होती चली गईं। वो जोरों से लड़खड़ाया और घुटने मुड़ते चले गए। ये सब कुछ मात्र दो पलों में हो गया था। वो नीचे गिरने लगा तो पीछे आते पारसनाथ ने उसकी बिगड़ी हालत को पहचाना और उसके गिरने से पहले ही उसे थामकर संभाल लिया, फिर धीरे से नीचे बैठा दिया।

सब ठिठके।

"क्या हो गया आपको?" नगीना के होंठों से चीख निकली और आगे बढ़कर उसने देवराज चौहान को संभाला।

देवराज चौहान के दोनों हाथ अभी भी सिर पर थे। आंखें बंद थीं। होंठ भिंचे हुए थे। उसे किसी का कोई स्वर सुनाई नहीं दे रहा था। उसके मस्तिष्क में तूफान उठा हुआ था।

बंद आंखों के पीछे आंधी उठती महसूस हो रही थी। आग की लपटों का भंडार था वो, जो कि हवा के रुख के साथ बहने की चेष्टा कर रहा था। वहां पहाड़ियां थीं। कठोर चट्टानों की पहाड़ियां मध्यम-सी ऊंची चोटी पर दो गुफाएं नजर आ रही थीं। इतनी बड़ी गुफाएं कि एक साथ दस आदमी भीतर प्रवेश कर सकें। दोनों गुफाओं के बीच दस फुट का फासला था। तभी उसे वो दोनों गुफाएं हिलती-सी महसूस हुईं। थोड़ा-सा हिलीं, फिर वो थम गईं। साथ ही हल्की सी कराह स्पष्ट तौर पर उसके कानों में पड़ी।

देवराज चौहान की निगाह उन गुफाओं पर टिकी रही।

तभी देवराज चौहान की निगाह गुफाओं से साठ फीट नीचे पड़ी। वहां कुछ हिलता सा दिखा उसे।

अगले ही पल भरभराती हुई मध्यम-सी आवाज उसने सुनी।

"आजाद करो मुझे। अब तो बहुत वक्त हो गया है।"

एकाएक देवराज चौहान के मस्तिष्क में उठता तूफान थमने लगा।

धीरे-धीरे सब कुछ शांत हो गया।

देवराज चौहान गहरी-गहरी सांसें लेने लगा। सिर से दोनों हाथ खुद-ब-खुद हटते चले गए। आंखें खुल गईं। भिंचे होंठ ढीले पड़ते चले गए। चेहरे पर और शरीर पर पसीना ही पसीना बह रहा था।

"क्या हो गया आपको?" नगीना परेशान-सी कह उठी।

"वो...वो गुफाएं नहीं थीं, नाक के दो छेद थे।" देवराज चौहान गहरी सांसें लेता कह उठा।

"नाक के छेद?" पारसनाथ बोला।

"छोरे, लागो हो, देवराज चौहान भयंकरो माजरो देखो हो।"

"हां, नाक के छेद थे वो।" देवराज चौहान की हालत अभी भी ठीक नहीं हुई थी—"पहाड़ पर लेटा हुआ था वो। वो उसका चेहरा था। पहले...पहले मैंने समझा वो...वो नाक के छेद गुफाएं हैं।"

"लेकिन वो था कौन?" मोना चौधरी बोली।

"मैं नहीं जानता।" देवराज चौहान सोचों में डूबा कह उठा—"मैं उसे पहचान नहीं पाया। शायद उसका चेहरा ठीक से देख ही नहीं सका मैं। उसकी नाक के छेद गुफा जैसे लग रहे थे। इसी से उसका आकार-प्रकार महसूस किया जा सकता है। परंतु वो पत्थर का था। लेकिन उसके होंठ हिल रहे थे, वो बोल रहा था।"

"बोल्लो हो वो। पत्थरो का बुत बोल्लो हो? सुन लयो छोरो।"

"सुनेला बाप।"

"क्या बोल रहा था वो?" नगीना ने पूछा।

"वो अपनी आजादी के लिए कह रहा था। कह रहा था कि बहुत वक्त हो गया है। मुझे आजाद कर दो।" देवराज चौहान ने सूखे होंठों पर जीभ फेरते हुए कहा—"लेकिन मैं उसकी बात को जरा भी नहीं समझ पाया कि वो कैसी आजादी की बात कर रहा है।"

"जथूरा की जमीन पर पहुंचते ही तुम्हारे मस्तिष्क ने ये सब देखा।" मोना चौधरी बोली—"ये सब पूर्वजन्म का असर है।"

"तो बेबी तुम्हें भी तो कुछ याद आना चाहिए।" महाजन ने कहा।

"मुझे ऐसा कुछ याद नहीं हुआ।"

देवराज चौहान उठ खड़ा हुआ।

"अब आप ठीक महसूस कर रहे हैं?" नगीना व्याकुल थी।

देवराज चौहान ने सहमति में सिर हिला दिया।

"तुम इन बातों से क्या अंदाजा लगाते हो?" पारसनाथ ने पूछा।

"मेरे खयाल में वो मुझे बुला रहा था।" देवराज चौहान बोला—"मुझे आजादी के लिए कह रहा था।"

"और तुम्हें याद नहीं आया कि वो कौन है?"

"नहीं। मेरे मस्तिष्क ने जो देखा, उसके अलावा मुझे कुछ याद नहीं। मैं नहीं जानता वो कौन था।"

"पत्थर का बुत था वो?"

"नहीं जानता वो क्या था उसका नाक और होंठ देखे, वो मुझे पत्थर के लगे।"

"शायद तुम्हें इसके अलावा और कुछ भी याद आ जाए।" मोना चौधरी ने कहा।

देवराज चौहान ने कुछ नहीं कहा। उसके चेहरे पर उलझन की छाया थी। फिर कह उठा।

"उसके होंठ ऐसे थे कि जैसे कोई बड़ी दरार हो। जब भी वो होंठ खोलता तो बीच का खाली हिस्सा दरार जैसा लगता। वो किसी दैत्य जैसा था। मैं नहीं समझ पाया कि वो क्या था, कैसा था?"

"हमें चलते रहना चाहिए।" महाजन बोला—"इससे हमारा वक्त बचेगा।"

वो सब पुनः चल पड़े।

"तुम खुद को ठीक महसूस कर रहे हो?" महाजन ने पूछा।

"हां।" देवराज चौहान के होंठ हिले।

"ये सब क्या हो रहा है?" नगीना कह उठी।

"जो मुझे याद आया वो मेरे पूर्वजन्म का ही हिस्सा था। पूर्वजन्म की जमीन पर पांव रखते ही, पहला जन्म ताजा होने लगा है।"

"परंतु आपको तो ठीक से कुछ भी याद नहीं।"

"हां, ठीक से याद नहीं। लेकिन शायद बाद में कुछ याद आ जाए।"

वे सब चलते जा रहे थे।

सबसे आगे कमला रानी और मखानी थे।

"छोरे।" बांकेलाल राठौर मूंछों पर हाथ फेरकर रुस्तम राव के पास पहुंचा—"यो तो बोतो ही गम्भीरो बात हौवे।"

"क्या बाप?"

"उसके नाको के छेदो गुफाओं जैसो। होंठ खुलते हैं तो दरार जैसो दिखे।"

"तुम्हें क्या परेशानी होईला बाप?"

"अंम उसो की गर्दनो का अंदाजा लगायो कि वो कित्ती मोटी हौवे।"

"काये को?"

"गर्दन तो उसो की मन्ने ही 'वडनी' हौवे। इत्ती मोटी गर्दनो अंम कैसो वडो हो। खासो हथियारो की जरूरत पड़ो हो।"

"आपुन तेरे साथ होईला बाप। उसकी गर्दनों पर मोटा आरा चलाईला।"

"म्हारे को सोचनो दयो उसो की गर्दनो के बारो में।"

जब वे चले तो कमला रानी ने धीमे स्वर में मखानी से कहा।

"तूने देवा की बात सुनी मखानी?"

"हां।"

"तेरे को उसकी बात सुनकर क्या लगता है कि वो किसकी बात कर...।"

"वो झूठा है।"

"क्यों?"

"कोई भी इतना बड़ा हो ही नहीं सकता कि उसकी नाक के छेद गुफाओं जैसे हों।"

"तेरा मतलब कि देवा झूठ कहकर सबको भटकाने की चेष्टा में है।"

"ये ही बात है। वो जरूर कोई चाल चल रहा है, तभी तो।"

"तू वहम का मारा है।"

"तू हमेशा मुझे ऐसा ही कहती है।"

"तो गलत क्या कहती है। तू तो हर बात में शक ले आता है। तेरे को कोई बात भी सीधी नहीं लगती।"

"एक बात तो सीधी है।" मखानी मुस्कराया।

"क्या?"

"चुम्मी।"

"फिर तू...।"

"अब तो दे दे।"

"तेरे को कहा है न कि औरत से चुम्मी नहीं मांगते।"

"तो क्या मांगते हैं?"

"कुछ भी नहीं मांगते।"

मखानी ने बाज की तरह झपट्टा मारा और कमला रानी की चुम्मी ले ली।

"अब तू समझदार होता जा रहा है।" कमला रानी मुस्करा पड़ी।

"हमें किसी पेड़ की छाया मिल जाए। तने की ओट मिल जाए तो...।"

"ये बातें औरत के साथ नहीं करते।"

"तो क्या करते हैं?"

"छाया और पेड़ पहले से ही ढूंढ़कर रखते हैं और औरत को उठाकर तने की ओट में ले जाते हैं।" कमला रानी मुस्कराकर बोली।

मखानी ने पीछे आते सब पर निगाह मारी और कह उठा।

"इस समय ये सम्भव नहीं। कहीं वो सब भी मेरे पीछे, तने की ओट में न आ जाएं।"

मोमो जिन्न, लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा तेजी से आगे बढ़े जा रहे थे। सपन चड्ढा और लक्ष्मण दास की सांसें फूलने लगी थीं। जबकि मोमो जिन्न मस्ती से आगे बढ़ा जा रहा था। ये पेड़ों से घिरा इलाका था, परंतु जंगल जैसा नहीं था। काफी देर हो गई थी उन्हें इस तरह चलते हुए।

"रुक भी जा।" सपन चड्ढा आखिर कह उठा—"मैं थक गया हूं।" कहकर सपन चड्ढा ठिठका।

"मैं भी।" लक्ष्मण दास भी रुक गया। दोनों नीचे जा बैठे।

मोमो जिन्न ठिठककर पलटा और बोला।

"तुम दोनों इंसान बहुत कमजोर हो।"

"तू हमें उठा क्यों नहीं लेता?"

"ऐसे ही ठीक है। तुम दोनों आराम कर लो।" मोमो जिन्न कह उठा—"वो सब हमें ढूंढ़ रहे होंगे, कि हम कहां चले गए।"

"नाम मत लो उनका।" सपन चड्ढा कह उठा—"मुझे तो कमला रानी और मखानी से डर लगता रहा कि कहीं वो बदला न ले लें हमसे। हमें मार न दें। हर वक्त हमें घूरते रहते थे।"

"मेरे होते हुए वो तुम दोनों का कुछ नहीं बिगाड़ सकते।" मोमो जिन्न ने कहा।

"तुमने तो हमारे लिए मुसीबतें खड़ी कर दी हैं। दिल्ली में हम कितने सुखी थे।" लक्ष्मण दास बोला—"वो दिन कितना अच्छा था कि हम दोनों मौज-मस्ती के लिए दिल्ली से बाहर निकले थे, परंतु तुम पत्थर के रूप में हमारी कार में आ घुसे और हम दोनों को अपने इशारे पर चलने को मजबूर कर दिया।"

"ऐसा इसलिए हुआ कि तुम देवा को जानते थे।" मोमो जिन्न मुस्कराया।

"मैं तो नहीं जानता था।" सपन चड्ढा ने तीखे स्वर में कहा।

"तुम, इसके दोस्त हो। तुम्हारा भी अच्छा इस्तेमाल किया मैंने।"

"हमें दिल्ली पहुंचा दो, बहुत मेहरबानी होगी तुम्हारी।"

"सोबरा से कहकर पहुंचा दूंगा। जब तक हम सोबरा के पास नहीं पहुंचते, तब तक खतरे में रहेंगे।"

"कैसा खतरा?"

"जासूसी यंत्र सोबरा को बता सकता है कि हम कहां हैं।"

"जासूसी यंत्र—ये क्या होता है?"

"सैटलाइट जैसा होता है। जथूरा ने आकाश मे कई जासूसी मंत्र छोड़ रखे हैं। उनसे अपनी जरूरत के काम लेता है, किसी को

खोजना हो तो जासूसी यंत्र उसे खोज लेता है। आदेश देने भर की देर है।"

"सैट लाईट?" सपन चड्ढा ने अजीब-से स्वर में कहा।

"जथूरा महान है।"

"कमाल है। जथूरा सैटलाइट का इस्तेमाल भी करता है और जिन्नों का भी।"

"वो सच में महान है।"

"हम उसके सैटलाइट से कैसे बच सकते हैं?" लक्ष्मण दास ने पूछा।

"जल्दी से जथूरा की जमीन से बाहर निकलकर।" मोमो जिन्न ने कहा।

"कोई और रास्ता नहीं?"

"नहीं।"

"जब उन्हें पता चलेगा कि तुम उन सबके साथ नहीं हो तो वो तुम्हें जरूर ढूंढ़ेंगे।"

"इस बात की पूरी आशंका है।" मोमो जिन्न गम्भीर हुआ।

"इसका मतलब तुम्हारे साथ रहने में हम दोनों भी मुसीबत में फंस सकते हैं।"

मोमो जिन्न ने दोनों को घूरा।

"तुम दोनों के विचार बहुत घटिया हैं। मैं तुम्हें अपना यार कहता हूं और तुम मुझे मुसीबत कह रहे हो।"

"मैंने ऐसा कब कहा।"

"तुम्हारा मतलब तो ऐसा ही था।"

"नहीं, तुम गलत समझे हो, मैं तो...।"

"याद रखो, जब तक मै तुम लोगों के साथ हूं, तब तक ही तुम लोग सुरक्षित हो।" मोमो जिन्न बोला।

"नहीं तो क्या होगा?"

"मैं नहीं जानता क्या होगा। जथूरा की इस जमीन पर तरह-तरह के खतरे भरे पड़े हैं। तुम दोनों किसी भी खतरे में फंसकर अपनी जान गवां सकते हो। मैं तुम दोनों को उन खतरों से बचाकर, आगे बढ़ रहा हूं। यही वजह है कि तुम्हें खतरों का एहसास नहीं हो रहा। वरना तुम लोग तो अब तक मर चुके होते।"

जथूरा और लक्ष्मण दास की नजरें मिलीं।

"कहता तो ये ठीक है।" लक्ष्मण दास बोला।

"हमें इसकी पूरी इज्जत करनी चाहिए।" सपन चड्ढा कह उठा।

"कर तो रहे हैं। अब इसे हम मुसीबत नहीं कहेंगे। मोमो जिन्न तो हमारा यार है।"

"सच्चा यार।"

"पक्का यार।" लक्ष्मण दास ने मुस्कराकर मोमो जिन्न को देखा—"अब तो खुश हो जा।"

"मैं नाराज ही कहां हुआ था। वो तो मैं यूं ही बोला था जानता हूं कि तुम दोनों दिन के अच्छे हो, परंतु कभी-कभी लाइन से फिसल जाते हो। इस वक्त तुम दोनों को हिम्मत रखनी चाहिए।" मोमो जिन्न प्यार से बोला—"मैं तुम दोनों का भला चाहता हूं। अगर जथूरा के हाथ पड़ गए तो वो तुम दोनों से सेवकों के काम लेने लगेगा।"

"तुम्हारा मतलब कि इतना बड़ा बिजनेसमैन नौकर बन जाएगा।" लक्ष्मण दास बोला।

"मैं भी?" सपन चड्ढा सकपकाया।

"तभी तो कहता हूं कि आराम मत करो। चलते रहो। सोबरा के पास पहुंचकर आराम ही आराम है।"

दोनों फुर्ती से उठ खड़े हुए।

"चलो।"

वो तीनों फिर चल पड़े।

"मुझे बस यही चिंता है कि जथूरा के जासूसी यंत्र हमें न खोज लें।" मोमो जिन्न कह उठा।

▭ ▭

जथूरा की नगरी 100 मील के घेरे में थी। चारदीवारी हुई पड़ी थी, पूरे घेरे पर। नगरी में शानदार और खूबसूरत शहर बसा था। सड़कें थीं, दुकानें थीं, फैक्ट्रियां थीं। जरूरत की हर चीज वहां थी। इसके अलावा यहां-वहां बड़े-बड़े महल बने नजर आ रहे थे। लाल पत्थरों के महल। कोई छोटा था तो कोई बड़ा, जैसे कि जरूरत के हिसाब से बनाया गया था उन्हें। परंतु किसी भी महल के पास कोई पहरेदार नजर नहीं आ रहा था, खड़ा नहीं था। यदा-कदा लाल वर्दी में सिपाही अवश्य आते-जाते दिखाई दे जाते थे। उनकी कमर पर कटार जैसा हथियार बंधा दिखता था।

इस तरह की जथूरा की कई नगरियां थीं, परंतु ये नगरी अहम इसलिए थी कि यहां पर जथूरा के विशेष काम होते थे। इन महलों जैसी जगह के भीतर आम नागरिक का जाना मना था। सिर्फ जथूरा के सेवकों का ही आना-जाना लगा रहता था।

इस वक्त दोपहर का एक बजा था।

जिस महल को बड़ा महल कहा जाता है, हम उसी के भीतर चलते हैं।

बड़े महल के एक खास कमरे में।

कमरे का दरवाजा बंद था। भीतर कोई नहीं था। छोटी-सी गोल टेबल के गिर्द तीन खाली कुर्सियां पड़ी नजर आ रही थीं। दूसरी तरफ एक चार फुट ऊंचे से स्टैंड की दो हथेली जैसी शाखाएं निकल रही थीं। उनमें एक पर चांदी का कलश रखा था और दूसरे पर सोने का। उन कलशों में चांदी में चांदी के रंग की और सोने में, सोने के रंग वाली गोलियां पड़ी थीं। सोने के कलश में तीन गोलियां, चांदी के कलश में मात्र दो गोलियां।

तभी दरवाजा खुला।

परंतु कोई दिखा नहीं।

फिर दरवाजा बंद हो गया।

"जथूरा महान है।" वहां पर पोतेबाबा की मध्यम-सी आवाज गूंजी।

स्पष्ट था कि पोतेबाबा ने भीतर प्रवेश करके, दरवाजा बंद कर दिया था।

इसके साथ ही मध्यम-सी कदमों की आहट, कलशों की तरफ बढ़ने लगी।

कलशों के पास पहुंचकर आहट थमी फिर चांदी के कलश से एक गोली उठकर हवा में तैरती महसूस हुई। अगले ही पल वो गोली हवा में लुप्त हो गई, जो कि पोतेबाबा के मुंह में चली गई थी।

उसके बाद मध्यम-सी आहट गूंजी जो कि कुर्सियों की तरफ बढ़ रही थी। फिर एक कुर्सी पीछे को खींची गई और कुर्सी पर पड़े दबाव से लगा जैसे कोई उस पर बैठा हो।

वक्त बीतने लगा।

दौड़ते पल मिनटों में बदलने लगे।

मात्र पांच मिनट ही बीते होंगे कि पोतेबाबा की मध्यम-सी कराह वहां गूंजी।

"आह। कितना तकलीफदेह है अदृश्य होना और फिर अपने असली रूप में लौटना। कितना दर्द होता है।"

एकाएक कुर्सी पर हल्का-सा खाका उभरने लगा।

खाका उभरता और गायब हो जाता।

साथ ही पातेबाबा की कराहें सुनाई दे रही थीं।

कभी पोतेबाबा का दाढ़ी से भरे चेहरे का खाका उभरता तो कभी सिर का, कभी पेट, बांह या टांग का।

खाका उभरता और लुप्त हो जाता।

पोतेबाबा की मध्यम-सी कराह रह-रहकर उठ रही थी।

'जथूरा महान है। उस जैसा दूसरा कोई नहीं।' कराहों के बीच, बड़बड़ाहट गूंजी पोतेबाबा की।

तभी पोतेबाबा की बांई टांग एकाएक स्पष्ट हो उठी।

टांग पर न तो कोई कपड़ा था और न ही पांवों में कुछ पहना था।

फिर दूसरी टांग स्पष्ट नज़र आने लगी।

उसी पल पोतेबाबा के होंठों से तीव्र कराह गूंजी और चेहरा स्पष्ट दिखाई देने लगा। सिर भी।

आंखें बंद थीं।

सिर के बाल चांदी की तरह सफेद और काले, मिक्स थे। जो कि पीछे की तरफ थे। गर्दन तक पहुंच रहे थे। माथे पर चंदन का तिलक लगा था। चेहरे पर सफेद दाढ़ी थी। थोड़ी लम्बी दाढ़ी, जो छाती तक आ रही थी।

पोतेबाबा के होंठ खुले और तीखी चीख निकली। लगा जैसे कुछ छटपटाया हो।

फिर उसका गला, छाती और कमर का हिस्सा स्पष्ट हो उठा। बांहें भी नजर आने लगीं।

पोतेबाबा अब सशरीर सामने मौजूद था।

आंखें बंद थीं उसकी। वो गहरी-गहरी सांसें ले रहा था। गले में मालाएं पड़ी दिखाई दे रही थीं। वो कमर में धोती पहने था। कई पलों तक पोतेबाबा बंद आंखों की मुद्रा में ही रहा।

'कितना कष्ट से भरा है अदृश्य होना और फिर वापस शरीर के साथ दिखाई देना।' वो बड़बड़ाया।

अगले ही पल जथूरा ने आंखें खोलीं। उसकी आंखों में किसी महात्मा जैसी चमक थी। चंद पल वो सामने देखता रहा फिर उसने अपने हाथों-पैरों पर निगाह मारी और कुर्सी से उठकर, दोनों हाथ छत की तरफ करके मुस्कराया और मधुर स्वर में कह उठा।

"जथूरा महान है। उस जैसा दूसरा कोई नहीं।"

फिर उसने बांहें नीचे कीं और दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

दरवाजा खोला। बाहर निकला। आगे राहदारी में बढ़ गया।

होंठों पर बराबर मुस्कान ठहरी हुई थी।

तभी सामने से लाल वर्दी में महल का कर्मचारी आता दिखाई दिया।

"ओह, पोतेबाबा।" पोतेबाबा को देखकर वो ठिठका—"आप कब आए?"

पोतेबाबा रुका नहीं। पास से निकलता कह उठा।

"जथूरा महान है।"

"ओह।" कर्मचारी एकाएक इस तरह संभला जैसे भूली बात याद आ गई हो। वो फौरन कह उठा—"जथूरा महान है।"

पोतेबाबा आगे बढ़ता हुआ राहदारी में मुड़ा तो सामने से आते दो कर्मचारी उसे देखकर ठिठके।

"जथूरा महान है।" वो दोनों एकाएक कह उठे।

"उस जैसा, दूसरा कोई नहीं।" बिना रुके कहता पोतेबाबा आगे बढ़ता चला गया।

इसी तरह कुछ रास्तों को पार करके पोतेबाबा स्नानघर में पहुंचा।

जो कि बंद दीवारों के बीच खुले में था। तालाब जैसी बहुत बड़ी जगह बनी हुई थी। जिसके भीतर तीन-चार फुट पानी था, जिसमें वे केवड़े की महक उठाकर, वहां के वातावरण को मदहोश बनाए हुए थी।

कमर में कपड़ा बांधे वहां एक सेवक टहल रहा था जो कि पोतेबाबा के देखते ही संभला।

"जथूरा महान है।" वो कह उठा।

"उस जैसा दूसरा कोई नहीं।" पोतेबाबा ने मुस्कान भरे स्वर में कहा।

"आप कब आए?" उसने आदर भरे स्वर में पूछा।

"सीधा यहीं आ रहा हूं गुलाम अली। मुझे स्नान की जरूरत है।" पोतेबाबा ने कहा—"मेरी पीठ को अच्छी तरह रगड़ना।"

"जो हुक्म।"

पोतेबाबा ने गले में पहन रखी मालाएं उतारकर एक तरफ रखीं, फिर धोती उतारी और केवड़े के खुशबूदार जल में प्रवेश करता चला गया।

पानी में पहुंचकर डुबकी लगाई। फिर गुलाम अली से कहा।

"भीतर आ जाओ। मेरी पीठ रगड़ो।"

"जी।" गुलाम अली पीठ रगड़ने वाले सामान के साथ फौरन पानी में उतर आया और पीठ रगड़ने लगा।

"यहां कैसा चल रहा है गुलाम अली?"

"सब ठीक है। पहले की तरह।"

"स्नान के लिए तो यहां अक्सर सारे आते होंगे?" पोतेबाबा ने पूछा।

"सब नहीं। बाकी दूसरे स्नानघर में जाते हैं। यहां आने की सबको इजाजत नहीं है।"

"तो नई खबर क्या है। तुम्हारी तो यहां आने वालों से बातें होती होंगी।"

"नई खबर कुछ भी नहीं है। सब ठीक चल रहा है।" पीठ रगड़ते गुलाम अली ने कहा—"हर कोई इसी बात के कयास लगा रहा है कि आप देवा-मिन्नो को यहां ला पाने में सफल हो पाते हैं या नहीं।"

पोतेबाबा के होंठों पर मुस्कान थी।

"गलती माफ हो तो पूछूं कुछ?"

"देवा-मिन्नो के बारे में?"

"सही अंदाजा लगाया आपने।"

"जथूरा महान है। उस जैसा दूसरा कोई नहीं।" पोतेबाबा श्रद्धा भरे स्वर में कह उठा—"जथूरा का हाथ मेरी पीठ पर है। मैं अपने काम में सफल होकर लौटा हूं।"

"ओह, तो आप देवा-मिन्नो को ले आए?" गुलाम अली खुश हो उठा।

"हां।"

"ये तो बहुत खुशी की बात है, अब...।"

"सब ठीक हो जाएगा।" पोतेबाबा कह उठा।

"अवश्य ठीक होगा। जथूरा के आप जैसे सेवक हैं तो उसकी महानता में और भी बढ़ोत्तरी होगी।"

"अवश्य। जथूरा की महानता को बढ़ने से, कोई भी रोक नहीं सकता।" पोतेबाबा ने मुस्कराते हुए मधुर स्वर में कहा—"मैं गरुड़ के बारे में कुछ सुनना चाहता हूं गुलाम अली। उसके बारे में बताने का कुछ है तो कहो।"

"आपके जाने के बाद सब कुछ उसने ही संभाल रखा है। मेरे खयाल में गरुड़ अच्छा काम कर रहा है। वो जथूरा का सच्चा सेवक है। आपने उसे चुनकर कोई गलती नहीं की।" गुलाम अली ने सोच-भरे स्वर में कहा—"परंतु उसके हाव-भाव में कुछ घमंड के भाव अवश्य आ गए हैं।"

पोतेबाबा ने सिर हिलाया।

"क्या कहना चाहते हो?"

"गरुड़, जथूरा की बेटी से मिलने के प्रयत्न में रहता है। वो हमेशा उससे बात करने की चेष्टा में रहता है।"

पोतेबाबा ने अपना मुस्कराता चेहरा थोड़ा-सा घुमाकर गुलाम अली को देखा।

"ऐसा?"

"हां पोतेबाबा। ये बात मेरी पत्नी ने बताई जो कि जनाना स्नानघर संभालती है।" गुलाम अली बोला।

"ये तो गलत बात है। तवेरा से मिलने का प्रयत्न करना हर कर्मचारी के लिए मना है। तवेरा किसी से मिलना चाहे तो वो जुदा बात है। गरुड़ को ऐसा नहीं करना चाहिए।" कहते हुए पोतेबाबा ने सिर हिलाया।

"गरुड़ कल यहां आया तो मैंने ये बात उससे कही थी कि सुनने में आया है कि आप जथूरा की बेटी से सम्बंध बढ़ाने की चेष्टा में हैं तो गरुड़ ने मेरे को डांट दिया कि ये बात कहने की मेरी हिम्मत कैसे हुई।"

"ऐसा कहा उसने।"

"हां।"

"उसे ऐसा नहीं कहना चाहिए। किसी भी कर्मचारी को ऐसा कहने का उसे अधिकार नहीं है। ठीक है अब तुम मेरी नई धोती ले आओ। तब तक मैं नहा लेता हूं। बहुत काम करने हैं मुझे।"

"जी।" गुलाम अली पानी से बाहर निकलता कह उठा—"देवा-मिन्नो कहां पर हैं?"

"यहीं जथूरा की जमीन पर।"

"क्या वो यहां आएंगे?"

"अवश्य। वो यहां पहुंचेंगे। यूं समझो कि उन्हें यहां लाया जा रहा है।"

गुलाम अली चला गया।

पोतेबाबा नहाकर पानी से बाहर निकला तो गुलाम अली कपड़े ले आया।

पोतेबाबा ने धोती बांधी फिर बालों में कंघी की।

इस दौरान पोतेबाबा बेहद शांत था और मुस्कान ओढ़े हुए था।

जब पोतेबाबा वहां से चलने को हुआ तो गुलाम अली बोला।

"जथूरा महान है।"

"उस जैसा कोई दूसरा नहीं।" पोतेबाबा ने कहा और बाहर निकलता चला गया।

महल की कई राहदारियां पार करके वो एक कमरे में प्रविष्ट हुआ।

वहां करीब 60 की उम्र जैसी एक औरत मौजूद थी।

"आप आ गए।" वो पोतेबाबा को देखते ही कह उठी।

"अभी पहुंचा हूं।"

"ये पहली बार है कि आप सीधा मेरे ही पास आए हैं।" वो मुस्कराई।

"कुछ काम था लक्ष्मी। पता चला है कि गरुड़ का झुकाव, तवेरा की तरफ है।"

"ओह।"

"मालूम करो कि ये बात सच है या झूठ? बेहतर होगा कि तवेरा से ही बात करो।"

"मैं अभी तवेरा के पास जाती हूं।"

"मैं तुम्हारे पास फिर आऊंगा लक्ष्मी।"

"बैठेंगे नहीं। खाना तो खा लीजिए।"

"अभी फुर्सत नहीं है। कई काम करने हैं।" कहकर पोतेबाबा बाहर निकल गया।

▭ ▭

वो बहुत बड़ा कमरा था।

वहां पर 25-30 लोग लाल वर्दी में व्यस्त नजर आ रहे थे। दीवारों पर छोटी-छोटी स्क्रीनें लगी हुई थीं, जो कि रोशन थीं और हर स्क्रीन में कुछ-न-कुछ नजर आ रहा था।

पोतेबाबा के वहां प्रवेश करते ही जथूरा महान है, जथूरा महान है, के स्वर गूंज उठे।

पोतेबाबा ने ये कहकर जवाब दिया कि 'उस जैसा कोई दूसरा नहीं'।

पोतेबाबा ने वहां का नजारा लिया।

फिर वो आगे बढ़ा और एक बंद पड़ी स्क्रीन के सामने खाली कुर्सी पर जा बैठा। सामने कुछ बटन लगे थे। उसकी उंगलियां उस पर चलने लगीं। अगले ही पल स्क्रीन रोशन हो उठी। वहां चमचमाते बिंदु दिखने लगे।

तभी एक व्यक्ति पास आ पहुंचा।

"इस स्क्रीन पर सैटलाइट के द्वारा समस्या आ रही है।" उस व्यक्ति ने कहा।

"कैसी समस्या?"

"स्क्रीन सिग्नल नहीं पकड़ रही।"

"सॉफ्टवेयर कौन-सा है?" पोतेबाबा ने पूछा।

"2+1 का है।"

"7+1 का सॉफ्टवेयर डालो।"

वो व्यक्ति तुरंत काम में जुट गया।

मिनट-भर में ही उसने अपना काम पूरा किया।

तभी स्क्रीन रोशन हो उठी।

पोतेबाबा कई बटनों को दबाता उस व्यक्ति से कह उठा।

"सैटलाइट पुराना हो गया है। इस वजह से वो कभी-कभी समस्या दे देता है।"

"नया सैटलाइट तो कब का तैयार हो चुका है। उसे ऊपर छोड़ा जाना बाकी है। थोड़ा अन्य काम बचा था, जो कि अब तक पूरा हो गया होगा।" पोतेबाबा के हाथ की उंगलियां बटनों पर खेल रही थीं और नजरें स्क्रीन पर थीं।

अब स्क्रीन पर जमीनी दृश्य नजर आने लगे थे।

"आप क्या ढूंढ़ रहे हैं?" उस व्यक्ति ने पूछा।

"देवा और मिन्नो को सर्च कर रहा हूं। स्क्रीन पर।"

"वो आ गए?"

"हां। पहुंच गए।"

"उन्हें लाने में बहुत समस्या आई होगी आपको।"

"ज्यादा नहीं।" पोतेबाबा का स्वर शांत था।

"क्या देवा-मिन्नो यहां आएंगे?"

"आना तो उन्हें यहीं चाहिए।"

एकाएक स्क्रीन पर उन्हें हिलते हुए कुछ बिंदु दिखे।

"पोतेबाबा ने उन हिलते बिंदुओं को 'जूम' में लिया तो एकाएक स्क्रीन पर वो सब नजर आए।

"ये तो बहुत सारे हैं।" वो व्यक्ति कह उठा।

"हां। देवा-मिन्नो के साथी भी हैं। इन सबके ग्रहों की चाल ऐसी है कि एक पूर्वजन्म में आए तो सबको ही पूर्वजन्म में आना पड़ता है।" पोतेबाबा ने शांत स्वर में कहा।

"कौन-कौन है साथ में?"

"बेला, नगीना के रूप में है। भंवर सिंह है, त्रिवेणी है, परसू-नीलसिंह है। कमला रानी और मखानी है।"

"कमला रानी और मखानी के बारे में नहीं सुना?"

"ये दोनों कालचक्र का हिस्सा हैं।" पोतेबाबा के हाथ बटनों पर चल रहे थे।

"ये कम लोग हैं। पनडुब्बी में तो ज्यादा लोग थे।" वो बोला।

"हां। मोमो जिन्न, लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा भी थे।"

"वो कहां गए?"

"मालूम नहीं।" पोतेबाबा मुस्कराया—"ये बात मैं उनसे पूछूंगा, जो इन पर नजर रखे हुए हैं।"

"क्या मैं उनसे पता करके आऊं?"

"नहीं। मैं जाऊंगा उनके पास।"

"आप इस वक्त क्या देखने की चेष्टा में हैं।"

"मैं किसी तरह का धोखा नहीं खाना चाहता। इसलिए इन सब का परिचय मैं सॉफ्टवेयर द्वारा चैक करना चाहता हूं।"

"ओह, क्या धोखा खाने की गुंजाइश है कि ये लोग ये न होकर कोई और हो सकते हैं?"

"गुंजाइश नहीं है, परंतु मैं अपनी तसल्ली करना चाहता हूं।"

तभी स्क्रीन पर देवराज चौहान दिखा।

"ये तो देवा है।"

"कैसे पहचाना?" पोतेबाबा ने पूछा।

"इसे मैंने पनडुब्बी में बैठे देखा था। तब पता चला था कि ये देवा है।"

तभी पोतेबाबा ने सामने लगा एक स्विच दबा दिया।

उसी पल स्क्रीन पर एक तरफ कुछ लिखा हुआ दिखाई देने लगा।

जो कि इस प्रकार था।

नाम—देवराज चौहान।

जन्म स्थान—जयपुर।

कद—पांच फुट ग्यारह इंच।

पूर्वजन्म का नाम—देवा।

"ये ठीक है।" पोतेबाबा कह उठा फिर उसने दूसरा बटन दबाया तो स्क्रीन पर मिन्नो दिखने लगी।

उसके बारे में भी इसी प्रकार लिखा आया।

नाम—मोना चौधरी।

जन्म स्थान—दिल्ली।

कद—पांच फुट, सात इंच।

पूर्वजन्म का नाम—मिन्नो।

इसी प्रकार पोतेबाबा ने एक-एक करके सबके बारे में जाना।

आखिरकार पोतेबाबा कुर्सी से उठता कह उठा।

"सब ठीक है।"

"जग्गू, गुलचंद इनमें नहीं हैं।" उस व्यक्ति ने पूछा।

"उनके बारे में अभी मुझे खबर नहीं। परंतु इतना जानता हूं कि वो दोनों, कालचक्र से निकलकर, जथूरा की जमीन पर आ पहुंचे हैं।" पोतेबाबा नजरें दौड़ाता कह उठा—"गरुड़ कहां है?"

"सुबह वो जिन्नों के महल में जाने को कहकर निकला था।"

पोतेबाबा ने सिर हिलाया और आगे बढ़ गया।

उस हाल को पार करके वो अन्य हाल में पहुंचा।

वहां पर आठ-दस लोग ही थे।

"जथूरा महान है।" अपने काम में व्यस्त एक लाल वर्दी वाला उसे देखते ही कह उठा।

"उस जैसा दूसरा कोई नहीं।" पोतेबाबा ने जवाब दिया।

सबके साथ इसी प्रकार शुरुआती बात हुई।

"मोमो जिन्न कहां है?" पोतेबाबा कुर्सी पर बैठे एक व्यक्ति के पास पहुंचकर बोला।

"वो पनडुब्बी में जथूरा की जमीन पर आ पहुंचा है अन्य सबके साथ।" उस व्यक्ति ने कहा—"उसके साथ लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा हैं। वो तीनों उन सबको छोड़कर, कहीं चले गए हैं।"

"पता करो, वो कहां हैं?" पोतेबाबा बोला।

उस व्यक्ति की उंगलियां बटनों से खेलने लगीं।

आधे मिनट के बाद ही स्क्रीन पर मोमो जिन्न, लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा नजर आए। जो कि तेजी से जंगल में आगे बढ़ते जा रहे थे। ये देखकर वो कह उठा।

"ये रहे, वो कहीं जा रहे हैं शायद। पता करता हूं कि वो किधर की दिशा में हैं।"

उसकी उंगलियां पुनः बटनों पर चलीं।

तभी स्क्रीन पर लिखा आया।

मोमो जिन्न सोबरा के इलाके की दिशा की तरफ बढ़ रहा है।

"मोमो जिन्न तो उन दोनों के साथ सोबरा के इलाके की तरफ जा रहा है।" उसके होंठों से निकला।

पोतेबाबा मुस्करा पड़ा।

उस व्यक्ति ने गर्दन घुमाकर पोतेबाबा को देखा और पूछा।

"क्या मोमो जिन्न को उस दिशा में जाने का कोई काम सौंपा गया है?"

"नहीं।"

"तो वो उस तरफ क्यों जा रहा है?"

"जाने दो उसे।"

"मोमो जिन्न का चैकअप करूं। कुछ गड़बड़ लग रही है पोतेबाबा।"

"कुछ मत करो। जग्गू और गुलचंद के बारे में पता लगाओ।"

"उनकी आखिरी स्थिति क्या थी?"

"वो दोनों कालचक्र से बाहर निकल आए हैं।"

उस व्यक्ति की उंगलियां पुनः स्विचों पर चलने लगीं।

पोतेबाबा शांत-सा खड़ा रहा। चेहरे पर सोचों के भाव थे।

इसी प्रकार पांच मिनट बीत गए।

तभी उस व्यक्ति के होंठों से निकला।
"ये रहे। ये तो तीन हैं।"
"तीन कौन?"
"तीसरी औरत है कोई।" कहने के साथ ही उसने कोई स्विच दबाकर दो पल का इंतजार किया तो फिर स्क्रीन पर नानिया का चेहरा दिखने लगा, जो कि पसीने से भरा था। वो तेजी से आगे बढ़ती जा रही थी।
"मैं इस औरत को नहीं पहचानता।" वो व्यक्ति बोला—"मैं नहीं...।"
"ये कालचक्र की नानिया है। जिसे सोबरा ने रानी साहिबा बना रखा था।"
"ओह, तो जग्गू और गुलचंद के साथ ये भी बाहर आ गई है।"
"पता करो, क्या ये तीनों इसी तरफ आ रहे हैं?" पोतेबाबा ने कहा।
वो पुनः स्विचों के साथ खेलने लगा।
मिनट-भर बाद बोला।
"ये तीनों भी सोबरा की जमीन की तरफ बढ़ रहे हैं।"
"ये नहीं हो सकता।" पोतेबाबा के होंठों से निकला।
"सैटलाइट तो ये ही सिग्नल दे रहा है।"
पोतेबाबा की नजरें स्क्रीन पर जा टिकीं।
"एक बार फिर चैक करो।"
"मैं सही कह रहा हूं।"
"हैरानी है कि ये क्यों सोबरा की जमीन की दिशा की तरफ जा रहे हैं।" पोतेबाबा ने कहा।
"इन्हें रोकूं क्या?"
पोतेबाबा के चेहरे पर सोच के भाव उभरे।
"इन पर आंधी छोड़कर इन्हें भटका देते हैं।" वो व्यक्ति बोला।
"अभी कुछ मत करो।" पोतेबाबा ने कहा—"ये कब तक सोबरा की जमीन पर पहुंच जाएंगे?"
"रात तक। मेरे खयाल में नानिया ही इन्हें रास्ता दिखा रही है, वो आगे चल रही है।"
"मैं सोच रहा हूं क्या ये सोबरा के पास पहुंचकर, जथूरा को कोई नुकसान पहुंचा सकते हैं?" पोतेबाबा ने कहा।
"इस बारे में तो आप ही बताएंगे।"
"देवा-मिन्नो, नगरी की तरफ आ रहे हैं। हमें इनकी परवाह नहीं करनी चाहिए।"

"मोमो जिन्न का सोबरा के पास जाना हैरानी वाली समस्या है।"

"मोमो जिन्न की कोई समस्या नहीं।"

"जग्गू और गुलचंद का क्या करूं?"

"अभी इन्हें कुछ मत कहो। इन पर नजर अवश्य रखो।"

"जो हुक्म।"

पोतेबाबा के चेहरे पर सोच के भाव थे।

"मुझे मखानी और कमला रानी के बारे में पता चला। इन दोनों के बारे में पहले कभी सुना नहीं।"

"कालचक्र का हिस्सा हैं ये।"

"परंतु कालचक्र में इनका नाम कभी नहीं आया।"

"भौरी और शौहरी को जानते हो?"

"अवश्य।"

"भौरी और शौहरी ने जरूरत के मुताबिक इन दोनों को बाहरी दुनिया से इकट्ठा किया है।"

"तो अब ये दोनों कालचक्र के बीच ही गिने जाएंगे?"

"हां। कालचक्र इन्हें स्वीकार कर चुका है। तुम जग्गू-गुलचंद, नानिया पर नजर रखो।" पोतेबाबा ने कहा और वहां से आगे बढ़ गया। उस हाल से बाहर निकला तो एक राहदारी में चल पड़ा।

सामने से जो भी आता 'जथूरा महान है' के शब्दों के साथ आगे बढ़ जाता था।

पांच मिनट बाद कई राहदारियां पार करने के पश्चात पोतेबाबा नीचे जाते रास्ते की तरफ बढ़ गया, जो कि महल के नीचे तहखाने की तरफ जाता था। चौड़ा रास्ता, सुनसान था। नीचे जाकर रास्ता दाएं-बाएं दो भागों में बंट रहा था। पोतेबाबा दाईं तरफ वाले रास्ते पर बढ़ गया। ये रास्ता अब अंधेरे से भरा होने लगा।

आगे जाकर रास्ता एक तरफ मुड़ा तो बिल्कुल ही अंधेरे से भर गया। परंतु वहां पहले से ही मशाल दीवार पर लगे हुक में फंसी जल रही थी। उसकी रोशनी पर्याप्त थी वहां।

ज्योंही पोतेबाबा ने मशाल को पार किया, तभी वहां पर कठोर आवाज गूंजी।

"कौन है?"

"जथूरा महान है।" पोतेबाबा के होंठों पर शांत मुस्कान उभरी।

"उस जैसा महान दूसरा कोई नहीं।" वो ही आवाज कानों में पड़ी—"मुझे खुशी है कि आप वापस आ गए पोतेबाबा।"

"वापस तो आना ही था।" आगे बढ़ता पोतेबाबा कह उठा।

"क्या देवा और मिन्नो को ला सके अपने साथ?"

"जथूरा का हाथ मेरी पीठ पर है तो क्यों न लाऊंगा उन्हें।" पोतेबाबा ने कहा।

"ओह, ये तो अच्छी खबर है।"

रास्ते के अंत पर पहुंचकर पोतेबाबा ठिठका।

सामने दीवार थी।

पोतेबाबा ने अपनी दाईं हथेली दीवार पर टिका दी। अगले ही पल दीवार में जैसे जान आ गई और वो दीवार धीरे-धीरे एक तरफ सरकती चली गई।

रास्ता बन गया। पोतेबाबा भीतर प्रवेश कर गया।

ये एक कमरा था। दीवार पर कई स्क्रीनें लगी थीं। जिनमें अलग-अलग तरह के दृश्य नजर आ रहे थे। उस गैलरी का दृश्य भी नजर आ रहा था, जहां से होकर, पोतेबाबा यहां तक पहुंचा था। चार-पांच लोग वहां पर काम कर रहे थे। तभी एक आदमी पास पहुंचकर, मुस्कराकर बोला।

"आपको सामने पाकर प्रसन्नता हुई।"

"तुम्हें देखकर मुझे भी अच्छा लगा रातुला।" पोतेबाबा मुस्करा रहा था—"महाकाली के बारे में बताओ।"

"वो वहीं है, जहां आप उसे रख गए थे।"

"गई नहीं वहां से?"

"नहीं।"

पोतेबाबा सामने नजर आते रास्ते में बढ़ गया। वो आदमी पीछे चल पड़ा।

"अब तो आपको महाकाली की चिंता नहीं होनी चाहिए।" वो बोला।

"क्यों?"

"क्योंकि देवा-मिन्नो, जथूरा की जमीन पर आ पहुंचे हैं।"

"देवा-मिन्नो अपना काम पूरा करेंगे और मैं अपना। मैं अंत तक पूरी चेष्टा करूंगी कि महाकाली अपनी जिद छोड़ दे।"

"वो नहीं मानेगी।"

पोतेबाबा ने कुछ नहीं कहा। आगे बढ़ता रहा वो।

फिर नीचे जाने को सीढ़ियां दिखाई दीं तो पोतेबाबा नीचे उतरने लगा।

वो व्यक्ति सीढ़ियों के पास ठिठकता कह उठा।

"मैं आऊं क्या?"

"नहीं।" पोतेबाबा नीचे उतरता बोला।

सीढ़ियां उतरकर पोतेबाबा थोड़ा-सा और चला और अंधेरे से भरे कमरे में जा पहुंचा।

कुछ पल खड़ा वो अंधेरे को देखता रहा फिर ऊंचे स्वर में बोला।

"अंधेरे में क्यों बैठी है महाकाली?"

"तेरा अफसोस मना रही हूं।" औरत की बेहद तीखी आवाज वहां गूंजी।

"नाराज लगती है।"

"तू देवा-मिन्नो को ले आया।"

"मैं तेरे से कहकर गया था कि देवा-मिन्नो को लेकर ही लौटूंगा।"

"तूने ठीक नहीं किया।"

"मैंने ठीक किया है।" पोतेबाबा शांत स्वर में कह उठा—"रोशनी कर। जरा तेरे को देखूं तो सही।"

उसी पल वो सारी जगह रोशन हो उठी।

वो हाल जैसा कमरा था। सामान के नाम पर ज्यादा कुछ नहीं था। कमरे के बीचोबीच चकोर टेबल पर कांच का जार रखा था। उस जार में छोटी-सी मात्र ढाई इंच की बहुत खूबसूरत औरत टहलती दिखाई दे रही थी।

पोतेबाबा आगे बढ़ा और उस टेबल के पास पड़ी कुर्सी पर जा बैठा। नजरें जार पर थीं।

जार में टहलती वो ठिठकी और गुस्से-भरी निगाह से पोतेबाबा को देखने लगी।

"तू पहले की तरह ही खूबसूरत है।"

"तूने क्या सोचा था कि यहां रहकर मुर्झा जाऊंगी।"

"तू स्वयं जार में होती तो अवश्य मुर्झा जाती। परंतु ये तेरी परछाई है।"

"मुझे कैद करने के सपने मत देख पोतेबाबा। मैं किसी के हाथ नहीं आने वाली।"

"तेरे जाने के यहां के सारे रास्ते खुले हैं। तू चली क्यों नहीं जाती?"

"चालाकी वाली बातें मत कर। मैं इस तरह जाने वाली नहीं।"

"तो तवेरा को ले के जाएगी तू?"

"हां। जथूरा की बेटी मुझे दे दे। फिर दोबारा कभी नहीं लौटूंगी।"

"इसके अलावा कुछ और मांग ले। पूरा कर दूंगा।"

"तेरे को पता है कि मुझे कुछ और नहीं चाहिए। तवेरा ही चाहिए।"

कुछ खामोश रहकर पोतेबाबा कह उठा।

"महाकाली। तेरी ये इच्छा कभी भी पूरी नहीं हो सकती।"

"तो फिर भूल जा कि जथूरा कभी आजाद होगा। मैं वो ही करूंगी, जो मुझे सोबरा ने कहा है।"

"तू सोबरा के हुक्म की गुलाम है।"

"पागलों वाली बातें मत कर। मैं चाहूं तो अपना मनचाहा भी कर सकती हूं। जथूरा को आजाद कर सकती हूं।"

"कर दे आजाद।"

"तवेरा मुझे दे दे।"

"सम्भव नहीं है तेरी ये मांग। जथूरा की आजादी की एवज में तेरे को जो चाहिए मैं दूंगा, परंतु तवेरा नहीं।"

"बाकी सब कुछ मेरे लिए बेकार है।" महाकाली की परछाई जार के भीतर से कह रही थी—"तवेरा विद्वान है। वो तंत्र-मंत्र को बहुत ही बेहतरीन तरीके से जानती है। मुझ जैसी जादूगरनी को तवेरा की ही जरूरत है। वो मेरी सहायता करेगी, तंत्र-मंत्र में। मुझ भी कुछ आराम मिलेगा।" महाकाली ने कहा।

"पिता की आजादी की खातिर, बेटी को तेरा गुलाम बना दूं। ये कैसे सम्भव है।"

"तू क्यों चिंता करता है पोतेबाबा। दे दे मुझे तवेरा। तू तो नौकर है जथूरा का।"

"मैं नौकर नहीं, जथूरा का रखवाला हूं। उसकी आजादी के बदले तवेरा तेरे को नहीं दे सकता। तवेरा को सुरक्षित रखना मेरी ही जिम्मेवारी है। जथूरा ने मुझ पर जो भरोसा किया, उस पर खरा उतरना चाहता हूं।"

"ऐसी नगरी का क्या फायदा, जिसका राजा 50 बरसों से बंदी बना हुआ हो।"

"जथूरा के बिना भी सब ठीक चल रहा है, तू चिंता न कर।" पोतेबाबा शांत स्वर में कह उठा—"देवा-मिन्नो आ चुके हैं अब तेरा खेल ज्यादा नहीं चलेगा। जाकर सोबरा से कह दे।"

"मैं क्यों कहूं सोबरा से। मेरा काम तो जथूरा को कैद रखना है। तू तवेरा दे दे, सब ठीक हो जाएगा।"

"बकवास मत कर।" पोतेबाबा उठ खड़ा हुआ।

"तेरी जिद तुझे ले डूबेगी।"

"धमकी देती है।"

"देवा-मिन्नो आ गए हैं तो अब मैं चुप नहीं रह सकती।" महाकाली कह उठी।

"क्या करेगी?"

"सीधा वार करूंगी तवेरा पर।"

"वो तेरे बस का नहीं।"

"तू मेरी ताकतों को अच्छी तरह समझता है पोतेबाबा कि मेरे बस में क्या-क्या है।"

"तवेरा की ताकतें भी कम नहीं हैं।"

"मेरे से कम ही हैं। वो मेरा मुकाबला नहीं कर सकती।"

"तेरे वार से तो बच सकती है।"

"हर बार नहीं।"

"मैं तो तेरे को समझाने आया था कि देवा-मिन्नो आ गए हैं। तू जथूरा को छोड़कर चली जा। अब तेरी खैर नहीं। परंतु तू मेरी बात नहीं समझ रही। मैं चाहता हूं कि झगड़ा न हो, परंतु तेरी जिद बुरा कर देगी महाकाली।"

महाकाली हंस पड़ी।

"क्यों हंसी?"

"देवा और मिन्नो बच्चे हैं मेरे। मैं उन्हें चुटकी बजाकर, काबू में कर लूंगी। तू उनकी धौंस मत दे मुझे।"

पोतेबाबा पलटा और वापस चल पड़ा।

"तवेरा मुझे दे दे। फिर कभी मैं जथूरा के रास्ते में न आऊंगी। वादा करती हूं।"

"तवेरा तुझे कभी नहीं मिलेगी।" जाते-जाते पोतेबाबा बोला।

"सुन तो।"

पोतेबाबा ठिठककर पलटा और जार में मौजूद महाकाली की परछाईं को देखा।

"सोबरा को भी सबक सिखा दूंगी कि वो जथूरा से झगड़ा न करे। बस, तवेरा मुझे चाहिए।"

पोतेबाबा ने कुछ न कहा और वहां से बाहर निकलता चला गया।

'देवा-मिन्नो।' महाकाली बड़बड़ा उठी—'कब से इंतजार था इन दोनों के आने का।'

▭ ▭

पोतेबाबा लक्ष्मी के पास पहुंचा।

"क्या पता किया तूने?"

"गरुड़ की नजर तवेरा पर है।" लक्ष्मी बोली—"शायद वो जथूरा का दामाद बनना चाहता है।"

"उसके ये विचार हैं तो पछताएगा।" पोतेबाबा ने कठोर स्वर में कहा—"गलत इरादे हैं उसके।"

लक्ष्मी कुछ न बोली। उसे देखती रही।

"तवेरा के इरादे, गरुड़ के बारे में क्या हैं?"

"तवेरा का गरुड़ के बारे में कोई इरादा नहीं लगता।" लक्ष्मी ने कहा।

"ठीक है। गरुड़ को समझाने की चेष्टा करूंगा।"

"वो न समझा तो?"

"तो उसकी परवाह न करके, उसे कैद में डालना होगा।"

"वो आपके बाद जथूरा का सर्वश्रेष्ठ सेवक है।"

"इससे उसे इस बात की आज्ञा नहीं मिल सकती कि वो तवेरा पर नजर रखे। जथूरा पास में होता तो मुझे इस बात से कोई मतलब नहीं था। परंतु अब तवेरा की देखभाल की जिम्मेवारी मुझ पर है। मेरा फर्ज है कि जथूरा की गैरमौजूदगी में सब ठीक रखूं।"

"वो आप रख ही रहे हैं।"

"तवेरा का मामला भी ठीक रखना मेरा फर्ज है। गरुड़ को मैं इस तरह की कोई इजाजत नहीं दे सकता।" पोतेबाबा ने गम्भीर स्वर में कहा—"तुम मुझे खाना खिलाओ, उसके बाद मैं गरुड़ से मिलूंगा।"

▭ ▭

तवेरा।

जथूरा की बेटी।

उसने तंत्र-मंत्र की विद्या में महारथ हासिल कर रखी थी। परंतु वो महारथ, महाकाली के मामले में कम थी। सोबरा ने जथूरा को कैद करके, महाकाली को पहरे पर बैठा रखा था।

तवेरा परेशान रहती थी, अपने पिता, जथूरा की आजादी को लेकर।

उसने जथूरा को आजाद कराने के कई प्रयत्न किए थे, परंतु महाकाली के आगे उसकी एक न चली।

पचास बरस बीत गए थे, ये सब होते-होते।

परंतु तवेरा ने हौंसला न छोड़ा था।

इस वक्त भी वो एक कमरे में, जथूरा से बात करने के लिए, किसी मंत्र को बड़बड़ा रही थी। वो खूबसूरत थी। ऐसी कि देखने वाला देखता रह जाए। परंतु अपने पिता के बारे में इस कदर चिंतित थी कि अपने बारे में सोचने की उसके पास फुर्सत ही नहीं थी। वो हमेशा अपने पिता को आजाद कराने की उधेड़-बुन में लगी रहती।

जिस कुर्सी पर वो बैठी थी, वो एकाएक कांपी। जोरों से हिली।

तवेरा के होंठों से निकलने वाले मंत्र रुक गए। उसकी निगाह

सामने एक फूल पर जा टिकी, जो कि धीरे-धीरे अपना रंग बदलने लगा था। तवेरा के चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ गई।

तभी उसके कान में जथूरा का तेज स्वर पड़ा।

"कौन है?"

"मैं हूं पिताजी। मैं तवेरा।" तवेरा का स्वर कांप उठा था।

"ओह तुम। तुमसे कितनी बार कहा है कि मंत्रों की धार पर मुझसे इस तरह बात मत किया करो। मुझे तकलीफ होती है। पहले से ही महाकाली मुझे बहुत तकलीफें देती है। अब और नहीं सहा जाता।" जथूरा का स्वर वहां गूंज उठा था।

"आप तो बहुत बहादुर हैं पिताजी। हिम्मत कब से हारने लगे।"

"50 बरसों की कैद ने मुझे थका दिया है।"

"आप हिम्मत रखिए।"

"वो ही तो अब नहीं रही।"

तवेरा के चेहरे पर दर्द के भाव आ ठहरे।

"आप मुझे भी नहीं बताते मैं कैसे आपको आजाद कराऊं?" तवेरा बोली।

फूल बराबर रंग पर रंग बदले जा रहा था।

"मैं नहीं जानता। महाकाली ने सारे रास्ते सख्ती से बंद कर रखे हैं। वो बहुत कठोर है।"

"सोबरा के आदेश पर, महाकाली ने आपको कैद किया है। मैं सोबरा से बात करूं क्या?"

"कोई फायदा नहीं होगा।"

"पोतेबाबा से कहूं कि वो सोबरा से बात करे।"

"नहीं। बात का वक्त अब रहा ही नहीं।" जथूरा की आवाज में तकलीफ के भाव थे—"मैं नहीं जानता था कि कालचक्र को पकड़ लेने की मुझे ये सजा मिलेगी। तब सोबरा ने कहा था परंतु मैं नहीं माना। सोचा वो झूठ कहता है।"

"आपको आजाद कराने का एक रास्ता है पिताजी।" तवेरा ने सोच-भरे स्वर में कहा।

"बोल बेटी।"

"महाकाली चाहती है कि मैं उसके साथ उसके काम में शामिल हो जाऊं।"

"कभी नहीं। मैं तुझे बुरी जिंदगी जीने की इजाजत कभी नहीं दूंगा।" जथूरा का तड़प-भरा स्वर सुनाई दिया—"तू महाकाली की ये बात कभी नहीं मानेगी। तेरे को अपनी मर्यादा में रहना होगा।"

"मैं आपके कहे के बाहर कभी नहीं जाऊंगी।"

"मुझे आजाद करा...मुझे...ठहर, महाकाली आई है।"

उसके बाद वहां खामोशी छा गई।

सामने पड़ा फूल बराबर रंग बदले जा रहा था।

तवेरा की निगाह फूल पर टिकी हुई थी। चेहरे पर गम्भीरता थी।

लम्बी खामोशी के बाद जथूरा की आवाज सुनाई दी।

"महाकाली चली गई। वो कुछ नया बताकर गई है।"

"क्या?"

"देवा और मिन्नो मेरी जमीन पर आ पहुंचे हैं।"

"न...हीं...ऽ-ऽ-ऽ।" तवेरा की आवाज कांप उठी।

"वो झूठ क्यों कहेगी।"

"ये तो आपके लिए खुशी की बात है पिताजी, देवा और मिन्नो...।"

"मेरे लिए खुशी का दिन वो होगा, जब मैं आजाद हो जाऊंगा।"

"आप...आप आजाद हो जाएंगे। पोतेबाबा नहीं लौटा। वो आ गए...।"

"पोतेबाबा भी आ गया है।" जथूरा की आवाज सुनाई दी।

"ओह, और मुझे खबर नहीं। आप आराम कीजिए पापा। मैं अब आपको आजाद कराकर रहूंगी। देवा-मिन्नो के आने का ही तो इंतजार था। वो दोनों...।"

"महाकाली को कम मत समझ।"

"मैं उसे कम नहीं समझ रही। वो...।"

"देवा-मिन्नो भी चूक सकते हैं। ये जरूरी नहीं कि वो दोनों उस तिलिस्म को तोड़ने में सफल हो ही जाएं। वो भी मर सकते हैं। रास्ते में पग-पग में खतरे भरे पड़े हैं।" जथूरा की आवाज में थकान थी।

"आप आराम कीजिए पिताजी।"

"तू अपनी जिंदगी जी तवेरा। मेरी फिक्र मत कर। मैं तो...।"

तवेरा ने पूरी बात सुनी ही नहीं और हाथ आगे बढ़ाकर फूल को छू लिया।

फूल का रंग बदलना उसी पल थम गया।

इसके साथ ही जथूरा से बातचीत का सम्बंध खत्म हो गया था।

तवेरा उठी और आगे बढ़कर कमरे का बड़ा-सा दरवाजा खोला।

बाहर दो सेविकाएं खड़ी थीं।

"पोतेबाबा को संदेश भेजो कि मैं मिलना चाहती हूं।"

"क्या वो आ पहुंचे हैं?"

"हां।"

एक सेविका फौरन सिर हिलाकर, वहां से चली गई।

"अब तुम भीतर आ सकती हो।" तवेरा ने दूसरी सेविका से कहा और भीतर चली गई।

सेविका ने भीतर प्रवेश करते हुए कहा।

"जब आप कमरे में बंद थीं तो गरुड़ आया था।"

"वो बार-बार मेरे पास आने की चेष्टा क्यों करता है?" तवेरा ने नाराजगी से कहा।

"आप खूब समझती हैं।"

"लेकिन मुझे ये सब बातें पसंद नहीं। अबकी बार आए तो उसे कह देना।"

"जरूर कह दूंगी। अब तो देवा-मिन्नो आ गए हैं। आपके पिता कैद से आजाद हो जाएंगे?"

"जरूर आजाद हो जाएंगे।" तवेरा दृढ़ स्वर में कह उठी।

"वो दिन कितना खुशी से भरा होगा जब...।"

"मुझे उस कमरे में जाना होगा।" एकाएक तवेरा बोली—"महाकाली से दोटूक बात करनी है कि...।"

"मैं आ गई तवेरा।" तभी वहां महाकाली की आवाज गूंज उठी।

तवेरा और सेविका की नजरें घूमीं।

परंतु महाकाली कहीं भी न दिखी।

"मुझे ढूंढ़ तो जानूं।" महाकाली का खिलखिलाने का स्वर गूंजा।

"ये खेल खेलने का वक्त नहीं है।" तवेरा कठोर स्वर में बोली—"तेरे खेल अब खत्म होने जा रहे हैं।"

"खूब—तो तू मेरे खेल खत्म करेगी।"

"कोई भी करे, तेरा खेल खत्म हो के ही रहेगा।" तवेरा का स्वर कठोर ही रहा।

"मैं कुर्सी पर बैठी हूं।"

तवेरा और सेविका की निगाह कुर्सी की तरफ उठीं।

वहां पर ढाई इंच की छोटी-सी, महाकाली दिखाई दी।

"तूने अपनी परछाई भेजी है। स्वयं नहीं आई।"

"क्या करूं, बहुत व्यस्त हूं। इसलिए अपनी परछाई को भेज दिया।"

तभी तवेरा ने होंठों ही होंठों में कुछ बुदबुदाया।

उसी पल ढाई इंच की महाकाली की परछाई कुर्सी से उछलकर नीचे जा गिरी।

"तूने मुझे कुर्सी से क्यों उतारा?" महाकाली की आवाज गूंजी।

तवेरा आगे बढ़ी और उसी कुर्सी पर बैठते हुए कह उठी।

"तू कुर्सी पर बैठने के काबिल नहीं है। मेरी कुर्सी पर बिल्कुल ही नहीं।"

ढाई इंच की महाकाली की परछाई, सिर उठाए, कुर्सी पर बैठी तवेरा को देखती रही फिर बोली।

"तू तंत्र-मंत्र की विद्या में बहुत तेज है। परंतु वो विद्या तेरे किस काम की।"

"क्यों?"

"विद्या का इस्तेमाल करने का मौका तो तुझे मिलता नहीं। तू मेरे पास आ जा। मैं तेरे को और भी तेज बना दूंगी।"

"फिक्र मत कर। तवेरा कड़वे स्वर में बोली—"मेरे को अब जल्द ही मौका मिलेगा।"

सेविका शांत-सी खड़ी थी।

"अच्छा—वो कैसे?"

"तिलिस्म तोड़ने देवा और मिन्नो आ पहुंचे हैं। मैं उनके साथ रहूंगी।"

महाकाली हंस पड़ी।

"तो ये बात है। आज की बच्ची है तू और मेरे से मुकाबले की सोच रही है।"

तवेरा के होंठ भिंचे रहे।

"जवाब दे तवेरा।"

"मेरे पिता को छोड़ दे। अब तेरी भलाई इसी में है।" तवेरा बोली।

"तो तू मुकाबले का फैसला कर चुकी है।"

"हां।"

"मैं तेरी जान नहीं लेना चाहती। अगर तूने मेरा मुकाबला किया तो, तुझे मारना पड़ेगा।"

"मैं तेरा मुकाबला करूंगी। देवा-मिन्नो आ चुके हैं। उन्हीं के इंतजार में तो मैं कब से बैठी थी।"

"देवा-मिन्नो मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। वो दोनों अपनी जान गंवा बैठेंगे।"

"मेरे पिता की आजादी की चाबी उन दोनों के पास है।"

"मैं उन्हें वहां तक पहुंचने दूंगी तब न?" महाकाली के हंसने की आवाज आई।

तवेरा ने होंठ भींच लिए।

"बेवकूफ हो तुम सब। तू मेरे पास आ जा। उसके बाद सब ठीक हो जाएगा। जथूरा को मैं आजाद कर दूंगी।"

"कभी नहीं।"

"तो अब हमारा मुकाबला पक्का है तवेरा?"

"हां।"

"बच्चों से मुकाबला करना मुझे अच्छा नहीं लगता। अब तू नहीं मानती तो मैं क्या करूं।"

"मैं कितनी बच्ची हूं ये तू जानती है, तभी तो मेरा साथ पाने को मरी जा रही है।" तवेरा गुस्से से कह उठी—"अब तक तो मैं इसलिए खामोश थी कि अकेली थी मैं, परंतु अब...।"

"देवा-मिन्नो आ गए हैं।" महाकाली ने व्यंग्य से शब्दों को पूरा किया।

"हां। अब मैं तेरा मुकाबला करने की कोशिश तो कर ही सकती हूं।"

"नादान है, भुगतेगी।" इसके साथ ही महाकाली की परछाई गायब हो गई।

तवेरा होंठ भींचे कुर्सी से उठी और टहलने लगी।

"महाकाली नहीं मानेगी।" सेविका कह उठी।

"बेशक मत माने। लेकिन मैं उसका मुकाबला जरूर करूंगी।" तवेरा दांत भींचे कह उठी।

"वो ताकतवर है।"

तवेरा ने सेविका को देखा और पूर्ववतः स्वर में बोली।

"बेशक वो ताकतवर है मुझसे। परंतु मुझे हराने के लिए उसे काफी मेहनत करनी पड़ेगी।"

▭ ▭

गरुड़!

पच्चीस बरस का तेज-तर्रार युवक। (जैसा कि आप सब जानते हैं कि पूर्वजन्म के लोगों की उम्र ठहर चुकी है। पूर्व उपन्यासों में इस बात को आप पढ़ चुके हैं।) चुस्त-चालाक। हर काम को जैसे जल्द पूरा कर देना चाहता हो। वो पोतेबाबा के बाद, जथूरा का सर्वश्रेष्ठ सेवक था।

गरुड़ ने महल में अपने कमरे में प्रवेश किया और ठिठक गया। एक सेवक कमरे की साफ-सफाई कर रहा था।

"तुम जाओ। अभी कुछ देर मैं आराम करना चाहता हूं।" गरुड़ ने सेवक से कहा।

"जी। पोतेबाबा आपको याद कर रहे हैं।"

गरुड़ ने हौले-से सिर हिलाया।

"कहां हैं वो?"

"पीछे वाले हॉल में।" सेवक बोला।

"उनसे कहो, मैं अभी आता हूं।"

सेवक बाहर निकल गया।

गरुड़ ने दरवाजा बंद किया और कमरे में नजरें दौड़ाईं।

फिर आगे बढ़ा और अलमारी खोलकर उसने जिल्द वाली एक किताब निकाली और उसे खोला। किताब के पन्ने बीचोबीच चकोर मुद्रा में कटे हुए थे और वहां माचिस की डिब्बी के आकार का छोटा-सा यंत्र रखा था। जिस पर सफेद रंग के बटन लगे हुए थे। गरुड़ उस किताब को थामे कुर्सी पर आ बैठा और यंत्र में लगे बटनों में से एक-एक करके चार बटनों को दबाया तो यंत्र के बीच में से रोशनी निकलने लगी।

चंद पलों बाद यंत्र के बीच में बारीक-सी आवाज आई।

"तुमने बहुत दिनों से बात नहीं की गरुड़?"

"मैं बहुत व्यस्त था सोबरा।" गरुड़ ने धीमे स्वर में कहा।

"तवेरा को लेकर तुम कहां तक पहुंचे?"

"अभी तक मैं तवेरा को अपने प्यार के शीशे में नहीं उतार सका। मैंने कोशिश की, परंतु इन बातों की वो परवाह नहीं करती।"

"तुमने ये बताने के लिए मुझसे बात की।" यंत्र से निकलती सोबरा की आवाज में तीखापन आ गया।

"नहीं, मैं...।"

"गरुड़।" सोबरा की आवाज कानों में पड़ी—"मेरी खामोश कोशिश के बाद ही तुम जथूरा की नगरी में अपनी जगह बना सके हो। तुम आठ साल के थे तो तुम्हें जथूरा की नगरी में छोड़ दिया गया था। उसके बाद मेरे साथी चुपचाप तुम्हारी सहायता करते रहे। जहां आज तुम हो, वहां तक पहुंचाने में, मेरा ही हाथ है।"

"मैं जानता हूं।"

"तुम्हें छोटा-सा काम कहा था कि तवेरा को प्रेमजाल में फंसा लो, परंतु तुम असफल रहे।"

"मैं असफल नहीं हुआ। कोशिश चल रही है मेरी।"

"मुझे काम पूरा चाहिए गरुड़। इसमें तुम्हारा भला है। तुम जथूरा की नगरी के मालिक बन जाओगे तवेरा से ब्याह करके, परंतु मेरे अधीन रहोगे। मैं चाहता हूं जथूरा का सब कुछ मेरे पास आ जाए।"

"जरूर आएगा आपका सेवक ऐसा कर दिखाएगा।"

"मुझे सफल लोग पसंद आते हैं। तुम भी सफल बनो।"

"अवश्य।"

"कोई और बात?"

"देवा और मिन्नो आ पहुंचे हैं जथूरा की जमीन पर। महाकाली ने उन दोनों के नाम से ही तिलिस्म बांधा था।"

"तब महाकाली ने सोचा था कि देवा और मिन्नो कभी भी इकट्ठे नहीं हो सकेंगे। क्योंकि दोनों इस जन्म में एक-दूसरे के दुश्मन हैं। परंतु पोतेबाबा अपनी चालाकियों का इस्तेमाल करके दोनों को यहां तक ले आया है।" सोबरा की आवाज आई।

"बुरा हुआ ये।"

"हां। तिलिस्म टूट गया तो बुरा होगा। जथूरा आजाद हो जाएगा।"

"बताइए मैं क्या करूं?"

"पोतेबाबा अब क्या करने जा रहा है?"

"मैं नहीं जानता। अभी पोतेबाबा से मेरी मुलाकात नहीं हुई।"

"ये जानो कि वो क्या करेगा अब और मुझे बताओ।"

"ठीक है।"

"देवा-मिन्नो महल तक आ गए हैं?"

"नहीं। अभी वे महल तक नहीं पहुंचे।"

"तुम्हें सबसे पहले पोतेबाबा से मिलना चाहिए था, ताकि उसके दिल की बात जानो।"

"मैं अभी ऐसा ही करता हूं।" गरुड़ ने किताब को चेहरे के पास रखा हुआ था—"मैं कुछ कहना चाहता हूं।"

"कहो।"

"देवा-मिन्नो को खत्म कर दूं तो...।"

"समझदारी की बातें करो गरुड़। देवा-मिन्नो पर इस वक्त जथूरा के सेवक सैटलाइट द्वारा नजर रख रहे होंगे।"

"ओह।"

"तैश में कदम मत उठाओ। संभलकर चलो।"

"ठीक है।"

"पोतेबाबा की टोह लेकर मुझे बताओ और तवेरा को अपने प्यार के जाल में फंसाओ।"

"मैं ऐसा ही करूंगा।"

"करूंगा नहीं, करके दिखाओ।"

"जी।"

"मुझे तुमसे बहुत आशाएं हैं गरुड़। मैंने सोच रखा है कि मेरे वारिस तुम ही बनोगे। मैंने शादी नहीं की। औलाद नहीं है। अब अपनी औलाद का चेहरा मैं तुममें देखता हूं गरुड़। खुद को साबित करके दिखाओ।"

"अवश्य।"

उसके बाद किताब में फंसे यंत्र में से कोई आवाज नहीं आई।

गरुड़ ने किताब बंद की और वापस अलमारी में रखकर, अलमारी बंद की।

"चेहरे पर गम्भीरता थी। आंखों के सामने तवेरा का खूबसूरत चेहरा नाच रहा था।

दरवाजा खोलकर कमरे से बाहर निकला और आगे बढ़ गया।

कुछ देर में ही उसने एक मीडियम साइज के हॉल में प्रवेश किया।

सजावट से भरा हॉल था ये। आरामदेह कुर्सियां लगी हुई थीं। लेटने के लिए गद्देदार बैड थे।

सामने ही पोतेबाबा एक कुर्सी पर बैठा था। गरुड़ को देखकर मुस्कराया पोतेबाबा और उठ खड़ा हुआ।

गरुड़ तब तक पास आ पहुंचा था। उसके चेहरे पर मुस्कान थी।

"ओह, पोतेबाबा, आपको सामने पाकर मुझे बहुत खुशी महसूस हो रही है।" गरुड़ कह उठा।

दोनों गले मिले।

"कैसे हो मेरे बच्चे?"

गरुड़ अलग होता कह उठा।

"आपके आशीर्वाद से मैं खुश हूं।"

दोनों कुर्सियों पर बैठे।

"मुझे तुम पर गर्व है गरुड़ कि तुमने मेरे पीछे से सारा काम बखूबी संभाला।" पोतेबाबा मुस्कराकर कह उठा।

"क्यों न संभालूंगा। आपसे ही तो शिक्षा ली है सब कामों की।" गरुड़ ने हंसकर कहा।

"शिक्षा तो मैंने बहुतों को दी, परंतु सबसे काबिल तुम रहे।"

"मेरे बारे में आप ऐसा सोचते हैं तो मेरे लिए खुशी की बात है।" गरुड़ ने कहा।

"तुमसे शिकायत भी है।"

"क्या?"

"तुमने कई बार तवेरा से मिलने की चेष्टा की, मिले भी।"

"तवेरा से मिलना मैंने जरूरी समझा।" गरुड़ सहज ढंग से कह उठा—"मैंने सोचा कि वो खुद को अकेली महसूस कर रही होगी। जथूरा, महाकाली की निगरानी में कैद है। आप दूसरी दुनिया में थे तो इसलिए...।"

"यहां के नियम के मुताबिक तवेरा से तभी मिला जा सकता है, जब वो स्वयं बुलाए।"

"जानता हूं।"

"तो तुम्हें उसके पास नहीं जाना चाहिए था।"

"मैं तो तवेरा की बेहतरी पूछने गया था। अंजाने में अगर मुझसे गलती हो गई हो तो मैं क्षमा चाहता हूं।"

पोतेबाबा गरुड़ को देखता रहा।

"मुझे क्षमा कर दीजिए पोतेबाबा।" गरुड़ पुनः बोला।

"क्षमा किया।" पोतेबाबा के चेहरे पर किसी तरह का भाव नहीं था।

"आपका दिल बहुत बड़ा है।" गरुड़ कह उठा।

"अब सच बोलो गरुड़।" पोतेबाबा बेहद शांत स्वर में बोला—"तवेरा के लिए तुम्हारे मन में क्या है?"

गरुड़ ने पोतेबाबा को देखा।

पोतेबाबा की निगाह उसके चेहरे पर थी।

"बोलो।" पोतेबाबा ने शांत स्वर में कहा।

"वो मुझे अच्छी लगती है।"

"अच्छी से मतलब?"

"मैं उससे ब्याह करना चाहता हूं।"

"तुम जानते हो कि ये सम्भव नहीं।"

गरुड़ खामोश रहा।

"जथूरा कैद में है। तवेरा की जिम्मेवारी मुझ पर है। जथूरा यहां होता तो तुम ये बात जथूरा से कह सकते थे।"

"क्या अब ये बात मैं आपसे नहीं कह सकता।"

"मुझे तवेरा के ब्याह का फैसला लेने का अधिकार नहीं।"

"तवेरा को है?"

"अवश्य। वो अपना कोई भी फैसला लेने के लिए आजाद है।"

"तो मुझे तवेरा के करीब जाने का मौका मिलना चाहिए। इससे शायद मैं उसे तैयार कर सकूं।"

"क्या उसके मन में तुम्हारे लिए कुछ है?"

"शायद नहीं। मैं तो अपनी कोशिश कर...।"

"बेहतर होगा कि अब तुम तवेरा के करीब मत जाओ।" पोतेबाबा के स्वर में आदेश के भाव थे।

"ये तो ज्यादती है मेरे साथ।"

"मेरी बात तुम्हें माननी पड़ेगी गरुड़।"

"आपका आदेश मैं जरूर मानूंगा।" गरुड़ ने बेहद शांत स्वर में कहा।

"तुम अच्छे बच्चे हो। मैं तुम्हें पसंद करता हूं।"

गरुड़ पोतेबाबा को देखकर शांत भाव में मुस्कराया।

"अब हम कुछ दूसरी बातें कर लें?"

"अवश्य पोतेबाबा।" गरुड़ ने सिर हिलाया—"मैं मोमो जिन्न के बारे में कुछ कहना चाहूंगा।"

"कहो।"

"मैं अभी जिन्नों के महल में होकर आया हूं। वहां खबर मिली कि मोमो जिन्न लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा को लेकर, सोबरा की जमीन की दिशा की तरफ जा रहा है। उस स्थिति में मैंने मोमो जिन्न की स्थिति का निरीक्षण किया तो पता चला कि उसके भीतर इंसानी इच्छाएं मौजूद हैं।"

पोतेबाबा मुस्कराया।

"ये हैरानी की बात है कि उसके भीतर इंसानी इच्छाएं हैं।"

"तो तुमने क्या किया?"

"तब तक मुझे आपके आ जाने की खबर मिल चुकी थी। मैंने सोचा कि इस बारे में आपसे बात कर लूं। क्योंकि मोमो जिन्न जिस दूसरी दुनिया से लौटा है, वहां आप भी थे। कहीं आपने उसके भीतर इंसानी इच्छाएं किसी योजना के तहत डाली हों।"

"तुम्हारा विचार बिल्कुल सही है। मैंने ही उसके भीतर इंसानी इच्छाएं डाली हैं।"

"क्यों?"

"ताकि वो डर जाए कि अब जथूरा के सेवक उसे मार देंगे और यहां पहुंचते ही बचने के लिए वो सोबरा की तरफ भाग जाए।"

"ये आप क्या कह रहे हैं। मोमो जिन्न हमारा काबिल जिन्न है, उसे आप...।"

"काबिल है, तभी तो उसे मोहरा बनाकर चाल चली है मैंने।"

"कैसी चाल?"

"टापू पर कमला देवी और मखानी को खत्म करना था, ताकि देवा-मिन्नो के बीच की लड़ाई रुक सके। मैं जानता था कि मोमो जिन्न के भीतर जागी इच्छाएं, उन दोनों को लड़ने से रोकेंगी। ऐसा ही हुआ। मोमो जिन्न ने सपन चड्ढा और लक्ष्मण दास के द्वारा कमला रानी और मखानी की हत्या करवा दी। उसी के बाद तो मोमो जिन्न सबको पनडुब्बी पर लेकर आया और वे यहां पहुंचे।" पोतेबाबा ने कहा।

"ये आदेश तो आप मोमो जिन्न को यूं भी दे सकते थे।"

"जरूर दे सकता था, परंतु आगे का काम भी तो इससे लेना था। मैं चाहता था कि आगे वो स्वाभाविक तौर पर काम करे। जैसे कि वो अब कर रहा है।" पोतेबाबा गम्भीर हो गया।

"मैं समझा नहीं।"

"मोमो जिन्न को सोबरा के पास पहुंचाना है।"

"ऐसा क्यों?"

"ताकि जथूरा को आजाद कराने के लिए, वो वहां काम कर सके।"

"जब तक उसके भीतर इंसानी इच्छाएं हैं, वो हमारे का नहीं है।" गरुड़ ने कहा।

"सही कहा।" पोतेबाबा ने सिर हिलाया—"परंतु जब मोमो जिन्न सोबरा की जमीन पर उसके पास पहुंच जाएगा, तब हम उसके भीतर से इंसानी इच्छाएं निकाल लेंगे।"

"ओह।" गरुड़ ने समझने वाले भाव में सिर हिलाया।

"उस स्थिति में मोमो जिन्न फिर जथूरा के हक में सोचने लगेगा। इधर हमने जथूरा को कैद से आजाद कराना है, परंतु सोबरा अवश्य कुछ अड़चन डालेगा जथूरा की आजादी में। तब हम सोबरा के खिलाफ काम करने का आदेश मोमो जिन्न को दे सकते हैं, क्योंकि वो तब सोबरा के पास ही कहीं पर होगा।"

"ये अच्छी चाल है।" गरुड़ मुस्कराया।

"ये सब बहुत पहले सोच लिया था मैंने। तभी मोमो जिन्न में इंसानी इच्छाएं डाल दी थीं।

"ठीक किया था आपने। मुझे पता लगा कि आप देवा-मिन्नो को जथूरा की जमीन पर ले आए हैं।"

"हां। इस वक्त वो हमारे इसी महल की तरफ ही आ रहे हैं। कमला रानी और मखानी उन्हें ला रहे हैं।"

"देवा-मिन्नो को यहां लाने का आपने कठिन काम कर दिखाया।"

"जथूरा का हाथ मेरी पीठ पर है तो मेरा काम क्यों नहीं पूरा होगा।"

"जथूरा महान है।" गरुड़ श्रद्धा भाव से बोला।

"उस जैसा दूसरा कोई नहीं।" पोतेबाबा ने कहा।

"अब क्या करना है पोतेबाबा?" गरुड़ ने पूछा।

"देवा-मिन्नो के यहां आने पर उन्हें सारी स्थिति स्पष्ट बताकर, जथूरा के आजाद करवाने के लिए कहा जाएगा और...।"

"क्या ये जरूरी है कि वो हमारी बात मानें।"

"मजबूरी है उनकी।" पोतेबाबा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"वो कैसे?"

"पूर्वजन्म में प्रवेश करने के बाद वो तभी वापस अपनी दुनिया में पहुंच सकते हैं, जब वो पूर्वजन्म का कोई काम सुधार दें। उसके पश्चात ही उनकी वापिसी के दरवाजे खुलेंगे, वरना नहीं। वो इसी दुनिया में भटकते रहेंगे।"

"ओह।"

"ऐसी स्थिति में कोई दूसरा काम सुधारने के लिए, काम कहां से ढूंढ़ेगा?"

गरुड़ ने समझने वाले भाव में सिर हिलाया।

"देवा-मिन्नो को हमारी बात माननी पड़ेगी।" पोतेबाबा ने कहा।

"देवा-मिन्नो जानते हैं कि पूर्वजन्म की धरती पर आने के बाद, बिगड़ा काम सुधारकर ही वे वापस जा सकते हैं?"

"अवश्य जानते होंगे गरुड़। क्योंकि देवा-मिन्नो कई बार पूर्वजन्म की धरती पर आ चुके हैं।"

"देवा-मिन्नो कब तक महल में पहुंचेंगे?" गरुड़ ने पूछा।

"आज दिन ढलने तक वो यहां होंगे।"

"मैं जग्गू और गुलचंद के बारे में बताना चाहता हूं कि वे भी सोबरा की जमीन की तरफ बढ़ रहे हैं।"

"जान चुका हूं। परंतु उनके बारे में कुछ नहीं कह सकता कि वो सोबरा के पास क्यों जा रहे हैं।"

"क्या उन्हें आगे बढ़ने से रोक दिया जाए?"

"हमें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वो सोबरा के पास जा रहे हैं। हमारा काम तो देवा-मिन्नो से चल जाएगा।"

"ठीक है। मैं अब चलता हूं। देवा-मिन्नो के महल में आते ही मैं आ जाऊंगा।"

पोतेबाबा ने गरुड़ को देखा। फिर कहा।

"तवेरा से दूर रहना।"

"अवश्य। मैं इस बात का ध्यान रखूंगा।"

गरुड़ बाहर निकल गया।

पोतेबाबा वहीं बैठा, सोचों में गुम रहा फिर बाहर खड़े सेवक को ऊंचे स्वर में पुकारा।

सेवक पुनः हाजिर हुआ।

"रातुला को बुलाओ।"

"जी।" कहकर सेवक चला गया।

□ □

गरुड़ फौरन वापस उसी कमरे में पहुंचा और अलमारी से वो ही किताब निकालकर, उसी मंत्र द्वारा उसने सोबरा से बात की।

"कहो गरुड़।" यंत्र में से सोबरा की बारीक-सी आवाज निकली।

"पोतेबाबा मोमो जिन्न को खबरी बनाकर, आपकी जमीन पर भेज रहा है।" गरुड़ ने कहा।

"वो कैसे?"

"पोतेबाबा ने मोमो जिन्न के भीतर इंसानी इच्छाएं डाल दी हैं। मोमो जिन्न घबरा गया है कि ये बात खुलते ही उसे मार दिया जाएगा। इसलिए वो जान बचाने के लिए आपकी तरफ दौड़ा आ रहा है। चूंकि देवा-मिन्नो महल में पहुंचने वाले हैं। उनसे जथूरा पर बांधा तिलिस्म तुड़वाया जाएगा। इस दौरान पोतेबाबा, मोमो जिन्न में डाली इंसानी इच्छाएं वापस ले लेगा तो मोमो जिन्न पुनः जथूरा का सेवक बन जाएगा। तब उसे आदेश देकर, वे उससे काम ले सकते हैं।"

"मैं समझ गया। ये बात तुमने मुझे बताकर अच्छा किया।"

"अब आपको सतर्क रहने की जरूरत है।"

"मेरी फिक्र मत करो। तुम तवेरा को अपने प्यार में फंसाने की चेष्टा करो और सफल होने की खबर मुझे दो।"

"अवश्य सोबरा।"

□ □

रातुला आया।

पोतेबाबा ने गम्भीर निगाहों से उसे देखा।

"क्या बात है पोतेबाबा। मुझे क्यों बुलाया?"

"बैठो। तुमसे कोई खास बात करना चाहता हूं।"

रातुला सामने पड़ी उसी कुर्सी पर जा बैठा, जहां थोड़ी देर पहले गरुड़ बैठा था।

"देवा-मिन्नो की कोई समस्या है?"

"नहीं, गरुड़ के बारे में बात करना चाहता हूं।" पोतेबाबा ने हौले-से सिर हिलाया।

"कहो।"

"गरुड़ की नजर तवेरा पर है। उससे ब्याह करना चाहता है।"

"ओह।"

"जबकि तवेरा ने गरुड़ के बारे में सोचा भी नहीं है।"

"हूं।"

"मैंने गरुड़ को इस बारे में समझाया तो वो फौरन पीछे हटने को मान गया, जबकि हकीकत में ऐसा नहीं है। मेरी अनुभवी नजरें

धोखा नहीं खा सकतीं। गरुड़ का मन साफ नहीं लग रहा इस बारे में।"

"वो कैसे?"

"मेरे कहने पर गरुड़ का पीछे हटने का रजामंद हो जाना।"

"और।"

"तवेरा की नजर गरुड़ पर नहीं है, परंतु गरुड़ उससे ब्याह करने की सोचे बैठा है। जथूरा का दामाद बनने का सपना देख रहा है ताकि यहां का मालिक बन सके। बात अगर तवेरा की तरफ से भी होती तो जुदा बात थी, परंतु ये सब गरुड़ का अपना फैसला है और इतना बड़ा फैसला वो खुद नहीं कर सकता।"

"क्या मतलब?"

"गरुड़ के पीछे किसी और की विचारधारा चल रही है।"

"किसकी?"

"मैं नहीं जानता।"

"फिर तुमने इतनी बड़ी बात कैसे कह दी कि...।"

"गरुड़ ने बेशक तरक्की की है। नीचे से उठकर आज वो जथूरा का सर्वश्रेष्ठ सेवक बन गया है, परंतु उसकी इतनी हिम्मत नहीं हो सकती कि वो तवेरा के साथ ब्याह की सोचने लगे।"

रातुला पोतेबाबा को देखता रहा। चेहरे पर सोचें रहीं।

"तुम पहेलियां बुझा रहे हो।" रातुला कह उठा।

"मैंने स्पष्ट कहा है कि गरुड़ की सोचों के पीछे कोई है, परंतु मैं उसे नहीं जानता।"

रातुला ने सिर हिलाकर कहा।

"मैं इसमें क्या कर सकता हूं, ये बताओ।"

"गरुड़ पर नजर रखो। ये सोचकर नजर रखो कि गरुड़ जथूरा के हक में नहीं सोचता। जथूरा कैद में है और वो उसकी आजादी की न सोचकर, उसकी बेटी से ब्याह करने का विचार बना रहा है, ये गद्दारी नहीं तो और क्या है?"

रातुला ने सहमति से सिर हिलाया।

"तुम्हें पता लगाना है कि गरुड़ क्यों बहक गया है।"

"मैं पता लगाऊंगा। परंतु महाकाली की परछाई पर भी नजर रखनी है मुझे।"

"वो काम छोड़ दो। उस काम पर मैं अभी किसी दूसरे को लगा देता हूं।"

"क्या तुम्हारी बातों से गरुड़ को कोई शक हुआ कि तुम उस पर शक कर रहे हो।"

"ऐसा कुछ नहीं है। वो निश्चिंत है।"
"मुझे हैरानी होगी अगर गरुड़ वास्तव में बहक गया है तो।" रातुला उठते हुए बोला—"तवेरा से बात की इस बारे में?"
"मैं अभी तवेरा के पास ही जा रहा हूं। तवेरा का बुलावा आया है। बात करूंगा उससे। तुम गरुड़ के बारे में असल बात जानों और मुझे खबर दो। हो सकता है कि मेरी सोचें ही गलत हों।"
"जथूरा महान है।" रातुला ने कहा।
"उस जैसा दूसरा कोई नहीं।" पोतेबाबा ने हाथ उठाकर कहा।
रातुला बाहर निकल गया।

▭ ▭

पोतेबाबा तवेरा के महल में उसके कमरे में पहुंचा।
तवेरा को पहले ही पोतेबाबा के आने की खबर मिल चुकी थी।
"जथूरा महान है।" पोतेबाबा ने भीतर प्रवेश करके कहा—"उस जैसा दूसरा कोई नहीं।"
"मैं कब से आपका इंतजार कर रही थी।" तवेरा ने सामान्य स्वर में कहा।
"सब खैर तो है मेरी बच्ची?" पोतेबाबा बोला।
"मालूम पड़ा कि आप देवा और मिन्नो को ले आए हैं।"
"हां, मेरी बच्ची। देवा-मिन्नो जथूरा की जमीन पर आ पहुंचे हैं।"
"तो देवा-मिन्नो वो तिलिस्म तोड़ देंगे जो महाकाली ने उन दोनों के नाम पर बांधा है।"
"आशा तो यही है मेरी बच्ची।"
"मैंने महाकाली से बात की, परंतु वो पिताजी को आजाद करने को तैयार नहीं है।"
"वो सोबरा के एहसानों के तले दबी हुई है। इसलिए वो सोबरा के कहने पर, जथूरा को कैद में रखे हुए है। वो तेरी बात नहीं मानेगी। वो जथूरा को आजाद नहीं करेगी।" पोतेबाबा ने कहा।
"अगर मैं उसका साथ देने को तैयार हो जाऊं तो वो पिताजी को आजाद करने को कहती है।"
"वो झूठ कहती है।" पोतेबाबा ने सिर हिलाया।
"कैसे?" तवेरा की निगाह पोतेबाबा पर जा टिकी।
"तुम अगर उसकी ये बात मान जाओ तो वो कोई दूसरी समस्या खड़ी कर देगी। सोबरा की इजाजत के बिना वो जथूरा को कैद से आजाद नहीं करेगी। ये तो उसने यूं ही बहाना बना रखा है तुम्हारा।

ऐसा मेरा सोचना है। परंतु तुम उसे कभी भी हां मत कहना कि तुम उसके कामों में, उसका साथ दोगी।"

"मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं है।" तवेरा गम्भीर स्वर में बोली—"मैंने पिताजी से बात की है, वो कैद में बहुत परेशान हैं और फौरन आजाद होने की इच्छा रखते हैं।"

"इसी कोशिश में तो देवा और मिन्नो को यहां लाया गया है।"

"मैं देवा-मिन्नो के साथ रहना चाहूंगी।"

"क्यों?"

"क्योंकि मैं इस काम में उनकी सहायता कर सकती हूं। जादूगरनी महाकाली ने तरह-तरह के जाल बिछा रखे होंगे। मैं उन जालों से उन्हें बचा सकती हूं। तंत्र-मंत्र की विद्या में मैं पूरी तरह निपुण हूं।"

"ये तुमने ठीक कहा।"

"परंतु मन में आशंका है कि देवा-मिन्नो ने ये काम करने से इनकार कर दिया तो?"

"ये बात मुझ पर छोड़ दो। मैं सब ठीक कर लूंगा।"

"मुझे आपका ही सहारा है।"

"मैं अंत तक तेरे साथ हूं मेरी बच्ची।" पोतेबाबा ने कहा—"मैं गरुड़ के बारे में कुछ पूछना चाहता हूं।"

"पूछिए।"

"गरुड़ का झुकाव तुम्हारी तरफ है। मेरी उससे बात हुई है। वो तुमसे ब्याह करने की सोच रहा है।"

"उसका झुकाव और उसकी सारी सोच एकतरफा ही है।"

"तेरी तरफ से कोई बात नहीं है इस बारे में?"

"नहीं। मैंने तो कभी गरुड़ के बारे में सोचा भी नहीं।" तवेरा ने कहा—"कुछ होता तो मैं आपसे अवश्य कहती।"

"यही मैं जानना चाहता था।"

"मुझे पिताजी की आजादी की चिंता है।"

"मुझे तुमसे ज्यादा है। जब से सोबरा ने जथूरा को कैद किया है मेरे कंधों पर बोझ ज्यादा बढ़ गया है। मेरी सोचों को कुछ पल के लिए भी आराम नहीं मिलता। जथूरा आकर अपने काम संभाले तो मैं आराम करूं।"

"देवा-मिन्नो के महल में आ जाने पर मुझे खबर देना। मैं भी बातचीत में शामिल होऊंगी।"

"अवश्य मेरी बच्ची। देवा-मिन्नो के आते ही मैं तुम्हें खबर कर दूंगा।"

□ □

रातुला ने उस कमरे की तलाशी ली, जिसे गरुड़ इस्तेमाल करता था।

अलमारी में रखी वो किताब उसे मिली जिसके भीतर वो यंत्र छिपाकर रखा था।

उस यंत्र पर नजर पड़ते ही रातुला की आंखें सिकुड़ीं।

रातुला उस यंत्र को पहचानने की भूल नहीं कर सकता था। ऐसा यंत्र पहले भी जथूरा के दो सेवकों के पास से बरामद हो चुका था। जिन्होंने इस बात को स्वीकार किया था कि इस यंत्र के द्वारा वे सोबरा से बात करते हैं। उन्हें यहां की खबरें देते हैं।

तो क्या गरुड़ भी जथूरा की खबरें सोबरा को देता है?

गरुड़ क्या सोबरा का खबरी है?

'नहीं, ये नहीं हो सकता।' रातुला बड़बड़ा उठा।

परंतु उस यंत्र को वो झुठला भी नहीं सकता था।

रातुला ने यंत्र वाली किताब वैसे ही अलमारी में वापस रखी और अलमारी, फिर कमरा बंद करके बाहर निकल गया। उसका मस्तिष्क उलझा हुआ था।

गरुड़ सोबरा का खबरी था। जासूस था।

परंतु गरुड़ का रुतबा देखकर, ये बात विश्वास करने को मन नहीं कर रहा था।

रातुला पीछे वाले हॉल में पहुंचा।

पोतेबाबा वहां नहीं था। रातुला ने सेवक से कहा।

"पोतेबाबा को खबर भेजो कि मैं उससे मिलना चाहता हूं।"

सेवक चला गया।

रातुला उसी हॉल में रहा। हर पल उलझन और परेशानी में रहा।

पोतेबाबा का इंतजार करता रहा।

तीन घंटे बाद पोतेबाबा वहां पहुंचा।

"जथूरा महान है।" पोतेबाबा कह उठा।

"उस जैसा दूसरा कोई नहीं।" रातुला ने उठते हुए कहा।

पोतेबाबा की नजरें रातुला के चेहरे पर थीं।

"तुमने आने में बहुत देर लगा दी।" रातुला ने कहा।

"तवेरा से मिलने के बाद, कुछ कामों में व्यस्त हो गया था। फिर भी मैं जल्दी ही आ गया। तुम परेशान क्यों हो?"

"बात ही कुछ ऐसी है।"

"गरुड़ के बारे में?"

"हां।"

"कहो।" पोतेबाबा ने गहरी सांस ली।

"क्या तुम इस बात पर यकीन करोगे कि गरुड़ सोबरा का खबरी है।"

पोतेबाबा चौंका।

"यकीन नहीं हुआ?"

"अगर तुम कहोगे तो मैं अवश्य यकीन करूंगा।" पोतेबाबा ने गम्भीर स्वर में कहा।

रातुला ने पोतेबाबा को उस अलमारी में मौजूद किताब में छिपा रखे यंत्र के बारे में बताया।

सुनते ही पोतेबाबा कह उठा।

"इसमें कोई शक नहीं कि सोबरा के लोग ही वो यंत्र इस्तेमाल करते हैं।"

"इसका मतलब गरुड़, यहां की खबरें सोबरा को देता रहता है।" रातुला ने कहा।

पोतेबाबा बेहद गम्भीर दिखने लगा।

"शायद यकीन करने को मन नहीं कर रहा?" रातुला धीमे स्वर में कह उठा।

"मुझे यकीन आ गया है।"

"इतनी जल्दी...कैसे?"

"अब सोचता हूं कि हमारी चालें सोबरा को कैसे पता चल जाती हैं। क्यों वो हमें हरा देता है। स्पष्ट है कि गरुड़ ही उन चालों के बारे में सोबरा को बताता रहा है। जो बातें हम बड़ों के अलावा कोई नहीं जानता, वो सोबरा कैसे जान जाता है। मैं हमेशा परेशान होता था ये सोचकर परंतु आज मुझे जवाब मिल गया कि गड़बड़ कहां से हुई।"

"गरुड़ ने हमें बहुत बड़ा धोखा दिया।" रातुला बोला।

"यकीनन।" पोतेबाबा शांत और गम्भीर नजर आ रहा था।

दोनों के बीच चुप्पी रही। फिर रातुला ही बोला।

"क्या सोच रहे हो पोतेबाबा?"

"तुमने बहुत अच्छा काम कर दिया। सोबरा गरुड़ द्वारा बहुत बड़ा षड़यंत्र रच रहा है। सोबरा जथूरा की नगरी को अपने कब्जे में लेना चाहता है। तभी तो गरुड़ की नजर तवेरा पर है। यकीनन गरुड़ सोबरा के कहने पर चल रहा है। मैंने तो पहले ही कहा था कि गरुड़ में इतना हौसला नहीं कि वो तवेरा से ब्याह के बारे में सोच सके।"

"अब क्या किया जाए?"

पोतेबाबा ने रातुला को देखा और खामोशी से टहलने लगा।

रातुला पोतेबाबा को देखता रहा।

वहां खामोशी लम्बी होने लगी तो रातुला ने कहा।

"गरुड़ को बेहद सख्त सजा दी जानी चाहिए पोतेबाबा।"

पोतेबाबा ने रातुला को देखा।

"उसने जथूरा को धोखा दिया है। नगरी में इससे बड़ा जुर्म कोई दूसरा नहीं है। उसे सजा-ए-मौत दी जाए।"

पोतेबाबा बरबस ही मुस्करा पड़ा।

"मुस्करा क्यों रहे हो?" रातुला ने पूछा।

"गरुड़ को सजा-ए-मौत देने से हमें क्या फायदा?"

"फायदा?"

"हां। हमें वो ही काम करना चाहिए, जिससे कि हमें भी फायदा हो। जथूरा के हक में अच्छा हो।"

"मैं समझा नहीं।" रातुला ने उलझन-भरे स्वर में कहा—"तुम किस फायदे की बात कर रहे हो?"

"सोबरा गरुड़ को हथियार बनाकर फायदा उठाता रहा, अब हम भी थोड़ा-सा फायदा उठा लेते हैं।"

"कैसे?"

"गरुड़ को हम वो ही खबरें देंगे, जो हम सोबरा को बताना चाहेंगे।"

"ओह—समझा।" रातुला ने सिर हिलाया।

"गरुड़ से हमने बहुत धोखा खाया, कुछ धोखा गरुड़ को भी देना चाहिए। रही बात गरुड़ की सजा की तो वो हमारे हाथ में ही है। हम कभी भी गरुड़ को सोबरा का खबरी होने की सजा दे देंगे, परंतु सबसे पहले तुम एक काम करो रातुला।"

"क्या?"

"किसी को गरुड़ के उस कमरे में छिपा दो। हमें इस बात की पूरी तसल्ली कर लेनी चाहिए कि गरुड़ सोबरा को यहां की खबरें दे रहा था। जिसे वहां छिपाओ, उसे सब समझा देना।"

"मैं ऐसा ही करूंगा।"

"गरुड़ की असलियत जानकर मुझे दुख पहुंचा।" पोतेबाबा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"मुझे भी।" रातुला ने सिर हिलाया।

पोतेबाबा ठिठका। सोच रहा था वो।

"कैसी खबरें देंगे गरुड़ को कि वो सोबरा को बताए?"

"सोबरा गरुड़ के द्वारा, जथूरा की जमीन का मालिक बनना चाहता है। तभी तो सोबरा के कहने पर, गरुड़ तवेरा के करीब जाने की चेष्टा में है। उससे ब्याह करना चाहता है तो सबसे पहले हम ये बात तवेरा को बताकर कहेंगे कि वो भी गरुड़ के साथ प्यार का नाटक करे और जो खबरें देने को कहूं, वो उसे दे।"

"ये ठीक कहा।"

"सोबरा कभी नहीं चाहेगा कि जथूरा कैद से आजाद हो। इसलिए उसे गरुड़ से हमारे खिलाफ काम करवाना पड़े तो वो जरूर करवाएगा। परंतु गरुड़ द्वारा उसे गलत खबरें मिल रही होंगी तो सोबरा अवश्य मात खा जाएगा।" पोतेबाबा ने कठोर स्वर में कहा—"अब सोबरा वो ही सोचेगा, जो हम चाहेंगे। हमारी चालें सोबरा की सोचों को बदल देंगी।"

रातुला ने सिर हिलाया।

"परंतु मैं अपनी एक चाल गरुड़ को बता चुका हूं। वो गलत हुआ।"

"कैसी चाल?"

"मोमो जिन्न के बारे में। जो सोबरा की जमीन की तरफ जा रहा है। उसमें मोमो जिन्न का जीवन खतरे में पड़ जाएगा। सोबरा उसे कैद कर लेगा या मार देगा। जबकि मोमो जिन्न बेहद काबिल जिन्न है। उसे बचाना होगा।"

"कैसे?"

"वो मैं ठीक कर लूंगा।" पोतेबाबा ने सिर हिलाया—"तुम उस कमरे में किसी को छिपा दो कि जब गरुड़ सोबरा से उस यंत्र के द्वारा बात करे तो उसकी बातें सुनकर, उसके गद्दार होने का यकीन हमारा पूरी तरह विश्वास में बदल सके।"

"ये इंतजाम मैं अभी करता हूं।"

"शेष बातें फिर करेंगे।"

रातुला वहां से चला गया।

पोतेबाबा भी बाहर निकला और तेजी से एक तरफ बढ़ गया। उसके चेहरे पर सख्ती के भाव थे। माथे पर बल नजर आ रहे थे। सात-आठ मिनट चलने के बाद पोतेबाबा ने उस कमरे में प्रवेश किया, जहां बीस से ज्यादा कम्प्यूटर और स्क्रीनें चमक रही थीं। लाल वर्दी पहने जथूरा के सेवक हर तरफ व्यस्त नजर आ रहे थे।

पोतेबाबा कुर्सी पर बैठे एक सेवक के पास पहुंचा।

काम में व्यस्त सेवक उस पर नजर मारते ही कह उठा।

"जथूरा महान है।"

"उस जैसा कोई दूसरा नहीं।" पोतेबाबा ने कहा—"फौरन इस काम को करो। मोमो जिन्न का सॉफ्टवेयर चालू करो और उसमें मौजूद इंसानी इच्छाओं को हटा दो।"

"ओह! मोमो जिन्न में इंसानी इच्छाएं डाल दी गई थीं।" वो सेवक बोला।

"तब ऐसा करना जरूरी था। अब उन इच्छाओं को हटा देना जरूरी है।" पोतेबाबा ने कहा।

"मैं अभी इस काम पर लग जाता हूं।" सेवक बोला।

▭ ▭

मोमो जिन्न, लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा तेजी से आगे बढ़े जा रहे थे। जंगल खत्म होने को था। सामने खुश्क पहाड़ नजर आने लगे थे, जो कि धूप में तपते से लग रहे थे।

"इसी तरह चलता रहा तो मैं मर जाऊंगा।" लक्ष्मण दास ने कहा और वहीं नीचे बैठ गया।

मोमो जिन्न और सपन चड्ढा ठिठके। पलटे।

"थोड़ा सा और चल ले।" मोमो जिन्न प्यार से कह उठा।

"मेरी ये उम्र भाग-दौड़ की नहीं है।" लक्ष्मण दास हाथ हिलाकर बोला।

"बात समझ यार।" मोमो जिन्न ने खुशामद भरे स्वर में कहा—"सोबरा की जमीन पर पहुंचकर हम सुरक्षित हो जाएंगे। जथूरा के सेवकों ने हमारी स्थिति भांप ली तो, वो हमें सोबरा की जमीन पर नहीं पहुंचने देंगे। उन्हें पता चल गया कि मुझमें इंसानी इच्छाएं आ गई हैं तो वो मुझे मार देंगे।"

लक्ष्मण दास कुछ नहीं बोला।

"तू मेरा यार नहीं है।" मोमो जिन्न ने कहा।

"थकान से मेरी टांगें कांप रही हैं।" लक्ष्मण दास मरे स्वर में बोला—"गर्मी से जान निकली जा रही है।"

"मेरी खातिर, अपनी खातिर, सोबरा से कहकर मैं तुमको वापस तुम्हारी दुनिया में भिजवा दूंगा। यहां से उठो। आधे से ज्यादा रास्ता पार हो गया है। शाम तक हम सोबरा की जमीन पर होंगे।"

"मैं भी थक गया हूं।" सपन चड्ढा ने कहा और जमीन पर जा बैठा।

"तुम दोनों मुझे मुसीबत में डाल दोगे।" मोमो जिन्न मुंह बनाकर कह उठा—"मैं नहीं बचूंगा।"

"हमें अपने साथ लाना ही नहीं चाहिए था।" सपन चड्ढा ने कहा।

"तुम दोनों को साथ न लाता तो, फिर मेरा काम ही क्या था। वापस जाता तो वो मेरा परीक्षण करके, मेरे शरीर में आ चुकी इच्छाओं के बारे में जानते और मुझे मार देते। तुम दोनों के कारण ही तो...।"

"अब हमें आराम करने दो।"

"मैं तो नींद लूंगा।" लक्ष्मण दास सच में बहुत थका हुआ था।

"मेरे लिए तो मुसीबत खड़ी हो गई।" मोमो जिन्न ने आसपास नजरें घुमाईं—"ये दोनों बेवकूफ हैं, हालातों को समझते नहीं हैं कि जथूरा के सेवक हमारे लिए खतरा खड़ा कर देंगे।"

"देवराज चौहान, मोना चौधरी, बाकी लोग अब कहां होंगे?" सपन चड्ढा ने पूछा।

"मुझे क्या पता?"

"तुम जिन्न हो। पता कर सकते...।"

"मैं अपनी ताकतों का इस्तेमाल करूंगा तो उन्हें सिग्नल मिल जाएगा कि मैं किस दिशा में हूं। मुझे खामोश रहना होगा।"

"तुम कैसे अजीब जिन्न हो, जो जथूरा के सेवकों से डरते हो।"

"जथूरा का सेवक हूं मैं, मुझ पर अधिकार कर रखा है उसने। वो मेरा मालिक है। मुझे उससे डरना पड़ता है।"

लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा की नजरें मिलीं।

"ये बेकार का जिन्न है।"

"कैसा भी जिन्न है, हमें तो इसने फंसा दिया।"

"ऐसा मत सोचो। ऐसा मत कहो। मैं तुम दोनों का यार हूं। तुम्हारा भला कर रहा..."

"हमारा भला कर रहा है या अपना।" सपन चड्ढा ने तीखे स्वर में कहा।

"तुम दोनों मेरा विश्वास कभी नहीं करते। जबकि मैं तुम्हारे साथ कितने प्यार से पेश आता हूं। लामा जिन्न होता मेरी जगह तो अब तक तुम दोनों की हालत बिगाड़ चुका होता। मेरी शराफत का फायदा उठा...।"

"तू और शरीफ।" सपन चड्ढा ने बड़े तीखे स्वर में कहा—"तू—तो...।"

सपन चड्ढा के शब्द अधूरे ही रह गए।

उसने मोमो जिन्न के चेहरे के भाव बदलते देखे।

लक्ष्मण दास की निगाह भी उस पर टिक गई।

तभी मोमो जिन्न ने गहरी सांस ली और दोनों को देखा। अगले

ही पल उसकी गर्दन इस तरह टेढ़ी हो गई जैसे किसी की बात सुन रहा हो। आंखें बंद हो गई थीं इस दौरान उसकी।

"जथूरा के सेवकों की तरफ से इस हरामी को नया ऑर्डर मिल रहा होगा।" सपन चड्ढा बोला।

"मुझे तो भूख लग रही है।"

"मुझे भी, लेकिन यहां खाने को क्या मिलेगा?"

मोमो जिन्न उसी मुद्रा में समझने वाले ढंग में सिर हिला रहा था। फिर मोमो जिन्न सामान्य अवस्था में आ गया और उन्हें देखा।

"अब क्या कहा जथूरा के सेवकों ने?"

"तुम कौन होते हो पूछने वाले।" मोमो जिन्न तेज स्वर में बोला।

"क्या मतलब?"

"अपनी औकात में रहो।"

"तुम...तुम हमें औकात में रहने को कह रहे हो।" सपन चड्ढा के माथे पर बल पड़े।

"होश में रहो, जिन्न के ज्यादा मुंह नहीं लगते।"

"तुम पागल तो नहीं हो गए।"

"तुम घटिया जाति के मनुष्य, सर्वश्रेष्ठ जिन्न को पागल कहते हो।" मोमो जिन्न ने कठोर स्वर में कहा—"मैं तुम दोनों को अभी मिट्टी में मिला दूंगा। मेरे सामने जुबान मत चलाओ।"

लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा की नजरें मिलीं। चेहरे पर हैरानी थी।

"इसे क्या हो गया है?"

"पागल हो गया लगता है।"

मोमो जिन्न के होंठों से हुंकार निकली।

"जिन्न को पागल कहते हो। जबकि जिन्न कभी भी पागल नहीं होता।"

"तेरे को हो क्या गया है?"

"मैं...मुझमें।" मोमो जिन्न एकाएक नजरें चुराता कह उठा—"से इंसानी इच्छाएं निकल गई हैं।"

"तो तुम फिर से असली जिन्न बन गए।" लक्ष्मण दास हड़बड़ाया।

"असली-नकली क्या होता है।" मोमो जिन्न ने कठोर स्वर में कहा।

"यार तुम तो हमारे यार हो।"

"यार।" मोमो जिन्न के होंठों से हुंकार निकली—"लगता है तुम लोग शिष्टता भूल गए।"

"शिष्टता?"

लक्ष्मण दास, सपन चड्ढा ने एक-दूसरे को देखा।

"ये अब वो नहीं रहा।"

"बुरे फंसे।"

"अब हमारा क्या होगा?"

"क्यों मोमो जिन्न। अब हमारा क्या होगा?" लक्ष्मण दास ने मोमो जिन्न से पूछा।

"तुम दोनों मेरे गुलाम हो।"

"वो दोस्ती वाली बात खत्म हो गई?"

"जिन्न किसी का दोस्त नहीं होता। जिन्न या तो मालिक होता है या गुलाम होता है।"

"हमारा क्या होगा?"

"इस बारे में जथूरा के सेवक हुक्म देंगे।"

"हममें जो पहले बात हुई थी, वो सारी खत्म?"

"तब की बात दूसरी थी। तब मेरे में किसी ने इंसानी इच्छाएं डाल दी थीं।"

"अब उन इच्छाओं को क्या हुआ?"

"वो निकाल ली गईं।"

"कुछ खाना पसंद करोगे?" सपन चड्ढा एकाएक कह उठा।

"तमीज से बात करो। जिन्न कभी भी कुछ नहीं खाते। तुम दोनों बहुत बदतमीज हो गए हो।" मोमो जिन्न ने गुस्से से कहा।

"अभी तो तू हमें यार-यार कह रहा था।"

"तब मैं भटक गया था। लेकिन अब ठीक है।"

"तू तो ठीक है, लेकिन हमारा क्या होगा?"

"हमें यहां से चलना होगा।"

"कहां?"

"महाकाली की पहाड़ी की तरफ।"

"महाकाली—ये कौन है?"

"जादूगरनी है। बहुत ताकतवर है।"

"तो ह...हमें वहां क्यों ले जा रहे हैं?"

"मैं नहीं जानता। मुझे जथूरा के सेवकों की तरफ से हुक्म मिला है, उधर जाने का।"

"लक्ष्मण! ये तो हमें जादूगरनी की पहाड़ी की तरफ ले जा रहा है। हम बुरे मरेंगे।"

"ये कब हमारा पीछा छोड़ेगा?"

लक्ष्मण दास ने मोमो जिन्न से कहा।

"जथूरा के सेवकों ने तुम्हें महाकाली पहाड़ी की तरफ जाने को कहा है?"

"हां।"

"तो तुम जाओ, हमें क्यों ले...।"

"तुम दोनों मेरे गुलाम हो। तुम्हें भी मेरे साथ चलना होगा, वरना भटक जाओगे।"

"अब सोबरा के पास नहीं जाना तुम्हें?"

"सोबरा के पास मेरा क्या काम।" मोमो जिन्न ने कठोर स्वर में कहा।

"अभी तो तुम वहां की तरफ जा रहे थे।"

"तब इंसानी इच्छाओं ने मुझे भटका दिया था। लेकिन अब मैं ठीक हो चुका हूं।"

"तू तो बात-बात पर रंग बदलता है।"

"खबरदार, ठीक से बात करो। मैं जिन्न हूं। तुम दोनों का मालिक।"

लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा की नजरें मिलीं।

"सुना तूने।"

"ये तो जलेबी-रबड़ी खाई सब भूल गया।"

"यारी की बड़ी-बड़ी कसमें खाता था, वो भी भूल गया।"

"कहता था जिन्न कभी झूठ नहीं बोलता। लेकिन ये तो मुझे सच बोलता दिखता ही नहीं।"

"तुम दोनों को शिष्टता सिखानी होगी।" मोमो जिन्न बोला।

"तेरे किए-धरे पर ही तो बात कर रहे हैं कि...।"

"वो बीती बातें हैं, नई बातें करो।" मोमो जिन्न ऊंचे स्वर में बोला—"उठो यहां से, हमें महाकाली की पहाड़ी की...।"

"वहां हमारा क्या काम। वो तो जादूगरनी है। हमें मार देगी।"

"काम वहां जाकर पता चलेगा। बाकी का आदेश बाद में मिलेगा।"

"तुझमें जब इंसानी इच्छाएं आ गई थीं तो हमने तेरा कितना साथ दिया। अगर तब जथूरा के सेवकों को पता चल जाता तो वो तुम्हारी जान ले लेते। तब हमने तुम्हें बचाया।" लक्ष्मण दास ने कहा।

"हमने तेरे को खाने को भी दिया तब।"

"खामोश रहो। जिन्न से खाने-पीने की बातें मत करो। वो मेरा बुरा वक्त था। अब तुम लोग मुझसे शिष्टता से पेश आओ। मैं जथूरा का सेवक हूं। ये बात हमेशा ध्यान रखो।"

"क्या मुसीबत है?"

"मुझे भूख लगी है।" लक्ष्मण दास कह उठा।
"तुम इंसानों की यही समस्या है कि बात-बात पर खाने को कहते हो।"
"भूख लगती है तो कहेंगे नहीं क्या।"
"अब चलो यहां से, रास्ते में फल के पेड़ मिलेंगे तो खा लेना।" मोमो जिन्न हुक्म देने वाले स्वर में बोला।
लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा उठ खड़े हुए।
"चल सपन।"
"वो जादूगरनी...।"
"बोलो, जथूरा महान है।" मोमो जिन्न कह उठा।
"लेकिन...।"
"बोलो।" मोमो जिन्न कठोर स्वर में कह उठा।
"जथूरा महान है।" दोनों एक साथ कह उठे।
"याद रखो, जो बात कहूं वो एक ही बार में मान लिया करो, वरना कपड़े उतरवाकर, नंगा करके घुमाऊंगा।"
'हरामी कहीं का।' सपन चड्ढा बड़बड़ा उठा।
"क्या कहा?" मोमो जिन्न ने हुंकार भरी।
"जथूरा महान है।"
"हां, ऐसे ही बोला करो। जथूरा के अच्छे सेवक बनो। तरक्की करोगे।"

▭ ▭

नगरी की चारदीवारी दिखने लगी थी।
"कमला रानी।" भौरी का स्वर कानों में पड़ा—"ये ही है जथूरा की नगरी।"
"यहां तो बड़े-बड़े महल बने दिखाई दे रहे हैं।"
"हां। ये तो एक नगरी है ऐसी कई नगरियां हैं जथूरा की, जहां उसके काम होते हैं।"
"वो कैसी जगह है?" मखानी ने कमला रानी से पूछा।
"जथूरा की नगरी है, वहीं पर हमें जाना है।"
सब तेजी से आगे बढ़ते जा रहे थे।
सूर्य पश्चिम की तरफ खिसक चुका था।
"छोरे। यो तो बोत शानदारो जगहो लागे हो।" बांकेलाल राठौर कह उठा।
"येई जथूरा की नगरी होईला बाप।"
"तंम पैले इधर आयो हो?"
"नेई बाप।"

"फिर थारो कैसो पतो हौवे कि यो जथूरा की नगरी हौवे।"
"आपुन का दिल कहेला बाप।"
"ये कौन-सी जगह है?" नगीना ने चलते हुए ऊंचे स्वर में पूछा।
"जथूरा की नगरी है ये। हमें यहीं जाना है।" मखानी ने कहा।
सब पसीने से भीगे हुए थे। एक पल के लिए भी वो रुके नहीं थे।
पारसनाथ मोना चौधरी से बोला।
"यहां हमारे लिए खतरा हो सकता है।"
"सम्भव है।" मोना चौधरी गम्भीर स्वर में बोली—"जथूरा ने कभी नहीं चाहा कि हम यहां तक आएं।"
"तो अब क्या करना चाहिए हमें?"
"वहां जथूरा की हुकूमत है। हमारी एक नहीं चलने वाली।" महाजन ने कहा।
उसकी बातें सुन रही नगीना कह उठी।
"जथूरा ही तो हमें यहां तक लाया है। फिर उससे डर कैसा।"
"जथूरा लाया है हमें यहां?" महाजन ने नगीना को देखा।
"हां। मोमो जिन्न उसका गुलाम है। वो पनडुब्बी जथूरा की थी। हम खुद तो नहीं आ पहुंचे थे पनडुब्बी में।"
"जथूरा से डरने की जरूरत नहीं है।" दो कदम आगे चलता देवराज चौहान कह उठा।
"हमारे वहां पहुंचते ही वो हमें कैद कर सकता है।"
"नाहक ही चिंता मत करो। हम इस वक्त जथूरा के अधिकार में ही हैं, परंतु अब तक उसने कुछ नहीं किया हमारा।" देवराज चौहान ने कहा—"कमला रानी और मखानी हमारे मार्गदर्शक बने हुए हैं। ये दोनों जथूरा के कालचक्र के हिस्से हैं। यानी कि जो कुछ भी हो रहा है, जथूरा की मर्जी से हो रहा है।"
"यकीन है तुम्हें?"
"बहुत हद तक।"
कुछ देर बाद ही वो सब नगरी की दीवार के पास जा पहुंचे।
भौरी कमला रानी के कानों में, रास्ते के बारे में बताती जा रही थी।
कमला रानी और मखानी एक दीवार के पास जाकर रुके। वहां दो पहरेदार मौजूद थे और छोटा-सा दरवाजा था, जो कि बंद था। पहरेदारों ने बिना कुछ पूछे, उन्हें देखते ही दरवाजा खोल दिया।
"आप लोग भीतर जा सकते हैं।" एक पहरेदार बोला।

"म्हारे को तो लागे हो कि जथूरो म्हारी खूब इज्जत करो हो।"
"ज्यादा इज्जत भी ठीक नेई होईला बाप।"
"काये को?"
"औकात की पोल खुलेला तब।"
"छोरे, म्हारी औकातो पूरो फिट हौवो। म्हारी कोई पोलो न हौवे।"
सब उस छोटे-से दरवाजे से, झुकते हुए भीतर प्रवेश कर गए।
सामने ही नगरी की शाम मौजूद थी।
लोग सड़कों पर आ-जा रहे थे।
कहीं घोड़ागाड़ी, कहीं बैलगाड़ी, ठेलागाड़ी। हर कोई काम में व्यस्त था।
लाल वर्दी में सैनिक आते-जाते दिखाई दे रहे थे।
"पूरो शहर बसा रखो हो जथूरो ने।"
सबने ठिठककर हर तरफ नजरें घुमाईं।
देवराज चौहान कमला रानी और मखानी के पास जाकर बोला।
"हमने कहां जाना है?"
"उधर, वो जो लाल महल दिखाई दे रहा है।" कमला रानी ने कहा।
"वहां जथूरा है?"
"पता नहीं, लेकिन तुम लोगों को वहीं ले आने को कहा गया है।"
"किसने कहा है?"
"भौरी ने।" कमला रानी के होंठों से निकला।
"भौरी कौन...?"
"ज्यादा सवाल मत पूछो। हमारे पीछे चले आओ।"
कमला रानी और मखानी आगे बढ़ गए।
बाकी उसके पीछे थे।
नगीना पास आकर कह उठी।
"क्या हम इनके पीछे चलकर ठीक कर रहे हैं?"
"अब ठीक गलत का सवाल नहीं रहा। हम जथूरा की नगरी में आ पहुंचे हैं।" देवराज चौहान ने कहा।
"क्या उसका कुछ याद आया जो अपनी आजादी के लिए तड़प रहा है।"
"नहीं। मैं नहीं समझ पाया कि वो कौन है।"
अब वो सड़क के किनारे-किनारे आगे बढ़ने लगे थे।
उसी पल मोना चौधरी चलते-चलते पास आई और बोली।
"क्या पता हम खतरे में फंसने जा रहे हैं।"
"मुझे ऐसा नहीं लगता।" देवराज चौहान ने कहा—"जथूरा हमारा बुरा चाहता तो हमारे लिए अपने सैनिक भेज चुका होता।"

"लेकिन जथूरा ने अभी तक अपना दोस्ताना भी तो नहीं दिखाया।"

"हमारे सामने इंतजार करने और देखने के अलावा और कोई रास्ता नहीं है।"

"जगमोहन यहां आ गया होगा?" नगीना ने पूछा।

"जल्दी ही हमें सब कुछ पता चल जाएगा। मुझे लगता है जथूरा ने हमें पूर्वजन्म में बुलाया है।"

"लेकिन वो तो हमें पूर्वजन्म में आने से रोक रहा था।" मोना चौधरी कह उठी।

देवराज चौहान ने जवाब में कुछ नहीं कहा।

"कमला रानी।" साथ चलता मखानी कह उठा—"हम महल में जाते ही एकांत ढूंढेंगे।"

"क्यों?"

"प्यार जो करना है। मैंने बहुत सब्र कर लिया।"

"शौहरी से पूछ इस बारे में।"

"उससे थोड़े न प्यार करना है, जो उससे पूछूं।"

"एकांत तो वो ही दिलवाएगा।"

"तू भौरी से बात कर इस बारे में।"

"वो बहुत व्यस्त है। इधर-उधर की बात तो सुनने को भी राजी नहीं।"

मखानी ने धीमे से शौहरी को पुकारा।

"क्या है?" शौहरी की फुसफुसाहट कानों में पड़ी।

"मुझे और कमला रानी को एकांत चाहिए।"

"तेरे को कोई दूसरी बात नहीं सूझती?" शौहरी ने डांट-भरे स्वर में कहा।

"दूसरी बात तो तब सूझे जब ये बात पूरी हो। जब भी करता हूं, तू टाल देता है।"

"अभी बात मत कर।"

"क्यों?"

"यहां बहुत बुरा हुआ पड़ा है। मैंने तो अब जाना, यहां आकर।"

"क्या हुआ है?"

"जथूरा नगरी में नहीं है, वो कहीं पर कैद है।"

"अच्छा, तेरे को पहले क्यों नहीं पता थी ये बात?"

"मैं कालचक्र से वास्ता रखता हूं। नगरी में मेरा आना-जाना ही कहां होता है। अब आया तो पता चला।"

"जथूरा को किसने कैद किया?"

शौहरी की आवाज नहीं आई।
"जवाब दे।" मखानी बोला।
"महल में पहुंचकर जवाब मिल जाएगा।"
"तू क्यों नहीं बताता?"
"मैं व्यस्त हूं। मुझे जाना होगा।"
"इतनी बातें कर रहा है तो, इस मामूली-सी बात का जवाब नहीं दे सकता।"
"कोई और बात कर।"
"मेरे पास ये ही बात है कि मैंने कमला रानी से प्यार करना है। बहुत मन कर रहा है कि—प्यार करूं।"
शौहरी की तरफ से आवाज नहीं आई।
"शौहरी।"
कोई जवाब नहीं।
"साला। मेरे काम की बात सुनते ही खिसक गया।"
"क्या हुआ?" कमला रानी ने पूछा।
"मेरी बात की कोई परवाह ही नहीं कर रहा।" मखानी मुंह बनाकर कह उठा।
कमला रानी मुस्करा पड़ी।
"तू भी दांत फाड़ती है।"
"मैं तो सोच रही हूं कि जब जवानी में तेरे को औरत नहीं मिलती होगी, तब तेरा कैसा हाल होता होगा।"
"तब की बात और थी।"
"और क्यों?"
"तब मैं हाथ से काम चला लेता था।" मखानी ने गहरी सांस ली।
"तो अब भी...।"
"अब पुराना खिलाड़ी हो गया हूं। अब हाथों वाली बात खत्म। अब तो औरत के बिना काम नहीं संवरता।"
"एक बात कहूं तेरे से?"
"बोल।"
"दुनिया में ये काम सबसे बेकार का होता है। बिल्कुल फुर्सत का।"
"ये तू कहती है।"
"क्यों, मैं क्यों नहीं कह सकती।"
"एक नम्बर की हरामी है तू। तेरे मुंह से ये बात जंचती नहीं।" मखानी ने चिढ़कर कहा—"तेरे को ये सब नहीं पसंद तो ठीक है, मैं कोई दूसरी ढूंढ लूंगा।"

"मेरे बिना तेरा मन लग जाएगा?"

"क्यों नहीं, मुझे तो औरत चाहिए, तू नहीं तो दूसरी—तीसरी सही।"

"मतलबी है तू।"

"कुछ भी कह ले। मैं परवाह नहीं करता। यहां सूखा पड़ा हूं और सबको बातें सूझ रही हैं।"

वे सब लाल महल के करीब आ पहुंचे थे।

"इसे यहां बड़ा महल कहा जाता है।" कमला रानी सबको सुनाती कह उठी।

"यहां कोई हम पर ध्यान क्यों नहीं दे रहा?" नगीना ने पूछा।

"जथूरा की नगरी में कोई, किसी पर ध्यान नहीं देता, यहां कामों को महत्त्व दिया जाता है।" कमला रानी बोली।

"हमारे स्वागत के लिए भी कोई नहीं है।" महाजन बोला—"क्या जथूरा को पता है कि हम आ रहे हैं।"

"सबको, सब कुछ पता है। महल के भीतर आप सबका इंतजार हो रहा है।"

"अजीब बात है।"

कमला रानी और मखानी महल की सीढ़ियां चढ़ने लगे।

बाकी सब उनके पीछे थे।

अगल-बगल से लाल वर्दी में जथूरा के सेवक आ जा रहे थे, परंतु उनसे जैसे किसी को कोई मतलब ही नहीं था। सब अपने कामों में व्यस्त थे।

महल के भीतर पहुंचे वे।

सजावट से भरपूर महल था वो। सबकी नजरें घूमने लगीं महल में।

"मेरे पीछे आते रहो।" कमला रानी बोली—"हमें महल के बीच वाले हॉल में पहुंचना है।"

कमला रानी और मखानी के पीछे वे सब एक राहदारी में आगे बढ़ते चले गए।

महल का वैभव देखते ही बनता था।

"म्हारे को समझ न आवे कि जथूरो इतनो बड़ो महल का, का करो हो?"

"आराम करेला वो।"

"कित्ता भी आराम करो हो, पर ये महल तो बोत बड़ो हौवे। जथूरा का साइज भी बोत बड़ो हौवो?"

"वो छोटा होईला।"

"म्हारे को महलो जंचो हो।"

मखानी कमला रानी के कान में बोला।

"यहां हमारा काम बन जाएगा।" वो खुश था।

"काम-कैसा काम मखानी?"

"वो ही एकांत वाला, इतना बड़ा महल है, हमें प्यार करने की जगह मिल जाएगी।"

"देखते हैं।" कमला रानी की नजरें महल में दौड़ रही थीं।

"एक चुम्मी दे दे।"

"नहीं। बिल्कुल नहीं।" कमला रानी ने सख्त विरोध भरे स्वर में कहा।

मखानी ने फुर्ती से कमला रानी की चुम्मी ली और मुस्कराकर बोला।

"मैं भूल गया था कि औरत से कोई चीज मांगते नहीं। ले लेते हैं।"

"अब तू समझदार हो गया है।" कमला रानी बोली।

मखानी कुछ कहने लगा कि पीछे से बांकेलाल राठौर पास आया।

"तन्ने म्हारे सामने इसकी इज्जतो लूटने की कोशिश करो हो।"

"क्या बकवास करता है।" मखानी मुंह बनाकर कह उठा।

"अंम झूठो बोल्लो का?" बांकेलाल राठौर ने उसकी गर्दन थाम ली।

"ये क्या कर रहे हो।" कमला रानी कह उठी।

"थारी इज्जतो पर हाथ डालो यो।"

"मेरे से पूछ कर ही किया है।"

"थारी रजामंदी हौवे?"

"हां।"

बांकेलाल राठौर ने मखानी की गर्दन छोड़ दी।

"का जमाना आ गयो हो। औरत खुदो बोल्लो कि म्हारी इज्जतो लूटो।"

"बाप, उनका टांका फिट होईला है।"

"ठीको, पर म्हारे सामणो तो यो सबो न करो हो। म्हारे को गुरदासपुरो वाली याद आ जायो हो। वो म्हारे से कितनो प्यार करो हो। लस्सी में मक्खनो का गोला डाल के दिया हो, परो।"

"पर क्या बाप?"

"वो दूसरों से ब्याह कर लयो हो। म्हारे से शादी करने को, उसका बापो न मानो हो।"

कमला रानी और मखानी ने राहदारी से लगते एक दरवाजे के

भीतर प्रवेश किया तो पीछे आते सब भीतर आ पहुंचे और ठिठक गए। ये बहुत बड़ा हॉल था। बैठने और आराम करने का पूरा इंतजाम था। लाइटें रोशन थीं। वहां की साज-सज्जा देखते ही बनती थी। फर्श पर कालीन, छत पर चार फानूस लटक रहे थे। दीवारों पर तरह-तरह की पेंटिंग्स थीं। हर चीज बहुत ही सोच-समझकर लगाई और रखी गई थी।

कमला रानी ऊंचे स्वर में कह उठी।

"आप सब यहां आराम करो। उधर नहाने का तालाब है। उस रास्ते पर। जब तक आप लोग नहा-धोकर ताजे होंगे तब तक आपके खाने-पीने का सामान आ जाएगा।"

"मैं किसी से बात करना चाहता हूं।" देवराज चौहान बोला।

"खाने के बाद, बात भी हो जाएगी।"

"मैं जथूरा से मिलना चाहती हूं।" मोना चौधरी ने कहा।

"सब हो जाएगा। परंतु कुछ देर आपको इंतजार करना होगा।" कमला रानी बोली।

फिर कोई आराम करने लगा तो कोई नहाने चल दिया।

परंतु हर कोई जैसे उतावला था, किसी से बात करने के लिए।

▭ ▭

पोतेबाबा एक कमरे में टहल रहा था। चेहरे पर सोच और गम्भीरता के भाव नजर आ रहे थे।

तभी कदमों की आहटें कानों में पड़ीं। पोतेबाबा ठिठककर दरवाजे की तरफ देखने लगा।

तवेरा ने भीतर प्रवेश किया।

पोतेबाबा का सिर हिला उसे देखकर।

"आपने बुलाया पोतेबाबा?"

"हां, मेरी बच्ची। बैठ जाओ।"

तवेरा आगे बढ़ी और कुर्सी पर जा बैठी। वो सफेद लिबास पहने थी, जिस पर सुनहरी रंग की किनारी लगी हुई थी। चुनरी भी ऐसी ही थी। इस लिबास में वो और भी खूबसूरत लग रही थी।

"मेरी बच्ची।" पोतेबाबा ने उसके करीब ही ठिठककर कहा—"गरुड़ के बारे में मैं तुम्हें समझा चुका हूं कि वो यहां की बातें सोबरा को बताता है। उसके पास यंत्र है, जिससे वो सोबरा से बात करता है।"

"आप मुझे सारी बात बता चुके हैं।" तवेरा ने गम्भीर स्वर में कहा—"आपने मुझसे कहा कि गरुड़ को गलत बातें बताकर उसे भटकाना है। ताकि वो सोबरा को गलत खबरें दे सके।"

"ठीक समझीं तुम।" पोतेबाबा बोला—"गरुड़ तुमसे ब्याह करने के सपने देख रहा है। उसकी सोचों के पीछे सोबरा की चाल है। सोबरा गरुड़ के द्वारा जथूरा की हर चीज का मालिक बन जाना चाहता है।"

"गरुड़ कब से सोबरा के साथ है?"

"इसका जवाब मेरे पास नहीं है।" पोतेबाबा ने कहा—"गरुड़ बहुत चालाक है, क्योंकि मुझे कभी भी उस पर जरा भी शक नहीं हुआ। परंतु उसकी चालाकी ज्यादा देर नहीं चल सकती थी। बात कभी तो खुलनी ही थी।"

तवेरा की निगाह पोतेबाबा पर रही।

सोचों में डूबा पोतेबाबा कह रहा था।

"गरुड़ तुम्हारे करीब आना चाहता है। तुम भी उसके पास आने का नाटक करो और उसे गलत खबर देकर सोबरा को भटका दो।"

तवेरा ने सहमति से सिर हिलाया। फिर बोली।

"मैं ऐसा ही करूंगी। देवा-मिन्नो कब तक...।"

"वो महल में आ चुके हैं। कुछ ही देर में हम उनसे मिलने जा रहे हैं।" पोतेबाबा ने तवेरा को देखा।

"मैं उनके साथ जाऊंगी पोतेबाबा।"

"जैसा तुम्हारा मन चाहे मेरी बच्ची।"

"मैं गरुड़ को भी अपने साथ ही ले जाऊंगी।" तवेरा ने कहा।

पोतेबाबा ने तवेरा को देखा।

"लेकिन ये जरूरी है कि गरुड़ को हर वक्त बहकाते रहना।" पोतेबाबा ने सिर हिलाया—"वो साथ रहेगा, तो ताजा हालातों की जानकारी सोबरा को देता रहेगा। मेरे खयाल में उसे इस मौके से दूर रखना ही ठीक होगा।"

तवेरा के चेहरे पर जहरीली मुस्कान नाच उठी।

"मुझ पर भरोसा रखें। मैं गरुड़ को संभाल लूंगी। परंतु मैं ये जानना चाहती हूं कि आप गरुड़ को कैद क्यों नहीं कर लेते।"

"गरुड़ को कैद करने का मतलब है, सोबरा को सतर्क करना। जबकि इस वक्त जरूरी काम है, जथूरा को महाकाली की कैद से आजाद कराना। गरुड़ को तो हम कभी भी सजा दे सकते हैं। सोबरा को सब कुछ ठीक लगेगा तो वो लापरवाह रहेगा। जो कि हमारे लिए फायदे वाली बात होगी।"

"सोबरा सावधान हो चुका होगा। उसे खबर मिल चुकी होगी कि देवा-मिन्नो नगरी में पहुंच गए हैं। उसने महाकाली को और भी कस दिया होगा कि जथूरा पर सख्ती कर दे।"

पोतेबाबा कुछ कहने लगा कि तभी रातुला और गरुड़ दरवाजे पर आ पहुंचे।
पोतेबाबा और तवेरा ने उन्हें देखा। गरुड़ उसी पल कह उठा।
"पता चला कि देवा और मिन्नो आ गए हैं?"
"हां।" पोतेबाबा ने शांत स्वर में कहा—"लेकिन तुम दोनों इकट्ठे कैसे आ गए?"
"पोतेबाबा।" रातुला मुस्कराकर बोला—"मैं इधर ही आ रहा था कि गरुड़ भी इधर आता मिल गया।"
"चलो।" पोतेबाबा बोला—"हम देवा और मिन्नो के पास जाने ही वाले थे।"
फिर चारों एक साथ राहदारी में आगे बढ़ गए।
चलते-चलते तवेरा दो कदम पीछे हो गई तो गरुड़ भी चाल धीमी करके, उसके साथ चलने लगा।
"मैं तुम्हारे पास दिन में आया था।" गरुड़ बेहद मीठे स्वर में बोला।
तवेरा मुस्कराई। उसे देखा, दुपट्टा ठीक किया।
"मैं व्यस्त थी तब। कोई काम था?"
"सच बात तो ये है कि मैं सिर्फ तुम्हें देखने आया था।" गरुड़ बोला।
"मुझे देखने?" मुस्कराई तवेरा।
"हां।" गरुड़ ने चलते-चलते गहरी सांस ली—"तुम्हें देखे देर हो जाए तो मन बेचैन हो उठता है।"
"खूब।" तवेरा होले से हंसी—"तुम मजाक भी करते हो।"
"ये मजाक नहीं, सच है तवेरा। तुम मुझे अच्छी लगती हो।" गरुड़ ने फौरन कहा।
तवेरा कुछ नहीं बोली। मुस्कराती रही। चलती रही।
"मैं तुम्हारे पिता की तरफ से चिंतित हूं कि वो कैद में...।"
"मैं चिंतित नहीं हूं अपने पिता की कैद को लेकर।" तवेरा ने लापरवाही से कहा।
"ये तुम क्या कह रही हो, सब ही चिंतित हैं जथूरा की कैद को लेकर। तुम भी तो...।"
"वो सब दिखावा है।"
"क्या मतलब?"
"पिता की कैद के बाद मुझे आजादी मिल गई है।" तवेरा ने कहा—"अगर वो वापस आ गए तो मेरी आजादी छिन जाएगी।"
गरुड़ पल-भर के लिए हड़बड़ाया फिर कह उठा।

"वो तुम्हारे पिता हैं तवेरा।"

"अवश्य हैं, लेकिन अब मैं पिता की सब नगरियों की मालकिन बन गई हूं। पिता के पास होते हुए ये सम्भव नहीं था।" तवेरा का स्वर धीमा और होंठों पर मुस्कान थी—"परंतु दूसरों को दिखाने के लिए चिंतित होना पड़ता है।"

"तुम्हारी बातों से तो मैं परेशान हो उठा हूं।"

"क्यों?"

"कुछ कहते नहीं बन पा रहा। तुम्हें ऐसा नहीं कहना चाहिए तवेरा।" गरुड़ कुछ उलझन में था।

"अब मैं अपनी सोचों को हकीकत का जामा पहनाने के लिए स्वतंत्र हूं।" तवेरा ने गहरी सांस लेकर कहा—"अब मैं ब्याह करूंगी, शानदार जिंदगी बिताऊंगी और...।"

"किससे ब्याह करोगी?"

"मिल जाएगा मेरा राजकुमार।" तवेरा ने ठंडी आह भरी।

"देवा-मिन्नो आ चुके हैं, वो...।"

"वो महाकाली का मुकाबला नहीं कर सकते।" तवेरा बोली—"वो साधारण इंसान हैं और महाकाली तंत्र-मंत्र की ज्ञाता। महाकाली के सामने देवा-मिन्नो की बिसात ही क्या।"

गरुड़ बहुत बातें करना चाहता था, परंतु तब तक उस हॉल में जा पहुंचे, जहां वे सब मौजूद थे।

▭ ▭

"पोतेबाबा।" देवराज चौहान ने पोतेबाबा को भीतर प्रवेश करते देखा तो उसके होंठों से निकला।

"पहचान लिया तुमने देवा।" पोतेबाबा मुस्कराया।

"मन्ने भी थारे को पैचान लियो। तन्ने म्हारे को बोत जोरो से फेंको हो, बंगलो में।"

पोतेबाबा की मुस्कराती निगाह बारी-बारी सब पर गई।

"तुम लोगों को यहां देखकर मुझे सुख महसूस हुआ।" पोतेबाबा बोला।

तभी मखानी जल्दी-से आगे बढ़ा और पोतेबाबा से कह उठा।

"तुमने मुझे पहचाना—मैं मखानी हूं।"

"कालचक्र से आए हो तुम।"

"नहीं, मुझे शौहरी लाया है यहां।"

"एक ही बात है।" पोतेबाबा बोला—"मुझसे क्या चाहते हो?"

"एक कमरा।"

"कमरा?"

"हां।" मखानी ने हाथ से इशारा किया तो कमला रानी पास आ पहुंची—"मुझे और कमला रानी को चाहिए।"

"क्यों?"

"प्यार करना है हमने। क्यों कमला रानी?"

कमला रानी ने सहमति में सिर हिलाया।

"तो ये बात है।" पोतेबाबा बोला—"काम खत्म हो गया तुम्हारा, जो फुर्सत की बात कर रहे हो।"

"काम, वो तो खत्म हो गया। देवा-मिन्नो, सबको यहां ले आए।"

"शौहरी से पूछा कि काम खत्म हो गया?"

"नहीं पूछा।"

"उससे पूछो, फिर मुझसे बात करो।"

"शौहरी।" उसी पल मखानी ने पुकारा।

"क्या है?" कानों में शौहरी की फुसफुसाहट पड़ी।

"मेरा और कमला रानी का काम पूरा हो गया न?"

"नहीं। अभी बहुत कुछ बाकी है। तुम पोतेबाबा से कमरे की मांग क्यों कर रहे हो?"

"मुझे कमरा चाहिए।" मखानी ने पांव पटके—"कमला रानी से प्यार करना है मैंने।"

"अभी नहीं।"

"तो कब?"

"काम के बाद।"

"मेरे से अब और नहीं सहा जाता है। मैं...।"

"अगर तुमने मेरी बात नहीं मानी तो मैं तुम्हें छोड़कर चला जाऊंगा।" शौहरी की आवाज कानों में पड़ी—"तब तुम मर जाओगे।"

"ये ज्यादती है।"

"अभी जो कहता हूं, वो ही करो। बाकी बातों का मौका भी मिलेगा।"

"कब मिलेगा। जब मैं मर जाऊंगा।"

"अब तुम मर नहीं सकते। क्योंकि कालचक्र ने तुम्हें स्वीकार कर लिया है।"

मखानी ने मुंह लटकाकर कमला रानी को देखा।

"क्या हुआ मखानी?" कमला रानी ने प्यार से पूछा।

"शौहरी इनकार करता है। कहता है अभी काम बाकी है।"

"दिल छोटा मत...।"

"दिल? मेरा तो सब कुछ छोटा हो गया है। मैंने सोचा कि यहां हमें प्यार करने का मौका मिलेगा, परंतु...।"

तभी कमला रानी मखानी के कान के पास मुंह ले जाकर कुछ बोली।

उसी पल मखानी का लटका चेहरा खुशी से खिल उठा। वो बोला।

"सच?"

"कसम से।"

उसके बाद मखानी की नाराजगी जैसे हवा में धुल गई।

पोतेबाबा ने मुस्कराती नजर वहां से हटाई और सबको देखा।

"तुम कह रहे थे कि हमें यहां देखकर तुम्हें सुख मिला।" देवराज चौहान बोला।

"हां।" पोतेबाबा बराबर मुस्करा रहा था।

"लेकिन तुम तो हमें यहां आने से रोकना चाहते थे।" देवराज चौहान ने कहा।

"मेरा ऐसा इरादा कभी नहीं रहा।" पोतेबाबा मुस्कराता रहा।

देवराज चौहान की आंखें सिकुड़ीं।

"यो झूठो बोल्ले हो। तंम ही म्हारे को रोको हो, पूर्वजन्म में आने के वास्तो।"

पोतेबाबा मुस्कराता रहा।

"ये सच कह रहे हैं?" मोना चौधरी कह उठी।

"हां मिन्नो, ये ठीक कह रहे हैं कि मैंने इन्हें रोका, परंतु वो रोकना, झूठ था। सच तो ये था कि मैं तुम सबको यहां लाना चाहता था। परंतु मेरे कहने से तुम लोग पूर्वजन्म में आने को कभी भी तैयार नहीं होते या हो जाते?"

पोतेबाबा की प्रश्न-भरी निगाह सब पर जाने लगी।

चंद पल शांति रही फिर महाजन बोला।

"शायद हम तैयार नहीं होते। तुम ठीक कहते हो।"

"मेरा भी यही खयाल था, तभी मैंने कुछ ऐसी चालें चलीं कि तुम सबको पूर्वजन्म में लाया जा सका। मुंह से मैं जग्गू को ये कहता रहा कि जथूरा तुम लोगों को पूर्वजन्म में प्रवेश नहीं करने देना चाहता, जबकि बिना कहे मेरे काम ऐसे रहे कि तुम लोग पूर्वजन्म में आ सको। जैसे कि जग्गू को जथूरा के तैयार किए हादसों का पूर्वाभास होने लगा। वो आभास कैसे हुआ, मैंने ही तो कराया।"

"तुमने बाप?"

"हां त्रिवेणी। जग्गू को पूर्वाभास हो, वो शक्ति मैंने ही तो उसके भीतर डाली।"

"तन्ने?"

"सब कुछ मैं ही तो कर रहा था। धीरे-धीरे तुम लोगों को पूर्वजन्म की तरफ धकेले जा रहा था। कुछ खास हादसों का पूर्वाभास होने पर ही, तुम लोग जथूरा की जमीन पर कदम रख सकते थे। वो खास हादसों का पूर्वाभास मैंने जग्गू को कराया। साथ ही मैं जानता था कि जब तुम लोग जानोगे कि जथूरा तुम लोगों को पूर्वजन्म में आने से रोकना चाहता है तो तुम लोगों के इरादे पक्के होंगे, उतना ही पूर्वजन्म में जाने के। मैंने तुम सबको उलझाए रखा कि कि ठीक से सोचकर किसी भी नतीजे पर न पहुंच सको। तुम लोगों की भी गलती नहीं थी, हालात ऐसे बने कि तुम लोग उलझते चले गए। बाकी जो कसर बची, वो मेरे भेजे, कालचक्र ने पूरी कर दी।"

"तुमने मेरे में और देवराज चौहान में झगड़ा कराने की चेष्टा की?" मोना चौधरी बोली।

"हां।"

"तब हममें से कोई दूसरे को मार देता तो?"

"ये सम्भव ही नहीं था।"

"क्यों?"

"वक्त रहते मैंने जग्गू को इस बात का एहसास करा दिया था और वो वक्त पर पहुंच गया था।"

"ऐसा किया ही क्यों तुमने?"

"तुम लोगों को करीब लाने के लिए। तुम एक हुए तो तभी बातचीत आगे बढ़ी। मैंने ठीक कहा न?"

सबकी निगाह पोतेबाबा पर थी।

पोतेबाबा के चेहरे पर मुस्कान छाई थी।

"हम समझ नहीं पाईला बाप कि तूने ये सब करके अच्छा किएला या बुरा किएला?"

"मैंने कुछ भी बुरा नहीं किया।"

"तन्ने म्हारे को धोखो दयो कहो कुछो, करो कुछो।"

"तुम सबको पूर्वजन्म की धरती पर लाने के लिए ऐसा करना जरूरी था। वरना मैं मेहनत ही क्यों करता।"

"जगमोहन कहां है?" नगीना बोली—"सोहन भैया कहां हैं?"

"जग्गू और गुलचंद जथूरा की जमीन पर ही हैं। मैंने उन्हें कालचक्र के नर्म हिस्से में पहुंचाया, जहां उन्हें कोई तकलीफ नहीं होने दी। उस रास्ते से उनका पूर्वजन्म की जमीन पर प्रवेश करा दिया।"

"छोरे।" बांकेलाल राठौर, पोतेबाबा को देखता कह उठा।

"बोल बाप।"

"यो बूढ़ो तो म्हारे को घिसो हुओ लागे हो।"

"बोत घिसेला बाप। इसने दाढ़ी यूं ही सफेद नेई किएला लगेला।"

"म्हारे को चांस मिल्लो तो अंम 'वड' दयो इसो को। यो म्हारे को झूठो बोल के, पूर्वजन्म में खींच लायो हो।" कहने के साथ ही बांकेलाल राठौर का हाथ मूंछ पर पहुंच गया—"तंम म्हारे साथो होवे ना?"

"यस बाप। आपुन तेरे साथ ही टिकेला।"

देवराज चौहान के होंठ सिकुड़ चुके थे। नजरें पोतेबाबा पर थीं।

मोना चौधरी कह उठी।

"तूने टापू पर भी मुझे और देवराज चौहान को लाने के लिए आमने-सामने किया।"

"मत भूलो कि मेरे भेजे मोमो जिन्न ने ही, तब सब कुछ ठीक किया।"

"उससे पहले ही हममें से कोई दूसरे पर घातक वार कर देता तो?"

"ये सम्भव नहीं था। रखवाली के तौर पर मैं जो वहां मौजूद था। सब कुछ मैं ही तो करवा रहा था।"

"टापू पर ये सब कराना जरूरी था क्या?" मोना चौधरी तीखे स्वर में बोली।

"जरूरी था, ताकि तुम लोगों को हर वक्त यही लगे कि सच में कुछ होने वाला है। तभी तो तुम लोग मोमो जिन्न की बात मानकर उसके पीछे-पीछे चले और वहां मौजूद पनडुब्बी में आ बैठे।"

"सच में तुमने खूबसूरत चाल चली।" पारसनाथ कह उठा।

"ये सब करना मेरे लिए मजबूरी थी। मोमो जिन्न ने जो किया, मेरे कहने पर किया। इधर कालचक्र से भौरी और शौहरी ने अपना काम किया। मखानी और कमला रानी का सही इस्तेमाल किया।"

"तुमने हमें खूब बेवकूफ बनाया।" नगीना कह उठी।

"ऐसा न कहो बेला।" पोतेबाबा ने कहा—"मैंने किसी को मूर्ख नहीं बनाया। मैंने वो ही किया, जो करना जरूरी था मेरे लिए। देवा और मिन्नो को जथूरा की जमीन पर लाना था। इसलिए ये सब करना पड़ा। परंतु ये भी तय है कि देवा और मिन्नो पूर्वजन्म के किसी भी हिस्से में आएंगे तो बाकी जो भी पूर्वजन्म से वास्ता रखता है, उसे भी आना ही पड़ेगा।"

"ये जरूरी है!" पारसनाथ ने कहा।

"हां। जरूरी है ये। सिलसिला इसी तरह पूर्ण होता है।" पोतेबाबा बोला।

"बातें तुम खूब करते हो पोतेबाबा।" देवराज चौहान कह उठा।
"मैंने कुछ गलत तो नहीं कहा।"
"चालाकियों से भरा दिमाग है तुम्हारा। वरना हमें पूर्वजन्म में लाने में सफल न हो पाते।"
"इसको काबलियत कहते हैं।" पोतेबाबा मुस्कराया—"अब तुम लोगों को भी अपनी काबलियत दिखानी है।"
"क्या चाहते हो?" देवराज चौहान ने पूछा—"जाहिर है कोई खास ही वजह होगी, जो तुम हमें इतना जोड़-तोड़ के साथ यहां तक लेकर आए हो। वो वजह भी बता दो। क्या चाहते हो हमसे?"
"वो बात भी होगी। पहले हमारा आपस में परिचय हो जाना चाहिए। तुम सबके बारे में हम सब जानते हैं। अब तुम सब हमारे बारे में भी जान लो।" पोतेबाबा कह उठा—"ये तवेरा है जथूरा की बेटी।"
"जथूरो की बेटी।" बांकेलाल राठौर बोला—"वो शादी करो हो?"
"बाप तेरी ही नहीं हुईला।"
पोतेबाबा ने अपना कहना जारी रखा।
"ये गरुड़ है, जथूरा का सर्वश्रेष्ठ सेवक। और ये रातुला है जो कि सैनिकों का सरदार है।"
"जगमोहन को यहां बुलाओ।" देवराज चौहान ने कहा।
क्षणिक खामोशी के बाद पोतेबाबा ने कहा।
"वो यहां नहीं आ सकता।"
"क्यों?"
"जग्गू-गुलचंद और नानिया, तीनों ही सोबरा की जमीन की तरफ जा रहे हैं।"
"सोबरा—जथूरा का भाई?"
"हां।"
"नानिया कौन है?" नगीना ने पूछा।
"कालचक्र की रानी साहिबा है। उसका असली नाम नानिया है। वो उन दोनों के साथ है।" पोतेबाबा ने कहा।
"वो सोबरा की तरफ क्यों जा रहे हैं, तुम उन्हें हमारे यहां होने की खबर दो। वो यहीं आ जाएंगे।"
"उन्हें पता था कि तुम लोग यहां आ रहे हो, फिर भी वो सोबरा की तरफ जा रहे हैं।" पोतेबाबा ने कहा—"ऐसी हालत में उन्हें रोकना मुनासिब नहीं। उन्हें जाने देना चाहिए।"
"हम जगमोहन को अपने पास देखना चाहते...।"
"ये सम्भव नहीं।" तवेरा कह उठी—"परंतु वो लोग जल्दी ही तुम लोगों से मिलेंगे।"

"ये तुम कैसे कह सकती हो?"

"मैंने तंत्र-मंत्र ग्रहण कर रखा है। कई ताकतों से मेरी बात होती है। थोड़ा-बहुत मैं भविष्य में भी झांक लेती हूं अपनी विद्या से। जग्गू से मिलना लिखा है मेरा। मैं पढ़ चुकी हूं।"

"ये तो तुम्हारी बात हुई।" देवराज चौहान ने कहा—"हम अपनी बात कर...।"

"हम एक साथ ही कहीं जाने वाले हैं।" तवेरा ने कहा।

"कहां?"

"पोतेबाबा इस बारे में बात करेंगे।" तवेरा ने शांत स्वर में कहा।

सबकी निगाह पोतेबाबा की तरफ उठी तो वो बोला।

"तुम लोगों को इस तरह पूर्वजन्म में क्यों बुलाया है। मैं सारी बात बताता हूं। आओ उधर कुर्सियों पर बैठें। बात लम्बी भी हो सकती है। सब कुछ बताना ही तो है तुम सबको।"

सब कुर्सियों पर जा बैठे।

मखानी और कमला रानी की नजरें मिलीं।

मखानी ने आंख दबा दी। जवाब में कमला रानी ने भी आंख दबाई।

'क्या हरामी चीज मेरे पल्ले पड़ी है।' मखानी बड़बड़ा उठा।

पोतेबाबा सब पर नजर मारता गम्भीर स्वर में कह उठा।

"जथूरा और सोबरा के पिता गिरधारी लाल ने बहुत ताकतें हासिल कर रखी थीं। वो अपनी नगरी के जाने-माने व्यक्ति थे। सोबरा और जथूरा बड़े हो चुके थे और जिदंगी के अपने-अपने कार्यों में व्यस्त होते चले गए। सोबरा ने अन्य गुरुकुल से शिक्षा हासिल की तो जथूरा ने अन्य गुरुकुल से। दोनों ही तेज दिमाग के थे और मुसीबतों को झेलते शिक्षा प्राप्त कर ली। दोनों के पास शुरुआती दौर की ताकतें आ चुकी थीं। परंतु जथूरा हमेशा ही सोबरा से ज्यादा तेज रहा। जथूरा ने ताकतें पाने की विद्या को ज्यादा समझा और वो ज्यादा ज्ञानी बन गया। जबकि सोबरा भी कम नहीं था, परंतु जथूरा के पास ज्ञानशक्ति ज्यादा आ गई थी। इस बीच सालों बाद जब उनके पिता गिरधारी का अंतिम वक्त आया तो उसने दोनों बेटों को बुलाया। परंतु सोबरा व्यस्त होने की वजह से समय पर नहीं पहुंच सका, जबकि जथूरा वक्त पर अपने पिता के पास पहुंचा। मरते समय गिरधारी लाल ने अपनी ताकतें, जथूरा को दे दीं। बाद में जब बात सोबरा को पता चली तो उसने अपने हक के नाते जथूरा से पिता की दी आधी ताकतें मांगीं। परंतु जथूरा ने ये कहकर देने से

इनकार कर दिया कि पिता ने ताकतें सिर्फ उसे सौंपी हैं। इसी बात को लेकर दोनों में मन-मुटाव बढ़ गया।"

"ताकतें किस रूप में थीं?" देवराज चौहान ने पूछा।

"ताकतों का रूप गुप्त श्लोकों में होता है।" पोतेबाबा ने कहा—"इंसान अपनी विद्या से जो ताकतें हासिल करता है, उसे उन्हीं ताकतों के दम पर अपनी सुविधानुसार छोटे श्लोकों में परिवर्तित कर लेता है। गिरधारी लाल ने अपनी जिंदगी भर की कमाई श्लोकों के रूप में जथूरा को दे दी थी। इस्तेमाल की विधि भी समझा दी थी।"

"ये तो तुम कहते हो।" मोना चौधरी बोली।

"क्या मतलब?"

"ये तुम्हारा या जथूरा का कहना है कि गिरधारी लाल ने अपनी ताकतें जथूरा के हवाले कर दी थीं। हो सकता है कि तब गिरधारी लाल ने ये कहा हो कि दोनों भाई ताकतों को आधी-आधी बांट लेना।"

कुछ सोच के बाद पोतेबाबा ने अपना गम्भीर चेहरा हिलाया।

"ऐसा भी हो सकता है।" वो बोला।

"क्या उस वक्त पास में कोई और था?"

"कई लोग थे, परंतु इन बातों के दौरान, गिरधारी ने पहले ही उन्हें कमरे से बाहर जाने को कह दिया था।"

"इसका मतलब कोई गवाह नहीं जो ये बता सके कि गिरधारी लाल ने वो ताकतें जथूरा को दी थी।"

"जथूरा ये बात गलत क्यों कहेगा?"

"अपने लालच की खातिर।"

"जथूरा ऐसा नहीं है जो अपने लालच की खातिर भाई से झूठ बोले।"

मोना चौधरी मुस्करा पड़ी।

"अगर वो सच्चा इंसान होता तो अपने पिता द्वारा ताकतें दी जाने के बाद भी वो उन ताकतों को सोबरा के साथ अवश्य बांट लेता।"

पोतेबाबा ने मोना चौधरी को देखा।

"तुम मेरे पिता पर बेईमानी की उंगली उठा रहे हो।" तवेरा कह उठी।

"सच बात तो ये है कि अभी तक तुम्हारे पिता ही मुझे बेईमान लगे हैं।"

तवेरा ने कुछ कहने के लिए मुंह खोला तो उसी पर पोतेबाबा ने टोका।

"शांत हो जाओ मेरी बच्ची। ये वक्त इस बात को परखने का नहीं है कि कौन सच्चा है या कौन झूठा।"

तवेरा खामोश हो गई। परंतु चेहरे पर नाराजगी रही।

वहां गहरी खामोशी छाई हुई थी।

पोतेबाबा ने फिर कहना शुरू किया।

"जथूरा ने अपनी ताकतों के साथ पिता से मिली ताकतों का इस्तेमाल किया और देखते ही देखते वो जाना-माना, ताकतों वाला व्यक्ति बन गया। अपने काम से बड़ी शक्तियों को प्रभावित किया और इस तरह जथूरा धीरे-धीरे तरक्की करता हादसों का देवता बन गया। हर तरफ जथूरा का नाम गूंजने लगा। अब जथूरा की दो नगरियों में सिर्फ हादसों को तैयार करने और उन्हें जांचने-परखने का ही काम चलता है। वहां पर हजारों आदमी दिन-रात काम पर लगे रहते हैं।"

"और वो हादसे तैयार करके तुम लोग हमारी दुनिया में भेजते हो।" नगीना बोली।

"हां, जथूरा का ये ही काम है।"

"परंतु ये गलत बात है।"

"इस पर मेरा कुछ भी कहना ठीक नहीं।" पोतेबाबा बोला—"हादसों का जन्मदाता जथूरा नहीं बनता तो कोई और बनता। जो भी बनता वो ये ही काम करता। ये जथूरा के कर्म हैं। जिन्हें करना उसके लिए आवश्यक है।"

"इन बातों के दौरान जथूरा को भी यहां होना चाहिए।" देवराज चौहान बोला।

"वो यहां क्यों नहीं है, मेरी आगे कही बात से पता चल जाएगा।" पोतेबाबा ने कहा—"उधर सोबरा अपनी विद्या के दम पर ताकतें हासिल करता रहा। सोबरा जथूरा से कम नहीं था, परंतु गिरधारी लाल से मिली ताकतों ने, जथूरा को बहुत आगे पहुंचा दिया था। सोबरा और जथूरा का मन-मुटाव बढ़ते वक्त के साथ दुश्मनी में बदल गया था। आखिरकार सोबरा ने जथूरा को सबक सिखाने के लिए, अपनी सारी ताकतों का इस्तेमाल करके कालचक्र तैयार किया।"

"कालचक्र क्या होईला बाप?"

"कालचक्र गहरे रहस्यों में डूबा, षड्यंत्रों का हिस्सा होता है। कालचक्र के भीतर हर तरह का हिस्सा संजोया जाता है। जरूरत पड़ने पर, बटन दबाकर उसी हिस्से को सक्रिय कर दिया जाता है। कालचक्र को मशीनों द्वारा कंट्रोल किया जाता है। कालचक्र के बारे

में सब कुछ बताना सम्भव तो नहीं, परंतु दुश्मन को हराने के लिए, इसमें हर बाण मौजूद होता है, प्यार का भी, जंग का भी। चालाकियों से भरा होता है कालचक्र। जो भी इसमें एक बार फंस जाता है, वो तभी बाहर निकल सकता है, जब कालचक्र का मालिक चाहे, नहीं तो वो कालचक्र में ही भटकता रहता है। कालचक्र में तुम लोग भी फंस चुके हो। कालचक्र को सही ढंग से तैयार करने में 40 से 50 बरस का वक्त लगता है।"

"इतना वक्त?" महाजन कह उठा।

"हां। बढ़िया कालचक्र के लिए 40 से 50 साल का ही वक्त लगता है। छोटा या कम ताकतों वाला कालचक्र 5 बरस में भी तैयार किया जा सकता है। परंतु सोबरा ने 50 बरस लगाकर कालचक्र तैयार किया। सोबरा के आदमियों में जथूरा के लोग थे। जो कि जथूरा को सोबरा की हरकतों की खबर देते रहते थे। जथूरा सोबरा के कालचक्र के बारे में जान चुका था और ये भी जानता था कि सोबरा उस पर कालचक्र का इस्तेमाल करने वाला है। इसलिए जथूरा ने अपनी तैयारियां शुरू कर दीं।

"कैसी तैयारियां?"

"सोबरा को मात देने की तैयारियां। जथूरा ने वक्त रहते इस बात की पूरी तैयारी कर ली कि सोबरा जब उस पर कालचक्र फेंके तो वो कालचक्र को बंदी बना ले। उसे जब्त कर ले।"

"कालचक्र को बंदी भी बनाया जा सकता है?" पारसनाथ ने पूछा।

"हां। जथूरा के पास बेहिसाब ताकतें थीं। वो हर काम को आसानी से करने का हौसला रखता था और उसने ये कर भी लिया। जथूरा को पहले ही खबर मिल गई सोबरा कब उस पर कालचक्र का दांव फेंकने जा रहा है। जथूरा ने अपनी ताकतों का कवच पहले ही आसमान में फैला दिया कि कालचक्र को खुलने से पहले ही वो कैद कर ले और कैद कर भी लिया जथूरा ने।" पोतेबाबा गम्भीर था।

"फिरो?" बांकेलाल राठौर ने मूंछ पर हाथ फेरा।

"परंतु बाद में पता चला कि सोबरा तो और भी गहरा खेल खेल रहा था।"

"वो कैसे?" देवराज चौहान के होंठों से निकला।

"दरअसल सोबरा ने कालचक्र वाली चाल खेली थी। उसका असली मकसद था कि जथूरा कालचक्र को कैद करे खुद भी कैदी बन जाए।"

"वो कैसो बूढ़ो?" बांकेलाल राठौर के होंठों से निकला।

"सोबरा को मालूम था कि उसके पास मौजूद कौन-कौन-सा

आदमी जथूरा को खबरें भेज रहा है। चालाकी से सोबरा उन्हें वो ही बातें बताता, जो वो चाहता था कि जथूरा तक पहुंचे।" पोतेबाबा ने शांत स्वर में कहा—"वो चाहता था कि जथूरा कालचक्र को कैद कर ले। क्योंकि सोबरा ने कालचक्र के एक हिस्से में महाकाली की परछाईं को बैठा रखा था, कालचक्र की पहरेदारी के लिए कि कोई कालचक्र को पकड़े तो महाकाली उसे अपनी कैद में कर ले।"

"यो महाकाली कौनो हौवे?"

"जादू, तंत्र-मंत्र की मल्लिका है महाकाली। यूं तो इस तरह किसी को बंदी बनाकर रखने के काम नहीं करती, परंतु सोबरा का उस पर एहसान है इसलिए वो तैयार हो गई थी और ये बात सोबरा ने आम नहीं होने दी। जथूरा तक ये बात नहीं पहुंची कि जो भी कालचक्र को कैद करेगा, महाकाली अपनी ताकतों से उसे बंदी बना लेगी। सोबरा चाहता ही ये था कि जथूरा कालचक्र को अपने अधिकार में ले और महाकाली जथूरा को कैद में रख ले।"

"तुम्हारा मतलब कि जथूरा को इस वक्त महाकाली ने अपने पास बंदी बना रखा है।" मोना चौधरी बोली।

"हां।" पोतेबाबा ने सिर हिलाया—"जथूरा इस वक्त हमारे बीच नहीं है।"

"छोरे।"

"बोल बाप।"

"महाकाली तो जथूरा की बापो हौवे।"

"बाप नहीं मां, वो औरत होईला।"

"म्हारा मतलबो तो थारी समझो में आ गयो कि नहीं।"

"समझेला बाप।" रुस्तम राव गम्भीर था।

पोतेबाबा पुनः कह उठा।

"पचास साल से जथूरा, महाकाली का कैदी है।"

"तुमने चेष्टा तो की होगी जथूरा को आजाद कराने की।" देवराज चौहान कह उठा।

"कुछ खास नहीं।"

"क्यों?"

"जथूरा को छुड़ा पाना हमारे लिए सम्भव नहीं है।"

"वजह।"

"महाकाली ने उसे कैद करके, उस पर देवा और मिन्नो नाम का तिलिस्म बांध दिया है।"

"देवा-मिन्नो?" देवराज चौहान के होंठों से निकला—"तुम्हारा मतलब कि मेरे और मोना चौधरी के नाम का तिलिस्म?"

पोतेबाबा ने सहमति से सिर हिलाया।

सबके चेहरे पर उलझन नजर आ रही थी।

"ऐसा क्यों, हमारे ही नाम का तिलिस्म क्यों?"

"महाकाली जानती थी कि हम जथूरा को कैद से छुड़ाने का प्रयत्न करेंगे। ऐसे में उसे हर वक्त जथूरा की पहरेदारी पर रहना पड़ता। तो उसने जथूरा की कैद को देवा और मिन्नो नाम के तिलिस्म में बांध दिया कि देवा और मिन्नो के अलावा कोई और उस तक न पहुंच सके। उस वक्त से महाकाली को जथूरा की ज्यादा चिंता नहीं करनी पड़ती। हमारे सैनिकों ने जब-जब जथूरा को आजाद कराने की चेष्टा की, तिलिस्म में फंसकर वो जान गंवा बैठे।"

नगीना कह उठी।

"महाकाली ने देवराज चौहान और मोना चौधरी के नाम का तिलिस्म ही क्यों बांधा?"

"महाकाली ने बहुत दूर की सोचकर ये सब किया।"

"वो कैसे?" महाजन ने पूछा।

"महाकाली जानती है कि देवा-मिन्नो का तीसरा जन्म चल रहा है। वो हर तरफ की खबर रखती है। महाकाली को ये भी पता है कि दूसरी दुनिया में मौजूद देवा और मिन्नो में पटती नहीं है। ऐसे में देवा और मिन्नो कभी भी एक साथ, एक जगह इकट्ठे नहीं होंगे और किसी भी एक काम को मिलकर इकट्ठे नहीं करेंगे। इसलिए उसने देवा और मिन्नो नाम का तिलिस्म बांध दिया कि जथूरा हमेशा ही कैद में रहे। देवा और मिन्नो तो जथूरा को आजाद कराने पूर्वजन्म में तो आने से रहे। ये सोचकर महाकाली निश्चिंत हो गई थी।"

"तो महाकाली सोचेला कि देवराज चौहान-मोना चौधरी एक साथ इधर नेई आईला।"

"ये ही सोचा महाकाली ने।" पोतेबाबा ने कहा।

"तो अब जो भी जथूरा को कैद से छुड़ाने जाता है, वो मारा जाता है।" नगीना ने पूछा।

"हां। तिलिस्म को देवा और मिन्नो ही तोड़ सकते हैं। ये दोनों ही सिर्फ वहां तक पहुंच सकते हैं। वहां फैली महाकाली की जादुई ताकतें सिर्फ देवा और मिन्नो को ही जथूरा तक पहुंचने की इजाजत देंगी।"

"इस कारण तुम हमें चालाकियों से यहां तक लाए?"

पोतेबाबा ने सहमति से सिर हिलाकर कहा।

"मजबूरी थी। ऐसा करना पड़ा मुझे। इसके अलावा मेरे पास

कोई और रास्ता भी तो नहीं था। सीधे-सीधे तुमसे कहता कि पूर्वजन्म में तुम्हारी जरूरत है तो कोई भी आने को तैयार नहीं होता।"

"तुम चाहते हो कि अब हम जथूरा को कैद से आजाद कराएं।" मोना चौधरी बोली।

"हां। यही चाहता हूं मैं। मेरी सारी कोशिशें अब इसी बात पर आकर रुकती हैं।"

"तुमने कैसे सोच लिया कि हम तुम्हारी बात मानकर ये काम करेंगे।"

"मेरा दिल कहता है कि तुम दोनों इनकार नहीं करोगे।"

"खतरे वाले काम में हम हाथ क्यों डालेंगे तुम्हारे लिए?"

पोतेबाबा मोना चौधरी को देखता रहा।

"तुम्हें ये बात हमें पहले ही स्पष्ट तौर पर बता देनी चाहिए थी।"

पोतेबाबा खामोश रहा।

"तिलिस्म को तोड़ना खेल नहीं होता।" मोना चौधरी ने गम्भीर स्वर में कहा—"पूर्वजन्म में मैं भी नगरी की मालकिन रह चुकी हूं और तिलिस्म विद्या में माहिर थी। ये एक भारी खतरे वाला काम है। आसान नहीं है ये सब करना।"

"तो मत करो।" तवेरा कह उठी।

सबकी निगाह तवेरा की तरफ उठ गई।

गरुड़ की खोज-भरी निगाह तवेरा के चेहरे पर फिरने लगी।

मखानी बोरियत-भरे अंदाज में चेहरा लटकाए कब से बैठा, रह-रहकर कमला रानी को देख रहा था। लम्बी तपस्या के बाद अब जाकर कमला रानी से नजरें मिलीं तो मखानी ने आंख के इशारे से उसे चलने को कहा।

कमला रानी ने इनकार में सिर हिलाया।

मखानी ने झुंझलाकर, पुनः यहां से चुपके-से उठने का इशारा किया।

कमला रानी ने मुंह फेर लिया।

'औरत में यही खराबी है कि जब जरूरत पड़ती है तो नखरे दिखाने लगती है। ये कमला रानी तो औरतों की मां है। पहले तो मेरे कान में बोल दिया कि चुपके से कहीं जाकर प्यार कर लेंगे। मेरी तबीयत हरी है प्यार करने को तो, खुद उठने का नाम नहीं ले रही।' मखानी बड़बड़ा उठा—'साली एक बार हाथ पर चढ़ जाए तो हालत बिगाड़ दूंगा।'

"अगर तुम मेरे पिता को आजाद नहीं कराना चाहते तो न सही।" तवेरा लापरवाही से पुनः बोली।

"ये तू क्या कह रही है मेरी बच्ची।" पोतेबाबा के होंठों से निकला।

"गलत क्या कह दिया।"

"देवा और मिन्नो जथूरा को आजाद करा सकते...।"

"पोतेबाबा।" तवेरा गम्भीर स्वर में कह उठी—"पिता की आजादी का मतलब है, मेरी आजादी खत्म। जब से वो कैद हैं तब से मेरा जीवन बदल गया है। मैं कहीं भी आ-जा सकती हूं। उनकी आजादी के बाद...।"

"वो तेरे पिता हैं।"

"मैं परवाह नहीं करती।" तवेरा ने कहा और पलटकर बाहर की तरफ बढ़ गई।

"मेरी बच्ची तुझे क्या हो गया है।" पीछे से पोतेबाबा ने कहा।

परंतु तवेरा बाहर निकल गई थी।

"शायद बच्ची की तबीयत ठीक नहीं।" पोतेबाबा ने चिंतित स्वर में कहा और गरुड़ से बोला—"तुम उसे समझाओ गरुड़।"

"जी। मैं अभी जाता हूं।" कहने के साथ ही गरुड़ पलटा और बाहर निकलता चला गया।

पास की कुर्सी पर बैठा रातुला धीमे स्वर में पोतेबाबा से कह उठा।

"ये तुमने क्या किया पोतेबाबा। गरुड़ को तवेरा के पास भेज दिया।"

पोतेबाबा शांत भाव में मुस्कराकर बोला।

"गरुड़ के बारे में मैं तवेरा को सब कुछ बता चुका हूं।"

"ओह।"

"तवेरा का ये सब कहना, उसकी किसी चाल का ही हिस्सा है। तुम इस बारे में निश्चिंत रहो रातुला।"

"समझ गया।"

फिर पोतेबाबा ऊंचे स्वर में सबसे कह उठा।

"तवेरा की बात का बुरा मत मानना। वो अपने पिता की कैद की वजह से बहुत परेशान है।"

"म्हारे को तो दूसरो ही स्टोरी लागे।" बांकेलाल राठौर ने सोच-भरे स्वर में कहा—"थारे को का लागे छोरे?"

"ये बात बाद में देखेला बाप।"

"ठीको।"

सबकी नजरें पोतेबाबा पर थीं।

"मैं चाहता हूं कि तुम दोनों जथूरा को आजाद कराओ महाकाली की कैद से।"

"जरूरी क्यों है जथूरा को कैद से निकालना?" देवराज चौहान बोला।

"बहुत जरूरी है, जथूरा के बिना हर नगरी की बढ़ोत्तरी रुक गई है। वो होता तो...।"

"तुमने कालचक्र का हम पर इस्तेमाल किया?"

"हां।"

"यानी कि जथूरा के बाद तुम उसकी हर चीज के मालिक हो?"

"हां।"

"और जथूरा के आ जाने पर तुम फिर से उसके नौकर बन जाओगे।"

"मैं अब भी नौकर हूं। जथूरा का सेवक हूं।" पोतेबाबा ने कहा।

"उसकी गैरमौजूदगी में तुम अपनी मनमानी कर रहे हो। वो आ गया तो मनमानी खत्म हो जाएगी तुम्हारी।"

पोतेबाबा मुस्करा पड़ा।

"तुम इसे मनमानी कहते हो, जबकि मैं इसे बोझ कहता हूं। कामों के बोझ तले मैं दबा जा रहा...।"

"मत करो काम। यहां जथूरा तो है नहीं जो तुम्हें काम...।"

"तू मुझे समझता क्या है देवा। क्या मैं चोर सेवक हूं जो कामों से मन चुराता है या बेईमान हूं जो जथूरा की गैरमौजूदगी में सत्ता का फायदा उठाएगा। ऐसा सोचते हो तो गलत सोचते हो। मैं जथूरा का सच्चा सेवक हूं। जथूरा महान है। उस जैसा कोई दूसरा नहीं। मैं दिल से उसका कायल हूं। उसके द्वारा रचित हादसे कितने शानदार होते हैं। मैंने जथूरा से बहुत कुछ सीखा है।"

"पर वो तो बेईमान होईला बाप।"

"कैसे?" पोतेबाबा ने रुस्तम राव को देखा।

"जथूरा सोबरा का हक मारेला। बाप से मिला माल बराबर बांटेला मांगता।"

"मैं इस बहस में नहीं पड़ना चाहता।"

"ये बहस नेई होईला बाप। सच्चाई होईला। जथूरा को उसके पिता से ताकतें न मिलेला तो जथूरा इतना पॉवरफुल नेई बनेला। सारा कमाल तो उस ताकत का होईला बाप।" रुस्तम राव ने कहा।

"तंम एकदमो फिटो कहो छोरे। जथूरो म्हारे को शुरू से ही हरामो लागे हो।"

खामोश बैठा रातुला कह चुका।
"जथूरा के बारे में आप लोगों के विचार बहुत गलत हैं।"
"तंम म्हारे को गलत बोल्लो हो और म्हारे को कहो भी कि अंम जथूरो को बचावे।"
"जथूरा महान है।" रातुला कह उठा—"उस जैसा दूसरा कोई नहीं।"
"छोरे यो पूंछो तो सीधा न हौवे।"
पोतेबाबा ने देवराज चौहान और मोना चौधरी को देखा।
"मैं आशा करता हूं कि तुम दोनों जथूरा को महाकाली की कैद से आजाद करा दोगे।"
"इसलिए कि वो और नए हादसे रचकर हमारी दुनिया के लोगों को...।"
"इस बारे में जथूरा से बात की जा सकती है।" पोतेबाबा ने कहा।
"कैसी बात?"
"उसे आजाद कराने से पहले उससे वादा ले लेना कि वो नए हादसे नहीं रचेगा।"
"वो हादसों का देवता है। हमारी बात क्यों मानेगा?"
"उसे आजाद होना है तो जरूर मानेगा।" पोतेबाबा ने शांत स्वर में कहा।
दो पल के लिए चुप्पी छा गई वहां।
"तुम आखिर चाहते क्या हो?" मोना चौधरी ने पूछा।
"जथूरा को आजाद करा लेना चाहता हूं।" पोतेबाबा गम्भीर था।
"तुम्हारा मतलब कि इस शर्त पर जथूरा को महाकाली की कैद से आजाद कराए कि, वो नए हादसे रचकर हमारी दुनिया में नहीं भेजेगा?"
पोतेबाबा ने सहमति से सिर हिलाया।
"इस काम में बहुत खतरा है पोतेबाबा।" मोना चौधरी गम्भीर स्वर में कह उठी—"किसी के बांधे तिलिस्म को काट के मंजिल तक पहुंचना, खेल नहीं है। जबकि तिलिस्म बांधने वाला तंत्र-मंत्र का विशेष ज्ञानी हो।"
"महाकाली ने देवा और मिन्नो के नाम का तिलिस्म बांधा है। ऐसे में तुम दोनों के लिए तिलिस्म को तोड़ना खास खतरे वाली बात नहीं है।" पोतेबाबा ने गम्भीर स्वर में कहा—"इसलिए तुम दोनों...।"
"हम ये काम न करें तो?" देवराज चौहान बोला।

पोतेबाबा मुस्करा पड़ा।

"तो क्या करोगे तुम सब लोग, जबकि पूर्वजन्म में तो आ ही चुके हो।"

"क्या कहना चाहते हो?"

"ये तो तुम लोग भी जानते हो कि पूर्वजन्म में प्रवेश कर लेने के बाद तुम लोगों की वापसी तभी हो सकती है, जब पूर्वजन्म का कोई बिगड़ा काम सुधार दो। या तो जथूरा को आजाद कराओ, या फिर तुम लोगों को कोई और बिगड़ा काम तलाश करना पड़ेगा, जिसे कि सुधार सको। क्या पता वो काम इससे भी ज्यादा खतरनाक हो।"

"तो ये चाल थी तुम्हारी।" देवराज चौहान ने कहा—"तुम सब जानते हो कि पूर्वजन्म में प्रवेश कर आने के बाद हमें कोई एक बिगड़ा काम अवश्य सुधारना होगा, तभी हमारी वापसी के दरवाजे खुलेंगे। तुम सोचते हो कि तुमने हमें फंसा दिया कि ये काम हमें करना ही पड़ेगा। दूसरा बिगड़ा काम ढूंढ़ना भी तो आसान नहीं।"

"गलत मत सोचो। मैंने तुम लोगों को फंसाया नहीं। अपने काम के लिए तुम्हें यहां लाया जरूर हूं, परंतु तुम लोग फैसला लेने को आजाद हो। नहीं काम करना चाहते तो मत करो।" पोतेबाबा ने कहा।

"यो म्हारे को चक्करो में लयो हो।"

"सोचने की बात होईला बाप।"

"महाकाली है कहां?" नगीना ने पूछा।

"उसके बारे में कोई नहीं जानता कि वो कहां है।" पोतेबाबा बोला—"परंतु जथूरा के बारे में पता है।"

"कहां है वो?"

"अपनी ताकतों से मायावी पहाड़ी बनाकर उसने जथूरा को वहां कैद कर रखा...।"

तभी देवराज चौहान ने टोका।

"पूर्वजन्म में प्रवेश करने के बाद मुझे कुछ नजर आया था, यहीं का ही कुछ।"

"क्या?" पोतेबाबा ने उसे देखा।

"दो गुफाएं। परंतु बाद में पता लगा कि वो गुफाएं नहीं, नाक के छेद हैं। फिर पत्थर के होंठों को बोलते देखा, जो खुद को आजाद कराने के लिए कह रहा था—वो...।"

"वो ही मायावी पहाड़ी...।" पोतेबाबा गहरी सांस लेकर बोला।

"क्या मतलब?"

"महाकाली ने अपनी ताकतों से वो ही मायावी पहाड़ी बनाकर,

जथूरा को भीतर कैद कर रखा है। जो पत्थर की आकृति का चेहरा तुमने देखा, वो जथूरा का चेहरा है। जो कि पहाड़ी के ठीक ऊपर, इस तरह रखा है, जैसे वो आसमान को देख रहा हो। उसके नाक के छेद, जो कि गुफा की तरह हैं। उन्हीं में से रास्ता भीतर को जथूरा तक जाता है, परंतु जो भी उस रास्ते से भीतर प्रवेश करता है, वो जीवित लौट के नहीं आता।"

"मुझे कैसे जथूरा का वो चेहरा दिखा या उसके हिलते होंठ या फिर उसकी आवाज सुनाई दी?"

"जथूरा ने तुम लोगों की मौजूदगी का अपनी जमीन पर एहसास पा लिया होगा। तभी उसने खुद को आजाद कराने की पुकार लगाई होगी। ये अच्छी बात है कि जथूरा पूरी तरह अपने होश में है।" पोतेबाबा ने चैन की सांस ली। फिर मोना चौधरी से कह उठा—"क्या तुम्हें भी ऐसा कुछ एहसास हुआ मिन्नो?"

"नहीं।"

"तुम्हें भी ऐसा कोई एहसास होता तो बेहतर रहता। क्या पता अब हो जाए।"

"तुम पहाड़ी के बारे में बता रहे थे।" महाजन कह उठा।

पोतेबाबा ने सबको देखा। कुछ पल सोच के कह उठा।

"क्या ये अच्छा नहीं होगा कि पहले तुम लोग ये फैसला ले लो कि जथूरा को आजाद कराओगे या नहीं?"

"अगर हमारा इनकार हुआ तो तुम हमारे साथ क्या व्यवहार करोगे?" पारसनाथ कह उठा।

"कोई भी अपने मन में बुरी आशंका न रखे।" पोतेबाबा मुस्कराकर बोला—"तुम लोगों के इनकार करने पर भी यहां किसी के मन में बुरी भावना नहीं आएगी। तुम सब जब तक चाहो, यहां मेहमान बनकर रह सकते हो।"

"यो म्हारे को अमूलो मकखनो लगा रहो हो।"

वो सब एक दूसरे को देखने लगे।

"तुम लोगों को यहां तक लाना जरूरी था। वो मैं ले आया। अब आगे काम करना या न करना, तुम्हारी मर्जी पर है।"

"मुर्गोखाने में बिठा दयो म्हारे को, ईब मर्जी बोल्लो हो।"

पोतेबाबा उठता हुआ बोला।

"बाहर दरवाजे पर हर वक्त दो सेवक मौजूद रहेंगे। आप लोगों को किसी भी चीज की जरूरत हो तो उनसे कह सकते हैं। मुझे बुलाना हो तो भी उनसे कह सकते हैं। यहां आप कहीं भी जाने को आजाद हो। कोई रोक-टोक नहीं है।"

रातुला भी उठ खड़ा हुआ।

"सोच-विचार में आप जितना भी वक्त लेना चाहें ले सकते हैं।"

उसके बाद पोतेबाबा और रातुला वहां से बाहर निकल गए।

उनके जाने के बाद खामोशी-सी आ ठहरी उधर।

"मेरे खयाल में हमें जथूरा की आजादी के लिए कुछ करना चाहिए।" नगीना बोली—"वो मुसीबत में है। ऐसे में किसी के काम आना, बुरी बात नहीं है।"

"उसने सोबरा के साथ ज्यादती की है।" देवराज चौहान ने कहा—"उसने सोबरा का हक मारा है।"

"तो सोबरा ने उसे सजा भी दे दी। पचास सालों से वो बंदी बना हुआ है।" नगीना ने कहा।

"हमें क्या पता कि सोबरा इस वक्त उसकी सजा के बारे में क्या सोचता है।" देवराज चौहान ने नगीना को देखा।

तभी मोना चौधरी कह उठी।

"सोबरा भी कम नहीं है।"

"अंम भी यो ही सोच्चो हो।" बांकेलाल राठौर बोला—"जथूरो को जादूगरनी कैद में फंसा दयो हो।"

"हम जथूरा को कैद से निकाले तो सोबरा को ये बात बुरी लग सकती है।" देवराज चौहान ने कहा—"ये दो भाइयों का मामला है। हमें बीच में नहीं आना चाहिए।"

"बहुत कठोर हैं आप।" नगीना कह उठी।

"बात कठोरता की नहीं नगीना, बात ये है कि जथूरा ने अपने पिता से प्राप्त ताकतों का इस्तेमाल करके, खुद बड़ी ताकत बन गया। जबकि सोबरा भी उन ताकतों को पाने का हकदार था। वो अपने अधिकार से वंचित रहा। इसी कारण सोबरा ने कालचक्र की आड़ में जथूरा को फंसा दिया। इसमें हमारे बीच में आने की गुंजाईश ही नहीं है।"

"सोबरा से बात की जाए?" महाजन बोला।

"वो नहीं मानेगा।" देवराज चौहान ने कहा—"क्योंकि इस वक्त बाजी उसके हाथ में है।"

"तुम्हारे मन में क्या है देवराज चौहान।" मोना चौधरी बोली—"इस काम को करने की इच्छा रखते हो या नहीं?"

"अगर जथूरा सोबरा के साथ पिता की दी ताकतें बांटने पर राजी हो जाता है और हमारी दुनिया में नए हादसे रचकर नहीं भेजेगा तो, मैं ये करने को तैयार हो सकता हूं।" देवराज चौहान ने कहा।

"जथूरा तो सामने है नहीं कि उससे बात की जा सके।" मोना चौधरी बोली।

"पोतेबाबा के शब्दों की कोई कीमत नहीं है।"

"वो पहले ही कह चुका है कि जथूरा अगर शर्तें माने तो उसे आजाद करना, वरना नहीं।"

"पोतेबाबा चाहता है कि किसी भी तरह हम जथूरा को आजाद करने के लिए यहां से चल पड़ें।"

"हां। ऐसी ही बात है।"

"लेकिन हमें पूर्वजन्म का कोई काम तो सुधारना ही पड़ेगा। तभी हम वापस अपनी दुनिया में जा सकेंगे। किसी बिगड़े काम को संवारना हमारे लिए भी अच्छी बात है। पूर्वजन्म के जो काम पहले जन्म में अधूरे रह गए थे, वो हम इस रूप में पूरे करेंगे।" महाजन कह उठा।

नगीना देवराज चौहान से बोली।

"आपको ये काम करना होगा।"

"मुझे सोचने दो।" देवराज चौहान बोला।

"बेहतर होगा कि हम ये काम करें ताकि हमारे लिए वापस अपनी दुनिया में जाने का रास्ता खुल सके।" मोना चौधरी बोली—"हम जितना वक्त सोचने में लगाएंगे। हमें उतनी ही देर पूर्वजन्म में रहना पड़ेगा।"

"मोना चौधरी ठीक कहती है।" नगीना ने तुरंत सिर हिलाया।

"अगर तुम सबकी यही मर्जी है तो, मैं तैयार हूं।" देवराज चौहान ने सोच-भरे स्वर में कहा।

"जथूरा तक अगर पहुंच गए तो उससे वो बातें कर लेंगे, जो हमारे मन में हैं।" मोना चौधरी कह उठी।

"छोरे।" बांकेलाल राठौर का हाथ मूंछ पर जा पहुंचा—"अंम महाकाली को 'वड' दयो।"

"पक्का बाप।"

"तंम म्हारे साथो हो ना?"

"पक्का बाप।"

कमला रानी सब बातों को ध्यान से सुन रही थी। तभी उसने मखानी को देखा। मखानी उसे खा जाने वाली नजरों से घूर रहा था। कमला रानी मुस्करा पड़ी। वो उठी और बाथरूम की तरफ चल दी। चलते-चलते कमला रानी ने मखानी को देखा और आंख से इशारा कर दिया।

मखानी खिल उठा।

काम बन गया था।

ललचाई नजरों से वो कमला रानी को उस रास्ते पर जाते देखता रहा, जो खुले बाथरूम की तरफ जाता था। जब कमला रानी चली गई तो मखानी उठा और उसी रास्ते की तरफ बढ़ गया।

"तंम उसो को पीछो-पीछो क्यों खिसको हो?" बांकेलाल राठौर मखानी से कह उठा।

मखानी ने ऐसे दर्शाया, जैसे सुना ही न हो।

"जाने दे बाप।" रुस्तम राव ने बांके की टांग पर हाथ मारा—"उसने पीछे आने का इशारा किएला है।"

"फिरो ठीको। अंम सोचो के कंई पे इज्जत लूटनो का केसो न तैयार हो जावे।"

☐ ☐

तवेरा कमरे से निकली तो पीछे से आकर गरुड़ उसके साथ चलने लगा।

"तुम कैसी बातें कर रही हो तवेरा?" गरुड़ कह उठा।

"तुम्हें मेरी बातें पसंद नहीं तो, मेरे पास मत आओ।"

"वो बात नहीं, मैं तुम्हारे साथ हूं।" गरुड़ जल्दी से बोला—"तुम नाराज मत होवो।"

दोनों आगे बढ़ते जा रहे थे।

तवेरा ने चेहरे पर उखड़ापन ओढ़ रखा था।

"कम-से-कम तुम्हें दूसरों के सामने तो अपनी भावनाएं छिपाकर रखनी चाहिए।"

"मैं नगरी की मालकिन हूं। मेरा जो मन चाहेगा, वो ही करूंगी।"

"ये बात तो तुम ठीक कह रही हो।"

"सच?" चलते हुए तवेरा ने उसे देखा।

"हां-हां, मैं झूठ क्यों बोलूंगा?"

"मुझे लगता है कि कोई भी मेरे से सहमत नहीं होगा कि मैं पिता को वहीं कैद में रहने दूं।"

"ठीक कहती हो।"

"तुम सहमत हो?"

"मैं तो तुम्हारे साथ हूं तवेरा।"

"सच कह रहे हो?"

"मैं तुमसे झूठ नहीं बोलूंगा। तुम मुझे अच्छी लगती हो। तुम्हारी हर बात मुझे अच्छी लगती है।"

"ओह गरुड़। तुम कितने अच्छे हो।" तवेरा मुस्कराई।

गरुड़ भी मुस्कराया।

"मैंने कभी तुम पर ध्यान क्यों नहीं दिया। तुम बहुत समझदार हो।"

गरुड़ मुस्कराता रहा।

"अब तुम मुझे अच्छे लगने लगे हो।"

"सच तवेरा।"

"हां। तुममें वो सब बातें हैं जो नगरी को संभाल सको।" तवेरा कह उठी।

"क्या मतलब?"

"सोचती हूं कि कहीं तुम ही तो मेरे सपनों के राजकुमार नहीं हो, जिसका मुझे इंतजार था।"

"ओह, तवेरा तुमने तो मेरे दिल की बात कह दी।" गरुड़ जल्दी से कह उठा।

"क्या तुम भी मेरे बारे में कुछ ऐसा ही सोचते हो?"

"हां तवेरा, तुम्हें लेकर तो मैंने कितने सपने ले रखे हैं, परंतु कभी कहने की हिम्मत नहीं पड़ी।"

तवेरा ठिठकी और गरुड़ को देखने लगी।

गरुड़ भी रुका।

"तुम्हें मेरा साथ देना होगा गरुड़, अगर मेरे से ब्याह करना चाहते हो।" तवेरा ने कहा।

"मैं तैयार हूं। बोलो क्या करूं?"

"मैं अपने पिता की आजादी नहीं चाहती।"

"परंतु इस बारे में मैं क्या कर सकता हूं?"

"देवा-मिन्नो अगर पिताजी को आजाद कराने जाएं तो उनका काम बिगाड़ देना होगा।"

"ये मैं कैसे करूंगा?"

"तुम साथ रहना। हम किसी अच्छे मौके को ढूंढ़ेंगे।"

"साथ रहना, मैं समझा नहीं?"

"देवा-मिन्नो अगर पिताजी को आजाद कराने में महाकाली की पहाड़ी की तरफ जाने लगेंगे तो मैं भी साथ चलूंगी और बहाने से तुम्हें भी साथ ले लूंगी। मेरी बात को पोतेबाबा इनकार नहीं कर सकेगा।"

"समझ गया। तुमने जथूरा से चालाकियां हासिल की हैं।" गुरुड़ मुस्करा पड़ा।

"मैं अपने आप में भी कम नहीं हूं। तंत्र-मंत्र में मैंने महारथ हासिल की है।"

"परंतु महाकाली से कम हो।"

"हां। वो तो बहुत बड़ी जादूगरनी है। अब तुम मेरे पास से जाओ। कोई देखेगा तो शक करेगा कि हममें इतनी देर तक क्या बातें हो रही हैं।" तवेरा कह उठी—"तुम कितने अच्छे हो गरुड़।"

"बार-बार ये बात कहकर मुझे शर्मिंदा मत करो।" गरुड़ ने प्यार से कहा।

तवेरा मुस्कराई और आगे बढ़ गई।

खुशी से गरुड़ के पांव जमीन पर नहीं पड़ रहे थे।

वो तो तवेरा को शीशे में उतारना चाहता था, परंतु सारा काम अचानक ही उसके पक्ष में बन गया। तवेरा उससे ब्याह करने को तैयार थी।

वो नहीं चाहती थी कि उसके पिता महाकाली की कैद से आजाद हो।

वो नगरी की मालकिन बनकर रहना चाहती थी और आजाद जिंदगी बिताना चाहती थी।

'ओह।' गरुड़ बड़बड़ाया—'ये सब कितना अच्छा हो रहा है। बिल्कुल मेरी इच्छा की तरह।'

गरुड़ सीधा अपने कमरे में पहुंचा और दरवाजा बंद करके अलमारी की तरफ बढ़ गया। वो इस बात को जरा भी महसूस नहीं कर सका कि उस कमरे में रातुला का आदमी पहले से ही छिपा हुआ है।

गरुड़ ने अलमारी खोलकर वो किताब निकाली और उसके भीतर मौजूद यंत्र से सम्बंध बनाकर सोबरा से बात करने की कोशिश में लग गया।

सोबरा से बात हो भी गई।

"मैंने कर दिया सोबरा।" गरुड़ खुशी से बोला।

"क्या?" यंत्र में से महीन-सी सोबरा की आवाज उभरी।

"तवेरा मेरे से ब्याह करने को तैयार है।" गरुड़ ने कहा।

"ये अच्छी खबर दी।"

"मेरी उससे स्पष्ट बात हुई है। परंतु अपने पिता के बारे में उसका व्यवहार अजीब-सा है।"

"वो कैसे?"

"तवेरा नहीं चाहती कि उसके पिता को आजादी मिले। वो पिता के बिना आजाद जीवन जीना चाहती है।"

सोबरा की तरफ से आवाज नहीं आई।

“सोबरा।” गरुड़ ने पुकारा।
“सुन रहा हूं। सोच रहा हूं, तवेरा ऐसी तो नहीं थी।”
“हां, अचानक ही उसके व्यवहार में मैंने ये बदलाव पाया।”
“मेरे खयाल में तुम्हें सतर्क हो जाना चाहिए गरुड़।”
“क्या मतलब?”
“ये तवेरा की कोई चाल भी हो सकती है। हो सकता है कि उसे तुम पर शक हो गया हो।”
“मुझे ऐसा नहीं लगता।”
“मुझे ऐसा ही लगता है। तवेरा तो जथूरा की भक्त है। अपने पिता की इच्छा के बिना कभी कोई कदम नहीं उठाती। ऐसे में वो एकाएक कैसे जथूरा के खिलाफ हो सकती है। अवश्य इसमें कोई रहस्य है।” सोबरा की आवाज यंत्र से निकल रही थी—“मेरे खयाल में तुम्हें तवेरा की बात पर यकीन नहीं करना चाहिए। परंतु उसके साथ ही रहो और चाल को पहचानो।”
“समझ गया।”
“देवा और मिन्नो का क्या हुआ?”
“वो और उनके साथी महल में आ पहुंचे...।”
“जानता हूं, आगे की बात बताओ।”
“अभी तक देवा और मिन्नो जथूरा को महाकाली की कैद से छुड़ाने को तैयार नहीं हुए।”
“क्या कहते हैं वे?”
गरुड़ ने वहां हुई बातचीत के बारे में बताया।
“वो तैयार हो जाएंगे।” सारी बात सुनकर, उधर से सोबरा की आवाज आई—“इसके अलावा उनके पास अब दूसरा रास्ता नहीं।”
“मैं क्या करूं?”
“तुम इसी तरह उनके बीच रहो। परंतु तवेरा के दिल में क्या बात है, उसे जानने की चेष्टा करो। मुझे तो ऐसा ही लगता है कि तवेरा को तुम पर किसी बात की वजह से शक हो गया है। वो शायद तुम्हें बातों से भटका रही हो।”
“मुझे विश्वास नहीं होता तुम्हारी बात पर।”
“आने वाले वक्त का रुख देखो। शायद कोई नई बात पता चले।”
बातचीत खत्म करके गरुड़ ने किताब वापस अलमारी में रखी और कमरे से बाहर निकल गया।
कमरे में छिपा रातुला का आदमी छिपी जगह से बाहर निकला और गरुड़ को गया पाकर कमरे से बाहर आ गया।

□ □

रातुला पोतेबाबा से मिला।

"हमारी आशंका सही साबित हुई।" रातुला ने कहा—"गरुड़, यहां की खबरें सोबरा को दे रहा है। मेरे आदमी ने सारी बातचीत सुनी।"

"मुझे वो बातें बताओ।"

रातुला ने अपने आदमी से सुनी सारी बातें बताईं।

"गरुड़ गम्भीर अपराध कर रहा है।" पोतेबाबा शांत स्वर में कह उठा।

"अति गम्भीर।"

"गरुड़ जन्म-भर की कैद का हकदार है। परंतु ये सजा अभी नहीं, जथूरा के आजाद होने के बाद देंगे।"

"सोबरा को शक है कि तवेरा कोई चाल चल रही है। उसने गरुड़ को सावधान किया है।"

"कोई बात नहीं, मैं तवेरा को इस बारे में सावधान कर दूंगा।"

"सोबरा आसानी से पहचान गया कि तवेरा कोई चाल खेल रही है।"

"शक तो होना ही था, क्योंकि तवेरा ने अचानक ऐसी बात कह दी थी कि जिस पर फौरन विश्वास करना कठिन है। परंतु मुझे पूरा यकीन है कि तवेरा गरुड़ को धोखे में रखे रखेगी और सोबरा तक उल्टी खबरें पहुंचाएगी। तुम समझते हो कि ये बात यहीं खत्म हो गई। नहीं, अब सोबरा तवेरा के बारे में सोच रहा होगा कि वो उलट क्यों गई। वो सोच रहा होगा कि गरुड़ जब तवेरा से ब्याह कर लेगा तो, गरुड़ की आड़ लेकर, वो जथूरा की हर चीज का मालिक बन जाएगा। ऐसे ढेरों खयाल उसके भीतर से उठ रहे होंगे। यानी कि वो जो सोचना चाहता होगा, वो नहीं सोच पा रहा होगा। गरुड़ का सहारा लेकर हमने उसकी सोचों को भटका दिया। इसका फायदा हमें आने वाले वक्त में मिलेगा।" पोतेबाबा ने कहा।

"क्या सोबरा को भटकाना आसान है?"

"गरुड़ के द्वारा खबरें उस तक पहुंचेंगी तो आसान है। उसे गरुड़ पर भरोसा होगा। तभी तो वो ये खेल खेल रहा है।"

"गरुड़ ने हमें धोखा दिया।"

"अवश्य। हम उसे जथूरा का सर्वश्रेष्ठ सेवक समझते रहे थे और वो भीतर ही भीतर सोबरा के लिए काम कर रहा था। मुझे कई बार लगता था कि सोबरा आसानी से हमारी चालों को पीट देता है। परंतु हमें कभी भी शक न हुआ कि गरुड़ ही वो भेदी है।"

"देवा-मिन्नो की तरफ से कोई खबर आई?" रातुला ने पूछा।

"अभी तक तो उनकी तरफ से कोई बुलावा नहीं आया।"

"क्या पता वो जथूरा को महाकाली की कैद से छुड़ाने को तैयार ही न हों। तब हम क्या करेंगे।"

"धैर्य रखो। वो अवश्य तैयार होंगे। इसके अलावा उनके पास कोई दूसरा रास्ता भी तो नहीं।"

"देवा का कहना है कि जथूरा को पिता से मिली ताकतों का सोबरा के साथ बंटवारा करना चाहिए था।"

"ये हमारी समस्या नहीं है। इस बारे में देवा जाने, जथूरा जाने। हमें अपने कार्य की तरफ ध्यान देना है।"

"जथूरा महान है।" रातुला ने कहा।

"उस जैसा दूसरा कोई नहीं।" कहने के साथ ही पोतेबाबा आगे बढ़ गया।

▭ ▭

पोतेबाबा तवेरा से मिला।

सारी बात उसे बताई।

"सोबरा ने गरुड़ के मन में, तुम्हारे लिए शक डाला है कि तुम कोई चाल खेल रही हो।" पोतेबाबा ने कहा।

"इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।"

"तुम्हें सावधान रहकर, गरुड़ के साथ बातचीत करनी होगी मेरी बच्ची।"

"मैं अवश्य सावधान रहूंगी।" तवेरा ने गम्भीर स्वर में कहा—"वो मेरे से ब्याह करने के लिए मरा जा रहा है।"

"ये सोबरा की योजना है। वो गरुड़ द्वारा जथूरा की हर चीज को अपने अधिकार में कर लेना चाहता है।"

"उसका ये सपना कभी पूरा नहीं होगा।"

"सोबरा का गरुड़ नाम का मोहरा हमारे बीच रहेगा तो खतरा बना रहेगा।"

"गरुड़, मेरे द्वारा ही तो पिताजी का सब कुछ जीतना चाहता है।" तवेरा मुस्करा पड़ी—"आप निश्चिंत रहिए। सोबरा या गरुड़ को निशाना साधने के लिए मेरा कंधा नहीं मिलेगा।"

"तुमने गरुड़ से ऐसी बातें कहनी हैं कि जिन्हें वो सोबरा को बताए और सोबरा की सोचें लक्ष्य से भटकें।"

"ऐसा ही कर रही हूं मैं।"

"तुमने जो सोचा है, वो बताओ कि गरुड़ को कैसे इस्तेमाल करना चाहती हो?"

"क्या देवा और मिन्नो तैयार हो गए, पिताजी को महाकाली की पहाड़ी से आजाद कराने के लिए।"

"अभी तक तो नहीं।"

"क्या वो तैयार होंगे?"

"मेरे खयाल में तो अवश्य।"

"तो मैं उनके साथ जाऊंगी। साथ में गरुड़ को भी ले जाऊंगी। गरुड़ को मैं अपने साथ रखूं तो बेहतर होगा।" तवेरा ने गम्भीर स्वर में कहा—"किसी मुनासिब मौके पर मैं गरुड़ को उसकी धोखेबाजी की सजा भी दूंगी।"

"ये काम तुम मत करना।"

"क्यों?"

"तुम चूक गईं तो गरुड़ फिर तुम्हें नहीं छोड़ेगा।"

तवेरा मुस्करा पड़ी। पोतेबाबा की निगाह तवेरा पर थी।

"क्या आपको लगता है कि गरुड़ को सजा देने में मेरे से चूक हो जाएगी।"

"हमारा लक्ष्य जथूरा की आजादी है।"

"मैं जानती हूं।"

"ऐसी कोई हरकत मत कर देना मेरी बच्ची कि जथूरा की आजादी में समस्या पैदा हो जाए।"

"इस बात का मैं हमेशा ध्यान रखूंगी। क्योंकि मैं भी पिता की आजादी चाहती हूं।" तवेरा ने कहा—"आप किसी तरह देवा-मिन्नो को इस बात के लिए तैयार कीजिए कि वो पिताजी को आजाद कराने को तैयार हो जाएं।"

"मैंने अपनी तरफ से कोई कसर नहीं छोड़ी। अब उनकी तरफ से ही जवाब आना बाकी है।"

"पिताजी के बिना यहां मेरा मन नहीं लगता।"

"मुझे भी ऐसा ही लगता है। आशा है कि वे जल्दी आजादी पा जाएंगे।"

"मैंने कभी भी नहीं सोचा था कि गरुड़ धोखेबाजी कर सकता है फिर भी हमें वक्त पर पता चल गया।" तवेरा कह रही थी—"मुझे इस बात की भी चिंता है कि महाकाली अपनी पूरी ताकत लगा देगी कि देवा-मिन्नो पिताजी को आजाद न कर सके।"

"उसने कैद में देवा-मिन्नो के नाम का तिलिस्म बांधा है, इस बात को हमेशा ध्यान रखो मेरी बच्ची। देवा-मिन्नो समझदार हैं और अपनी समझदारी से वे तिलिस्म तोड़ते हुए जथूरा तक अवश्य पहुंच जाएंगे।" पोतेबाबा ने कहा।

"परंतु महाकाली कई नई समस्याएं उनके सामने खड़ी कर देगी।"

"खतरे की आशंका तो हर वक्त लगी रहेगी। इस बारे में चिंता करना व्यर्थ है। परंतु तुम उनके साथ रहोगी। तुम अपनी ताकतों के दम पर उन्हें रास्ते में पड़ने वाली कई समस्याओं से मुक्ति दिला सकोगी।"

"मेरे से जो होगा, वो मैं अवश्य करूंगी।" तवेरा गम्भीर थी।

"जथूरा महान है।"

"सच में पिताजी जैसा दूसरा कोई नहीं।" तवेरा ने गहरी सांस लेकर कहा।

पोतेबाबा बाहर चला गया।

तवेरा अपने कमरे में पहुंची। वहां दो सेविकाएं पहले से ही मौजूद थीं।

तवेरा कुर्सी पर बैठी और हाथ में टेबल पर रखा फूल उठाकर मंत्रों का जाप करने लगी। आधा मिनट ही बीता होगा कि एकाएक फूल का रंग बदलने लगा। तवेरा ने फूल को टेबल पर रख दिया और उसे देखने लगी। चंद पल बीते कि फूल का रंग बेहद तेजी से बदलने लगा। कभी कोई रंग तो, कभी कोई रंग।

"आह।" जथूरा की आवाज वहां गूंजी—"मुझे दर्द हो रहा है। क्या तुम हो तवेरा बेटी?"

"हां, पिताजी। बात करना जरूरी था। आपके लिए खुशखबरी है।"

"कहो, जल्दी कहो।"

"देवा-मिन्नो महल में आ पहुंचे हैं। उनसे बात चल रही है, आपको कैद से छुड़ाने के लिए।"

"ये खबर तो सच में अच्छी है। ये बात मैं पहले ही जान चुका हूं, जल्दी बात पूरी करो। मुझे अकेला छोड़ दो। तुम मुझसे बात करने के लिए अपनी ताकतों का इस्तेमाल करती हो तो मुझे बहुत दर्द होता है। देवा-मिन्नो तैयार हैं मुझे आजाद कराने के लिए?"

"पोतेबाबा का कहना है कि वो तैयार हो जाएंगे।"

"बहुत कष्ट में हूं मैं। महाकाली की सख्तियां बढ़ती ही जा रही हैं। वो मेरे से क्रूरता से पेश आती है।"

"सब ठीक हो जाएगा पिताजी। आप आराम कीजिए।"

अगले ही पल फूल का रंग बदलना रुक गया।

तवेरा ने गहरी सांस ली और आंखें बंद कर ली।

दोनों सेविकाएं अपनी जगह पर मौजूद थीं।

तभी महाकाली की आवाज वहां गूंजी तो, तवेरा ने तुरंत आंखें खोल दीं।

"तुमने अभी जथूरा से बात की।"

"हां।" तवेरा ने हर तरफ नजरें घुमाईं तो टेबल पर उसे नन्ही-सी महाकाली की परछाई दिखी। ये देखकर तवेरा फौरन उठी और हाथ मारकर उस परछाई को नीचे गिरा दिया—"तेरे को कितनी बार कहा है कि तेरी जगह नीचे है, ऊपर नहीं।"

महाकाली के हंसने की आवाज आई।

"बहुत नफरत करती है मुझसे।"

"बहुत ज्यादा।" तवेरा ने कठोर स्वर में कहा।

"तू जानती है कि तू जब भी जथूरा से अपनी ताकतों द्वारा बात करेगी, उसे तकलीफ होगी। फिर भी तू बात करती है।"

"तुझे क्या।"

"मेरी शागिर्दी में आ जा। सब ठीक कर दूंगी मैं।"

"कभी नहीं, तू अपनी ताकतों का बुरा इस्तेमाल करती है। मैं ऐसी नहीं हूं। मैंने तंत्र-मंत्र का ज्ञान हासिल किया है अपनी इच्छा से। किसी को दुख पहुंचाने के लिए नहीं। जथूरा की बेटी तेरी शागिर्दी नहीं कर सकती।"

"बेशक तेरे पिता की तकलीफें बढ़ जाएं।"

"तेरी ये बातें ज्यादा नहीं चलेंगी महाकाली। तेरा अंत हो के ही रहेगा।"

"बेवकूफ! महाकाली को कोई नहीं मार सकता।" महाकाली के हंसने की आवाज आई—"मेरा कोई मुकाबला नहीं है। तू तो मेरे सामने नादान-सी बच्ची है। यदि तू मेरे पास आ जाए तो मैं तुझे निपुण बना दूंगी—तुझे...।"

"तू चली जा यहां से।" तवेरा गुर्रा पड़ी।

महाकाली की तरफ से फौरन आवाज नहीं आई।

"ठीक है। एक बात तो बता कि तू कौन-सी चाल चल रही है?"

"क्या मतलब?"

"गरुड़ को तू कहती है कि तेरे को जथूरा की आजादी नहीं चाहिए और मुझसे दूसरी तरह बात करती है।"

"तुझे गरुड़ वाली बात कैसे मालूम?" तवेरा चौंकी।

"मुझे सब मालूम है।" महाकाली हंसी—"मैं जो चाहूं वो मालूम कर लेती हूं।"

तवेरा बेचैन दिखी।

"क्या चाल खेल रही है तू गरुड़ से?"

"तुझे क्या?"

"घबरा मत। तेरी चाल के बारे में मैं सोबरा को नहीं बताऊंगी। इधर की बात उधर करना मेरे काम का हिस्सा नहीं है।"

"बेहतर होगा कि तू देवा-मिन्नो के बारे में सोच। वो...।"

"वे दोनों तो मेरे बेवकूफ बच्चे हैं।"

"तूने पिताजी की आजादी को लेकर, तिलिस्म उन दोनों के नाम से बांध रखा है।"

"अवश्य। परंतु देवा-मिन्नो वहां तक पहुंच ही नहीं पाएंगे। रास्ते में मैं उनके लिए इतनी परेशानियां खड़ी कर दूंगी कि वे भटककर रह जाएंगे। भला जथूरा को मैं अपनी कैद से क्यों आजाद होने दूंगी।" महाकाली की परछाई ने कहा।

"तूने तिलिस्म उनके नाम से बांधा है तो उनके लिए परेशानियां क्यों खड़ी करेगी?"

"मेरा जो मन चाहेगा, वो करूंगी मैं।"

"तू बेईमान है।" तवेरा दांत भींचकर कह उठी।

"बेईमान नहीं। ये ताकत है मेरी। मैं देवा-मिन्नो को इस तरह भटका दूंगी कि वे जान गवां बैठेंगे। तिलिस्म तक पहुंच ही नहीं पाएंगे। मेरी ताकत का तुझे अच्छी तरह अंदाजा है तवेरा।"

तवेरा होंठ भींचे खड़ी रही।

"चलती हूं। मेरे पास कामों का ढेर है, वो मुझे पूरे करने हैं।"

इसके साथ ही महाकाली की परछाई लुप्त हो गई।

तवेरा के चेहरे पर चिंता की लकीरें स्पष्ट नजर आ रही थीं।

"आप महाकाली से डरती क्यों हैं?" एक सेविका ने कहा।

तवेरा ने सेविका को देखा फिर शब्दों को चबाकर कह उठी।

"डरना पड़ता है। वो है ही ऐसी। महाकाली की ताकतों से पार पाना आसान नहीं है। उसका कोई मुकाबला नहीं कर सकता। तभी तो आज वो विद्या के सबसे ऊंचे चबूतरे पर विराजमान है।"

"फिर तो वो देवा-मिन्नो की जान अवश्य ले लेगी। वो जो चाहती है, करके रहेगी।"

गुस्से से भरी तवेरा कमरे में टहलने लगी।

□ □

मखानी जब वापस लौटा तो वो उस बिल्ले की तरह लग रहा था जो ढेर सारी मलाई तबीयत से चट करके आया हो। उसके चेहरे पर असीम शांति के भाव थे। वो कुर्सी पर आ बैठा।

बांके ने रुस्तम राव के कानों में कहा।

"छोरे। जरो मखानो की फोटूं तो खींचो। हरी-भरी घासो चरो के आयो हो।"

"तू क्यों जलेला है बाप।"

"उधरो देखो, कमला रानी भी आ गयो हो। थकी-थकी सी लागे हो। लगो हो मखानी उधेड़ दयो हो उसको।"

"बुरी नजर मत डाईला बाप।"

"अंम तो निरीक्षण करो। का पतो बलात्कारो की गवाही देनो पड़ो जावे।"

"रजामंद है बाप। निश्चिंत रहेला।"

"म्हारी लाटरो न लागो हो। घणों सूखो पड़ो हो इधरो तो।"

कमला रानी मखानी के पास वाली कुर्सी पर आ बैठी।

मखानी उसे देखकर मुस्कराया।

"तूने तो थका दिया मुझे।" कमला रानी ने मीठी शिकायत की।

"बहुत देर बाद जो हाथ लगी तू।"

"अब तो शांत हो गया तू।"

"क्यों न होऊंगा। पेट जो भर गया। तू अपने बारे में बता, मजा आया।"

"क्यों न आएगा।" कमला रानी मुस्कराकर बोली—"तेरा साथ है तो मजा ही मजा है।"

"फिर चलें?"

"पागल है। जान लेगा मेरी।"

"थोड़ा आराम कर ले। दोबारा मौका मिलते ही फिर बाथरूम में जाएंगे।"

"मेरा दिमाग खराब नहीं है।"

"तू नखरे बहुत दिखाती है।"

"नखरे नहीं दिखाऊंगी तो तू कैसे मानेगा कि मैं औरत हूं।"

"वो मैं मान जाऊंगा।"

"कैसे?"

"बाथरूम में जाकर।"

"भूतनी के, तेरे को कोई और खयाल नहीं आता।" कमला रानी ने बेहद मीठे स्वर में कहा।

"ये बता, यहां पर क्या हो रहा है। देवा-मिन्नो जथूरा को आजाद कराने के लिए राजी हो गए?"

"तेरे को नहीं पता। तेरे सामने ही तो बातें हो रही थीं।"

"मैंने नहीं सुना। तब मेरा ध्यान दूसरी बात पर था। बता यहां पर क्या चल रहा है?" मखानी ने कहा।

कमला रानी मखानी को सारा मामला बताने लगी।

नगीना, देवराज चौहान से कह उठी।

"अब ये तो तय है न कि आपने जथूरा को आजाद कराने जाना है?"

"हां।"

"तो वक्त क्यों बर्बाद कर रहे हैं। इस बारे में पोतेबाबा से बात कीजिए, ताकि रवानगी तय हो सके।"

देवराज चौहान ने सामने बैठी मोना चौधरी को देखा।

मोना चौधरी ने भी बात सुन ली थी। उसने सहमति से सिर हिला दिया।

देवराज चौहान उठा और दरवाजे के पास जा पहुंचा।

बाहर जथूरा के दो सेवक मौजूद थे।

"पोतेबाबा को बुलाओ।" देवराज चौहान ने कहा।

"जी, अभी बुलाते हैं।" कहने के साथ ही एक सेवक वहां से चला गया।

देवराज चौहान वापस लौटा।

"कह दिया पोतेबाबा से मिलने के लिए?" नगीना ने पूछा।

"हां।" देवराज चौहान वापस कुर्सी पर जा बैठा।

सामने बैठी मोना चौधरी कह उठी।

"हमारे लिए आसान नहीं होगा, जथूरा तक पहुंचना। सोबरा के कहने पर महाकाली ने, जथूरा को अपनी कैद में रखा हुआ है और हम दोनों के काम का तिलिस्म बांध रखा है कि हमारे अलावा कोई जथूरा तक न पहुंच सके। परंतु हम भी आसानी से नहीं पहुंच सकते। क्योंकि महाकाली की मंशा है कि जथूरा आजाद न हो सके। हम इस काम के लिए आगे बढ़ेंगे तो महाकाली हमारे रास्ते में, खतरनाक से खतरनाक रुकावटें डालेगी। वो हमें जथूरा तक नहीं पहुंचने देगी।"

"इस काम को किए बिना हमारे पास कोई रास्ता भी तो नहीं।" देवराज चौहान बोला।

"मैं तुम्हें ये बताना चाहती हूं कि हमारे लिए ये काम आसान नहीं होगा। महाकाली हमारी जान भी ले सकती है।"

मोना चौधरी की बात पर नगीना के चेहरे पर दृढ़ता के भाव उभरे।

"जो भी हो, हम पीछे नहीं हटेंगे।" नगीना बोली।

"मैं पीछे हटने को नहीं कह रही। आने वाले खतरों के बारे में आगाह कर रही हूं।" मोना चौधरी ने कहा।

उधर बांकेलाल राठौर मखानी के पास पड़ी खाली कुर्सी पर जा बैठा। यानी कि एक तरफ कमला रानी और दूसरी तरफ बांकेलाल

राठौर। मखानी ने नापसंदगी वाली नजरों से बांकेलाल राठौर को देखा।

बांकेलाल राठौर मुस्कराया।

"क्या है?" मखानी खा जाने वाले अंदाज में बोला।

"अकेलो-अकेलो जा के मक्खनो खा आयो। सारो मलाई चट कर दयो।"

"कौन-सी मलाई?"

"जो थारी बगलों में बैठी हो।"

"तुम...तुम से मतलब?" मखानी ने मुंह बनाया।

"थोड़ी मलाईयो म्हारी झोली में भी डाल दयो तो थारा का जावे।"

"तुम...तुम पागल तो नहीं हो।"

"मन्ने का कै दिया जो थारे को पागल दिखूं?" बांकेलाल राठौर ने भोलेपन से कहा।

"मेरे पास कोई मक्खन-मलाई नहीं है।" मखानी ने मुंह बनाकर कहा।

"थारे उधरो बैठी हौवे मलाईयो।"

"तो उधर जाकर खा ले। मेरे से क्या मांगता है।"

"अंम चाहो तंम म्हारी मलाईयो को म्हारी सिफारिशों कर दयो कि वो म्हारी मूंछ पे भी लग जावे।"

"तुममें इतनी हिम्मत नहीं कि मलाई सामने पड़ी हो और उसे खा भी न सको।" मखानी ने व्यंग से बोला।

"यो वालो हिम्मत म्हारे में होती तो म्हारे दसों-बीसों बच्चे खेलो होते अंगने में।" बांकेलाल राठौर ने गहरी सांस ली—"म्हारी गुरदासपुरो वाली बोत बारो कहो कि म्हारी मलाई मूंछ पे लगाई लयो। पर मन्ने हां न की। नतीजो सामने हौवे। वो चारों बच्चों को पैदा करके दूसरो से ब्याह कर लयो। अंम मूंछों को संभालो के रखो हो अम्भी तको।"

"तो अब क्यों मूंछ हिला रहा है। डिब्बे में बंद करके रख।"

"मूंछो ईब डिब्बो में न समायो। डिब्बो खड़-खड़ करो हो। बाहरो झांकने को मरो जावे।"

तभी कमला रानी मखानी से बोली।

"क्या बात है?"

"मलाई मांग रहा है मूंछ पर लगाने के लिए।" मखानी कुढ़कर बोला।

"मलाई, मूंछ पर लगाने के लिए?" कमला रानी उलझन में भर

गई। फिर मुंह आगे करके बांकेलाल राठौर से कह उठी—"क्यों भाई साहब, कौन-सी मलाई चाहिए आपको?"

"भायो।" बांकेलाल राठौर हड़बड़ाकर बोला—"म्हारे को भायो बोल्लो हो।"

"भाई को भाई साहब ही कहूंगी न?"

बांकेलाल राठौर के चेहरे के भाव देखने लायक थे।

मखानी उसे देखकर खुलकर मुस्कराया।

बांकेलाल राठौर उठा और अपनी कुर्सी की तरफ बढ़ गया।

"इसे क्या हो गया। मैंने ऐसा क्या कह दिया जो कि ये अचानक ही चल दिया।" कमला रानी मखानी से बोली।

"सब ठीक है। तुमसे बात करके उसकी मलाई खाने की इच्छा उड़न-छू हो गई।" मखानी ने व्यंग-भरे स्वर में कहा।

बांकेलाल राठौर अपनी कुर्सी पर बैठा तो रुस्तम राव कह उठा।

"क्या होईला बाप?"

"मलाईयो खा के आयो हो, तंम भी जाके खा लयो।"

"किधर होईला मलाई बाप?" रुस्तम राव ने मखानी और कमला रानी को देखा।

"थारे को नेई दिखी?"

"नेई बाप।"

"तबो तो सारी अंम खा आयो।" बांकेलाल राठौर ने गहरी सांस लेकर कहा।

▭ ▭

पोतेबाबा और रातुला ने उस हाल के भीतर प्रवेश किया।

बाहर अंधेरा छा चुका था। भीतर रोशनियां जगमगा उठी थीं।

पोतेबाबा के चेहरे पर शांत मुस्कान छाई हुई थी।

"तुमने मुझे बुलाया देवा?" पोतेबाबा ने कहा।

"हां।" देवराज चौहान बोला—"हम जथूरा को महाकाली की कैद से निकालने की कोशिश करेंगे।"

"ये तो मेरे लिए सुखद समाचार है। मैं तो कब से ये शब्द सुनने को तरस रहा था।" पोतेबाबा कह उठा।

"परंतु हमारी भी कुछ शर्तें हैं।" मोना चौधरी कह उठी।

"वो क्या मिन्नो?"

"जथूरा को अपने पिता से मिली ताकतों का बंटवारा सोबरा के साथ करना होगा।"

"इस बात से मेरा कोई मतलब नहीं। ये बात आप लोग जथूरा से तब कर लें जब उसे आजाद कराने जा रहे हों।" पोतेबाबा बोला।

"जथूरा नए हादसे रचकर हमारी दुनिया में नहीं भेजेगा।" मोना चौधरी बोली।

"ये बातें मौके पर जथूरा से ही करें।" पोतेबाबा ने सिर हिलाया—"क्योंकि मेरी हां-ना का कोई महत्त्व नहीं है। अंतिम फैसला तो जथूरा का ही होगा। इस बात का जवाब मैंने स्पष्ट तौर पर दिया है।"

"ठीक है। हम ये बात जथूरा से ही करेंगे।" देवराज चौहान बोला—"तुम हमें उस जगह के बारे में बताओ, जहां जथूरा कैद है।"

"क्यों नहीं।" पोतेबाबा ने कहा और रातुला के साथ खाली कुर्सियों पर जा बैठा—"मैं बताता हूं महाकाली ने जथूरा को कहां कैद करके रखा है। इसके अलावा आप लोगों को जो भी जानकारी चाहिए, मिल जाएगी।"

सबकी नजरें पोतेबाबा पर जा टिकी थीं।

रातुला खामोश सा बैठा सबकी देख रहा था।

"जथूरा को कैद करने के लिए महाकाली ने अपनी शक्तियों से एक रहस्यमय मायावी पहाड़ी का निर्माण किया और उसके भीतर जथूरा को तिलिस्म में कैद कर लिया। पहाड़ी के ठीक ऊपर जथूरा की लेटी मुद्रा में बहुत बड़ी मूर्ति बना रखी थी। पहाड़ी के भीतर जाने का रास्ता, उस मूर्ति के नाक के छेदों में से है, जो कि गुफा की तरह लगते हैं।"

"मैं वो देख चुका हूं।" देवराज चौहान बोला।

"पहाड़ी के भीतर क्या है?" मोना चौधरी ने पूछा।

"मैं नहीं जानता। क्योंकि उसके भीतर गया कोई भी सैनिक कभी बाहर नहीं आया। परंतु उस पहाड़ी में भी अंजाने रहस्य मौजूद हैं। क्योंकि उसका निर्माण, महाकाली ने अपनी रहस्यमय जादुई ताकतों से किया है। ये काम तुम लोगों के लिए आसान नहीं होगा। क्योंकि पहाड़ी के भीतर, महाकाली ने ऐसी ताकतों को फैला रखा होगा कि जो भी भीतर आए वो फंस जाए। बेशक महाकाली ने देवा और मिन्नो के नाम का तिलिस्म बांधा है, परंतु तुम दोनों का भी जथूरा तक पहुंच पाना आसान नहीं, क्योंकि महाकाली ने सोबरा के कहने पर जथूरा को कैद कर रखा है। वो नहीं चाहेगी कि जथूरा आजाद हो। महाकाली ने इस बात का पूरा इंतजाम कर रखा होगा कि पहाड़ी में प्रवेश करने वाला कोई भी व्यक्ति जिंदा न बचे। महाकाली खुद में रहस्यमय शक्तियों से भरी ऐसी हस्ती है, जिसने आज तक हार का मुंह नहीं देखा। वो किसी को कैद करने वाले मामूली काम नहीं करती है। परंतु सोबरा के एक एहसान की वजह से, महाकाली ने उसके लिए ये काम किया।"

"क्या यहां पर ऐसा कोई नहीं, जो महाकाली को टक्कर दे सके?" महाजन ने पूछा।

"महाकाली के मुकाबले पर कोई नहीं आना चाहेगा।" रातुला कह उठा।

"महाकाली की उस पहाड़ी का फैलाव बहुत बड़ा है। भीतर जाने की बात तो दूर, पहाड़ी के ऊपर तक पहुंच पाना भी चुनौती भरा काम है, क्योंकि महाकाली ने अपनी ताकतें पहाड़ी पर छोड़ रखी हैं, वो किसी को पहाड़ी के ऊपर तक नहीं जाने देती। अगर कोई ऊपर तक पहुंच भी जाता है तो, नाकरूपी गुफा में प्रवेश करके फिर वापस कभी नहीं लौटता।"

"हम महाकाली की शक्तियों का मुकाबला कैसे करेंगे?" नगीना ने पूछा।

"इसके लिए हम आपको बेहतरीन हथियार देंगे।"

"जैसे कि?"

"तलवार, कटार, बर्छा-खंजर।"

"क्या इन हथियारों से महाकाली की शक्तियों का मुकाबला किया जा सकता है?"

"नहीं किया जा सकता। एक हद के बाद नहीं।" पोतेबाबा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"फिर तो जथूरा को आजाद कराने की चेष्टा करना, बेवकूफी होगी।" पारसनाथ ने कहा।

"यो तो म्हारे को 'वडनो' को तैयारो करो हो।"

"कुछ हद तक महाकाली की ताकतों का मुकाबला किया जा सके, इसके लिए आपके साथ तवेरा जाएगी।"

"तवेरा?" देवराज चौहान के होंठों से निकला।

"वो तो पहले ही इस बात के हक में है कि जथूरा को आजाद न कराया जाए। ऐसे में वो क्यों...?"

"उसकी बात पर मत जाइए। वो आपकी पूरी सहायता करेगी।" पोतेबाबा ने कहा।

"वो किस तरह से सहायता करेला बाप?"

"तवेरा जादुई शक्तियों की अच्छी ज्ञाता है। महाकाली से कम ताकत रखती है, परंतु वो आप सबकी बहुत सहायता कर सकती है। महाकाली को भी तवेरा की ताकतों का एहसास है।" पोतेबाबा ने गम्भीर स्वर में कहा—"तवेरा पर आप सब पूरा भरोसा कर सकते हैं। वो अपने पिता को आजाद कराने के लिए, आपके साथ चलने को बेचैन है। उसके साथ जथूरा का सर्वश्रेष्ठ सेवक गरुड़ भी जाएगा। जो कि सिर्फ तवेरा के ही अधीन रहेगा।"

चंद पलों के लिए वहां खामोशी आ ठहरी।

"हम भी साथ जाएंगे।" कमला रानी कह उठी।

"हां-हां हम भी जाएंगे।" मखानी ने तुरंत कहा।

"वहां जान जाने का खतरा है।" रातुला बोला।

"हमें क्या खतरा। हम तो कालचक्र के हिस्से बन चुके हैं। मर गए तो फिर किसी अन्य शरीर में प्रवेश कर जाएंगे।"

"जैसी तुम दोनों की इच्छा।"

तभी देवराज चौहान कह उठा।

"तुमने उस पहाड़ी या जथूरा की कैद के बारे में कोई विशेष बात नहीं बताई।"

"जो बताया है, उतनी ही जानकारी है मुझे।"

"जथूरा किन हालातों में भीतर कैद है?"

"नहीं मालूम। क्योंकि आज तक जो भी पहाड़ी के भीतर गया है, वो वापस नहीं लौटा कि उससे पता चलता।" पोतेबाबा ने कहा।

"तुम्हारी जानकारी अधूरी है।" देवराज चौहान ने कहा।

"पहाड़ी पर कैसे-कैसे खतरे हमारे सामने आ सकते हैं?" नगीना ने पूछा।

"इस बारे में तवेरा बेहतर बता सकती है। वो आपके साथ ही चलेगी। रास्ते में ये बात आप लोग उससे पूछ सकते हैं।"

"तंम तो चाहो कि अंम अम्भी चल दयों पहाड़ो पे।"

"मुझे इस बात का दुख है कि मैं आपकी ज्यादा सहायता नहीं कर पा रहा हूं।" पोतेबाबा ने कहा—"हमने जब-जब जथूरा के बारे में जानकारी पाने की चेष्टा की, महाकाली ने अपनी शक्तियों से हमें पीछे धकेल दिया।"

"महाकाली की वो पहाड़ी कितनी दूर है?" मोना चौधरी ने पूछा।

"लम्बा सफर है। घोड़ों पर सवारी करने से एक दिन लग जाएगा।" पोतेबाबा ने कहा—"आप लोग कब यहां से रवाना होना चाहते हैं, ये बता दें तो मुझे तैयारी करने में आसानी होगी।"

"कल सुबह दिन का उजाला फैलते ही हम चल देंगे।" देवराज चौहान ने कहा।

"बेहतर। सुबह तक चलने की तैयारी पूर्ण मिलेगी। कुछ और किसी को कहना हो?" पोतेबाबा ने पूछा।

"मुझे अभी भी नहीं समझ आ रहा कि महाकाली की शक्तियों का मुकाबला हम कैसे करेंगे?" महाजन कह उठा।

"तवेरा पर भरोसा रखिए।" पोतेबाबा ने कहा।

"आखिर वो कब तक हमें महाकाली के वारों से बचाती रहेगी?"

"जब तक वो ऐसा कर पाएगी।"

"उसके बाद क्या होगा?"

"कोशिश करना आप लोगों का फर्ज है, बाकी ऊपर वाला जानता है कि क्या होगा।"

"बलि का बकरा बनाईला ये आपुन को।"

"छुरो म्हारी गर्दनो पर रखो के धीरो-धीरो काटो हो।"

"जथूरा महान है।" पोतेबाबा कह उठा।

"उस जैसा कोई दूसरा नहीं।" रातुला ने कहा।

उसके बाद पोतेबाबा और रातुला वहां से बाहर निकल गए।

बांकेलाल राठौर की निगाह मखानी की तरफ उठी तो सकपका उठा। मखानी उसे ही घूर रहा था।

बांकेलाल राठौर ने तुरंत नजरें फेर लीं और मूंछ पर हाथ लगाया, परंतु वहां मलाई नहीं लगी हुई थी।

"म्हारी किस्मतो ही धोखोबाजो होवे।" बांकेलाल राठौर बड़बड़ा उठा।

"क्या होईला बाप?" उसकी बड़बड़ाहट सुनकर रुस्तम राव ने पूछा।

"कोणो बातो नेई। अंम तो महाकाली को यादो करो हो कि उसो को 'वड' दयो। तंम म्हारे साथो हो ना?"

"पक्का बाप।"

नगीना देवराज चौहान से बोली।

"इस काम में भारी खतरा है।"

"जहां भी हमारे पांव पड़ते हैं, वहां खतरा पहले आ जाता है।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा।

"महाकाली की ताकतों का मुकाबला करने के लिए हमारे पास कुछ भी तो नहीं है।" नगीना ने सोच-भरे स्वर में कहा।

"मेरे खयाल में पोतेबाबा हमें मौत के मुंह में भेज रहा है।" महाजन कह उठा।

"मौत के मुंह में तो हम तभी आ गए थे, जब पूर्वजन्म की जमीन पर हमारे कदम पड़े थे।" देवराज चौहान ने महाजन को देखा।

"नगीना भाभी का कहना सही है कि हम महाकाली का मुकाबला ज्यादा देर तक नहीं कर पाएंगे।"

"हमारे पास कोई दूसरा रास्ता भी नहीं।" देवराज चौहान ने कहा—"पूर्वजन्म में आने के बाद हम तभी वापस जा सकते हैं, जब पूर्वजन्म का कोई बिगड़ा काम संवार दें।"

"पोतेबाबा हमें धोखे से यहां लाया है।"

"वो बात खत्म हो चुकी है। अब सवाल ये सामने है कि वापस अपनी दुनिया में जाने के लिए इस जन्म का कौन-सा बिगड़ा काम ठीक करें?"

दो पल की सोच के बाद महाजन बाहरी सांस लेकर कह उठा।

"सच में हमें ये काम करना ही होगा क्योंकि हमारे सामने कोई और दूसरा बिगड़ा काम नहीं है। किसी दूसरे बिगड़े काम को ढूंढ़ने लगे तो जाने कितना वक्त बीत जाए।"

तभी कमला रानी उठी और बाथरूम जाने वाले रास्ते की तरफ बढ़ गई।

बांकेलाल राठौर ने उसे जाते देखा।

उसी पल उसने मखानी को उठकर कमला रानी के पीछे जाते देखा।

"छोरे।" बांकेलाल राठौर अपने होंठों पर जीभ फेरकर बोला—"म्हारा मनो मलाईयो खाने को करो हो।"

"पोतेबाबा से कहेला बाप, वो मलाई का टोकरा...।"

"मलायो का टोकरो।"

"हां बाप टोकरा।"

"मलाई टोकेरा में भरी जावे। थारी बुद्धि में दूधो वाली मलाई ही आवे।" बांकेलाल राठौर ने मुंह बनाया।

"और कौन-सी मलाई होईला बाप।"

बांके ने कुछ कहने के लिए मुंह खोला।

उसी पल सब पारसनाथ की तेज आवाज सुनकर चौंक पड़े।

"मोना चौधरी! क्या हुआ तुम्हें...मोना चौधरी।"

सबकी निगाह मोना चौधरी की तरफ उठी।

मोना चौधरी की आंखें फटकर फैल चुकी थीं। मुंह भी खुला था। वो जैसे हैरानी भरे अंदाज में सामने की दीवार को देखे जा रही थी। उसकी मुद्रा देखने लायक थी।

सबने दीवार की तरफ देखा। वहां कुछ भी नहीं था जो मोना चौधरी की ये हालत होती।

देवराज चौहान और नगीना की नजरें मिलीं।

"क्या हो गया मोना चौधरी को?" नगीना के होंठों से निकला।

"तुम देखो।" देवराज चौहान ने कहा।

नगीना फौरन उठकर मोना चौधरी के पास पहुंची।

"मोना...मोना चौधरी।" नगीना ने उसे कंधे से पकड़कर हिलाया—"क्या हो गया तुम्हें—तुम...।"

तभी मोना चौधरी की गर्दन हिली और नगीना की तरफ घूमी।

मोना चौधरी की आंखों में देखते ही नगीना को कुछ डर-सा लगा।

लाल-सुर्ख आंखें थीं मोना चौधरी की। खूंखारता से भरी हुई। चेहरे पर दरिंदगी-सी घिरने लगी थी।

ये देखकर देवराज चौहान की आंखें सिकुड़ गईं।

"तू बेला है।" मोना चौधरी के होंठों से खरखराती-सी मर्दानी आवाज निकली—"मिन्नो की बहन बेला...।"

नगीना हड़बड़ाकर एक कदम पीछे हो गई।

"तु...तुम कौन हो?" नगीना के होंठों से निकला।

सब हक्के-बक्के से मोना चौधरी को देखे जा रहे थे।

"मैं।" मोना चौधरी के होंठों से पुनः खरखराती मर्दानी आवाज निकली—"नीलकंठ हूं।"

"पहचाना नहीं तूने मुझे बेला?"

"न...नहीं।" नगीना की हालत देखने लायक थी।

उसी पल मोना चौधरी के होंठों से निकला नीलकंठ का ठहाका वहां गूंज उठा।

सच में, इस वक्त तो सबकी हालत देखने लायक थी।

घबराहट, बदहवासी, परेशानी, हैरानी, उलझन के मिले-जुले भाव सबके चेहरों पर नाच रहे थे।

समाप्त